आर्यभाषा पुस्तकालय
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
में उपलब्ध

हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथ-सूची

तृतीय खंड

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आर्यभाषा पुस्तकालय
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
में उपलब्ध

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय खंड

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

संपादकमंडल

सुधाकर पांडेय   करुणापति त्रिपाठी

मोहनलाल तिवारी

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३२
७५० प्रतियाँ

नागरीप्रचारिनी सभा
वाराणसी ७५-००१००१
संशोधित मूल्य. १५०

मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी,
नागरीमुद्रण, वाराणसी

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गंभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास-मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत धरती में गड़े धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८६४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह तृतीय खंड प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका चतुर्थ खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

कृष्ण जन्माष्टमी
सं० २०३२ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखकों के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का संचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग--छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरती में गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँद पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर देशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएं अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र, यंत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रों या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सर्वश्री शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयालाल मिश्र, पारसनाथ पांडेय, बृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशंसनीय रहा है अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों की निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्री श्रीपति त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अंत में वे इससे एकदम विरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह तृतीय खंड है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग २२०६ ग्रंथों का विवरण आ सका है जो पूर्वोक्त विधि से संकलित है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

इसमें पुराणेतिहास के ५२१, माहात्म्य के २६३, वेद के १३५, व्याकरण के ४६४, व्रतकथादि के २७६, तथा साहित्य के ५१७ ग्रंथों का विवरण प्रकाशित है। इसका चतुर्थ खंड भी प्रकाशन के क्रम में है। अंतिम खंड में परिशिष्ट में उन ग्रंथों का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो संपादनक्रम में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रंथ पुष्पचिह्नांकित (*) हैं।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रंथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रंथों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रंथ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

—०—

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

विषयनिर्देश

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची
तृतीय खंड

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
पुराणेतिहास						
२०	४३६१	इतिहास समुच्चय (महाभारत)			दे० का०	दे०
२१	४३१६	कपिलदेवोपाख्यान			दे० का०	दे०
२२	७०४८	काशीखंड			दे० का०	दे०
२३	२२०२	काशीखंड (पूर्वार्द्ध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२४	६७६६	काशीखंड (स्कांदीय)			दे० का०	दे०
२५	७५०९	कुमारिकाखंड (स्कांदीय)			दे० का०	दे०
२६	३९८१	कूर्मपुराण			दे० का०	दे०
२७	६१६८	कृतघ्नोपाख्यान (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५ × १२·५ सें० मी०	९५ (२-१६,१९-१००)	९	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते इतिहास समुच्चये संसार कूप वर्णनो नाम पंच त्रिंशतमोध्याय: ॥
२३ × १४·५ सें० मी०	३ (६–८)	१४	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे कपिलदेवो पाख्याने आत्मस्वरूपस्थितिरध्याय: ॥
३३ २ × १५·३ सें० मी०	१४ (१४७–१६)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशी खंडे सदाचारवर्णनं नामाष्टात्रिशोध्याय: × × × × ॥
३६.२ × १७ सें० मी०	४१३ (१–४१३)	१३	५५	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य भगवत्पूज्यपाद श्री रामानंद कृतांचेतन्यवनाय ··· ··· ॥
२८·८ × १३·५ सें० मी०	५०१ पू०–१-९६, (१०२-२७४) (उ०–१-२३२)	१४	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे काशी खंडेखरवोल्कगरुडेशयो वर्णनंनाम पंचाशत्तमोऽध्याय:॥ समाप्तोयंपूर्वार्द्धः ॥ (पृ०-२७४) + + + + + + इति श्री स्कंद पुराणे काशीखंडे अनुक्रमणिकानाम शततमोध्याय: ।(पृ०२३२)
३५ × १४·४ सें० मी०	१०९ (१–१०९)	१३	७०	अपू०	प्राचीन सं०१८१८	इति श्रीस्कंदपुराणे कुमारिका खंडे गुप्त क्षेत्रमाहात्म्यं ॥ + + + संवत् १८१८ समयनाम कातिक मासे सुकुल पक्षे एकादश्याम लिखतंग निहालचंदकाऐस्थं कै ॥
३०·५ × १४·३ सें० मी०	३० (२-१८,७५-७७)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री कूर्म्ये वैष्णखंडे पंचदश सहस्रयां द्वितीयभाग समाप्तं ॥ + + + + + + + + ॥
३२·६ × १६·६ सें० मी०	६५ (१–६५)	१२	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत शाहस्र्यां संहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि आपद्धर्म्मे कृतघ्नोपाख्यानं समाप्तम् ॥ आपद्धर्मः समाप्तः ॥ अतः परंमोक्षधर्मा: ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	४३४१	कृतघ्नोपाख्यान			दे॰ का॰	दे॰
२९	६०५	कृष्णजन्म			दे॰ का॰	दे॰
३०	४९९३	कृष्णमंत्रयुगलप्रकाशक (सनत्कुमार संहिता)			दे॰ का॰	दे॰
३१	३०४४	कृष्णामृत			दे॰ का॰	दे॰
३२	५८४८	केदारकल्प			दे॰ का॰	दे॰
३३	२१६६	क्रमसंदर्भ			दे॰ का॰	दे॰
३४	२४३०	क्रियायोगसार			दे॰ का॰	दे॰
३५	६२०५	गरुडपुराण			दे॰ का॰	दे॰

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५·७ × १३·३ सें० मी०	६४ (१-२०,२२-६५)	१०	६१	अपू०	प्राचीन सं०१७६३	इति श्री महाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासित्यां शांतिपर्वणि आप द्धर्मे कृतघ्नोपाख्यानं समाप्त ॥ ··· ··· संवत् १७६३ ··· ॥
२७·९ × ११·८ सें० मी०	८ (२–९)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२३ × १३·६ सें० मी०	३३	२३	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमारांवरीष संवादे श्री कृष्ण मंत्र युगल प्रकाशक: षट्त्रिंशत्पटल: समाप्त: ॥ श्री सनत्कुमार संहिता भाद्र पद शुक्ल पक्षे २ बुद्धवासरे ॥ संवतु ॥
३२·८ × १५·४ सें० मी०	१८	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १०·५ सें० मी०	११	१३	३३	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीकेदारकल्पे षष्ट: पटल: पृ० ६
२८·७ × १४·५ सें० मी०	४५ (१-२५, २५-४४)	१३	४५	पू०	प्राचीन	इति श्रीप्रथम क्रम संदर्भे एकोनविंश ··· संवत् १८४५ ॥
३२ × १५·२ सें० मी०	८६ (१–८६)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं०१८४२	इति श्री पद्मपुराणे क्रियायोगसारे व्यास जैमिनि संवादे षडविंशतितमोध्याये २६ ॥ समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८४२ फाल्गुण वदि रविवासरे षष्ठयां ॥
२८·५ × १४·५ सें० मी०	१० (२८–३७)	१५	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९३२	इति श्री गरुड़ पुराण पुस्तक समाप्तं सुभमस्तु: ॥ संवत् १९ वत्तिसके ३२ ॥ मितिद्रपद सुल्क ११ दसीसनौक: पुस्तक समाप्तं शुभमस्तु शुभूपात् × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	६१३१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
३७	२१७१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
३८	२१९९	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
३९	२३१४	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४०	२३२१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४१	१०३६	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४२	३८२५	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४३	३६७५	गरुडपुराण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × १५ सें० मी०	३२	१४	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे पिंडज देहोत्सर्गोनाम चतुर्थोध्यायः ४ …॥
३२·८ × १६·६ सें० मी०	४२ (१–४२)	१३	३५	पू०	प्राचीन	इति गरुड़पुराणेऽष्टा … संवत् १९४८ मार्गमासे कृष्णपक्षे … … ॥
३२ × १६·७ सें० मी०	५० (१-४९,५१)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
३०·९ × १३·२ सें० मी०	८	८	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गरुडपुराणे अष्टादशसहस्रां- संहितायां वैयाशिक्यां उत्तर खंडे विष्णु वैनतेय संवादे प्रेत कल्पे चतुस्त्रिंशो- ध्यायः ३४ शुभमस्तु ॥
२७·५ × १६·९ सें० मी०	७५	१२	३२	पू०	प्राचीन	
३५ × १३·२ सें० मी०	६३ (१-२८,३४-६८)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१९३६	इति श्रीगरुडपुराणे प्रेतखंडे शुभाशुभ- फलवैतरणी नाम चतुस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३४॥ … … संवत् १९३६ शाके शा- लिवाहनस्य १८०१ मासोत्तमे श्रावण- मासे शुक्लपक्षे त्रोदशायां वृहसपतवास- रेइदम् पुस्तक लिषितं मिश्रफकीरचंद- पठनार्थं … … श्री सरस्वत्यैनमः …
२७·६ × १२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे … … … (पृ० २)
२८ × १२ सें० मी०	४२ (४-८,११-४८)	१०	३३	अपू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री गरुणे प्रेत कल्पेपर्णाशरदाहो नार्मोष्टादशोध्यायः संवत् १८९५। वैशाख मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थ्यां शनि- वासरे लिखितं संपूर्णं … … ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४	३६७३	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४५	४५१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४६	७२५	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४७	२४४१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
४८	४००७	गरुडपुराण			दे०का०	दे०
४९	३३५८	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५०	३१८४	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५१	३१७६	गरुडपुराण			दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·५ × १५·३ सें० मी०	६१ (१–६१)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१६०९	इति गरुड़ पुराणे प्रेत कल्पे कृष्ण वैन-तेयोसंवादे वैतरिणी दान विधि कथनं नाम पंचत्रिंशोध्यायः ॥ ३५ ॥ श्री संवत् १९०९ शाके ... ॥
३१·२ × १४ सें० मी०	१६ (९–२४)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	
३४·२ × १५ सें० मी०	६६ (१–६६)	११	३९	पू०	प्राचीन सं०१९०६	इति श्री गरुड़पुराणे प्रेतकल्पे अष्टा-दशसाहस्र्यांसंहि तायां श्रीविष्णु-वैनतेयसंवादेत्रयःत्रिंशोध्यायः ३३ ॥
२९ × १४·५ सें० मी०	११ (२–१२)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२८·७ × १४·८ सें० मी०	५१	१२	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गरुड़ पुराणे प्रेतकल्पे मित्य-श्राद्धप्रकरणं नामश्चतुस्त्रिशोध्यायः ... ... (पृ० ५९)
३२·३ × ११.५ सें० मी०	७५ (१–७५)	१०	३६	पू० (जीर्ण)	प्राचीन सं०१९०६	इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे अष्टा-दश साहस्र्यसंहितायां उत्तरखंडे विष्णु वैनतेय संवादे वैतरणीकथनो नाम सप्तत्रिंशोध्यायः ॥ ३७ ॥ तत्रवर्षेमहा-मंगलमासे आसाढ मासे शुक्लपक्षे चतुर-दश्यां शुभतिथौ बुधवारान्वतायां: लिष्यत हेतरामसाद्रदपरौली मध्ये संवत् १९०६ मगलं लेखिकानांच पाठिकानांचमंगलं मंगलं सर्वलोकानां भूमे भूयति मंगलं ॥
२३·५ × १३·५ सें० मी०	६०	१८	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८५	इति श्री गरुड़ पुराणे अष्टादश सहस्रां-हितायां बैयासिक्यामुत्तरखण्डे प्रेतकल्पे विष्णुवैनतेय संवादे नाम चतुःत्रिंशो-ध्यायः ३४ अश्लोकशंख्या प्रमाणसार्द्ध-सहस्र सप्तचत्वांरीशत०शुभसंवत् १८८५
३१·१ × १३·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	१०५१	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५३	१७५२	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५४	१६७३	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५५	१८७३	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५६	४४०७	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५७	४३०८	गरुडपुराण			दे० का०	दे०
५८	१६६०	गरुडपुराण (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
५९	७२७	गरुडपुराण (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·७ × १५·७ सें० मी०	६० (१–६०)	११	३१	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री गरुड़पुराणे अक्षादृश सहस्र-संहितायां उत्तरखंडे "संवत् १८८८ महाषोत्तम् मासे आषाढ़ शुक्ला दशम्यां १० भौमवासरे लिखितं मिश्र कान्हन शुभं भूयात मंगलं ददात श्री।"
३४·६ × २०·६ सें० मी०	८ (१-५, ३१, ३२, ३४)	१६	४२	अपू०	प्राचीन सं० १६२१	इति श्री गरुड़पुराणे प्रेतकल्पे ... संवत् १६२१ अश्विनशुक्ल ॥१३॥ गुरुवासरे लिपिकृतं मिश्र गुलाबचंदेन खलोलो-वास्तव्य श्री मस्तु ॥
२३·२ × १०·४ सें० मी०	६१ (१–६१)	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्रीगरुडपुराणे प्रेतकल्पेशुभाशुभ-फलवैतरणीनामचतुस्त्रींशोध्यायः ३४ संवत् १८७५ मासोत्तम्मासे अश्विन-मासे कृष्णपक्षेशुभतिथौ द्वादश्याम् रवि-वासरे ... ... शुभमस्तुमंगलंददाति ॥
२८·७ × १३·८ सें० मी०	५७ (१–५७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८५२	इति श्री गरुड़पुराणे प्रेतकल्पे अष्टादश साहस्र संहितायां ... ...संवत् १८५२ वैशाष मासे कृष्णपक्षे ॥
३२·१ × १६ सें० मी०	८२ (१–८२)	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री गरुड़पुराणे प्रेतकल्पे श्रीकृष्ण गरुड़संवादे धर्मोपदेशो नाम चतुस्त्रिशो-ध्यायाः।३४॥ श्लोक सख्या १-माघ मासिसि पक्ष द्वितीयाशनिवासरे लिखितं बंधुराम सं० १८६७ ॥ रामकृष्ण – ॥
३३ × १२·७ सें० मी०	५७ (१–५७)	१०	३५	अपू०	प्राचीन सं० १९१३	इति श्री गरुड़पुराणे प्रेतकल्पे एकोन-विंशति साहस्र्यां संहितायां उत्तर खंडे विष्णु वैनतेयसंवादे पंचत्रिंशोध्यायः संवत् १९१३ अग्नि × × × ।
३१ × १४·२ सें० मी०	७९ (१–७९)			पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री गरूडपुराणसमाप्तः ॥ संवत् १९२६ वैशाख शुक्ला प्रतिपदा १ भौम दिने ॥... ... शुभंभूयात् ॥ ... ...
३१·५ × १६ सें० मी०	७५	१२	४२	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १९३७	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०	१२३३	गणेशगीतासार			दे० का०	दे०
६१	३३६८	गर्ग संहिता	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६२	२६६६	गर्ग संहिता	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६३	८१७	गर्ग संहिता	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६४	५५८०	गर्ग संहिता	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६५	२६५७	गर्गसंहिता (केदार खंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६६	२६६५	गर्ग संहिता (गिरिराजखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६७	४६६३	गर्गसंहिता (गिरिराजखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·८ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मदांत्येमोद्गलेमहापुराणे प्रथम खंडे वक्रतुंडचरित्रे गणेश गीतासार कथनं नाम षोडशोध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीगजान ॥
३५·२ × १८·८ सें० मी०	२२५	१७	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९१८	इति मथुराखंडे संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत् १९१८ पौष शुदि अष्टमी बुध बारे लिखितं कृष्णकोट मै । (पंचमखंड पत्र संख्या ४२) इति श्री मद्‌गर्गाचार्य संहितायां श्री विज्ञानखंडे व्यासोग्रसेन संवादे नवमोध्यायः (नवाँ अध्याय पृ० ७) ॥
३०·८ × १४·७ सें० मी०	९३ (१–९३)	१२	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्‌गर्गाचार्य संहितायां विश्व जित्खंडे श्री नारद बहुला ... ... संवत् १९८ ॥ हरिवंशलाल ... ... ॥
३०·३ × १२ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्री मद्‌गर्गाचार्य्य संहितायां माधुर्य्य खंडे श्री नारदबहुला ... संवत् १९०९ कार्तिक शुक्ला ३ रविवासरे लिखितं रामसरणं ग्रामपिनराणमध्ये खण्ड माधुर्य्यश्लोक ।
३३·६ × १६·५ सें० मी०	८	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १४·४ सें० मी०	६९ (१–६९)	१९	५३	अपू०	प्राचीन	
३२·३ × १५·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं०१८९९	इति श्री मद् गर्गाचार्य संहितायां श्री गिरि राज खंडे नारद बहुला ... संवत् १८९९ मार्ग सिरमासे कृष्णपक्षे एकादश्यांचंद वासरे ॥ हरिवंशलालेन विप्रेण लेषितं ... ... ।
३३·२ × १५·२ सें० मी०	१० (१-४,७,९, ११-१४)	१३	३९	अपू०	प्राचीन सं०१९३०	इति श्री गर्गा संहितायां गिरिराज खंडे नारद बहुलाश्व संवादे गिरिराज प्रभाव प्रस्ताव वर्णनो नाम सिद्ध मोक्ष ... संवत् १९३० शाके १७९५ फाल्गुण मासे ... ... ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८	२३६०	गर्ग संहिता (गोलोकखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
६९	२४०९	गर्ग संहिता (विज्ञानखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७०	२४०८	गर्ग संहिता (द्वारकाखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७१	२६७०	गर्ग संहिता (बलभद्रखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७२	२६७१	गर्ग संहिता (मथुराखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७३	२६७२	गर्ग संहिता (माधुर्य खंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७४	२३९२	गर्ग संहिता (वृंदावनखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७५	८१३	गर्ग संहिता (वृंद्रावनखंड)	गर्गाचार्य		दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३०·५ × १४·८ सें० मी०	४४ (१–४४)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीमद्गर्गाचार्य्य संहितायां श्री गोलोकखंडे श्री नारद बहुलाश्व संवादे भगवद्वैभववर्णनेदुर्वास सोमापादर्शने श्रीनंदनंदन स्तोत्र वर्णनंनाम विंशोध्याय: २० समाप्तं संवत १८६८ चैत्रमासेऽसिते पक्षे अष्टम्यां रविवासरे हरि वंसलालेनविप्रेण ···
३१ × १४·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	१३	४७	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीमद्गर्गाचार्य संहितायां विज्ञान खंडे श्री नारद बहुलाश्वसंवादोत्तर्गतव्योसोग्रसेनसंवादे परमब्रह्म निरूपणं नामदशमोध्याय: १० संवत् १८६८ मितिफाल्गुण ··· ।
३१ × १४·८ सें० मी०	३३ (१–३३)	१२	४५	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीमद्गर्गाचार्य संहितायां द्वारकाखंडे तृतीय दुर्गेपिडारक महात्म्ये यात्रामहात्म्य नामैक विंशोध्याय: २१ संवत् १८६८ पौषमासे ···
३१ × १४·५ सें० मी०	२४ (१–२४)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री मद्गर्गाचार्य्यसंहितायां श्री बलद्रखंडे प्राद्विपाक दुर्योधन संवादे सहस्रनाम वर्णनंनाम द्वादशोध्याय: १२ संवत् १८६६ फलगुणमे कृष्णपक्षे··· शुभराम ।
३१·३ × १४·७ सें० मी०	४६ (३–४८)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे मथुरा महात्म्यं नाम पंचविंशोध्याय: मथुराखंड समापत् संवत्१८६८ फाल्गुणमासेऽसितेपक्षेनवम्या शनिवाशरे···
३०·७ × १४·७ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्रीमद्गर्गाचार्य संहितायां श्री माधुर्यखंडे श्री नारद बहुलाश्व संवादे व्योमासुरारिष्टासुखधो नाम चतुर्विंशोध्याय: २४ संवत १८६६ जेष्टमासेऽसिते पक्षे··· ।
३१ × १५ सें० मी०	३६	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्रीमद्गर्गाचार्य संहितायां श्रीवृंदावन खंडे नारद बहलाश्व संवादेशंख चूडोपाख्याने नम, त्रयोविंशोध्याय: २३ सं० १८६६ ॥
२६·८ × १५·१ सें० मी०	३६ (३–३८)	११	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इतिश्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्री वृंदावनखंडे श्रीनारदबहुलाश्वसंवादे ··· सं०१८६८ शाके सालवाहनस्य ॥ वैशाखमासेकृष्णपक्षेतृतीयायां गुरुवासरे लिखितं पुस्तकं शुभं ॥ मिश्रकन्हैयालाल ॥ श्रीराम ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६	३३४	गर्ग संहिता (वृंदावनखंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७७	३०९	गर्ग संहिता (वृंदावन खंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७८	६०२	गर्ग संहिता (वृंदावन खंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
७९	५४९	गर्ग संहिता (वृंदावन खंड)	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
८०	३१९२	चतु:श्लोकी भागवत			दे० का०	दे०
८१	२५५२/५	चतु:श्लोकी भागवत			दे० का०	दे०
८२	२३९/१२	चतु:श्लोकी भागवत			दे० का०	दे०
८३	२३९/१२	चतु:श्लोकी महाभारत			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४ × १८.५ सें० मी०	३७ (१–३७)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं०१९४४	इति श्री मद्गर्गाचार्य्य संहितायां श्री वृंदावन खंडे श्रीनारदवहुलाश्वसंवादे शंखचूड़ोपाख्याने विरजानदी समुद्रोत्पत्ति श्रीदामाशापवर प्रस्तावो नाम-त्रिविंशोध्यायः २३ ॥ संवत् १९४४ शाके १८०९ चैत्रमासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां १४ रविवासरे लिषतं पुस्तकं मिश्रभीषमसेनस्य यादृशं पुस्तकं दृष्टा तादृशलिखतंमया यदि सुद्धम सुद्धंवा मम दोषो नदीयते शुभम् ॥
३२.५ × १२.५ सें० मी०	४१ (१–४१)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावन खण्डे नारदवहुलाश्व संवादे शंखचूडोपाख्यानो विरजा नदी समुद्रोत्पति श्रीदामा शापवर प्रस्तावोनाम त्रिविंशोध्यायः २३ संवत् १९०९ ॥
३३ × १६.३ सें० मी०	४१ (१–४१)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्रीमद्गर्गाचार्य्यसंहितायां श्रीवृंदावन खंडे श्रीनारदवहुलाश्व संवादे शंखचूडोपाख्याने विरजा नदी समुद्रोत्पत्ति श्री दामाशापवरप्रस्तावो नाम त्रिविंशो ध्यायः संवत् १९०८ शाके १७७२ चैत्रमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां ५ वुधवासरे ॥ गुशई हरिगुलाल लिखतं पुस्तकं शुभं ··नदीयते ॥ श्रीरामजी।
३१.७ × १३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	४२	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे श्रीनंदस नंद संवादे श्री वृंदावनागमनो योग वर्णानं।
११.८ × ६.१ सें० मी०	३ (१–३)	४	१६	अपू०	प्राचीन	इति भागवत चतुश्लोकी समाप्त सुभमस्तु ॥
१६.१ × ११ सें० मी०	(१½)	५	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भागवते महापुराने द्वतीय स्कंधे चतुःश्लोकी भागवत संपूर्न सुभमस्तु ॥
१६ × १०.५ सें० मी०	१ (५९)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री चतुश्लोकी भागवतं संपूर्णं ॥
१६ × १०.५ सें० मी० (सं०सू० ३-३)	१ (५८)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति महाभारत चतुश्लोकी संपूर्णं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	३६४५	चतुर्वर्गमोक्ष			दे० का०	दे०
८५	४४०९	जैमिनि पर्व (महाभारत)			दे० का०	दे०
८६	४५४२	जैमिनि अश्वमेध पर्व (महाभारत)			दे० का०	दे०
८७	६३०३	जैमिनिपुराण			दे० का०	दे०
८८	७८५९	दानधर्मोपाख्यान			दे० का०	दे०
८९	६३१०	दानरत्नोपाख्यान	हर्षकुंजरोपाध्याय		दे० का०	दे०
९०	२३४	देवीभागवत (सटीक)			दे० का०	दे०
९१	७७८३	धर्मयुधिष्ठिर संवाद			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंया	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·३ × ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन	
२६·५ × १३·८ सें० मी०	१४० (२३–६७, ११०-१३३, १३५,१३५-१६३)	१३	×	अपू०	प्राचीन	इति श्री जैमिनिये महाभारते आश्वमेधिके पर्वणि श्रवण फल कथंनं नामाष्टषष्टितमोध्याय: ॥ श्रीराधाकृष्णायनमः।
३० × १२·३ सें० मी०	२३३ (१–२३३)	११	३६	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इतिश्रीमहाभारते आश्वमेधिकेपर्वणि श्रवणफलसमाप्तिर्नामषट्षष्टितमोध्याय: ६६ शुभं लेखकपाठकयाः। संवत् १९०३ माघमासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ त्रयोदश्या गुरुवारान्वितायां लिखित मिश्रशिवकरणेदंपुस्तकं वहेडीग्राम मध्ये ॥ ... ...
३१ × १४·५ सें० मी०	१३२ (१–१३२)	१४	४४	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्री महाभारते जैमिनिकृते युधिष्ठिर यज्ञसमाप्तिर्नामाध्याय: ॥ ६६ ॥ शंवत् १८६० समै पुस सुदि ११ तिथौ भृगु वासरे ॥ ... ...
३५·७ × १४·१ सें० मी०	२१५ (१-४,६-२१९)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·६ सें० मी०	११ (१–११)	१९	६०	अपू०	प्राचीन	इति श्री खरतरगछालंकार श्री जिनहर्षसूरि विजय राज्ये श्री जयकीर्ति माहोपाध्याय शिष्य श्री हर्ष कुंजरोपाध्याय बिरचिते दानरत्नोपाख्याने सुभित्र चरित्रे मूर्छापगमराजपट्टाभिषेक स्वकुलक्रमायातमूलराज्यपालनवर्णनो नाम द्वितीय प्रस्ताव: ॥ (पृ० ८)
२७·५ × ११·७ सें० मी०	७ (१–७)	११	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीदेवीभागवततिलके द्वादशस्कंधेषष्टाध्याय: पंचपचांशदधिकैः शतश्लोकैरतः पर॥
१६ × ९·२ सें० मी०	२१ (१-१८,२०-२२)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ईतिहासपुराणेधर्म्म युधिष्टिर संवादे अश्वमेध्यधर्म्मचांडालश्वयमुक्ति नामधर्म्मसंवादे संपूर्ण ॥ ... संवत् ॥ १९५७ ॥ ...

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६०७३	धर्मयुधिष्ठिर संवाद			दे० का०	दे०
६३	७८७०	नंदिकेश्वरपुराण (केदारकल्प)			दे० का०	दे०
६४	२४०१	नंदिकेश्वरपुराण			दे० का०	दे०
६५	५८४१	नामविरुदावली	किशोरी अली		दे० का०	दे०
६६	१०८८	नारदपुराण			दे० का०	दे०
६७	४५२०	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
६८	२२६८	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
६९	१९९८	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × १२·३ सें० मी०	१३ (१-६,१२-२५)	११	३४	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री महाभारते यज्ञपर्वणि धर्म्म युधिर संवादे चतुर्थोध्यायः ॥४॥ संवत् १८३४ वर्षे शाके १६९९ प्रवर्त्तमाने-नुत्तरायणगते श्री सूर्ये शशिऋतौ मासोत्तममासे फाल्गुणमासे कृष्णपक्षे तिथौन् शनिवासरे लिषितं जोसीषीमरामः…।
३२·५ × १२·८ सें० मी	७७ (१–७७)	६	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणे केदारकल्पे अष्टाविशति पटलः २८ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वातादृशं लिषितं मया यदिशुद्धमशुद्धंवा ममदोषोनदीयते संवत् १८६५ मार्गशी कृष्णाद्वादशी लिखितं × ×
३१·४ × १४·१ सें० मी०	५४ (१–५४)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणे… संवत् १९१९ शाके १७८४ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे लिखितं मिश्र हरिवंसलाल … ॥
२२·५ × १०·८ सें० मी०	२० (१–२०)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नाम विरदावली किशोरी अली कृत समाप्ता… ॥
२४ × १३ सें० मी०	३५	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ११ सें० मी०	३८	१२	१६	अपू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन सं०१८३८	इति नाशिकेत पुराणे नर्कधर्म विवेक नाम अष्टदशोध्यायः ॥१८॥ …संवत् १८३८ तत्रवर्षे पौष स्वदि पंचमी … ॥
३५·२ × १७·३ सें० मी०	२१	१६	४२	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × १६.६ सें० मी०	४८ (१–४८)	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१९२७	इति श्री महाभारथे नासिकेतोपाख्याय-नेशुभाशुभ कृतजन्मनो नामाष्टादशोऽध्याय ॥ संवत् १९२७ मिति ज्येष्ट शुक्ल पंचम्यां … … ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००	२१८१	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०१	४५६९	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०२	८६१	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०३	७८६	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०४	२६०	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०५	७३३	नासिकेतोपाख्यान			मि० का०	दे०
१०६	२६१४	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०७	३२०९	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·८ × १२·३ सें० मी०	२५ (५-६,१०-११, १३,१४,१६ -३४)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
३४·८ × १३·४ सें० मी०	७ (११-१७)	१२	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री नासिकेतोपाख्याने दशमोध्यायः ॥ (पृ० १७)
१६·२ × १३·२ सें० मी०	१६	१५	२३	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १३·५ सें० मी०	२९ (१-२९)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नाशिकेतोपाख्याने विशेषवर्णन नामाष्टम सोध्यायः १८ सं० १८७० साके १७३५ बिलेषि रघुवर विप्र पुस्तकम् ॥
३० × १४ सें० मी०	१० (२६-३५)	११	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८७३	इति श्री नासिकेतोपाख्यानने अष्टदशो अध्याय ॥ १८ ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु ॥ श्री संवत् १८७३ तत्र वर्षे महामाल्य मासोत्तमे मासे चैत्र मासे कृस्न पक्षे पुण्यतिथी त्रयोदश्यायां वार शनिश्चवा शांति तायां ॥ लिखितं मिश्र रघुनाथपुत्रधीर्यरामनवग्रहवहिमध्ये ॥
३२ × १४·४ सें० मी०	३३ (१-३३)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री नासिकेतोपाख्याने यमनारदे नाम सप्तदशोध्यायः······पुस्तकंदृष्टा तादृशं लिखतं मया यदि शुद्धमशुद्धंवा ममदोषोन दीयते स्वयं पठनार्थ ॥
२७ × १३·५ सें० मी०	४४ (१-४४)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इतिश्रीमहाभारथेनासिकेतोपाख्याने शुभाशुभकृतजन्मनोनामाष्टदशोध्यायः ॥ १८ ॥ अथ शुभसंवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपति विक्रमादित्य राज्ये संवत् १८५५ तत्रवर्षेमासोत्तममासे पौषमासे ···श्री गणेशयनमः ॥
२३ × १२·३ सें० मी०	१४ (१-१४)	१२	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री नासिकेतोपाख्याने उद्दालक चिंता वर्णनं नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ (पत्र सं० ४ से)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	१११८	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१०९	४१६२	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
११०	४२०५	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
१११	४४२१	नासिकेतोपाख्यान			मि० का०	दे०
११२	४३०६	नासिकेतोपाख्यान			दे० का०	दे०
११३	५९२७	पतिव्रताचरितम्			दे० का०	दे०
११४	१०४	पद्मपुराण			दे० का०	दे०
११५	४७६९	पद्मपुराण (पूर्वार्द्ध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३२·१ × १२·७ सें० मी०	३० (१–३०)	१४	३८	पू०	सं० १९३८	इति श्रीनासिकेतोपाख्याने शुभाशुभकृत-जन्म नामाष्टादशोऽध्यायः ।। श्रीसंवत् १९३८ मि० फा० व० १५ ॥ फालगुने कृष्ण शुक्लपक्षे चपुरनवास्यां सनिवासरे लिखितं फकिरचन्द्रेण पुस्त कं शुभदायकः ॥
३२·७ × १५·४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१३	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्रीवाराहपुराणे नासिकेतोपाख्यानेऽष्टादसमोध्यायः····संवत् १८४२ साके १७०७ मासोत्तमे मासे आसुन सुदी १५।
३४·५ × १३ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री नासिकेतोपाख्याने धर्मराजदर्शन नाम पंचमोध्याय ॥ × × × × × ॥
३३·८ × १६·९ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते बैशंपायन जन्मेजयसंवादे नाशिकेतोपाख्यायने उद्दालक चिंतननाम प्रथमोऽध्यायः ।। (पृ० ४)
३३·३ × १२·३ सें० मी०	३५ (१–३५)	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री नासिकेतो पाख्यानेऽष्टादशोध्यायः १८ संवत् १९११ माघ मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यांबुधः वासरे लिषितं दत्त रामेण करोदाग्रामवासीने १ शुभंभूयात् मंगलं ददातु । शिवायनमः शंकरायनमोनमः राम ।।
२७·५ × ९·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे काशीखंडे चतुर्थाध्यायांतर्गत पतिव्रताचरितम् सामप्तम्।।
२५.५ × १२·५ सें० मी०	५८ (१-१६,१८, २०-५७,५९, ६०)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
३२·८ × १५·२ सें० मी०	३०१	१२	५९	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे शृष्टि खंडे । (पृ० ३२१)
सं०सू० ३-४)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६	४८५७	पद्मपुराण			दे० का०	दे०
११७	३०५७	पद्मपुराण			दे० का०	दे०
११८	१७८६	पद्मपुराण (उत्तरखंड)			दे० का०	दे०
११९	१६६२	पद्मपुराण (पातालखंड)			दे० का०	दे०
१२०	२६७६	पद्मपुराण (अश्वमेधसमाप्ति)			दे० का०	दे०
१२१	२६७३	पद्मपुराण (ब्रह्मोत्तरखंड)			दे० का०	दे०
१२२	७४२५	पुराणाख्यान			दे० का०	दे०
१२३	७५८२	वृहदुपाख्यान			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४ × १५·४ सें० मी०	१८४	१२	६०	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पुराणे भूमिखंडे वैष्णो पा० (पृ० १७४)
१९·७ × ८·२ सें० मी०	३२	७	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणं शुभमस्तु······ ॥
२१·६ × ९·८ सें० मी०	२० (१–२०)	९	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५८	ओंतत्स पद्मपुराणे उत्तरखंडे कृष्ण मार्कंडेय संवादे एकोनत्रिंशतितमोध्याय: ॐ नम: शिवाय ॥ संवत् १८५८ पौषे वद्यंद्वितीय भौमवासरे लिखितं काश्यांमणिकर्णिकाघाटे आपाभट महाराष्ट्रेण लेखनीयं ॥ शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥
३१·४ × १५·६ सें० मी०	२ (१–२)	१५	४५	पू०	प्राचीन	इति पाद्मे पातालखंडेवर्ण प्रतिलोमा जारजात विविध ज्ञाति निर्णय: ॥ शुभमस्तु ॥
३०·५ × १४·७ सें० मी०	१०० (७६–१७५)	१२	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे शेषवात्स्यायन संवादे अश्वमेध समाप्तिर्नाम अष्टषष्टितमोध्याय: ६८ संवत् १८८७ माघमासे कृष्णपक्षे शुभतिथ्यौ ॥
२९·९ × १४·३ सें० मी०	६७ (१–६७)	११	४८	अपू०	प्राचीन	
३०·७ × १६·२ सें० मी०	९	१७	५३	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११ सें मी०	२३ (१–२३)	११	४३	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री नारदीय पुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने चतुर्थपादेध्याय: १०९ संवत् १९०९ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	३०३०	ब्रह्मवैवर्त पुराण			दे० का०	दे०
१२५	३०२२	ब्रह्मवैवर्त पुराण			दे० का०	दे०
१२६	७४४०	ब्रह्मवैवर्त पुराण (कृष्णजन्म खंड)			दे० का०	दे०
१२७	४२६३	ब्रह्मवैवर्त पुराण (गणपतिखंड)			दे० का०	दे०
१२८	१८२४	ब्रह्मवैवर्त पुराण (ब्रह्मजन्मखंड)			दे० का०	दे०
१२९	१७८७	ब्रह्मवैवर्त पुराण			दे० का०	दे०
१३०	४५०८	ब्रह्मवैवर्त पुराण (ब्रह्मखंड)			दे० का०	दे०
१३१	४१२६	ब्रह्मवैवर्त पुराण (कृष्णखंड)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·५ × १६ सें० मी०	६६	१४	४४	अपू०	प्राचीन	
३१·५ × १५·५ सें० मी०	५ (१–५)	१५	४६	अपू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·६ सें० मी०	११५	१४	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्तमहापुराणे श्री कृष्ण जन्मखंडे शुलशौनक शंवादे नाम द्वात्रिंशत्यधिकशतकाध्यायः ।। + + + + श्री शंवत्। १६१७ । शना १२६८ । + +
३२·८ × १५ सें० मी०	५२ (१–५२)	१६	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणेनारायण नारद संवादे गणपतिखंडे कैलाशवर्णनं नामऐकचत्वरिंशोध्यायः ।।४१।। × × (पृ० सं० ५०)
३४ × १५·३ सें० मी०	२६६ (१–४४, ८१–३०१)	१४	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे श्रीकृष्ण जन्मखंडे अष्टादश सहश्र संहितायां सूत गमनं नाम द्वात्रिशदधिकं शततमोध्यायः १३२ संवत् १८७१ शाके १७३६ सावुन सुदि १४ रविवासरेतदिन पोथी संपूर्णभई ।
३४ × १५ सें० मी०	२०५ (१६ से ३५६ तक स्फुटपत्र)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १५·३ सें० मी०	३६ (१–३६)	१७	५२	अपू० (खंडित)	प्राचीन सं० १८६१	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे ब्रह्मखंडे नारायणनारद संवादे ब्रह्मप्रशंसा-प्रसंगे त्रिशत्तमोध्यायः ३० समाप्तश्चायं ब्रह्मखंडः चैत्रवृदि पंचमी वुधे संवत १८६१ तादिनपूर्ण ।
३१·६ × १५·६ सें० मी०	४२८ (६ से ५६४ तक स्फुटपत्र)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे श्रीकृष्ण जन्मखंडे नारायण नारद संवादे राधा यशोदासंवादे एकादश शततमोऽध्यायः।। (पृ० ४६४)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३२	७६७७	ब्रह्मवैवर्त पुराण (गणेशखंड)			दे० का०	दे०
१३३	५६६६	ब्रह्मवैवर्तपुराण			दे० का०	दे०
१३४	५६४१	ब्रह्मवैवर्त पुराण (ब्रह्मखंड)			दे० का०	दे०
१३५	५६४४	ब्रह्मवैवर्तपुराण (गणपतिखंड)			दे० का०	दे०
१३६	४६५१	ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्णजन्म खंड)			दे० का०	दे०
१३७	५०१	ब्रह्मवैवर्तपुराण			दे० का०	दे०
१३८	३३८२	ब्रह्मोत्तर खंड			दे० का०	दे०
१३९	६२०४	भागवतचूर्णिका (टीका)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
३४·४ × १७·६ सें० मी०	७८ (१–७८)	१३	४०	पू०	प्राचीन सं०१६०४	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे गणपतिखंडं पंचत्वारिंशत्तमोध्यायः ॥ ४५ ॥ इति गणपतिखंड समाप्तं ॥ शुभंभूयात् ॥ शमत १६०४ श्रावणस्यसीतेपक्षे अष्टम्यां गुरुवासरे ··· ॥
३२ × १२ सें० मी०	५४८ (१–५४८)	१३	४४	अपू०	प्राचीन सं०१८८४	इति श्री ब्रंह्मवैवर्ते महापुराने प्रकृतखंडे नारायण नारद संवादे काल काली स्वर निरूपन नाम षष्टमोध्यायः ··· (पृ० सं० २३, प्रकृतिखंड) ··· (सं० १८८४ पृ० सं० ६७ गणेशखंड) ॥
२३ × १५·५ सें० मी०	६० (१–६०)	११	४६	पू०	प्राचीन सं०१८४५	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे ब्रह्म खण्डे नारायण नारद संवादे नामत्रिशतितममोध्यायः······संवत् १८४५ ॥
३३ × १५·५ सें० मी०	४६ (१ से १३३ तक स्फुट पत्र)	१३	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे गणपति खंडे द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ (पृ० सं० ३)
३१·२ × १२·७ सें० मी०	६ (१–६)	६	४४	अपू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्रीब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे श्री कृष्ण जन्मखंडे प्रतिव्रत लक्षणकथनं नाम···संवत् १८६२ शाके १७२६ मा० वैशाख कृष्ण···१३॥
३४ × १५ सें० मी०	१६ (११०-११३, ३४,३५)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे प्रकृति खंडे दुर्गोपाख्याने दुर्गा स्तोत्रं नाम त्रिषष्टितमोध्यायः ॥
२७·५ × १७·२ सें० मी०	६६ (१–६६)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे रुद्राध्याय महिमानुवर्णननामैकविंशोध्यायः × × (पृ० ६७)
३४·७ × १७·७ सें० मी०	३०२	१४	४६	पू०	प्राचीन सं०१६२२	इति श्री भागवते महापुराणे अष्टादश सहस्रसंहितायां वैय्यासिक्यां द्वादशस्कंधे सूत शौनक संवादे त्रयोदशोध्यायः ॥१३॥ द्वादश स्कंधः संपूर्णः १२ ॥ शुभंभवतु ॥ × × संवत् १६२२ वैशाख शुक्ल ११ मंद वासरे इदं पुस्तकं संपूर्णं जातं × × ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	३३७१	भागवत (१–१२ स्कंध-भावार्थ-दीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१४१	२४१५	भागवत (१-१२स्कंध)			दे० का०	दे०
१४२	५२६४	भागवत (१से १२ स्कंध-सटीक)			दे० का०	दे०
१४३	५६५५	भागवत (१-१२स्कंध)			दे० का०	दे०
१४४	५७८	भागवत (१-१२स्कंध, भावार्थदीपिका सहित)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१४५	५६६१	भागवत (१-१०,१२वाँ स्कंध, भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१४६	४४३९	भागवत–प्रथमस्कंध (भावार्थदीपिका)		श्रीधर	दे० का०	दे०
१४७	२००	भागवत-प्रथमस्कंध (भावार्थदीपिका)	व्यासः	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.५ × १४.७ सें० मी०	१११६	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामिविरचितायां द्वादशेत्रयोदशः॥
२५ × १५.७ सें० मी०	६७१	१४	३८	पू०	प्राचीन	इ। श्री॥ गते॰॰॰रा॥ द्वा श धे वृतोक्ते त्रयोदशोध्यायः॥ शुभंभवतु॥ समाप्तोय द्वादस्कंध॥॰॰॰
३३.३ × १६.५ सें० मी०	११६१ (भागवत-माहात्म्य से द्वादशस्कंध तक स्फुट पत्र)	१२	४८	अपू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री भागवते महापुराणे प्रथम स्कंधेष्टादशसाहस्रया संहितायां पारमहंस्यां शुकागमनंनामैकोनविंशोध्यायः + + संवत् १९०३ लिखतं पं श्री चौवेनन्है॥ मुकाम टीकमगडमध्ये॥
३२ × १६.९ सें० मी०	२०० (१-१२स्कंध तक स्फुट पत्र)	११	३७	अपू०	प्राचीन सं०१९१२ १३, २९, ३१, ३३	इति श्री भद्भागवते एकादशस्कंधे कथा न के एक त्रिंशप्तमोध्यायः॥ संवत् १९३१ आषाढ़ शुक्ल १२ रवौ लिखितं पं श्री नायक राम गोपालेन॥
३३.५ × १५.८ सें० मी०	१४५८ (प्रारंभ से अंतिम स्कंध तक स्फुट पत्र)	११	४८	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्री भागवते महापुराणेपारमहंस्यां संहितायां वैयासिक्यां श्रीधर स्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां टीकायां द्वादशस्कंधे पुराण संख्यावर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः १३॥
३३.३ × १७.४ सें० मी०	९९०	१३	४५	अपू०	प्राचीन सं०१९०१ २,३ एवं १९०५	इति श्रीभागवते भावार्थ दीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां द्वादश स्कंधे त्रयोदशोध्यायः॥१३॥ संवत् १९०५ फागुन वदि॥१॥ लिष्यतं पं० श्रीचौवे गंगाराम॥
३१.७ × १७.३ सें० मी०	२४ (१–२४)	१४	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते भावार्थ दीपिकायां प्रथम स्कंधे चतुर्थोध्यायः॥४॥ (पत्रसंख्या २०) × × ×
३१.८ × १३.७ सें० मी०	६७ (१–६७)	१४	५३	पू०	प्राचीन सं०१८०६	इति भावार्थ दीपिकायां प्रथम स्कंधे एकोनविंशोध्यायः॰॰॰ ॰॰॰ इति प्रथमस्कंधः समाप्तः संवत् १८०६ श्रावण शुक्ल भौम वासरे लिखितं भीष्मदेव काकोपनाम केन स्वार्थं परार्थं च श्रीर॥

(सं०सू० ३-५)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	६३	भागवत (प्रथमस्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)	व्यास जी	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१४९	५५०	भागवत (प्रथमस्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१५०	२०८३	भागवत (प्रथमस्कंध) (सारार्थदर्शिनी टीका)		विश्वनाथ चक्रवर्ती	दे० का०	दे०
१५१	५३७२	भागवत (प्रथमस्कंध) (सटीक)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१५२	३०९७	भागवत (प्रथमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१५३	२८९	भागवत (प्रथमस्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)	व्यास जी	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१५४	३६२०	भागवत (प्रथमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामि	दे० का०	दे०
१५५	३६२१	भागवत (प्रथमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ११ सें० मी०	७२ (६ से ७९ तक स्फुट पत्र)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभाग······पुराणे प्रथम स्कंधे शुकागमनं नाम एकोनविंशोध्यायः ॥
३२ × १६ सें० मी०	८९ (१-२२,२४-९०)	१२	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८६९	इति श्री भागवते भावार्थ दीपिकायां एकोनविंशतिमोध्याय: १९ प्रथमस्कंध संपूर्ण संवत् १८६९ लिखितं चित्रकूट शुभस्थाने श्रीकृष्णप्रशाद ब्राह्मणेन-लिखितं शुभमस्तु मद गयंद स्याने निकटः समीपः कृष्ण जी ॥
३२ × १६ सें० मी०	७६ (१–७६)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमहामहोपाध्याय श्रीमहाशय श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ति कृता श्री भागवत सारार्थ दर्शिनी प्रथम स्कंधे टीका-समाप्तः ३५१ संख्यायां ······।
३३ × १८ सें० मी०	९८ (१-५३,५५-९९)	१३	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते प्रथम स्कंधे श्रीधर स्वामि टीका भावार्थदीपकायांमेकोन-विंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥
३२·९ × १६·६ स० मी०	७४ (१२–८५)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	
३२ × १५·४ सें० मी०	७९ (१-५,७-८०)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	प्रथमस्कंध गूढार्थ पद भावार्थ दीपिका सज्जिरुद्दीपनीयेयं य···दीपिका ॥ इति श्री भागवत भावार्थ दीपिकायां प्रथम स्कंधे एकोनविंशोध्यायः ॥
३३ × १६·८ सें० मी०	३५ (४१-५९,६५-८०)	१३	४८	अपू०	प्राचीन	इति भावार्थ दीपिकायां प्रथमस्कंधे एकोनविंशोध्याय: ॥ १९ ॥ ··· ··· शुभमस्तु ॥
३२·२ × १६·४ सें० मी०	८२ (१–८२)	१३	३९	पू०	प्राचीन	इतिश्रीभागवतेमहापुराणे प्रथम-स्कंधेशुकागमनंनाम एकोनविंशोध्यायः १९ ॥ × × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५६	७४०३	भागवत (प्रथमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१५७	५७१०	भागवत (प्रथमस्कंध)			दे० का०	दे०
१५८	५६९९	भागवत (प्रथमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१५९	१९९४	भागवत (प्रथमस्कंध)			दे० का०	दे०
१६०	५०५	भागवत (प्रथमस्कंध)			दे० का०	दे०
१६१	५३९६	भागवत (प्रथमस्कंध)			दे० का०	दे०
१६२	५२९	भागवत (द्वितीयस्कंध)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१६३	२३८	भागवत (द्वितीयस्कंध) (भावार्थ दीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५ × १३ सें० मी०	७७ (१-१०,१३-४६,४८-८०)	८	६२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे शुकागमनंकोन विंशोध्यायः ॥
३६·३ × १६ सें० मी०	७६	६	३१	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
३३·३ × १७ सें० मी०	८६ (१–८६)	१३	४३	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति प्रथमे एकोनविंशोध्यायः ॥१९॥ शुभमस्तु ॥ संमत् १८८६ ॥ •••
३२ × १६·२ सें० मी०	३१ (१६-४४, ५१-५२,)	१४	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतेमहापुराणे प्रथमस्कंधे-एकादशोध्यायः ॥ ११······
३४·३ × १७·७ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३३·१ × १४·५ सें० मी०	३९ (२–४०)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे शुकागमनोनाम एकोनविंशोध्यायः १९··· •••
३१·७ × १५·९ सें० मी०	४४ (१–४४)	१२	४८	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री भागवते महापुराणे भागवत टीकायां श्रीधरस्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां द्वितीय स्कंधे दशमोध्यायः ॥ ··· •• लिखितं कृष्ण प्रशाद व्राह्मणेन संवत् ॥ १८६८ ॥ राम
३१·५ × १६·२ सें० मी०	३३ (१–३३)	१६	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवत टीकायां श्रीधर स्वामी विरंचितायां भावार्थ दीपिकायां द्वितीय स्कंधे दशमोध्यायः समाप्तः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	११२८	भागवत (द्वितीयस्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
१६५	२७७८	भागवत (द्वितीय स्कंध)			दे० का०	दे०
१६६	६२२७	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)			दे० का०	दे०
१६७	५९६८/२	भागवत (द्वितीय स्कंध) (चतुश्लोकी भागवत)			दे० का०	दे०
१६८	८०	भागवत (द्वितीय स्कंध)	व्यास जी		दे० का०	दे०
१६९	५७११	भागवत (द्वितीय स्कंध)			दे० का०	दे०
१७०	५७०८	भागवत (द्वितीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१७१	२१५९	भागवत (द्वितीय स्कंध) (चंद्रिकाटीका)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·५ × १५·७ सें० मी०	१२	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवतेभावार्थदीपिकायां द्वितीयस्कंधेदशमोध्याय: ॥ ··· ···
३१·७ × १६·६ सें० मी०	६० (१–६०)	१४	४८	पू०	प्राचीन	श्री राधिकेशस्यपद सेवाधिकारिणा ··· ··· दशमाध्यायमाश्रिता ॥
३०·८ × १६·१ सें० मी०	४३ (१–४३)	१५	४६	पू०	प्राचीन सं० १८१७	इतिश्रीभागवते भावऽर्थदीपिकायां द्वितीये स्कंधे दशमोऽध्याय: १० समाप्त: संवत १८१७ तत्र वर्खे कातिक मासे शुक्ले पक्षे तिथि नवम्यां सोमवाश्रे···
१९·२ × ११·३ सें० मी०	१	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधे श्री भगवद्ब्रह्मसंवादे चतुश्लोकी भागवत संपूर्णम् ॥
३३·५ × १४·४ सें० मी०	४३	९	५८	अपू०	प्राचीन	
३६·३ × १६·२ सें० मी०	२५	६	३२	अपू० (जीर्ण शीर्ण)	प्राचीन	
३३·५ × १७·१ सें० मी०	५० (१–५०)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे अष्टादश साह स्त्र्यां संहितायां द्वितीयस्कंधे दशमोध्याय: ॥
४०·३ × १५·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	५४	पू०	प्राचीन सं० १८९४	इति चैतन्य मत चंद्रिकायां द्वितीयस्कंधेदशमोध्याय: समाप्तम् ॥ ··· संवत् १८९४ के० ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१७२	१९२३	भागवत (द्वितीय स्कंध) (संस्कृतटीका सहित)			दे० का०	दे०
१७३	१९२७	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)			दे० का०	दे०
१७४	३८६८	भागवत (द्वितीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१७५	७६७	भागवत (द्वितीय स्कंध) (१-२ अध्याय संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१७६	३४३	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१७७	५८७	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१७८	३६२१	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिक)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१७९	७३६६	भागवत (द्वितीय स्कंध) (सटीक)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ × १५.९ सें० मी०	३९ (३–४२)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	
३४.३ × १६.७ सें० मी०	४१ (१–४१)	१४	४७	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति भावार्थ दीपिकायां द्वितीय स्कंधे दशमोध्यायः··· ···संवत् १९०९ ॥
३५ × १७.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	५०	पू०	प्राचीन	
२४.५ × १५.५ सें० मी०	११ (१-११)	१४	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीयखंडे द्वितीयोध्यायः
३५.८ × १३.७ सें० मी०	४३ (१–४३)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवत टीकायां श्रीधरस्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां द्वितीय स्कंधे दशमोध्यायः ॥ श्रीमद्भागवतं ··· मया हि स्वीय बोधा कृतमे तन्नसर्वतः ४॥
३० × १६.५ सें० मी०	४३ (१–४३)	१५	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीय-स्कंधे दशमोध्यायः श्रीमत्परमानंद से वि-श्रीधरस्वामि विरचितायां भावार्थ दीपिकायां ॥ श्रीमद्भागवतं येनस्वब्रह्म मुखतो मतं ॥··· ··· ···
३३ × १६.४ सें० मी०	४३ (१–४३)	१२	५५	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते टीकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां भावार्थदीपिकायां द्वितीय-स्कंधेदशमोध्यायः ॥१० ··· शुभंभूयात् ॥
३४.६ × १३ सें० मी०	४१ (१-२५, २८-४३)	११	५५	अपू०	प्राचीन	श्रीभागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधे × × × इति द्वितीयेव्यासाक्षायां श्रीधर-स्वामिविरचितायां दशमोध्यायः ॥ श्री रामचंद्र ॥

(सं०सू० ३-६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	५३९७	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)		श्रीधर	दे० का०	दे०
१८१	५२४४	भागवत (द्वितीयस्कंध)			दे० का०	दे०
१८२	५३७३	भागवत (द्वितीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१८३	८७८	भागवत (द्वितीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
१८४	५०६	भागवत (तृतीयस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१८५	६२५८	भागवत (तृतीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
१८६	१४३७	भागवत (तृतीयस्कंध)			दे० का०	दे०
१८७	३५२५	भागवत (तृतीयस्कंध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १४·२ सें० मी०	४३	१५	३८	पू०	प्राचीन सं०१८७२	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीय स्कंधे शुक परीक्ष संवाद दशमोध्यायः समाप्त १० समाप्तोयं द्वितीय स्कंधः ॥
२७·१ × ११·४ सें० मी०	४५ (३–८,१०–४४,४६-४९)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीभागवतेमहापुराणे द्वितीय-स्कंधे पुरुष सूक्त कथनेषष्ठोध्यायः ॥ (पृ० संख्या ३७)
३२.८ × १७.३ सें० मी०	४२ (१–४२)	१६	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे पारम-हंस्यां संहितायां वैयासिक्यां द्वितीय स्कंधे दसलछणकथनं दशमोध्यायः ॥ १० ॥ × × ×
३६ × १७·५ सें० मी०	४३ (१–४३)	१४	४५	पू०	प्राचीन सं०१८५९	इति श्रीभागवतटीकायां श्रीधर स्वामिविरचितायां भावार्थ दीपिकायां द्वितीयस्कधे दशमोध्यायः ॥ ··· ··· लिखितं श्री तिवारी सवनराम संवत् १८५९ श्रावणशुक्ल तृतीयायां ३ ।···
३०.५ × १६·३ सें० मी०	८८ (१–८८)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
३२.८ × १६·६ सें० मी०	१३८ (१–१३८)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भावार्थ दीपिकायां तृतीयस्कंधे नामत्रयत्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥ लिषा फेकूसींहअवाक ब्राह्मणः ॥ शुभमस्तुः ॥
२०·६ × १०·७ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति भागवते तृ० अ० क० दे० सं० भ० ध्या ॥
३०·९ × १६·७ सें० मी०	५ (१,१०,१२-१४)	१८	५१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८८	५५८	भागवत (तृतीयस्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१८९	६१२६	भागवत (तृतीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१९०	६१७१	भागवत (तृतीय स्कंध)			दे० का०	दे०
१९१	२०४	भागवत (तृतीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१९२	१७०	भागवत (तृतीय स्कंध)	व्यासजी		दे० का०	दे०
१९३	९१	भागवत (तृतीय स्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)	व्यास जी	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१९४	३३५६	भागवत (तृतीय स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
१९५	१९४९	भागवत (तृतीयस्कंध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·२ × १५·५ सें० मी०	११८ (१–११८)	१२	५१	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे कापिलेयोपाख्याने त्रयस्त्रिशोध्याय: ।। ३३।। श्रीकृष्णप्रशादविद्यार्थी लिखितं ।। श्रीमतेरामानुजायनम: सं॰ १८६६ ।। ···इति श्रीभागवते तृतीयस्कंधे भावार्थदीपिकायस्त्रयस्त्रिशोध्याय: ।। ३३ ।।
३०·३ × १५·१ सें० मी०	८५ (१–८५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे षोडशोध्याय: ।।१६।। ··· (पृ० ८४)
२७·५ × १२ सें० मी०	२० (१-३,७-२२)	६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे तृतीयोध्याय: ३ व्यासउवाच ।। (पृ० ७)
३६·१ × १५·५ सें० मी०	११८ (१–११८)	१२	५४	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे कपिलये त्रयस्त्रिशत्तमोध्याय: ।। इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामी विरचितायां त्रयशस्त्रिशोध्याय: ।।
३३·५ × १७·२ सें० मी०	२४	१७	३७	अपू०	प्राचीन	
३३·८ × १४·६ सें० मी०	११८ (१–११८)	१६	६४	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे श्रीधर स्वामि विरचितायां भावार्थदीपिकायां तृतीयस्कंधे त्रयस्त्रिंशत्तमोध्याय ।।३३।।
३२·८ × १६·१ सें० मी०	११८ (१–११८)	१२	५२	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे तृतीयस्कधे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां त्रयस्त्रिंशत्तमोध्याय: ३३।।
३३ × १७ सें० मी०	६६ (२५-८६)	१७	५४	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९६	५३८३	भागवत (तृतीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१९७	४७९१	भागवत (तृतीय स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१९८	५३९१	भागवत (चतुर्थ स्कध) (सटीक)			दे० का०	दे०
१९९	६२८३	भागवत (चतुर्थ स्कंध)			दे० का०	दे०
२००	२७७६	भागवत (चतुर्थ स्कंध)			दे० का०	दे०
२०१	३३५३	भागवत (चतुर्थ स्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
२०२	१००	भागवत (चतुर्थ स्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास जी		दे० का०	दे०
२०३	७६	भागवत (चतुर्थस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास जी		दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३७·५ × १४·९ सें० मी०	११५ (१–११५)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतते महापुराणे तृतीय स्कंधे द्वात्रिशत्तमोध्याय: ॥ (पृ० संख्या ११३)
३८·८ × १५·८ सें० मी०	२७ (१–२७)	१२	६३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे तृतीय स्कंधेऽष्टमोध्याय: ८ ॥ (पृ० संख्या २३)
३४·६ × १८ सें० मी०	९७ (१–९७)	१४	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थ स्कंधे प्रवेतसोपाख्यानं नाम एकत्रिंशोऽध्याय: ॥ ··· ···
३२·७ × १६·१ सें० मी०	१०४	१३	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते भावार्थ दीपिकायां चतुर्थो स्कंधे एकत्रीशोध्याय ॥ ३१ ॥
३३ × १६·७ सें० मी०	१४१ (१–१४१)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थ· स्कंधे प्रचेत ··· ··· ॥
३२·८ × १६ सें० मी०	९४ (१–९४)	१३	५२	पू०	प्राचीन सं० १८२६	इतिश्रीश्रीधर स्वामि विरचितायां श्री भागवतभावार्थ दीपिकायां चतुर्थ स्कंधे एकत्रिशोध्याय: श्री शिवार्पणमस्तु संवत् १८२६ कुआर शुदि ६ वा: शोवार समाप्तः ता दिन पुस्क समाप्त सुभमस्तु ॥
३३ × १४·७ सें० मी०	९७ (१–९७)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां चतुर्थस्कधे प्रचेतसोपाख्यानं नाम एक त्रिंशोध्याय: ॥
३३ × १७ सें० मी०	९७ (१–९७)	१४	४३	पू०	प्राचीन ···	इति श्री भागवते० च० एकत्रिंशोध्याय: ३१ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	६६४	भागवत (चतुर्थस्कंध) (संस्कृतटीकासहित)			दे० का०	दे०
२०५	४००	भागवत (चतुर्थ स्कंध) (सटीक)	व्यास		दे० का०	दे०
२०६	५८२	भागवत (चतुर्थस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२०७	७८६३	भागवत (चतुर्थस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२०८	८५६	*भागवत (चतुर्थस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२०९	२९१	भागवत (चतुर्थस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२१०	५६०	भागवत (पंचमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२११	४३५	भागवत (पंचमस्कंध) (संस्कृत टीका सहित)	व्यास		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·३ × १४·८ सें० मी०	१२	१२	५६	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
३३ × १७ सें० मी०	७९	११	३६	अपू०	प्राचीन सं०१६१८	इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे पृथु विजये राकोन विंशोध्यायः ।
३२·८ × १५·४ सें० मी०	८३ (२-८४)	१३	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे दक्षयज्ञविध्वंसनोनाम पंचमोध्यायः ॥ (पृ० १५)
३४·८ × १३·२ सें० मी०	९२ (२-६,११-९७)	१२	६०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवतभावार्थ षददीपिकायां चतुर्थस्कंधे एकत्रिंशोध्यायः ॥ श्रीराम
३६·५ × १६·७ सें० मी०	८८ (१—८८)	१४	५३	पू०	प्राचीन सं०१६८४	इति श्रीभागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे प्राचेतसोपाख्यानं एक त्रिंशोध्यायः समाप्तः चतुर्थः ॥४॥
३०·६ × १६·३ सें० मी०	९९ (१—९९)	१५	४६	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्रीभावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां चतुर्थ स्कंधेएकत्रिंशोध्यायः ३१॥ संवत् १८९८ ॥
३४.८ × १४·९ सें० मी०	८३ (१—८३)	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे श्रीधर स्वामी विरचितायां पंचमस्कंध टीकायां ··· ··· ॥
३८ × १५ सें० मी०	१५ (६७-८१)	१२	४९	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० ३-७)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१२	१६३	भागवत (पंचम स्कंध)	व्यास		दे० का०	दे०
२१३	३३५०	भागवत (पंचम स्कंध) भावार्थदीपिका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२१४	३५१६	भागवत (पंचमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२१५	६७	भागवत (पंचम स्कंध) (सटीक)		विजय तीर्थ	दे० का०	दे०
२१६	२७७०	भागवत (पंचम स्कंध)			दे० का०	दे०
२१७	१६२३	भागवत (पंचम स्कंध)			दे० का०	दे०
२१८	१६३६	भागवत (पंचम स्कंध)			दे० का०	दे०
२१६	४३८७	भागवत (पंचमस्कंध) (सटीक)	व्यास		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५ × १५.७ सें० मी०	८३ (१–८३)	११	५५	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भागवते महापुराणे पंचम स्कंधे अष्टादश साहस्यां संहितायां नरक वर्णनो नाम षड्विंशोध्याय × पंचम स्कंध × समाप्त ×
३३ × १६ सें० मी०	८३ (१–८३)	१२	७९	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां पंचमस्कंध टीकायां षड्विंशतिमोध्यायः॥ शुभमस्तु ॥
३३.८ × १८ सें० मी०	१६ (१–१६)	१९	३९	अपू०	प्राचीन	
३२.७ × १२.७ सें० मी०	७९ (१–७९)	१३	६१	अपू०	प्राचीन	
३२ × १६.५ सें० मी०	१०६	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री० पंचम स्कंधे नरकानुवर्णनं-षड्विंशोध्यायः २६ ॥
३० × १४ सें० मी०	१३	१५	४०	अपू०	प्राचीन	
३०.७ × १५ सें० मी०	७ (१४-१९,३६)	१५	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भा० पंचमस्कंधे षड्विंशतित-मोध्यायः ॥२६। मासोत्तमे चैत्रे कृष्ण-पक्षे सोमवत्याममावस्यायां लिखितं नारायणस्येदं पु० संपूर्णं ।।
३४.२ × १४.८ सें० मी०	८३ (१–८३)	१३	४९	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री भागवते महापुराणे ऽष्टादश-साहस्या संहितायां वैयासिक्यां पंचम-स्कंधेनरकवर्णनो नाम षड्विंशोध्यायः २६ संवत् १९०३ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां भृगुवासरे लिखितं पचोली महतावराय स्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु मंगलंददातु श्री गोविंदायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	६३३४	भागवत (पंचम स्कंध) (सटीक)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२२१	६१५६	भागवत (पंचम स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२२२	६१६५	भागवत (पंचमस्कंध) (सटीक)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२२३	७८५३	भागवत (पंचमस्कंध) (सटीक)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२२४	१९८९	भागवत (पंचम स्कंध)			दे० का०	दे०
२२५	१९९०	भागवत (पंचम स्कंध)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२२६	१९५५	भागवत (पंचम स्कंध)			दे० का०	दे०
२२७	१९३०	भागवत (पंचम स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ? वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३२·२ × १६ सें० मी०	८३ (१–८३)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति श्री भागवते महापुराणेपारमहस्यां सहितायां पंचम स्कधे नरकानुवर्णनो नाम षड्विशतिमोध्याय:··· ···इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां पंचम स्कंध टीकायां षड्विशतिमोध्याय: सवत् । १८।७४। पौष कस्न पक्षे पचम्यां रविबाससे जारी नगरे ···
३३·६ × १७·६ सें० मी०	९८ (१–९८)	११	४६	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां पंचमस्कधे भावार्थ दीपिकायां नाम षड्विशतितमोध्याय: ॥ २६ ॥······ संवत ॥१८॥८७॥ शन ॥१२॥३७॥ लिषा फेकूसिह अयाचक ब्राह्मण: ॥
३४·७ × १७·७ सें० मी०	८३ (१–८३)	१३	४५	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्रीधर स्वामि विरचितायां पंचम-स्कंधे टीकायां षड्विंशतिमोऽध्याय: × ॥
३५·१ × १३·१ सें० मी०	८३ (१–८३)	११	५७	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधरस्वामि विरचितायां पंचमस्कंधटीकायांषड्विशतिमोध्याय: ॥
३४ × १७·५ सें० मी०	२२ (९–३०)	१४	×	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महा पुराणे पारम हंस संहितायांवैसिक्यां पंचम स्कंधे जड़भत चरिते नामनवथोध्याय: ॥
३५ × १५ सें० मी०	३३ (३१-५९,६३ ६४-८२-८३)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधर विरचितायांपंचम स्कंध टीकायां षड्विशतितमोध्याय: २६ ॥
३२ × १६·३ सें० मी०	५९ (१–५९)	१३	४७	पू०	प्राचीन सं०१८८५	श्रीराधा कृष्णसरस्तटे माघमासे कृष्ण-पक्षे तीथी ११ आ:सनवारे सं० १८८५ इदं पुस्तकं लिखितं श्री रीवास्थाने हस्ताक्षर वीसुनद सकायथके शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥
३४·६ × १७·८ सें० मी०	१४ (६३–७६)	१४	४०	अपू०	प्राचीन सं०१९३०	इति श्री भागवते महापुराणे पंचम-स्कंधे श्रीधर स्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां······संवत् १९३० ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२८	१९२८	भागवत (पंचम स्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२२९	८७४	भागवत (पंचम स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२३०	३३३	भागवत (पंचम स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२३१	९९३	भागवत (षष्ठ स्कन्ध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२३२	७८४६	भागवत (षष्ठस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२३३	६२८२	भागवत (षष्ठस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२३४	४५४१	भागवत (षष्ठस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२३५	१३६६/२	भागवत (षष्ठस्कंध) (अष्टमोध्यायः)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४ × १६·५ सें० मी०	४७ (१-८,४३-८२)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यांसंहितायां पंचमस्कंधे नरकानुवर्णनो नाम··· ॥ श्रीधरस्वामी विरचितायां-पंचमस्कंध टीकायां ··· ॥
३१·६ × १६·४ सें० मी०	६३ (१-१६,१८-६४)	१५	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे पंचमस्कंधे षड्विंशोध्याय ॥
३०·६ × १६·१ सें० मी०	८३ (१-८३)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणेऽष्ठादश ··· पंचमस्कंधे नरक वर्णानोनाम ··· श्री-मथुरानाथ चरणकमल शरणं मम ॥
३५·५ × १४·५ सें० मी०	६२ (१-६२)	१३	४८	पू०	प्राचीन सं० १६७६	इति श्री भागवते महापुराणे षष्ठस्कंधे पुंसवनव्रतकथनंप कोनएविंशोध्यायः ॥ ··· संवत् १६७६ श्रावण शुद्धद्वादश्यांलिखिते वेदांति चितामणि भट्टेनकाश्यां ॥ ··· इति षष्ठे भावार्थ दीपिकायां नविंशः
३५·२ × १३ सें० मी०	६२ (१-६२)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	षष्ठस्कंधनिगूढार्थ पद भावार्थदीपिका ··· श्रीधर निर्मिता ···
३२·८ × १६.५ सें० मी०	७६ (१-७६)	११	५१	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां भागवतभावार्थ दीपिका षष्टे एकोनविंशोध्यायः ॥ १९
३६·२ × १५·२ सें० मी०	५६ (१-१९,२१-५७)	११	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे सप्तदशोध्यायः ॥(पृ०--५७) × × ×
११·६ × ८·५ सें० मी०	१३	६	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्भागवते षष्टस्कंधे नारायणवर्मोपदेशोनामष्टमोऽध्यायः ॥ श्री-गणेशायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३६	२७७१	भागवत (षष्ठ स्कंध)	व्यास		दे० का०	दे०
२३७	२७८९	भागवत (षष्ठ स्कंध) (नारायण वर्म)			दे० का०	दे०
२३८	३३४४	भागवत (षष्ठ स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२३९	७८	भागवत (षष्ठ स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२४०	९२	भागवत (षष्ट स्कंध)			दे० का०	दे०
२४१	४५२९	भागवत (षष्ठ स्कंध) भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२४२	१९२९	भागवत (षष्ठ स्कंध)			दे० का०	दे०
२४३	१९८८	भागवत (षष्ठ स्कंध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १६·५ सें० मी०	७५ (३२–१०६)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे षष्ट स्कंधे पुंसवन व्रत कथनं नामैकोन विशन्तितमोध्यायः १९ ॥
१३·२ × ११·७ सें० मी०	१२	७	११	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणेषष्टस्कंधे नारायण वर्म नामाष्टमोऽध्यायः शुभम् श्रीरस्तु ॥
३३·२ × १६ सें० मी०	६१ (१–६१)	१३	५१	पू०	प्राचीन	इति श्रीधर विरचितायां भागवतदीपिकायां षष्ठ स्कंधे एकोनविंशोध्यायः १९ ॥
३३·५ × १५ सें० मी०	६१ (१–६१)	११	५२	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भागवते महापुराणें षष्ट स्कंधे पुंसवनमेको नविं ··· ··· ॥
३२·७ × १४·३ सें० मी०	६२ (१–६२)	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
३७·१ × १५·६ सें० मी०	५४ (१-४९,५८-६२)	१३	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणेषष्टस्कंधे पुंसवन व्रत कथनं नामैकोनविंशोध्यायः ······भावार्थदीपिका सद्भिरासे व्यतामेषायाहि श्रीधरनिर्मिताइतिषष्टे एकोनविंशोध्यायः ॥
३२·८ × १६·६ सें० मी०	१० (२३-२८,३०;३४-३६)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
३३ × १७ सें० मी० (सं०सू० ३-८)	२३ (३-१८,२९-३५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४४	८७०	भागवत (षष्टस्कंध) (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
२४५	२०१४	भागवत (षष्ठस्कंध) (भावार्थदीपिका टीका)	व्यासजी	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२४६	२०८४	भागवत (षष्ठस्कंध)			दे० का०	दे०
२४७	५७८६	भागवत (षष्ठस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२४८	६१५४	भागवत (सप्तमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२४९	४१८४	भागवत (सप्तमस्कंध) ('भावार्थदीपिका')	व्यासजी	श्रीधर	दे० का०	दे०
२५०	६६	भागवत (सप्तमस्कंध)			दे० का०	दे०
२५१	४५८	भागवत (सप्तमस्कंध)	व्यासजी		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·५ × १५·२ सें० मी०	२८ (१-१४,१४-२७)	१५	४५	पू०	सं०१८७७	इति श्रीमद् भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे एकोनविंशोध्यायः ॥१९॥ संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७७ चैत्रमासे शुक्लपक्षे षष्टारवीनर्मदातटे पूर्ण ॥
३५·४ × १५·२ सें० मी०	११५ (१–११५)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इतिश्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे पुंसवन पयोव्रत कथनं नाम एकोनविंशोध्याय । ··· षष्टस्कंधनिगूढार्थं पदभावार्थदीपिका सद्भिरासेव्य तामेपयती श्रीधरनिर्मिता १ इतिषष्ठः एकोनविंशोध्यायः ॥१९
३१·२ × १६ सें० मी०	४७ (१–२१,१–२६)	१३	४८	अपू०	प्राचीन	
३४·३ × १३·४ सें० मी०	६२ (१-६१,६१)	१०	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे पुंसवन व्रतकथनीनामैकोनविंशोध्यायः ॥ श्रीरस्तु शुभंभूयात ॥
३३·८ × १७·४ सें० मी०	६७ (१–६७)	१२	४८	पू०	सं०१८८७	इति श्री भागवते महापुराणे परमहंस्या संहितायां सप्तमस्कंधे प्रह्रादानुचरिते युधिष्ठिर नारद संवादे सदावरः पंचदशोध्यायः समाप्तोयं सप्तम स्कंधः ॥ संवत १८८७ सूत्रः श्री सप्तमस्कंधस्य भागवतार्थदीपिका श्रीधरस्वामि कृत टीकायाः ··· ॥
३१·५ × १६·६ सें० मी०	६७ (१–६७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री० अष्टादश साहस्त्रां संहितायां वैसिक्यां सप्तस्कंधे प्रल्हादानुचरिते युधिष्ठिर नारद संवादे सदाचारवर्णनो नाम पंचदशोऽध्यायः १५ ॥
३३ × १४·२ सें० मी०	६६ (२–६७)	१०	५०	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
३२·६ × १६ सें० मी०	९ (३४–४२)	१७	४५	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	३३४७	भागवत (सप्तमस्कंध)	व्यासजी		दे० का०	दे०
२५३	५५६	भागवत (सप्तमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२५४	२०१५	भागवत (सप्तमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२५५	३६२	भागवत (सप्तमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२५६	१९८७	भागवत (सप्तमस्कंध)			दे० का०	दे०
२५७	६७८५	भागवत (सप्तमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२५८	७८५२	भागवत (सप्तमस्कंध) (सटीक)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२५९	७८७५	भागवत (सप्तमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·८ × १५·४ सें० मी०	६३ (१–६३)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे सप्तम-स्कंधे पंचदशोध्यायः १५ श्री शुभमस्तु ॥
३२·१ × १६·२ सें० मी०	६७ (१–६७)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १८६१	सप्तम स्कंध गूढ़ार्थ पद भावार्थ दीपिका ससेव्यतां सदा सद्भिर्यति श्रीधरनिर्मिता ? श्री इति श्री भावार्थ दीपिकायां··· ···सवत् १८६१ फाल्गुन मांसेशुभ कृष्ण पक्षे नवम्यां श्री श्री ॥
३३·३ × १५·२ सें० मी०	१०९ (१–१०९)	९	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे सप्तम स्कंधे युधिष्ठिर नारदसंवादे सदाचारः पंचदशोध्यायः ८५ समाप्तं ते श्रीधर स्वामि विरचितायां भावार्थ दीपिकायां सप्तमस्कंधे पंचदशोध्यायः ८५ ॥
३५·२ × १४·३ सें० मी०	६७ (१–६७)	१२	५०	पू०	सं० १६७६	इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां श्रीभागवत टीकायां सप्तम स्कंधे पंचदशोध्यायः ॥ सवत् १६७६ ॥
३३ × १७ सें० मी०	१६	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महा पुराणे सप्त-चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ ··· ···
८·७ × १६·५ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	५५	पू०	प्राचीन सं० १८३३	इति श्री भागवते सप्तमस्कंधेभावार्थ-दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां टीकायांपंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥ सप्तम स्कंध व्याख्यायां पदभावार्द दीपिका ॥ संवत् १८३३ ॥ शाके १६९८ × ॥
३४·६ × १२·८ सें० मी०	६७ (१–६७)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्त × × इति श्री भागवते महापुराणे सप्तम स्कंधे प्रह्लादानुचरितेयुधिष्ठिर नारद संवादे सदाचारः पंचदशाध्यायः १५ स्कंधस्यभागवत भावार्थ दीपिका श्रीधरस्वामिविरचितायां सप्तमस्कंध टीका समाप्तः ॥
३४·८ × १५ सें मी०	५० (१-४८,५१-५२)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे सप्तम-स्कंधे प्रह्लाद चरित युधिष्ठिर नारद संवादे सदाचारो नामपंचदशोध्यायः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	२६०६	भागवत (सप्तमस्कंध)	व्यासजी		दे० का०	दे०
२६१	७२६०	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२६२	३६२२	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२६३	२८८	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२६४	२०८७	भागवत (अष्टमस्कंध)			दे० का०	दे०
२६५	२०१६	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२६६	२३६३	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२६७	६०५२	भागवत (अष्टमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२१·७ × ९·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	५	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे नवमोध्यायः···
३५·१ × १३ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	५०	पू०	प्राचीन सं०१८१५	इति श्री भागवते महापुराणे अष्टादश साहस्र्यां संहितायां शुकपरीक्षित संवादे अष्टमस्कंधे मत्स्यावतारचरितानुवर्णनं नामचतुर्विंशोध्यायः ॥२४॥ सुभमस्तु संवत् १८१५ × × × इति श्रीधरस्वामि विरचितायां टीकायां ×
३०·५ × १४·५ सें० मी०	५६ (२-५४,५६-५८)	१४	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवत भावार्थ दीपिकायां धरस्वामि विरचितायां अष्टमस्कंधे चतुर्विंशोध्यायः समाप्तोयं अष्टमस्कंधः॥
३२·६ × १५·३ सें० मी०	५७ (२-५८)	१४	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधरस्वामि विरचितायां भावार्थदीपिकायांमाष्टमास्कंधे चतुर्विंशातित्तमोध्यायः ॥
३२·२ × १६·५ सें० मी०	५० (१–५०)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इतिसारार्थ दर्शिन्यां हर्षिण्यां भक्त चेतसां अष्टमस्य चतुर्विंशः संगतः संगतः सतां ॥ नमो विरक्तिर्नच भक्तिगंधः पांडित्यलेशोन नावासुवृतं तवंग लोलां सुधियानिरीक्षुं जालं जाम्पेबनहं तटीकां सं० १८८६ आषाढ़मासे कृष्ण चतुर्दश्यां बुधवारे समाप्तं शुभमस्तु ॥
३३·५ × १५·८ सें० मी०	१०६ (१-१०६)	६	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवतेमहापुराणे अष्टमस्कंधे मत्स्यावतार वर्णननाम चतुर्विंशतितमोध्यायः २४···६२ इति अष्टमस्कंधे भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां चतुर्विंशोध्यायः २४।
३३·८ × १७ सें० मी०	७८ (१–७८)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते भावार्थ दीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां अष्टमस्कंधे चतुर्विंशोध्यायः
३१·५ × १६·५ सें० मी०	७६	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री राधिकेशस्य पद सेवाधिकारिणेकृपापात्रेण हरिणा बलभद्रेण निर्मिता ॥ टीका भागवतस्येमनोर्यानांसां महाप्रसिका × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६८	३३४३	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२६९	२०१	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७०	५५७	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७१	६७८६	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७२	५३७१	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७३	६२८०	भागवत (अष्टमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७४	२०८५	भागवत (नवमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
२७५	२०१७	भागवत (नवमस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·४ × १५·७ सें० मी०	५८ (१–५८)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवत्त वा दी का श्री र मी र तायां अष्टम धे चतुर्विं ध्याः ॥
३५·२ × १४·५ सें० मी०	५८ (१–५८)	१२	५३	पू०	प्राचीन सं०१६७६	इति श्री भागवते महा पुराणे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां अष्टम स्कंधे चतुर्विंशः संवत् १६७६··· श्रीमद्दे दांतीरंगनाथ भट्ट सुतेन चिंतामणि भट्टेन लिखितं ··· ··· शुभमस्तु सर्वजगतः ॥ श्रीः ॥
३४·३ × १५·७ सें० मी०	५६ (१-१७,१९-२७)	१३	४५	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्री भागवते महापुराणें अष्टादश साहस्त्रं पारमहंस्या वैयासिक्यां अष्टमस्कंधेभागवतो मत्स्यावताररितानुवर्णनं चतुर्विंशतिध्यायः २४ अष्टमस्कंधटीकायां श्रीधर स्वामी विरचितायां चतुर्विंशतितमो अध्यायः २४ भादोमासे शुक्ल पक्षे ९ संवत् १९०२ ॥ राम श्री गनाधिपतये नमः ॥
३९ × १६·५ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	५१	पू०	प्राचीन	इति भागवते महापुराणे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामीविरचि + + तायां अष्टमस्कंधे चतुर्विंशोध्यायः ॥ संवत्सरेन्नेविसेच मार्गशीर्षोमले सुभे ॥ तिथिन्नतीयासंप्राप्तेदैत्वपूज्येतु संयुतं ॥
३३·३ × १७ सें० मी०	५८ (१–५८)	१६	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां अष्टम स्कंधे चतुर्थोऽध्यायः समाप्तोयं अष्टम स्कंधः श्लोक २२००··· ··· ॥
३३·५ × १६·७ सें० मी०	६६ (१-५,७-५८, ६०-६८)	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे परमहंस्यां संहितायां मष्टम स्कंधे भगवतो मत्स्यावतार वर्णनं चतुर्विंशतिमोध्यायः ··· ··· ···, ··· ··· ··· इति श्री भागवते भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचियांअष्टम स्कंधे चतुर्विंशोध्यायः ॥
३२·२ × १६·२ सें० मी०	३७ (१–३७)	१३	३०	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति नवमस्कंध समाप्तः ९ यादृशं··· नदीयते अथ संवत् १८९० के श्रावण मासि शुक्ल पक्षे पंचम्यां रविवासरे ॥
३२·२ × १४·७ सें० मी० (सं०सू० ३-९)	९० (१–९०)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे नवमस्कंधे यदु वंशानुकीर्तनं नामचतुर्विंशोध्यायः···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२३६४	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७७	१९९२	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७८	५०८	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२७९	३३३६	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२८०	७२	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२८१	७१३	(भागवत नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२८२	६२८१	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२८३	६२७१	भागवत (नवमस्कंध) (सांप्रदायिक सारार्थ-दर्शिनी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३४ × १७·२ सें० मी०	७७ (१–७७)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते श्रीधर स्वामि विरचितायां नवम स्कंधे चतुर्विशोध्यायः ॥२४॥
३४ × १७·५ सें० मी०	४५ (६-३४, ३६-५१)	१५	५०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीधर स्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां नवम स्कंधे चतुर्विशोध्यायः ॥२४॥
३३ × १५·५ सें० मी०	६२ (१-८,१०-१७,१६-२८-२८,२६-६३)	१२	५०	अपू०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री भागवते भावार्थदीपिकायां श्रीधर स्वामी विरचितायां नौमस्कंधे संवधिशयां चतुर्विशोऽध्यायः २४ ॥ जेष्ठ मासे कृष्णपक्षे अमावस्यां सं० १६०३ सीताराम राम···
३२·७ × १५·५ सें० मी०	५१ (१–५१)	१४	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां श्रीभागवत्त भावार्थद्वोपिकायां नवम स्कंधे चतुर्विशोध्याय
३३·५ × १५·१ सें० मी०	४२ (७–३४, ३७–५१)	६	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमस्कंधेयदुवंशानु कीर्त्तन-नाम चतुर्विशोध्यायः ॥
३२·२ × १६·२ सें० मी०	५१	११	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे नवमस्कंधे पारमहंस्यां संहितायां चतुर्विशोऽध्यायः २४ श्री हरिः ॥
३२.१ × १५·६ सें० मी०	६० (१–६०)	१२	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामी विरचितायां नवमस्कंधे चतुर्विशोऽध्यायः ॥
३०·६ × १६ सें० मी०	१०४ (–१०४)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री राधिकेशस्य पदसेवाधि-कारिणा कृपापात्रेणहरिणावलभद्रेण-निर्मिता टीका भागवतस्येयं गोपीनां सांप्रदायिकासारार्थं दर्शिनीया च चतु-र्विंशमथाश्रिता ।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८४	७६८६	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यासजी	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२८५	३६६५	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२८६	२६४	भागवत (नवमस्कंध)			दे० का०	दे०
२८७	३१६	भागवत(नवमस्कंधकथा)			दे० का०	दे०
२८८	३३५	भागवत (नवमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२८९	७४०५	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्धं)			दे० का०	दे०
२९०	३५१	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
२९१	२४०६	भागवत् (दशमस्कंध) (उत्तरार्धं)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५ × १२·८ सें० मी०	४६ (१-८,११-५१)	१०	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतेमहापुराणे पारमहंस संहितायांमष्टादश साहस्र्यां नवमस्कंधे श्रीसूर्य सोम··· ··· ··· ··· ··· ··· इति श्री श्रीधरस्वामि विरचितायां ×
३६·४ × १८·८ सें० मी	३० (१–३०)	१८	७२	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे नवमस्कंधे भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां नवमस्कंधे चतुर्विंशोध्यायः ॥ २४॥ शुभंभूयात् ॥
३५ × १४·५ सें० मी०	५१	१३	५२	पू०	प्राचीन सं० १६७६	इति श्री भागवते महापुराणेपारसहंस्यां संहितायां नवमस्कंधे अष्टादश साहस्त्र्यां यदुवंशानकीर्त्तनं नाम चतुर्विंशोअध्यायः २४॥ समाप्तोयं नवम स्कंध सं० १६७६ आश्विन शुक्ल दशम्यां लिखितं श्रीमद्धे दाति रंगनाथ भट्ट सुतेन चिंतामणि भट्टेन···॥
२७·६ × १२·५ सें० मी०	७७ (१–७७)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति नवमस्कंध कथा समाप्ता ॥ कृष्णाय यादवेंद्राय देवकी नंदनाय च ॥ नंद गोप कुमाराय गोविंदाय नमो नमः।
३१·५ × १६ सें० मी०	५२ (१–५२)	१७	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते श्री श्रीधरस्वामी विरचितायां भावार्थ दीपिकायां नवम स्कंधे चतुर्विंशोध्यायः ॥२४॥
४·७ × ११·२ सें० मी०	१३३ (१४–१४८)	११	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे × × × ॥
३३ × १६ सें० मी०	१४७ (१–१४७)	१४	४६	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकोन पंचाशत्तमोध्यायः ॥
३३·३ × १७.२ सें० मी०	१८१ (१–१८१)	१०	५६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भागवत भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां दशमस्कंधेनवतितमोध्याय ॥९०॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५३६	भागवत (दशमस्कंध)	व्यासजी		दे० का०	दे०
२६३	४३७	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२६४	४४४	भागवत (दशमस्कंध)			दे० का०	दे०
२६५	४६८	भागवत (दशमस्कंध) (उत्तरार्ध)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
२६६	२०२	भागवत (दशमस्कंध) (कथासंग्रह)			दे० का०	दे०
२६७	११२	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध और उत्तरार्ध)			मि० का०	दे०
२६८	४०५४	भागवत(दशमस्कंधपूर्वार्ध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
२६९	२६२४	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामि	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·१ × १३·७ सें० मी०	३९ (९१–१३०)	१५	४४	अपू०	प्राचीन सं० १५९९	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे श्री कृष्ण लीला चरितानुर्णनेनवतितमोऽध्याय ॥
३५ × १६ सें० मी०	१०४ (७४–१७७)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२०·९ × १० सें० मी०	२३	७	२३	अपू०	प्राचीन	
३३ × १५·५ सें० मी०	१३६ (१-४८,५५-१४२)	११	५०	अपू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री परमानंद श्रीधर स्वामी विरचितायां श्रीभागवतभावार्थ-दीपिकायां नवतितमो अध्याय समाप्तं दशम स्कंधटीका आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे १४ संवत् १९०२ ॥ राम ॥
२७·५ × १२ सें० मी०	५१ (१–५५)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति दशमस्कंधकथासंग्रहसमाप्तः ॥ श्री लक्ष्मीनृसिंह ॥
३३·४ × १४·९ सें० मी०	२६६	१२	५१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
४०·५ × १८·६ सें० मी०	१४६ (१–१४६)	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री भावार्थ दीपिकायां दशमस्कंधे एकोन पंचाशत्तमोध्यायः समाप्तश्चाय दशम स्कंधस्य पूर्वार्द्धः ॥
३२ × १५·५ सें० मी०	१५५ (१-२,४-१५५,१५७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८७३	इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे श्रीधर स्वामी विरचितायां श्री कृष्णचरित्रानुवर्णनं नाम नवतितमोध्यायः ॥ लिषतु ब्राह्मणनाम्नजीरामः दधिचः संवत् १८७३ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३००	२६५०	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध)			दे० का०	दे०
३०१	३१४३	भागवत (दशमस्कंध) (गोपीगीत)			दे० का०	दे०
३०२	३४५२	भागवत (दशमस्कंध)			दे० का०	दे०
३०३	४१९२	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध)			मि० का०	दे०
३०४	६१२२	भागवत (दशमस्कंध)		वल्लभाचार्य	दे० का०	दे०
३०५	२७७७	भागवत (दशमस्कंध) (उत्तरार्ध)			दे० का०	दे०
३०६	४४१६	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध)			दे० का०	दे०
३०७	४३१९	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध)			मि० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·७ × १५·३ सें० मी०	१९० (१-३७, ३९-१९०)	१३	३७	अपू०	प्राचीन सं० १८७३	इति दशमेएकोन पंचाशतमोध्याय संवत् १८७३ ... ... ॥
१८ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति श्री भागवते महाभारते गोपीगीत समाप्त सं० १९२१ केसाल कातिक-वदि
३३ × १७·३ सें० मी०	२३३ (१-१८८, ४७-९१)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	इति दशमे एकोनपंचाशत्तमोध्यायः ४९ इति पूर्वार्द्धं समाप्तं (पृ० सं० १८८)
३२·३ × १८ सें० मी०	९६ (१–९६)	११	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधेएकत्रिशत्तमोध्यायः ॥३१॥ (पृ० संख्या-९५)
२६·७ × १२·७ सें० मी०	९९	१२	३३	अपू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण)	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकोनत्रिशोऽध्यायः ।···(पृ० सं० ९४)
३१·७ × १६·३ सें० मी०	१५७ (३०-१८६)	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
३५·३ × २०·६ सें० मी०	१४३ (१–१४३)	१६	४१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकोनचत्वारिंशोध्याय ॥ (पृ० सं० ११६)
३२·६ × १६·२ सें० मी०	१४८ (१–१४८)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंसाहितायां वैयाशीक्यां दशमस्कंधे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥४९॥ समाप्तपूर्णं पूर्वाधः शुभमस्तु शुभंभवतु··· ···॥

(सं०सू० ३-१०)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	३८४२/३	भागवत (दशमस्कंध)	व्यास		दे० का०	दे०
३०९	२००३	भागवत (दशमस्कंध) (रासपंचाध्यायी)			दे० का०	दे०
३१०	२१६५	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३११	२२००	भागवत (दशमस्कंध))			दे० का०	दे०
३१२	२२६५	भागवत (दशमस्कंध पूर्वार्ध)			दे० का०	दे०
३१३	२२५५	भागवत (दशमस्कंध)			दे० का०	
३१४	२३३६	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३१५	२३४४	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·५ × ६·५ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	१३	अपू०	प्राचीन	
३० × १५·८ सें० मी०	१३	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
३६·५ × १३·५ सें० मी०	१४६ (१–१४६)	१३	५०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे पारमहंस्यां संहितायां एकोनपंचाशत्तमोध्यायः ४६।। ··· इति श्रीधरस्वामी विरचितायां पद भावार्थ दीपिकायां एकोनपंचासित्तमोध्यायः पूर्वोर्द्धः समाप्तः।। सं० १८३६ श्रावन वदि सप्तम्यां बुध वासरे ।
३३·८ × १६·५ सें० मी०	२२४ (१–८८, ९१–२२६)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५·६ सें० मी०	१४८ (१–८४, ९५–१३१, १३३–१४९)	१४	५०	अपू०	प्राचीन	
३४·२ × १७·३ सें० मी०	१६४	१३	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकोनपंचाशतमोध्यायः ।।
३४·५ × १७·५ सें० मी०	४७ (२–४८)	१२	५१	अपू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्रीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामिविरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्यायः ।।१३।। कातिक वदि १० संवत् १९०९ लिखितं लालावलभद्र ···।।
३३.७ × १७·२ सें० मी०	१२३	११	५२	अपू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्रीभागवते भावार्थदीपिकायां एकोनपंचाशत्तमोध्यायः ४९ संवत् १९०८ ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१६	२४००	भागवत (दशमस्कंध पूर्वार्ध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर	दे० का०	दे०
३१७	५६४०	भागवत (दशमस्कंध)			दे० का०	दे०
३१८	५७००	भागवत (दशमस्कंध) (उत्तरार्ध)			दे० का०	दे०
३१९	५७०९	भागवत (दशमस्कंध पूर्वार्ध)			दे० का०	दे०
३२०	५०६५	भागवत (दशमस्कंध)			दे० का०	दे०
३२१	४९४९	भागवत (दशमस्कंध उत्तरार्ध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३२२	६६१७	भागवत (दशमस्कंध उत्तरार्ध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
३२३	६६१६	भागवत (दशमस्कंधपूर्वार्ध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३.५ × १७.२ सें० मी०	८६ (४३,१२९-२१३)	११	६३	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री भागवते महापुराणे दशमे एकोन पंचाशो: ध्याय: ॥ ४९ ॥ संवत् १८६८ ॥ आशावदी १० सोमवार ॥ रामचंद्रायनमः ॥
३४.१ × १७.४ सें० मी०	१०६ (१०–११०, ११७-१२१)	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
३३.६ × १७ सें० मी०	१२७ (१–१२७)	१५	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री दशमे नवतितम् ॥
३४.२ × १७.६ सें० मी०	४२ (२०१-२०२, ६५४-६९३)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
३६ × १६ सें० मी०	९० (५७–१४७)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधेपारमहंस्य संज्ञितायां एकोन पंचाशत्तमोऽध्याय: × × ॥
३३.८ × १७ सें० मी०	१४७ (१–१४७)	१५	५१	पू०	प्राचीन	इतिश्रीभावार्थदीपिकायां दशमे नवतितम: रामायनमः ॥
३३.८ × १६.७ सें० मी०	१८१ (१–१८१)	१२	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भागवते महापुराणेभागवत भावार्थदीपिकायां श्री × + श्रीधर स्वामि विरचितायां दशमस्कंधे नवतितमोऽध्याय: ॥ ९० ॥ वासुदेवायनमोनमः ॥
३३.७ × १७.३ सें० मी०	१८७ (१–१८७)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधेपारमहंस्यां संहितायां एकोनपंचाशतमोध्याय: ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२४	८०६	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३२५	३७०४	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३२६	३६९९	भागवत (दशमस्कंध पूर्वार्ध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३२७	३६०	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३२८	३६९६	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३२९	१०२८	भागवत (दशमस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३३०	५३०२	भागवत (दशमस्कंध पूर्वार्ध)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३३१	५४०१	भागवत (दशमस्कंध उत्तरार्ध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १५ सें० मी०	१०४ (३०–१३३)	१५	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे श्रीकृष्णलीला वर्णने नवतितमोध्यायः ९० । इति श्रीधर स्वामी विरचितायां भागवत् दीपिकायां न व तितमः ९० ॥
४२ × २०·४ सें० मी०	१३० (१–१३०)	१२	४४	अपू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री परमानंद श्रीधर स्वामी विरचितायां श्री भागवत भावार्थ दीपिकायां-नवतितमोध्यायः ॥ समाप्तोयं दशमस्कंध टी० संवत् १९०९ समये माघ सुदि··· ···॥
४१ × १५·४ सें० मी०	२१३ (१–२१३)	१०	५१	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्रीमद्भागवतभावार्थदीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचिताया दशमस्कंधेएकोनपंचाशत्तमोध्यायः संवत् १८८४ पौ० ॥
३०·५ × १३·६ सें० मी०	९० (१-९०)	१४	५०	अपू०	प्राचीन	
३८·८ × १५ सें० मी०	१८१ (१–१८१)	१०	४४	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री मद्भागवत भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विर चितायां दशमस्कंधे नवत्तितमोध्यायः संवत् ॥१८६६।··· ···
३६·५ × १६·४ सें० मी०	१४५ (१–१४५)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे श्रीधर स्वामि विरचितायां पद भावार्थ दीपिकायामिकोन पंचाशतमोध्यायः॥४९॥
३४·६ × १७·३ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति भा० द० स्कंधे श्रीधर स्वामिविरचित्त टीकायामेकोन पंचाशतमोऽध्यायः ४९ समाप्तोऽयं पूर्वार्द्धः ॥
३३ × १६ सें० मी०	४८ (७८–१२६)	१०	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे दशनवाशीतितमोध्यायः ॥ ··· ··· (पृ० सं०—१२५)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	५४००	भागवत (दशमस्कंध-उत्तरार्ध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर	दे० का०	दे०
३३३	५३९५	भागवत (दशमस्कंधपूर्वार्ध) (श्रीधरी टीका)		श्रीधर	दे० का०	दे०
३३४	५२२६	भागवत (दशमस्कंधपूर्वार्ध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३३५	७५४२	भागवत (दशमस्कंधपूर्वार्ध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३३६	७८८५	भागवत (दशमस्कंधपूर्वार्ध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३३७	५०२७	भागवत (दशमस्कंध) (पूर्वार्ध, उत्तरार्ध)			दे० का०	दे०
३३८	४७७९	भागवत (दशमस्कंध उत्तरार्ध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३३९	९००	भागवत (दशम-द्वादशस्कंध)			दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·६ × १४·५ सें० मी०	७४ (२–७३, ११५-११७)	२१	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८६७	इति श्री दशमस्कंधे टीकायां श्रीधर स्वामी विरचितायां श्री भागवतभावार्थ दीपकायां वर्ततमः ९० सं० १८६७ ॥
३२·८ × १६·५ सें० मी०	१७० (१–१७०)	१५	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महा पुराणे दशमस्कंधे मेकोनपंचाशत्तमोध्यायः …॥
४१·६ × २२·९ सें० मी०	१० (३–१२)	११	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे कृष्णावतारोपक्रमे प्रथमोध्यायः ॥ (पृ० ६)
३·३४ × १५·२ सें० मी०	१२६ (२४-१४८, १५०)	१२	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे उद्धवप्रतिजानं नामसप्त चत्वारिंशोध्याय: ४७ … … … × × × (पृ०सं० १४६)
३३·४ × १६·४ सें० मी०	१४७ (२–१४८)	१४	५०	अपू०	प्राचीन	
३९ × १६·४ सें० मी०	६२ (१-५४,५९-६२, + ४ पूर्वार्द्ध पत्र)	१२	५७	अपू०	प्राचीन	
३७·५ × १७·३ सें० मी०	१२५ (१–१२५)	१४	५२	पू०	प्राचीन	इति श्रीधरस्वामि विरचितायांदशमटीकायां श्रीभावार्थ दीपिकायां नवतितमोध्यायः ॥ संवत् १९० फाल्गुनशुक्ला ५ भृगुवासरे लिखितं पचौलीमहतावरायस्वात्मपठनार्थं शुभंभूयात् ॥
१६ × १२ सें० मी०	९७	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते द्वा० द्वादश स्कंधार्थनिरूपणंनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४०	३६६८	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३४१	८१८*	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३४२	५९६२	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३४३	३३४०	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
३४४	४६९	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)			दे० का०	दे०
३४५	९४	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३४६	५३२	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३४७	२०३	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
४०·२ × १५·४ सें० मी०	१०२ (१–१०२)	१३	६१	पू०	प्राचीन	इति श्री एकादश स्कंधेभावार्थदीपिकायामेक त्रिंशत्तमोध्यायः ॥ ३१ ॥
३६·५ × १६·६ सें० मी०	१४६ (१–१४६)	१३	३८	पू०	प्राचीन सं०१६७५	···सं० १·७५ माघ शुक्ल त्रयोदश्यां लिखितं वेदांती रंगनाथ भट्ट सुत श्रीचिंतामणिभट्टेनलिखितं ॥ काश्यां कृष्णायनमः एवं एकादशस्कधं भावार्थस्य प्रदीपिका । स्वाज्ञानध्वांतभीतेन श्रीधरेण प्रकाशिता ॥ ८ ॥ इत्येकादश स्कंधे भावार्थ दीपिकायां एकत्रिंशोध्यायः ॥ ३१ ॥
३३ × १६·१ सें० मी०	१४३	११	५०	अपू०	प्राचीन सं०१६०५	इति एकादशस्कंधेत्रिंशत्तमोध्यायः ३० संवत् १६०५ आसाड सुदि १४ मुकामटीकमगड लिप्यतं पं० श्री चौबेतेजसिंह पुस्तक पं० श्रीतिवारी हरिवल्लभकी ॥
३२·५ × १५·२ सें० मी०	१५० (१–१५०)	१०	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री एकादशेभावार्थदीपिकायमेकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ श्री ॥
२७·५ × १२ सें० मी०	४५ (६६–१३६)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
३२·८ × १४·६ सें० मी०	१२३ (१–१२३)	१२	४५	पू०	प्राचीन	एवमेकादशे स्कंधे भक्ति भावार्थदीपिका स्या ज्ञान ध्वांत भीतेन श्रीधरेण प्रकाशिता इति श्री भागवते महापुराणे पारम ॥ हंस्यांसंहितायां वैयाशिक्यां एकादश स्कंधे टीकायां एकत्रिंशोध्यायः ॥
३३·३ × १६ सें० मी०	१४४ (१ से १४१ तक स्फुटपत्र)	१२	६०	अपू०	प्राचीन सं०१६०३	एवमेकादश स्कंध भावार्थ सप्त दीपिका स्वाज्ञान ध्वांतभीतेन श्रीधरेण प्रकाशिता मिती सावन सुदि ४ संवत् १०६३ सीता राम राम राम ··· ··· ॥
३५ × १४·७ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	१४	५३	पू०	प्राचीन	एवमेकादश स्कंधे भावार्थस्यप्रदीपिका स्वाज्ञान ध्वांतभीतेन श्रीधरेण प्रकाशिता १ इति श्री एकादश स्कंधे एकत्रिंशोध्यायः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४८	१७७२	भागवत (एकादशस्कंध)	व्यास		दे० का०	दे०
३४९	४४१८	भागवत (एकादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३५०	७३६३	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३५१	२०१३	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३५२	२०८१	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३५३	२३९१	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३५४	२३९८	भागवत (एकदशस्कंध)			दे० का०	दे०
३५५	१९६३	भागवत (एकादशस्कंध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
४१.५ × १६.७ सें० मी०	५५ (१-२८, ३०-५६)	१४	८६	अपू०	प्राचीन	
३४.८ × १५.३ सें० मी०	१४६ (१-१४६)	१४	३७	पू०	प्राचीन सं० १८६८	इत्येकादशे भावार्थ दीपिकायामेक त्रिशोध्याय: ३१ एकादशस्कंध समाप्त: शुभं भवति मंगलं ददात् संवत् १८६८ शाके १७३३ चित्रभान संवत्सरे दक्षिणायणे मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरौ तादिन समाप्ति शुभं मंगलं ॥
३५.२ × १३.२ सें० मी०	१४८ (१-३२, ३५-१५०)	१०	६०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भगवदुद्धव संवादे चतुर्विशतितमोऽध्याय: ॥ (पृ० सं० १२०)
३५.५ × १६.१ सें० मी०	६३ (१-६३)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
३१.३ × १६ सें० मी०	१३३ (१-१३३)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८६	एकदशस्कंधटीका स्वीकामयतुमां प्रभु: संवत् १८८६ वैसाष शुक्ल ५ रवौक: लिखतं श्री वइष्णवसंतदास पैपषरावैठे ग्रंथ संख्या ४५५० ।
३३.५ × १७ सें० मी०	१८४	१३	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे टीका भावार्थ दीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां एकत्रिंशोध्याय:३१॥
२४.३ × १०.५ सें० मी०	३२	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२७.३ × ११.६ सें० मी०	५३ (१४-१८, २२, ४४-४७, १५६-१८९)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५६	५६८७	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३५७	७५४३	भागवत (एकादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३५८	२६३७ / १२	भागवत (एकादशस्कंध)			दे० का०	दे०
३५९	५४०२	भागवत (द्वादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३६०	७६८१	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३६१	६२८४	भागवत (द्वादशस्कंध)			दे० का०	दे०
३६२	५८१९	भागवत (द्वादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३६३	५५६	भागवत (द्वादशस्कंध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·३ × १६·८ सें० मी०	१६७ (१–१६७)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे परीक्षित्संवादेमौशलं नामैकत्रिंशो-ध्यायः ॥३१॥
३२ × २० सें० मी०	३७ (१६–३१, ४३–४५, १०२–१०६)	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे एकादश-स्कंधे भगवदुद्धव संवादे द्वाविंशो-ध्यायः ॥ ······(पृ० सं०–१०८)
१३·१ × ८ सें० मी०	७	७	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
३३ × १५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भा० द्वादश० द्वादशोध्यायः १२. (पृ० सं०–३८)
३५·१ × १३·३ स० मी०	३८ (२०–४८)	१०	६२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतेमहापुराणे द्वादशस्कंधे सूतोक्ते त्रयोदशोध्यायः ॥ × × × इति श्री भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां द्वादश स्कंधे त्रयो-दशोध्यायः ॥
३१·४ × १६·२ सें० मी०	६१ (१–६१)	१४	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्यायः × × ॥
२६·२ × ११·६ सें० मी०	२६	१३	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वादश स्कंधे प्रति संक्रम लक्षणोनाम द्वादशो-ध्यायः ॥ (पृ०–४६)
३६·७ × १६·५ सें० मी०	४२ (१–१७, १७–४१)	१३	४५	पू०	प्राचीन सं०१६७६	इति श्री भागवतेमहापुराणे पारमहंस्यां संहितायां वैयाशिक्यांशुकपरीक्षित्संवादे द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्यायः समाप्तं श्री भागवतं ॥ सं० १६७६ समये प्रभव-संवत्सरे वैशाखशुद्ध द्वादश्यां लिखितं श्रीमद्वेदांती रंगनाथ भट्ट सुतेन श्री चिन्तामणि भट्टेन लिखितं काश्यां स्वार्थं परार्थं च ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४७०	भागवत (द्वादशस्कंध)	व्यास		दे० का०	दे०
३६५	२३७	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३६६	२४०७	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३६७	३३२४	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३६८	८६	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३६९	५६४३	भागवत (द्वादशस्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३७०	२०८६	भागवत (द्वादशस्कंध)			दे० का०	दे०
३७१	७५०६	भागवत (द्वादशस्कध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × १२ सें० मी०	१८	१०	५०	पू०	प्राचीन	
३३·७ × १५·५ सें० मी०	४६ (१–१९, १९-४५)	१२	४७	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्री भागवते द्वादशे त्रयोदशः १३ सावन सुदि ११ सं० १९०२ अस्थान श्री चित्रकूट लिष राधाकृष्ण ।
३३·८ × १६·८ सें० मी०	५९ (१–५९)	११	६४	पू०	प्राचीन सं०१८०८	इति श्री भागवत भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्याय:··· ···संवत्-१८ ॥८॥
२८·२ × १४·८ सें० मी०	४८ (१–४८)	१३	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवतभावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामि विरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्याय: ॥
३३·४ × १४·४ सें० मी०	४८	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वादसस्कंधे सूतेक्ति त्रयोदशोध्याय: ॥··· ···इति श्री भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोध्याय: ॥ रामराम ।
३३·८ × १७·९ सें० मी०	३८ (१–३८)	१५	४९	पू०	प्राचीन १८६९	इति श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां वैयासिक्यां द्वादशस्कंधे पुरासा संख्या वर्णनं त्रयोदशोऽध्याय: १३ श्री संवत १८६९ माघ मासे कृष्णपक्षे रविवासरे अष्टमीयां ।८। समाप्तशु: ॥
३२·२ × १६·७ सें० मी०	३४ (१–३४)	१४	३९	पू०	प्राचीन सं०१८८७	श्री भागवते भक्तेः पुरुषार्थ शिरोमणे व्याख्यास्य भक्त्या गम्यासा श्रीगुरोःकृपयेक्ष्यते तस्मान्नमो नमस्तमैगुरवे गुरवेनमः हेभक्ताद्वारि वश्चंचद्वा लधीरौत्पपंजनः नाथन् विशिष्टःश्वेवातः प्रसादं लभतों मनाक् सं० १८८७ पौषमासे शुक्ल पक्षे तिथि द्वितीयके गुरुवासरं संयुक्ते पुस्तकं पूर्णतामगात् ।
३२ × २०·२ सें० मी० (सं० सू०३-१२)	२७ (५,१३-३९)	१५	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभागवत भावार्थ दीपिकायां श्री[illegible]रस्वामी विरचितायां द्वादशस्कंधे [illegible]ध्याय: ॥१३॥ समाप्तम् ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७२	३६६७	भागवत (द्वादशस्कंध) (भावार्थदीपिका)	व्यास	श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
३७३	६६०	भागवत (१-८ स्कंध)			दे० का०	दे०
३७४	५२८६	भागवत (१-३ स्कंध) (सटीक)			दे० का०	दे०
३७५	५३६८	भागवत (३-६ स्कध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर	दे० का०	दे०
३७६	५३६६	भागवत (७-१० स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधर	दे० का०	दे०
३७७	७४४१	भागवत (प्रथम तथा नवम से द्वादशस्कंध)			दे० का०	दे०
३७८	७५४०	भागवत (प्रथम से पंचम तथा द्वादशस्कंध)			दे० का०	दे०
३७६	७२२७	भागवत (रासपंचाध्यायी)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
४०·१ × १५·५ सें० मी०	५६ (१–५६)	६	६२	पू०	प्राचीन	इति श्रीभागवते भावार्थदीपिकाया श्रीधर स्वामी विरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः ।। १३ ।।
१५·६ × १०·३ सें० मी०	४०६ (१–२४३, २४८-५१०)	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
३२ × १६·३ सें० मी०	२५६ स्कंध प्र० (१-८१) द्वि० (१-४७) तृ० (१-१३१)	२२	४६	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री भागवते महापुराणे तृतीयस्कंधे कपिलोपाख्याने कपिलदेव हूति सवादे त्रयस्त्रिशोऽध्यायः ।। ···इतिश्रीभावार्थ-दीपिकाया टीकायां त्रयश्त्रिशोऽध्यायः। ३३ संवत् १८६५ ।। शके १७६०···
३४·४ × १५·५ सें० मी०	३२४ तृ० स्कं० ९३ च० स्कं० ९६ पं० स्कं० ८३ ष० स्कं० ६२ ३२४	१६	४०	पू०	प्राचीन सं०१८७३ सं०१८७४ सं०१८८२ सं०१८७४	इति श्री भागवते महापुराणेषष्ट स्कंधे पुंसवन कथनं नामैकोन विंशो ध्यायः १९ षष्टस्कंध समाप्तः ···- फाल्गुन कृष्ण ९ रवौ तद्दिने समाप्त। सं०१८७४
३४·५ × १६ सें० मी०	३१३ स० स्क० ६४ अ० स्कं० ८५ न० स्कं० ५१ द० स्कं० १४० ३१३	१३	३९	पू०	प्राचीन सं०१८७५ सं०१८७६ सं०१८७६ सं०१८६६	इति श्री भागवते म० दशम० अष्टादश संहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां पार्म-हंस्यां एकोन पंचाशत्तमः······संवत् १८६६ फालगुण कृष्ण ९ बुधे ····।
३३·९ × १७·१ सें० मी०	१३०	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
३२·२ × १५·८ सें० मी०	४५३ भा० मा० १५ प्र० स्कं० ९४ द्वि० ,, ४८ तृ० ,, १३२ च० ,, ११५ पं० ,, ३ ष० ,, ४६	१२	४३	अपू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्रीभागवते भावार्थदीपिकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां द्वादशस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः १३ संवत् १९०७ शाके १७७२ पौष कृष्ण अष्मीगुरौ ×
१५·२ × १५·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे रासक्रीडायां त्रयस्त्रिशोऽध्यायः ३३ लिखितं वसिष्ठ गोविंदेनेदं पुस्तकं ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८०	२०९५	भागवत (रासपंचाध्यायी)	व्यास	नारायणमिश्र	दे० का०	दे०
३८१	१९५१	भागवत (रासलीला व्याख्या)			दे० का०	दे०
३८२	५७४०	भागवत (चतुःश्लोकी)			मि० का०	दे०
३८३	१९५६	भागवत (चतुःश्लोकी) (सटीक)			दे० का०	दे०
३८४	१९५९	भागवत (चतुःश्लोकी)			दे० का०	दे०
३८५	६२५६	भागवत (श्रीधरी टीका)			दे० का०	दे०
३८६	७४८६	भागवत (वल्लभी टीका)			दे० का०	दे०
३८७	४०५	भागवत			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.२ × १४.७ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री रासपंचाध्यायी व्याख्यायां विशुद्ध रस दीपिकायां प्रथमोध्यायः १ ॥
३४.२ × १५.७ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति रासोत्सव पक्षे व्याख्या ।
१०.७ × ६.९ सें० मी०	१	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणेब्रह्माविष्णुसंवादे चतुःश्लोकी भागवतं संपूर्णं ॥ श्रीरस्तु ॥
३१.२ × १५ सें० मी०	८ (१–८)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति चतःश्लोकी भागवत विवृतिः संपूर्णं ॥
३१.७ × १५.८ सें० मी०	५ (१–५)	१५	५३	पू०	प्राचीन	इति नानास्था नास्थितायाः चतुश्लोकी व्याख्यायाः समाहारः दिव्य ७ ॥३६॥
२७.६ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४५	अपू०	प्राचीन सं० १८१८	
२६.२ × १३.९ सें० मी०	१६ (२–१७)	११	४४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १५.७ सें० मी०	१७ (४७–६३)	१५	४६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	४०६	भागवत	व्यास		दे० का०	दे०
३८९	५७०७	भागवत (सटीक)			दे० का०	दे०
३९०	४२४५	भागवत (१-६,११-१२ स्कंध) (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३९१	१६०१	भागवत (५-१२ स्कंध, सटीक)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३९२	६३००	भागवत (८-१२ स्कंध)			दे० का०	दे०
३९३	८५	भागवत (भावार्थदीपिका)		श्रीधरस्वामी	दे० का०	दे०
३९४	३५६६	भागवत (द्वितीय स्कंध)			दे० का०	दे०
३९५	६१४६	भागवत (अन्वयबोधिनी)		चूड़ामणिद्विज	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३.×१५.५ सें० मी०	४१ (३,१०-१२, २१-३८,६४-६६,८२)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	
३६×१८.५ सें० मी०	६०	१५	६०	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
३१.८×१६ सें० मी०	१०६२	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे टीकायां श्रीधरस्वामि विरचितायां द्वादशस्कंधे टीयां त्रयोदशोध्यायः ॥१३॥
३४×१५.४ सें० मी०	३५६	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८६२	
१६.६×११.५ सें० मी०	७३४	१०	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्री भागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्वादशस्कंधे सूतोक्ते त्रयोदशोध्यायः १३ आषाढ़ मासे कृष्णपक्षेत्रोदस्यां बुधवासरे संवत् १९०२ श्रीकृष्ण ॥
३३.१×१४.२ सें० मी०	६४ (१-३१,३३-६३-७८-७९)	१०	४७	अपू०	प्राचीन	
३२×१७.३ सें० मी०	९	११	५३	अपू०	प्राचीन	
३३.३×१३.४ सें० मी०	१२ (१-१२)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति जन्माघस्यव्याख्या चतुष्टयं समाप्तिम् गमत् सुभयो संवत् १८५५ के शालमिती मार्गकृष्ण ७ भौम वासरेकः याद्रीशं पुस्तकं दृष्टाताद्रीशं लिखितंमया तत्सुद्धं असुद्धं वामम दोषो न दीयते वालानामुपकराय कवि चूडामणि द्विजः श्री भागवतपद्यानां कुरुतेऽन्वय वोधिनीं (पृ० सं०—१)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९६	५,३४४	भागवत (कथासंग्रह)			दे० का०	दे०
३९७	५९६७	भागवत (प्रथमक्रमसंदर्भ)			दे० का०	दे०
३९८	१८५	भारतसार			दे० का०	दे०
३९९	४०१३	भारतसावित्री (महाभारत)			दे० का०	दे०
४००	४११७	मलिम्लुचकथा			दे०का०	
४०१	६२९२	महाभारत (आदिपर्व)			दे० का०	दे०
४०२	७६७९	महाभारत (सौप्तिकपर्व)			दे० का०	दे०
४०३	७८५०	महाभारत (द्रोणपर्व)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·२ × ११·७ सें० मी०	१७० (१–१७०)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति द्वादश स्कंध कथा संग्रहः १२ समाप्तोयं भागवत कथा संग्रहः······ संवत् १८७३ मिति फाल्गुन शुद्ध पौर्णिमा इंदु वार ॥
३२·८ × १४·७ सें० मी०	४८ (१–४८)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति प्रथमस्य क्रम संदर्भे एकोनविंशोध्यायः ॥
२५ × १२ सें० मी०	४७	८	३२	पू०	प्राचीन श० १६६२	इति भारत सारे भारत युद्ध समाप्त॥ शुभं भवतु ॥ श्री कृष्णायणमस्तु ॥ वासुदेवाय णमस्तु ॥ १ ॥ शके १६६२ वैसाख मासे नाम संवत्सरे उत्तरायणे शरद ऋत्वौ कार्तिक शुक्ल तृतीयायां मंदवासरे समाप्ति मगात् ॥ श्री राम ॥
३०·७ × १६·७ सें० मी०	५३ (१–५३)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं० १९१५	श्री महाभारते भारत सावित्र्यां पांडव चरित्रेनाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ समाप्ता भारत सावित्री संवत् १९१५ पौष शुक्लाऽष्टमी ज्ञवासरे लिपितं··· ॥
२० × १··४ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे मलिम्लुच कथा शंपूर्णं शुभमस्तु शंवत् १८४२ द्वि० चैत्र कृष्ण ५ बुधवारेकः ॥
३१·९ × १३ सें० मी०	१८५	११	४५	अपू०	प्राचीन	
३४·२ × १६·५ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	४३	अपू०	प्राचीन	
३०·३ × १२ सें० मी०	१७ (१–१७)	१२	५०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते द्रोणपर्वणि अध्यायः १३······ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०४	७८४८	महाभारत (द्रोणपर्व)			दे० का०	दे०
४०५	९८७	महाभारत (शांतिपर्व)			दे० का०	दे०
४०६	५६८३	महाभारत (दानधर्मखंड)			दे० का०	दे०
४०७	२०५६	महाभारत (भीष्मपर्व)			दे० का०	दे०
४०८	५६८४	महाभारत (दानधर्मखंड)			दे० का०	दे०
४०९	१९६४	महाभारत (शल्यपर्व)			दे० का०	दे०
४१०	५६२६	महाभारत (सभादान, और शांतिपर्व)			दे० का०	दे०
४११	५७०५	महाभारत			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १२·१ सें० मी०	१५५	१२	४८	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × १२ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते सतसहस्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांतिपर्वाणिउत्तमानुशासने दानधर्मोत्तमे श्रीविष्णोर्नामसह ॥ समाप्त हुआ ॥ श्री कृष्ण जी
३९·३ × १६·७ सें० मी०	३५ (२६७-३०१)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते दानधर्मे उमामहेश्वर संवादे० (पृ० २७१)
३४·१ × १६·३ सें० मी०	१६२ (१–१६२)	१५	४२	पू०	प्राचीन सं०१८७५	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्व्व समाप्तं शुभमस्तु श्रीरामचन्द्रायनमः ॥ संवत् १८७५ आश्विनशुक्ल ८,बुधे ॥
३५·८ × १२·४ सें० मी०	१४० (२५-४९, २५४-३७०)	११	५४	अपू०	प्राचीन	
२७.५ × १४·७ सें० मी०	४८ (२–४९)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते कृष्णखंडे एकषष्टितमोध्यायः ।
३४·८ × १७·७ सें० मी०	४२९	१३	४२	अपू०	प्राचीन	
३६ × १४ सें० मी०	१४४	१०	५३	अपू०	प्राचीन	इति श्री महारामायणेशत सहस्रसंहितायां वालकांडे वासिष्टे मोक्षोपाये उपशम प्रकरणे समदर्शनं नाम चतुर्नवतितमः सर्गः उपशम प्रकरणं समाप्तं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१२	५७१८	महाभारत (सनत्सुजाताध्याय)			दे० का०	दे०
४१३	७१२५	महाभारत (आदि पर्व) (अर्जुन तीर्थयात्राप्रकरण)			दे० का०	दे०
४१४	६२६३	महाभारत (उद्योगपर्व)			दे० का०	दे०
४१५	६२२२	महाभारत (गदापर्व)			दे० का०	दे०
४१६	६०४६	महाभारत (शल्यपर्व)			दे० का०	दे०
४१७	१८२१	महाभारत (उद्योगपर्व)			दे० का०	दे०
४१८	१८२२	महाभारत (द्रोणपर्व)			दे० का०	दे०
४१९	४४०८	महाभारत (शांतिपर्व)			दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३२·५ × १२ सें० मी०	२७	११	५७	अपू० (जीर्ण और खंडित पत्रें)	प्राचीन	
३१·१ × १२·६ सें० मी०	८	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यादिपर्वणि अर्जुन तीर्थयात्रायां··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥
३४·५ × १२·५ सें० मी०	१६६	११	५७	अपू०	प्राचीन	
३३·८ × १३·२ सें० मी०	५५ (१-३१,३३-, ३७,४०-५२, ५५-५८,६०-६१,६६)	१०	५७	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां गदापर्व समाप्तम ॥
३४·४ × १३ सें० मी०	५७ (१–५७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	शल्यपर्वण्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
३५·५ × १५·५ सें० मी०	६५ (१-१४,१६-५२,१३६, १५०-१६२)	१४	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	उद्योग पर्व्व समाप्त मिति ··· ··· संवत् १८७० शाके माह सुदि ११ भौम वासरे लिषतं पं श्री दूबे लालसाहिजू कृष्णायनमः ॥
३०·३ × १३·२ सें० मी०	१०७ (१ से २०७ तक स्फुट पत्र)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
३४·७ × १३ सें० मी०	२५० (१–२५०)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत साहस्त्रां संहिताय वैयासिक्यां शांतिपर्वणिमोक्ष धर्मे पुउंछ वृत्युपाख्यानं समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	४३५५	महाभारत (सभापर्व-सटीक)		नीलकंठ	दे० का०	दे०
४२१	२८५०	महाभारत (मौशलपर्व)		नीलकंठ	दे० का०	दे०
४२२	२८५२	महाभारत (अश्वमेधपर्व-सटीक)			दे० का०	दे०
४२३	२७६९	महाभारत (कर्णपर्व)			दे० का०	दे०
४२४	२७६८	महाभारत (शांतिपर्व)			दे० का०	दे०
४२५	२७७४	महाभारत (द्रोणपर्व)			दे० का०	दे०
४२६	२७७५	महाभारत (शांतिपर्व-सटीक)		नीलकंठ	दे० का०	दे०
४२७	७९	महाभारत (शान्तिपर्व)	व्यास जी		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३६·६ × १७·४ सें० मी०	१२२ (१–१२२)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१७९७	इति श्री मतपवाक्य प्रमाण मर्यादा धुरंधरववर्धवंशेवतंस श्री गोविंदसूरिसुनु श्री नीलकंठ विरचिते भारतभावदीपे सभा पर्वार्थ प्रकप्रकाशः × × × समाप्तं शुभमस्तु ॥ संवत् १७९७
४० × १६·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	५८	पू०	प्राचीन	(ग्रंथनाम के लिये हाशिये पर भा० मौ० शब्दलिखित है) इति श्रीं महाभारते नैलकंठीये भारतभाव दीपे मौशल लार्थ प्रकाशः समाप्तः ॥
३९·४ × १६·८ सें० मी०	१२८ (१–१२८)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंद सूर्नो नीलकंठस्य कृतौ भावदीपे अश्वमेधिके पर्वार्थ प्रकाशः समाप्तिमगसत् ॥ श्रीरामायनमः : ।
४०·७ × १६·५ सें० मी०	१७९	११	४०	पू० क्रमिकृतित	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्र्यां संहितायांवैयासिक्यां कर्णपर्वणि समाप्तिमगमत् ॥ श्री राम जू ॥
४०·७ × १६·८ सें० मी०	३२२ (१-८१,८३-१२२,१२७-३०६,३१४-३३४)	११	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयाशिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दानधर्म समाप्तः ॥
४१·२ × १६.८ सें० मी०	२७३ (१–२७३)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते द्रोणपर्व समाप्ता:॥
४०·२ × १६·६ सें० मी०	१९८ (१–१९८)	१२	५५	पू०	प्राचीन	इति श्री शांतिपर्वणि राजधर्मषुसमाप्तं॥ शुभमस्तु ॥ इति श्री नैलकंठस्यकृतौ भारतभावदीपेशांतौ राजधर्म प्रकाशः समाः ॥
३१·४ × १२·३ सें० मी०	२०४ (१,३-७३, ७६-१९८)	१२	५२	अपू० जीर्ण	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२८	२५७६	महाभारत (शल्यपर्व)	व्यास जी		दे० का०	दे०
४२९	२४१२	महाभारत (आदिपर्व)			दे० का०	दे०
४३०	२४२०	महाभारत (भीष्मपर्व)			दे० का०	दे०
४३१	४०५५	महाभारत (संस्कृतटीका)			दे० का०	दे०
४३२	६६३	महाभारत			दे० का०	दे०
४३३	४८२	महाभारत (दानपर्व-सटीक)			दे० का०	दे०
४३४	१६७	महाभारत (सभापर्व)			दे० का०	दे०
४३५	१६३	महाभारत (हरिवंशपर्व)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५·८ × १४ सें० मी०	३८ (१-१२,१६-१२)	१२	५३	अपू०	प्राचीन	
३४·८ × १३·३ सें० मी०	६६	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
२६ × १२·८ सें० मी०	२४	१४	४६	अपू०	प्राचीन	
३६·३ × १५·८ सें० मी०	१४३	१२	४६	अपू०	प्राचीन	
३२·२ × १६·५ सें० मी०	६७ (१–६७)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
३६·५ × १५·६ सें० मी०	८२	१२	५१	अपू०	प्राचीन	
३४.६ × १८·४ सें० मी०	२३ (१४-३०,४२-४४,४७-४६)	१८	४३	अपू०	प्राचीन	
३७·३ × १७ सें० मी०	१२१	१३	४४	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
(सं०सू०३–१४)						

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३६	२६६३	महाभारत (अनुशासन पर्व) (सटीक)			दे० का०	दे०
४३७	१०५२	महाभारत			दे० का०	दे०
४३८	११०७	महाभारत (आश्रमवासिक पर्व)			दे० का०	दे०
४३९	७३०६	महाभारत अनुक्रमणिका			दे० का०	दे०
४४०	४१४८	महाभारत तात्पर्यनिर्णय	आनंदतीर्थ		दे० का०	दे०
४४१	३६४	महाभारतीय-शुकोपाख्यान	व्यास		दे० का०	दे०
४४२	२९२	महाभारतेतिहास कथा	लालदास		दे० का०	दे०
४४३	१२२३	महारामायण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·५ × १६·४ सें० मी०	२६३ (६–२६८)	१२	५५	अपू० (क्रमिकं तित)	प्राचीन सं० १८१२	इति श्रीमन्महाभारत शतसहस्रसंहितायां वैय्याशक्या श्रीमदनुशासनिके पर्वणि दानधर्मेष्ठषष्ठयुत्तर शततमोध्यायः १६८ समाप्तमिदंपर्व ... ... संवत् १८१२ च० सु० १३ ॥
३८ × १५ सें० मी०	३ (५, २११, ५६५)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
३२·५ × १४·२ सें० मी०	३५ (१-३४,३७)	१३	४०	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशतसाहस्र्यां संहितायां वैयाशिक्यां आश्रमवासिके पर्वणि चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ... ...॥ शुभमस्तु ॥ ...
१५·३ × ६·७ सें० मी०	२ (२–३)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२६·५×१२·४ सें० मी०	५६	१५	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदानंद तीर्थ भगवत्पादाचार्यविरचिते श्री महाभारत तात्पर्यनिर्णये पञ्चदशोध्यायः ॥
२५·५×६·८ सें० मी०	८ (१–८)	१५	६६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शुकोपाख्यानं समाप्तं । जैमुनि भारतीयं ॥
३०·६ × १४·५ सें मी०	३६	१३	४८	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × ११·४ सें० मी०	८ (१–८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	८३	मायापुरी	व्यासजी		दे० का०	दे०
४४५	६४६०	श्रीमार्कण्डेयपुराण			दे० का०	दे०
४४६	६९५	मुक्तिविवाह			दे० का०	दे०
४४७	६६९४	मूलरामायण			दे० का०	दे०
४४८	२९३७/१२	यतिराजविंशतिः			दे० का०	दे०
४४९	७६०	रघुनाथ समागम			दे० का०	दे०
४५०	२५०८	रामचंद्रचरितम्			दे० का०	दे०
४५१	१५६६	रामचंद्राह्निक			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२६.६ × १३.४ सें० मी०	५७ (१-१८,२६-६४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३५.५ × १५.७ सें० मी०	२५१	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मार्कण्डेय पुराणे समाप्तं ॥ मिती मार्गशुक्ल पक्षेतिथी ४ बुधवासरे संवत् १९२६ मुकामटीकमगढ लिष्यतं- ला: गजाधर पुरानी टहरीवारन की-॥
२१.६ × १०.६ सें० मी०	७ (१–७)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री काशी ... विमुक्ति कन्या विवाह सामग्री आख्यानकथा च समाप्ता ॥
२३.५ × १०.७ सें० मी०	३ (१-३)	७	४३	अपू०	प्राचीन	
१३.१ × ८ सें० मी०	११ (१–११)	६	१३	पू०	प्राचीन	
२४.६ × १३ सें० मी०	२	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.६ × ११.५ सें० मी०	४ (१–४)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
३२.८ × १६ सें० मी०	५४	१३	६५	पू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५२	५६६४	रामायण (अध्यात्म) (बालकांड ७वाँसर्ग)			दे० का०	दे०
४५३	७५५३	रामाश्वमेध			दे० का०	दे०
४५४	७१२१	रामाश्वमेध			दे० का०	दे०
४५५	२५१३	रास पंचाध्यायी (सटीक)			दे० का०	दे०
४५६	६१६२	लोकनालि			दे० का०	दे०
४५७	७०२२	वाराहपुराण			दे० का०	दे०
४५८	१६१०	वाल्मीकिभावप्रकाश	हरिपंडित		दे० का०	दे०
४५९	१५२९	वाल्मीकि रामायण (संस्कृतटीका) १ अयोध्याकांड (पूर्वार्द्ध) २ अयोध्याकांड(उत्तरार्द्ध) ३ सुंदरकांड ४ युद्धकांड	वाल्मीकि	गोविंदराज कौशिक	दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·४ × १७·३ सें० मी०	३४ (१–३४)	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे बालकांडे उमामहेश्वर संवादे सप्तमः सर्गः ७ समाप्तः ॥
३३·४ × १३·६ सें० मी०	५	९	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे शेष वात्स्यायनसंवादे रघुनाथस्यभरतागमनं नाम प्रथमोध्यायः ॥ × ×
३१·४ × १६·१ सें० मी०	३८	१२	४०	अपू०	प्राचीन	
३१·५ × १३·५ सें० मी०	४०	१७	४९	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति लोकनालि समाप्ता ॥
३२·१ × १६·८ सें० मी०	२८४	११	२९	अपू०	प्राचीन	इत्यादि वाराह पुराणे भगवछास्त्रे संबंधाध्यायः –(पृ० सं० ३५२)
२२·२ × ९·२ सें० मी०	१	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
३४·२ × १८ सें० मी०	१०६६ (१· १-१७६) (२· १-२१७) (३· १-२८३) (४· १-२९०)	१४	४४	अपू०	प्राचीन	इत्थं श्रीमच्छटारेश्चरण सरसिजद्वंद्व-सेवातिरेकादुद्भूतोद्दामवोधः कुशिक सुतकुलायां यत्ते रोषधीशः श्रीमान गोविंद राजो वरद गुरु सुतोभीवना-चार्यः प्रेम्णैव प्रर्प्यमाणे व्यतनुत विपु-लांयद्ध कांडस्यटीकाम् राम० राम० ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है.	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६०	१६३४	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड) (सटीक)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
४६१	१६५४	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड) (सटीक)			दे० का०	दे०
४६२	२०४१	वाल्मीकिरामायण १ लंकाकांड २ सुंदरकांड			दे० का०	दे०
४६३	२०६६	वाल्मीकिरामायण (युद्धकांड)			दे० का०	दे०
४६४	२१६३	वाल्मीकिरामायण (उत्तरकांड)			दे० का०	दे०
४६५	२१८	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड)			दे० का०	दे०
४६६	३०४	वाल्मीकिरामायण (किष्किंधाकांड)			दे० का०	दे०
४६७	३०२ ꣸	वाल्मीकिरामायण (बालकांड)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १६ सें० मी०	३८ (२६१–२९८)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	
३२ × १७ सें० मी०	४०१ (१-१०१,१-३००)	१३	५०	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे० एकोनविंशाधिकः सर्ग ११९ समाप्तम् सुभमस्तु ००००
३४·१ × १५·१ सें० मी०	९४ १ लं० ७३ (९१से१८१) २ सुं० २१ (११५से१४५ तक स्फुटपत्र)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
३५ × २७·२ सें० मी०	१२३ (२–१२४)	३०	२८	अपू०	प्राचीन सं०१९१५	श्री मद्वावाल्मीकीये आदि काव्ये ··· ··· संवत् १९१५ के० भाद्रे मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां बुधवासरे लिखितं ··· ॥
३३·५ × १७·३ सें० मी०	१४७ (१–१४७)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१९०१	इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये उत्तरकांडे स्वर्गरोहणं नामैकादशोतरशतमः सर्गः ॥१२४॥१११ अग्रहन सुदि ११॥ सुक्लेकासंवत ॥१९०१॥ केसाल ॥ श्री राम श्रीराम।
३०·२ × १२·९ सें० मी०	२०१ (१से१९७तक स्फुटपत्र)	९	४०	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षेरामायणे नंदिग्रामनिवासःसामाप्तं भरतपर्व्व अयोध्यापर्व्वं समाप्तं ॥
३१ × १३·३ सें० मी०	११३ (१से१२२तक स्फुटपत्र)	९	४४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षेरामायणे चतुर्विंशति साहस्रां श्रीरामायणे किष्किंधा कांडं समाप्तं ॥
३०·५ × १३·२ सें० मी०	९५ (१,३-८०, ८७-१०२)	९	४३	अपू०	प्राचीन सं०१९५१	इत्यार्षे रामायणे महर्षिवाल्मीकि विरचिते दशरथ प्रमोदनो पंचपंचाशत्तमः ॥५१॥···संवत् ॥१९५१॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६८	२७६	वाल्मीकि रामायण (लंकाकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
४६९	२७४	वाल्मीकि रामायण (अरण्यकांड)			दे० का०	दे०
४७०	२१६४	वाल्मीकि रामायण (अरण्यकांड)			दे० का०	दे०
४७१	१९३३	वाल्मीकि रामायण (अरण्यकांड संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
४७२	१९३१	वाल्मीकि रामायण (किष्किधाकांड)			दे० का०	दे०
४७३	२२०३	वाल्मीकि रामायण (उत्तरार्ध सटीक)			दे० का०	दे०
४७४	४३४	वाल्मीकि रामायण (अद्भुतोत्तर कांड)			दे० का०	दे०
४७५	४९२	वाल्मीकि रामायण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १३·३ सें० मी०	२१८ (१ से २२९ तक स्फुटपत्र)	९	४७	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे आदिकाव्ये चतुर्विंशतिप्ताहम्याप्तं हितायां लंकाकाण्डे फलश्रुतिबर्णनंनाम शतोत्तर एक चत्वारिंशः सर्गः १४१।
३१ × १३·५ सें० मी०	१०३ (१ से ११९ तक स्फुटपत्र)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
३३·८ × १७·३ सें० मी०	८८ (१–८८)	११	४०	पू०	प्राचीन	ओम् इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये महाकाव्ये आदि काव्ये आरण्य काण्डे-पंपा प्रांतवन प्रवेशोनाम पंचसप्ततितमः सर्गः ॥७५॥ समाप्तमिदमारण्य कांडीयंपुस्तकम् ॥ श्रीराम राम ॥
३३·८ × १६·७ सें० मी०	६५ (८१,११९-१८२)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
३४ × १६ सें० मी०	३१ (६–८,६८-९५)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·४ सें० मी०	२४६ (१-४७,४७-९७,९७-१३५ १३७-१६०, १६०-२४७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन सं०१९२५	इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये उत्तरकांडे स्वर्गारोहणं नाम चतुर्विंशोत्तर शततमः सर्गः शुभ सम्वत १९२५···॥
३२.५ × १५·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	
३०·६ × १४·१ सें० मी०	२८	१४	३८	पू०	प्राचीन सं०१८८४	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये शत कोटि संहितायां······ संवत् १८८४ मितीभाद्र पद वदि १२ लिखितमिदं मिश्र भवानिपरसाद अज्ञानाद्विस्मृतं भ्रांत्यायन्यूनमधिकंकृतं विपरितंतुतत्सवं क्षमश्वरी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	२७२७	वाल्मीकिरामायण (सुंदर कांड)			दे० का०	दे०
४७७	८६२	विष्णु तत्व प्रकाश (पांचरात्र)	वनमाली मिश्र		दे० का०	दे०
४७८	२३६१	विष्णु पुराण (स्वप्रकाश टीका)			दे० का०	दे०
४७९	६७९	विष्णु पुराण			दे० का०	दे०
४८०	१९०९	विष्णु पुराण (संस्कृतटीका सहित)			दे० का०	दे०
४८१	२९१०	शल्य पर्व (महाभारत)			मि० का०	दे०
४८२	३६३३	शिवपुराण			दे० का०	दे०
४८३	३४३१	शिवपुराण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४ × १७·२ सें० मी०	६०	९	४२	अपू०	प्राचीन	
२७·२ × ११·७ सें० मी०	८७	११	४७	अपू०	प्राचीन	
३२ × १५ सें० मी०	७ (२६–३२)	१०	५४	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११·२ सें० मी०	१४८ (३१-१२४, १५०-१८५, १८७-१९४)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १५·८ सें० मी०	७४	१२	५४	अपू०	सं० १८६६	इति श्री विष्णुपुराणे प्रथमेंशेद्वाविंशोध्याय प्रथमेशः समाप्तः ॥ चैत्र सुदि १४ गुरवासरे संवत् १८६६ ॥
३५·८ × १३·७ सें० मी०	६	११	५१	अपू०	प्राचीन	
३४·३ × १६·१ सें० मी०	१३१ (२० से १४० तक स्फुट पत्र)	१२	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री शिव पुराणे व्यासमूत संवादे ज्ञान प्रकरणं निरुपणं नाम पंच सप्ततितिमोऽध्याय ··· संवत् १८६८ शाके १७३३ पौष कृष्ण २ चंद वासरे तद्दिने ··· ··· ॥
२८·१ × १३ सें० मी०	३१ (३८–६६)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे श्रावण महिमा वर्णनोनामद्वाविंशो अध्याय श्री संवत् १८७३··· ··· ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
४८४	१५१	शिव पुराण	व्यासजी		दे० का०	दे०
४८५	३५२२	शिव पुराण			दे० का०	दे०
४८६	२३४६	शिव रत्न			दे० का०	दे०
४८७	६१८५	शिव रहस्य			दे० का०	दे०
४८८	६६६१	सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
४८९	२०४६	सत्योपाख्यान			दे० का०	दे०
४९०	७४३१	सत्योपाख्यान			दे० का०	दे०
४९१	२०४२	सनत्कुमार संहिता			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १८ सें० मी०	१७० (१-७,९-६९-६६,७१-१६६,१६८-१७२)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिव पुराणे व्यास सूत संवादेज्ञाव प्रकर्णानि निरूपणे नामाध्यायः ७४॥ श्री रामः ॥ शुभं ॥ शिव मादौ शिव मध्ये शिव मंतेच सर्वदा ॥ सर्वेषां शिवभक्तानां नाराणामस्तुवै शिवं ॥ शुभं ॥ श्री सांव शिवार्पणमस्तु॥
३४·२ × १६·१ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	४२	अपू०	प्राचीन	
३३ × १६·५ सें० मी०	७१	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १६·१ सें० मी०	९१	१४	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिव रहस्ये सप्तमांशे शिव गौरी संवादे काशी महात्म्ये काशी वासनियम विधि कथनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ (पृ० १९)
३३·६ × १५·४ सें० मी०	९४ (पू०–६३ उ०–३१ (पू० का पृ०-७ अप्राप्त)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री सत्योपाख्याने सूत शौनक संवादे एकोनाशीतितमोध्यायः ॥ ७९ ॥ संवत् १८६५ ॥ फागुन सुदि १०॥ लिषितं पं श्री पटैरिहाकनैया ओडछाख्ये नगरे व्यास पुराख्ये वेत्रवती निकटे पुराणं संपूर्णं शुभमस्तु ॥
३३·५ × १५·२ सें० मी०	९५	१३	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री सत्योपाख्याने सतशौनक संवादेवाल चरित्रे एकोनाशीतित्तमोध्यायः ७९ इति श्री सत्योपाख्यान संपूर्णं शुभंभवतु संवत् १८६० ज्येष्ट सुदि १५ ॥
३४.२ × १२·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री सत्योपाख्याने मंथरा कैकयी संवादे पंचामोध्यायः ५ ॥ (पत्र सं० ९)
२०·८ × १३.४ सें० मी०	३३ (१–३३)	१२	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां सदाशिव सनक संवादे पंचंत्रिस पटल ··· ··· संवतु १८२६ ॥ लिषतं वृंदावन मधे [illegible] राजकरयथ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९२	६०१०/४	सप्तश्लोकीभागवत			दे० का०	दे०
४९३	२७७	सावित्री उपाख्यान			दे० का०	दे०
४९४	६७३८	सिद्धांतराज	वालकृष्ण		दे० का०	दे०
४९५	११३६	स्कंद पुराण (केदारकल्प)			दे० का०	दे०
४९६	२२१७	स्कंद पुराण			दे० का०	दे०
४९७	१०७६	स्कंद पुराण (काशीखंड)			दे० का०	दे०
४९८	६२९८	स्कंद पुराण (काशी खंड)			दे० का०	दे०
४९९	२२०४	स्कंद पुराण (काशीखंड संस्कृत टीका सहित)		रामानंद	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·९ × १२·१ सें० मी०	२ (२४–२५)	९	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीये स्कंधेब्रह्मानारायण संवादे सप्तश्लोकी भागवसंपूर्ण संवत् १९२१ मीती श्रामण सुक्ल तिथौ ४ शनिबासरे ॥
२९ × १४·५ सें० मी०	९ (२–१०)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं० १८०१	इति आरण्यक पर्वणि साविल्यु पाख्यानं समाप्तं समाप्तमिदं साविल्यु पाख्यानं लिवि कृतं हुकुमचंदेन सं० १८०१ (?) चैत्रस्यकृष्ण त्रयोदस्यां भृगुवासरे॥ श्री रस्तु मंगलं ददसि ॥ श्री ॥ कृष्ण वासुदेवा ॥
३३·५ × १०·३ सें० मी०	१०२ (२–१०२)	७	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री वालकृष्णाख्य वेदवृक्ष सुनिमिते सिद्धान्त राज संज्ञेत्र पातालानां निरूपण ········ (पृ० ४०)
२६·८ × १३·६ सें० मी०	६६	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकेदार कल्पे स्कंद पुराणे शंभु कार्तिकेय संवादे स्वर्गगमनं विधि: राजपुरी ब्रह्मविष्नुपुरी नाम एकोनविंश: पटल: ॥
३४·५ × १७·२ सें० मी०	५७ (१–५७)	१५	४६	पू०	प्राचीन सं० १८१७	इति श्री स्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे श्रवणमहिमानुवर्णनं नामद्वाविंशोध्याय: ॥२२॥ शिवकेवलोहम् ॥ संवत् १८१७ तत्रवर्षेमांगल्य प्रदेमासोत्तंमासे भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४······
३३·७ × १२·५ सें० मी०	२३५	८	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री व्यासकृते स्कंदपुराणे काशी खडेपंचा शत्तमोध्याय: समाप्तोयं काशी खंड: ॥ शुभं भवतु ।
२५·१ × ११·६ सें० मी०	६० (७ से ७३ तक स्फुट पृ०)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काशी खं गंध वत्यलका वर्णनाम त्रयोदशोध्याय: ॥ (पत्र–सं०–७३)
४०·२ × १७·३ सें० मी०	२४६ (१–२४६)	१२	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्रीरामेन्द्र वनशिष्येण चैतन्यवनायणर्यायेन रामानंदेन कृतायां काशीखंड टीकायां अपरार्द्ध समाप्तं ॥ श्रीपार्वतीश्वरौ प्रीयेतांमम् ॥··· ···

(सं०सू०३-१६)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५००	३७२२	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०१	३७८६	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०२	६०१	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०३	६०३	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०४	१८१	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०५	३१७७	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०६	७०६४	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०७	६६२५	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.९ × १५.७ सें० मी०	२३ (८०–१०३)	११	३५	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीस्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडेशिवलिंग पूजन महिमा कथितं नामत्रयो विंशोध्याय: २३ समाप्तम् आश्वनस्यसितेपक्षे द्वितीया गुरुवासरे ... शंवत् १८६८... ।
२७.२ × ११.४ सें० मी०	८१ (१–८१)	११	४३	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्रीस्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे द्वाविंशतिमोध्याय: ॥२२॥ शुभमस्तु ॥
३२.७ × १६.३ सें० मी०	७२ (१-९,११-७३)	१३	३५	अपू०	प्राचीन सं०१९१३	इति श्री स्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे श्रवण महिमानुवर्णनं नाम द्वाविंशोध्याय: २२ शिव पार्वतीभ्यांनम: सं० १९१३ तत्र फाल्गुण शुदि १३ रवि दिने लिखतं मिश्र हरगुलाल गुशांई बुडाणे वाला शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
३३.२ × १७ सें० मी०	४० (१–४०)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३३ × १२.५ सें० मी०	४० (१–४०)	८	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे... पूजामहिमानु वर्णनं नाम सप्तमोध्याय: ॥७॥ सूत उवाच नित्यानंद मयं शांतं-निर्विकल्पंनि ... ...
३० × १३.६ सें० मी०	२३ (१–२३)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तरखंडे प्रदोष महिमानाम षष्टोध्याय: ६ ॥ × × × × × (पृ० सं० २१)
३१.८ × १५ सें० मी०	१७ (५०, ७५-७२)	१३	४३	अपू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्रीस्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तरखंडे पुराण श्रवण महिमानाम द्वाविंशोध्याय: ॥ २ ॥ संबत् १९२० । आश्विन कृष्ण ८ चंद्रे ॥... ... ...
२३.९ × ११.५ सें० मी०	१३२ (१-८६,८६-१३१)	११	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे श्रवण कीर्त्तन महिमा नाम द्वाविंशोऽध्याय: ॥२२॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०८	१८६३	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५०९	४३४५	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५१०	४३४६	स्कंद पुराण (ब्रह्मोत्तर खंड)			दे० का०	दे०
५११	४८६४	(स्कंद पुराण) (स्यमंतकोपाख्यान)			दे० का०	दे०
५१२	२४३३	स्वधर्माध्वबोध	रामचंद्र		दे० का०	दे०
५१३	२०५० / २	स्वर्गारोहणपर्व (महाभारत)			दे० का०	दे०
५१४	५६४४ / १७	हरिलीलामृत			दे० का०	दे०
५१५	७३४४	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२६ × १४·८ सें० मी०	२० (१६-२१,२५-३८)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१·२ × १५ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
३२.८ × १४·४ सें० मी०	६० (१८–८०)	१२	४७	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे श्रवण महिमानुवर्णननाम द्वाविंशोध्यायः २२ ··· ··· संवत् १८६० ॥
३२·५ × १७·३ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कन्द पुराणे स्यमन्तकोपाख्यानं ॥ शुभमस्तु ॥
३०·७ × १५·७ सें० मी०	१०९ (१–१०९)	११	४१	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इतिश्री स्वाधर्माध्वबोधे हंसवंशे स्वभूवंश्य राम चंद्रेण विरचिते द्वितीयपंचके श्री निवासाचार्य निंबार्क संवादे याग निर्देशोनामष्टोध्यासः समाप्तश्चायं द्वितीयपंचक मीतिमार्गसिर सुदी १० सोंवारे संवत् १९०९ ··· ··· ॥
१२ × १२ सें० मी०	१२$\frac{१}{२}$	११	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारथे सतसहस्रसंगीतायां स्वर्गारोहिणी कथासमाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
१३ × ८·५ सें० मी०	१८	१०	१४	अपू०	प्राचीन	इति हरिलीलामृताध्वाख्ये तंत्रे श्री राधिकानिरूपणं तृतीयोध्यायः ॥ ३ (पृ० सं० २)
३५·७ × १३·९ सें० मी०	७६ (१–७६)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१३	इति खिलेषु हरिवंशेपुराण श्रवण माहात्म्यं संपूर्णम् श्री कृष्णायनमः संवत् १८१३ शाके १६७८ फाल्गुने मासि ···॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१६	७८९४	हरिवंशपुराण (कैलाशयात्रा)			दे० का०	दे०
५१७	७८९७	हरिवंशपुराण			दे० का०	०
५१८	७६८२	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५१९	६१७५	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२०	५९७०	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२१	२२८६	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२२	२३३५	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२३	५३०४	हरिवंशपुराण (पुष्करटीका सहितं)		विश्वेश्वर	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १७·४ सें० मी०	४४ (१–४४)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति हरिवंशे कैलाश यात्रायां द्वारकां कृष्ण प्रत्यगमनं नाम: ५९ ॥ सम्वत् १८९७ श्रावण मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदोयां बुधवासरे ॥ तद्दिनं भगवान रामेण लिखितं पुस्तकं इदं ॥ श्रीराम ॥
३५·७ × १३·७ सें० मी०	५०० (१–५००)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१५	इति खिलेषु हरिवंशे वामन प्रादुर्भावः समाप्तः ··· ··· ··· संवत् १८१५ फाल्गुन वदि २ भौमे रीवा ग्रामेऽजीत सिंह राज्ये लिखितमिदं पुस्तकं वैजनाथेन ॥
२९·८ × १५·१ सें० मी०	१९७	१४	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेषिलेषु हरबंसे रुकमिनी हरनंनाम ११३ ॥ (पृ० सं० २४०)
२२·८ × १३·२ सें० मी०	३१४ (१ से ३२१ तकस्फुट पत्र)	१५	२८	अपू०	प्राचीन	इति हरिवंशे पारिजात हरणे सशत पंचविंशः ॥ (पृ० सं०–३२१)
३१ × ११·६ सें० मी०	५९० (२-७४, ७९-५९५	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां वैयाशिक्यांखिलेषुहरिवंशे त्रिपुर वृत्तानुकोर्त्तनं नाम जनमेजय उवाचा हरिवंशेपुराणे··· ··· (पृ० सं० ५९३) ॥
२९·५ × १४ सें० मी०	१७२	१२	३७	अपू०	प्राचीन	
३९·८ × ११·८ सें० मी०	१९ (२१–३९)	११	६४	अपू०	प्राचीन	
२८·२ × १३·४ सें० मी०	४८	१८	७५	पू०	प्राचीन सं०१६९९	इति पुष्कर टीकायां विश्वेश्वर रचितायां षड्विंशोध्यायः ॥ पुष्कर प्रादुर्भाव टीका समाप्ता ॥ संवत् १६९९ वर्षे माघ कृष्ण १४ सोमेलिखितमिदं द्विवेदि चिंतामणि ··· ··· ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२४	५३७०	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२५	४७७५	हरिवंशपुराण (सटीक)			दे० का०	दे०
५२६	४७५४	हरिवंशपुराण (सटीक)		नीलकंठ	दे० का०	दे०
५२७	१०३८	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२८	३७१६	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५२९	३६९२	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५३०	५१८	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०
५३१	५३३	हरिवंशपुराण (सटीक)		नीलकंठ	दे० का०	दे०
५३२	३८४	हरिवंशपुराण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३१·२ × १४·७ सें० मी०	१०	१७	४५	अपू०	प्राचीन	इति हरिवंशेपौष्करे मार्कंडेय दर्शनं ॥ (पृ० ८)
३५·६ × १८·४ सें० मी०	५८ (स्फुटपत्र)	१०	५१	अपू०	प्राचीन	इति हरिवंशे करवीर प्रणभिमनं नामाष्टानवतितमः ··· ··· (पृ० २३४)
३६·६ × १४·३ सें० मी०	२१ (४१-६१)	१०	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणमर्यादाधुरंधरचतुर्द्धर वंशावतंस श्रीगोविंद सूरि सूनोनीलकंठस्य कृतौ भारत भावदीपे हरिवंशांतग्रंथार्थप्रकाशः समाप्तिमगमत् अध्यायः ॥ श्री रामोजयती ॥ग्रंथ २६॥ १२६ ॥ संपूर्णं समाप्तं ॥ (पृ० ६१)
३३ × १४ सें० मी०	११ (स्फुट पत्र)	१५	३५	अपू०	प्राचीन	इति खिलेषुहरिवंशे पुराण श्रवणा महात्म्यंसंपूर्णं ॥शुभ मस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥
३५·७ × १५·१ सें० मी०	३८३ (स्फुट पत्र)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
३५·७ × १६ सें० मी०	७८ (३३८-४६५)	१३	४३	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्रीमहाभारतेशतस्यहस्त्यांसंहितायां वैयाशिक्यांपारिजातेखिलसंज्ञे हरिवंशः समाप्तोयम् शुभमस्तु रसनवगजचंद्रे (१८६६) वत्सरे ज्येष्टयुगमे ·· ···।
३५·६ × १३·६ सें० मी०	१४४ (स्फुट पत्र)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	
३७·१ × १६·४ सें० मी०	७३ (स्फुट पत्र)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	
३६·६ × ११·८ सें० मी०	२६ (१-३४६ तक स्फुट पत्र)	१२	६१	अपू०	प्राचीन सं०१६७६	इति श्री महाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यां हरिवंशे समाप्तः। शुभमस्तु । सिद्धिरस्तु । नवमुनिनृपयुक्ते वत्सरे मासि शुक्ले ··· १६७६···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३२	३७७	हरिवंश पुराण	व्यास जी		दे० का०	दे०
५३३	७२२	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५३४	१९२	हरिवंश पुराण (सटीक)			दे० का०	दे०
५३५	२५७७	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५३६	२६५१	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५३७	११३७	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५३८	४४५२	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५३९	२८४९	हरिवंश पुराण			दे० का०	दे०
५४०	५९२	हरिवंशार्थप्रकाश टीका		नीलकंठ	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
४०·१ × ११·५ सें० मी०	२१ (४०–४८, १७६-१८७)	१०	५६	अपू०	प्राचीन	
२८·६ × १३·४ सें० मी०	१२४ (३० से५०७ तक स्फुट पत्र)	१४	३७	अपू०	प्राचीन	
३० × १८·५ सें० मी०	७८८ (१ से ८५८ तक स्फुट पत्र)	१४	३७	अपू०	प्राचीन जीर्ण	कृमि कुन्तित । इति श्री पद्मपुराणोक्त हरिवंश श्रवण माहात्म्य विधिः समाप्तः शुभम् लिषा रामरत्न ।
३३·४ × १३·४ सें० मी०	२० (१९ से ३७२ तक स्फुट पत्र)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
३७·५ × १३·६ सें० मी०	६६० (१ से ६७० तक स्फुट पत्र)	११	६२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महा भारते शतसहस्रयां सहितायां खिलेषु हरि वंशेनो नीलकंटस्यकृता भारत दीप हरि वंशात ग्रंथार्थप्रकाशः समाप्तिगमत् ३१७ शुभ मस्तु ॥ श्री सिद्ध रस्तु ॥
३० × १४·५ सें० मी०	७१ (१–७१)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
३२·५ × १२·७ सें० मी०	१० (६४–७३)	११	४९	अपू०	प्राचीन	
३६·५ × १६ सें० मी०	३६३ (१–३६३)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री महभार० सा० खिरलेषु हरिवंश भविष्यं समाप्तं ॥ शुभं ॥
३४·२ × १५·८	३५६ (१ से ३६२ तक स्फुट पत्र)	११	४७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
माहात्म्य						
१	७६३१	अक्षयनवमीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२	५०६४	अनंतव्रतकथामाहात्म्य			दे० का०	दे०
३	१२६३	अनंतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४	२४६२	अयोध्यामाहात्म्य			दे० का०	दे०
५	५००७	अयोध्यामाहात्म्य			दे० का०	दे०
६	७२७८	अयोध्यामाहात्म्य			दे० का०	दे०
७	७४०६	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
८	६१७२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.१ × ९.५ सें० मी०	३	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२५.८ × ११.६ सें० मी०	५ (२,४–७)	८	३७	अपू०	प्राचीन	× अनंतव्रत माहात्माविधि × × × (पृ० सं० २)
२०.४ × १० सें० मी०	६ (२–७)	११	२७	अपू०	प्राचीन	
३५.१ × १२ सें० मी०	७३ (१–७३)	८	४७	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति रुद्रयामले हरगौरी संवादे अयोध्यामाहात्म्ये त्रिंशोध्यायः ३० समाप्तं पुस्तकं शुभमस्तु सं० १९२३ फा०…॥
३२.१ × १५ सें० मी०	६ (१–६)	१२	५४	अपू०	प्राचीन	
२८.१ × १२.२ सें० मी०	११	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०.१ सें० मी०	५८ (१-५७,७८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे कार्त्तिक शुक्ल प्रबोधिनीमाहात्म्यंसोद्यापनं समाप्तम्॥
३०.२ × ११.८ सें० मी०	५९ (१–३५, ३७–५०)	११	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे ब्रह्मनारद सम्वादे एकादश्याः जागरण पारनमाहात्म्यं समाप्तम् शुभं भूयात सं० १९१८ के शाल इयं पुस्तकमलेषियं श्रीऽमोढा सिवादीनराम पुनः तस्यात्मजेन राम लाल पांडे उच्चेहरा नग्रे शुभस्थाने श्रीमहाराजाधिराजा श्री राजा साहेब राघवेन्द्र देवराज्ये… … …॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	५५२२	एकादशीमाहात्म्य (संग्रह)			दे० का०	दे०
१०	१९९३	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
११	२०४८	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२	२३५२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३	५७०४	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	"
१४	५४६०	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५	७०१९	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६	६८२९	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १० सें० मी०	३८ (१से४८तक स्फुट पत्र	८	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे जेष्ट कृष्णैकादशी माहात्म्यं संपूर्णं ।··· (पृ०-सं० –१७)
३०·१ × १५ सें० मी०	१५ (१-२,५-६, ८-११,१४-१८,२०,२२)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १२·३ सें० मी०	६० (१–६०)	१२	३९	पू०	प्राचीन सं०१८९४	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे मलमासे कृष्णा कामदैकादशी व्रतमाहात्म्यंसमाप्तं ॥२८॥ १३६ ॥ मार्गमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यांसनिवारे सं०-१८९४ ···
२५·५ × ९·१ सें० मी०	९ (१,३–१०)	७	४०	अपू०	प्राचीन सं०१७४२	इति श्रीविष्णु पुराणांतर्गत ब्रह्माण्ड पुण्ये एकादशी माहात्म्यंसमाप्तं संवत् १७४२ समयनाम जेठ सुधि १ चंद्रवारे काश्यां मध्ये लिखितं बंसगोपालराम···
३४·३ × १७·५ सें० मी०	८ (१–८)	१४	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपु × × ×॥
२१·५ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१७५२	इति श्री मत्स्यपुराणे कृष्णार्जुन संवादे एकांशी महात्म्य समाप्तः ॥ शुभमस्तु संवत् १७५२ भाउपदकृष्णष्टमो बुधवार लिखितं नरसिंग पाठक चरनाद्रै ॥
१८·७ × ११·५ सें० मी०	१० (२–११)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे क्रिया सारे एकादशीमाहात्म्ये द्वाविंशोध्यायः ॥
२५·१ × ११·५ सें० मी०	६२ (१–६२)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंद पुराणे कार्त्तिकेशुक्ल प्रबोधिनी एकादशी महात्म्यं समाप्तम् ॥ चतुर्विंशत एकादशी व्रतमहात्म्यंसमाप्तं॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	६७६५	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८	५१४०	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९	४८९०	एकादशीमाहात्म्य			मि० का०	दे०
२०	५१०१	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१	५०५७	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२	४६७२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३	४८४५	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४	८७२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५·८ × ११·६ सें० मी०	५६ (१-२५,२७-५५,५७-५८)	६	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्म वैवर्त्ते महापुराने श्रामन कृष्णे कामिकैकादशी माहात्म्यंनाम × (पृ० सं० ५५)
२६·६ × ११·५ सें० मी०	१३ (३१-३८, ४२-४६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाराहपुराणे चैत्र शुक्लैकामदा माहात्मं समाप्तम् ॥ (पृ० सं० ३२)
२१·१ × १० सें० मी०	६ (१–५,७)	१३	२८	अपू०	प्राचीन सं० १७४२	इति श्री बृहंन्नारदीये एकादशी महात्म्यं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७४२ भाद्र पद वदि ७ भौमे समाप्तं ॥
२४.४ × १०·२ सें० मी०	३० (१-३,३-२६)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे फाल्गुन शुक्लैकादशी आमर्दकी माहात्म्यं ······ ॥ (पृ० सं०–२७)
२७·४ × १३·१ सें० मी०	३६ (३५–७०)	१२	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्त्तिकी शुक्लादेवोत्थापनीएकादशीमाहाम्यकथासंपूर्णम् ॥ संवत् १८७६ अश्विन वदि द्वादशी १२ गुरुवासरे लिखितमिदमेकादशीमाहात्म्यं शालग्रामस्य पुत्रेण लक्ष्मणाभिधानेन कृतं······ ॥
३२·६ × १४ सें० मी०	४८ (१-३६,३६, ३७-४७)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री कार्त्तिके शुक्ल पक्षे प्रबोधिनी माहात्म्यं संपूर्णम् ॥
३१·३ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री नारदीय पुराणे रुपमादचरीतेसर्व कामप्रदैकादशी माहात्म्यं सम्पूर्णं समाप्तम् ॥ सम्वत् १८८६ समय नाम श्री महा माङ्गल्यप्रद मांसे वैशाख मांसे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां···॥
२८·१ × १२·६ सें० मी० (सं०सू०३–१८)	४३ (१-३३, ३७-४६)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५	३७५३	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२६	३७२६	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२७	३१४	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२८	३७९	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२९	३२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३०	१०९९	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३१	१७१६	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३२	१६६३	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.१ × १३.८ सें० मी०	६	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णोशयनं करदानोत्थापनमहात्म्यं संपूर्णं ॥
२४.५ × १०.७ सें० मी०	८५ (१-२१,२३, २४,२६-८७)	८	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कन्द पुराणे एकादशी माहात्म्ये कार्तिक शुक्ला हरि प्रबोधनीनामैकादशीमाहात्म्यं समप्तिमगमत् ..... ॥
३३.४ × १६ सें० मी०	२९ (१-२९)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्यो पुराणे बैसाष कृष्ण विरूथनी एकादशा संपूर्णं ॥
३०.८ × ११.९ सें० मी०	१६ (८-२३)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
३४.१ × १५.४ सें० मी०	४० (१-१७,२२, २५,२९-४९)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
३०.७ × १४.८ सें० मी०	२ (१-२)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे भाद्रपद शुक्ला एकादशी पदमानाम माहातमं समाप्तं ॥
२४.६ × ११.३ सें० मी०	४९ (१-१७, २०-५१)	११	२७	अपू०	प्राचीन	
३१ × १६ सें० मी०	५ (९-१३)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णोः शयनी करिदान उत्थापन विधिः शयन एकादशी संपूर्णं ॥१॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	१६४०	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३४	२७२३/२	एकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३५	१७१८	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३६	१९०३	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३७	४४४१	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३८	७५३९	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
३९	७३८४	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४०	७६००	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२.२ × १५.६ सें० मी०	१४ (४४–५७)	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे कार्तिकशुक्ला देवोत्थापिनी एकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम्
३०.६ × १४.५ सें० मी०	३४ (१–३४)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंधदश पुराणे एकादशी माहात्म्यं २४ समाप्तम् ॥
२३.६ × ११ सें० मी०	१४ (२२,२६,४१-४८,५०-५२, ५५)	१३	३१	अपू०	प्राचीन	
३५ × १५.५ सें० मी०	३४ (१–३४)	१४	५८	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री सनत्कुमार संहितायां कार्तिक माहात्म्य अष्टविंशतिमोध्यायः २८ शुभमस्तु मंगलं ददाति संवत् १८७० शाके १७३४ अश्विन सुदि १३ श्रीकृष्णायनमः
३१ × १४.७ सें० मी०	३२ (१–३२)	११	४३	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक माहात्म्ये कृष्ण सत्यभामा सम्वादे जेष्ठा कनिष्ठोपाख्याने एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२६॥ शम्वत्१८६०। समय कार्तिकमासे शुक्ल पक्षे पचम्यां भृगुवासरे इदं पुस्तकं समाप्तं ······
२६.४ × १२.८ सें० मी०	४१ (१–४१)	११	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे कार्तिक माहात्म्येमुनिशौनकादि नारद संवादे सप्तदशोध्यायः ॥ समाप्तं ॥
२७ × ११.४ सें० मी०	८३ (२–८४)	८	३४	अपू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री सनत्कुमार संहितायां कार्तिक माहात्म्ये षड्विंशतिमोध्यायः ॥ श्री सीताराम चंद्रार्पणमस्तु ॥संवत् १६२० ज्येष्ठ शुक्ल ७ सोमवार पुस्तकंलिखितं × × ×
२८.८ × १४.६ सें० मी०	१४ (३३–४६)	१२	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८५१	इति श्री पद्मपुराणे कार्त्तिक माहात्म्ये श्री कृष्णसत्यभामा संवादे त्रिशोध्यायः समाप्तः ॥ अधिकभाद्रपद कृष्ण चतुर्थ्यां गुरुवासरे ॥ संवत् १८५१ × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
४१	५८५५	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४२	२०४४	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४३	२०७१	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४४	५६२२	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४५	७१६०	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४६	६४६०	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४७	६६५६	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
४८	४६६१	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १२ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	४५	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्री पद्म पुराणे कार्त्तिकमाहात्म्ये कृष्ण सत्य भामा संवादे पंच स्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३५ समाप्तं शुभं भूयात् संवत् १९१८··· ··· ···
३५ × १५.५ सें० मी०	१२ (२–१३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	
३५ × १५.४ सें० मी०	७ (१,१४-१९)	१५	४४	अपू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्रीपद्म पुराणे उत्तरखंडे कार्त्तिक माहात्म्ये शौनक नारद संवादे दशमोध्यायः समाप्तः कार्त्तिक कृष्ण ११ संवत् १८७०
३४.१ × १३.२ सें० मी०	५४ (४–५७)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्रीपद्म पुराणे काह माहात्म्ये श्री कृष्ण सत्य भामा संवादे एकोनत्रिंशोध्यायः ॥ २९ × × संमत् १९११ ॥
३२.१ × १२ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपद्म पुराणे कार्त्तिक माहात्म्ये जलंधर वधोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ (पृ० सं० २४)
२१.२ × ११.७ सें० मी०	१४ (१,३-६,९, १०,१२,१६-१८,४४,५२, ६०)	११	२४	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्रीपद्म पुराणे कार्त्तिक माहात्म्ये श्रीकृष्ण सत्यभामा संवादे ज्येष्टा कनिष्टाख्याने एकोन विंशतमोध्यायः ॥ २९ ।' समाप्तम् शुभं मंगलं दद्यात् ॥ श्रावण शुक्ल १५ संवत् १८६५ ॥···
२२.३ × ९.४ सें मी०	६१ (१–६१)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां कार्तिक माहात्म्ये सप्तविंशोध्यायः शके १६८१ विरोधीनाम संवत्सरे श्रावण मासे शुक्ल पक्षे पौर्णमास्यां मुकुंदभट्ट कवीश्वरेण लिखितं काश्यां × × ॥
२४.१ × ११.२ सें० मी०	११ (५-१०,३४, ३५,३८-४०)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपद्म पुराने कार्त्तिक माहात्म्ये उनईसमोध्यायः ॥ १९ × × × ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	४९८८	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५०	५०५४/१५	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५१	५२६९	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५२	५३३६	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५३	४७९३	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५४	३९०९	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५५	३३६	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५६	३९३	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३०·१ × १४·३ सें० मी०	२८ (१–२८)	१४	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कार्त्तिक माहात्म्ये कृष्णसत्यभाम संवादे जेंष्टा कनिष्टयो पाख्यानो नामएकोनविंशतिमोध्याय: ॥
१६ × ७·८ सें० मी०	३½	१०	३०	अपू०	प्राचीन	पद्पुराणीय कार्त्तिकमाहात्म्ये विंदु तीर्थ वर्णने ॥ (प्रारंभ)
२२·७ × ९·७ सें० मी०	११० (१-३३, ४०-११६)	८	३६	अपू०	प्राचीन सं० १७७५	इति श्री ब्रह्मपुराणे ब्रह्म नारद संवादे कार्त्तिक माहात्म्येऽष्टाविंशोध्याय: ॥ श्री कार्त्तिक रामोदरार्पणमस्तु ॥ सं० १७७५ कालकाब्दे वैशाख शुद्ध प्रति पदिगदाधरस्य हरिणाऊर्जमाहात्म्यं समापि शुभमस्तु ॥
२३·४ × १०·४ सें० मी०	६० (१–६०)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां कार्त्तिक माहात्म्येत्रिपुरोत्सवदीप दानं विधिर्नाम त्रिनवतितमोध्याय: × ×॥ (पृ० ५४)
२७·५ × १३ सें० मी०	५६ (१–५६)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १७९८	इति श्री पद्मपुराणे कार्त्तिक माहात्म्ये जेष्टाकनिष्टाख्याने एकोन त्रिशत्तमोऽध्याय: ॥···१७९८ वर्षे शाके १६६३ प्रवर्त्तमाने ॥······
३० × १३·५ सें० मी०	३८	१२	३६	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री पद्मपुराणे कातिक माहात्म्ये श्री कृष्ण सत्यभामा संवादे प्रथमोध्याय: (पृ० सं० १)
३२·७ × १४·६ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कातिक माहात्म्ये कृष्ण सत्यभामा संवादे ज्येष्टाकनिष्टो पाख्यायनोउणत्तिमोध्याय: ॥ आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथौ चतुर्थ्यां भौमवार लिषतंमिजह्नरगुलाल ॥
२८ × १३ सें० मी०	५१ (२-१०, १४-५४)	११	४०	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री पद्म पुराणे कातिक माहात्म्ये श्री कृष्ण सत्यभामा संवादे द्वात्रिंशों-ध्याय: ३२ संवत् १८७२ मार्ग······।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	४६१	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५८	२२४	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
५९	१४३	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६०	१२०	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६१	२५५५	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६२	२४६४	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६३	२६८०	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६४	११२७	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १४ सें० मी०	३१ (४-३४)	१२	३०	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १३·२ सें० मी०	५१ (७-५१,५३-५८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३ सें० मी०	७ (१-४,९-१०, १२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	पद्म पुराण से,
३४·८ × १३·३ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	४४	पू०	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री सनत्कुमार संहितायां कार्तिक महात्म्येषडिवशतित्तमोध्याय: २६ अश्रुद्धादिकदोशस्तु नारो व्योमपिधिमता अश्रुद्धियुत मेवासदी वर्ण प्रति पुस्तकं न जाने जानकी जातेन वया दाबुज बिना संसार तरणोपायं सोपायं सर्वं मेवहि सं० १९१९ श्रुभ ॥
३३·२ × १६·८ सें० मी०	१८ (१–१८)	१४	४२	पू०	प्राचीन	
३२·७ × १५·५ सें० मी०	४० (१–४०)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं० १८५७	इति श्री पद्म पुराणे कार्तिकमाहात्म्ये-पृथुनारद संवादान्तर्गत ··· ··· संवत् १८५७ के शाल पौष कृष्ण त्रयोदश्यां ··· ॥
२९.३ × १४ सें० मी०	६६ (१–६६)	११	३२	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक माहात्म्ये पंचभीष्म वर्णनाम त्रिशोध्याय: ३० ॥
२७·४ × १२·६ सें० मी०	४८ (१–४८)	११	३३	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री कार्तिक माहात्म्ये पद्मपुराणे उत्तरखंडे श्री कृष्ण सत्यभामा संवादे पंचभीष्मे एकादशोध्याय:···यदि शुद्धम शुद्ध वा ममदोषें न दीयते १ श्री रस्तुश्री।

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	३५८२	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६६	२७२३/२	कार्तिकमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६७	४४८६	कालिजरमाहात्म्य			दे० का०	दे०
६८	७८६२/४	कालिकामाहात्म्य			दे० का०	दे०
६९	६६६२	काशीतत्वनिर्णायक-प्रमाणवाक्य	रघुनाथ		दे०का०	दे०
७०	६५७८	काशीतत्वप्रकाश	वालकृष्ण		दे० का०	दे०
७१	६८२७	काशीपंचाध्यायी			दे० का०	दे०
७२	६६३७	काशीमाहात्म्य (शिवरहस्य)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·३ × १५·४ सें० मी०	६० (१–६०)	१३	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक माहात्म्ये ॐ श्री कृष्णाय ... ... ॥
३०·९ × १४·५ सें० मी०	३० (३४-६३)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कार्त्तिकेमाहात्म्ये जेष्टाकनिष्टोपाख्यानं ... ...शुभमस्तु-सर्व जगता ॥
२५·३ × ११·८ सें० मी०	११ (१–११)	९	३६	पू०	प्राचीन सं०१८३८	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे शिवोमा-संवादे कालंजरवर्णनं नामषष्ठो-ध्यायः ॥ ६ ॥ समाप्तोयं शुभमस्तु संवत् १८३८ मार्गे मासिसितेपक्षे ११ लिषितमिदं त्रिपाठीबोधारामेण कालं-जर बासिना ॥
१८ × ९·६ सें० मी०	९ (३८–४५, ४७)	५	२२	अपू०	प्राचीन सं०१७२४ सं०१९४८	॥ शुभमस्तु ॥ संबत् १७२४ लिखितं तुलारामेण॥ तस्य परिव्राद्रस्य लिलितं महात्माजीः ॥ संमत् १९४८ ॥ मार्ग-शीर्ष कृष्णःम् ॥ १० वृ ॥
१८·५ × ६·९ सें० मी०	७ (१–७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुनाथेंद्र सरस्वती विरचितं श्री काशी तत्व निर्णयक प्रमाण वाक्य-जातं संपूर्णम् ॥ श्री काशी विश्वेश्व-रार्पणमस्तु ॥ पुस्तकं लिखितं वैशाखे श्री नृसिंह १४ ॥
२४·६ × १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	६	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०१	इति श्री मद्देवदृक्ष वालकृष्ण विरचितः श्री काशीतत्वप्रकाशः समाप्तः संवत् १९०१ कार्तिके ॥
२५·३ × ११·५ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	३७	पू०	प्राचीन श०१६९६	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे काशी-माहात्म्येपंचमोध्यायः ॥ शुभं श्री शाके १६९६ आषाढ मासे शुक्ल पक्षमष्टम्या तिथौ भृगुवासरेकर्वुदा निकटे वंदिपुर ग्रामेनिवसतः लिखितंकृष्णने वार शुभं ॥ यादृष्टं पुस्तकं ॥
२३·१ × १०·२ सें० मी०	१३२ (१–१३२)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवरहस्ये सप्तमांशे काशी-माहात्म्ये शिवगौरी संवादे द्वादशोध्यायः। ...... (पृ० १३०)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६६५५	काशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
७४	४३३८	काशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
७५	५१५	काशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
७६	५३७	काशीमाहात्म्य	भाट्टनारायण (संकलनकर्त्ता)		दे० का०	दे०
७७	६६८८	काशीयात्रापरिक्रमा			दे० का०	दे०
७८	७७७७	कृष्णजन्माष्टमीव्रत-कथामाहात्म्य			दे० का०	दे०
७९	५९७	कोकिलामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८०	१९१४	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·९ × ९·६ सें० मी०	३४ (१–३४)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पुराणे पातालखंडे काशी माहात्म्ये पंचमोध्याय: ॥ × × ×
२४·३ × १०·५ सें० मी०	३६ (१–३६)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पुराणे पातालखंडे काशी माहात्म्ये रहस्यवर्णनं नाम पंचमोध्याय: ॥
२०·५ × ७·८ सें० मी०	१८ (१-१५,१७-१९)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते काशी माहात्म्ये प्रायश्चित्त विधौ गृहदानम करणंनाम पंच क्रोशी पंचमोध्याय: ॥
२२·७ × ९·५ सें० मी०	२७	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × ११·९ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२८	पू०	प्राचीन	
२० × ८·३ सें० मी०	९ (१–९)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·८ सें० मी०	४५ (१–४५)	९	३९	पू०	प्राचीन सं०१९१०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे उत्तरखंडे हरनारद संवादे कोकिला महात्म्ये नलाख्यानं नामद्वात्रिंशोध्याय: ॥३२॥ संवत् १९१० ॥ पौष मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौभौमवासरे बालकृष्ण सुनुना विट्ठल शर्मणा लिखितं कोकिला माहात्म्यं स्वार्थं परार्थं च ॥ श्री सीतारामचंद्रार्पणमस्ते ॥··· ··· ···
२२ × १०·६ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६१	इति श्री अष्टादशपुराणोक्तगंगा माहात्म्य संपूर्णं शुभमस्तु ॥ संवत् १८६१ वर्षे पौष शुदि पूर्णिमा १५ चंद्रवासरे लिखितमिदं मिश्र सालगरामस्य पुत्रेण लक्ष्मणाभिधानेन··· ··· ···॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	१८६२	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८२	४४८३	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८३	४६५०	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८४	२१६६	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८५	२१७२	गंगामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८६	१८६८	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८७	५६६	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
८८	४६८३	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·१ × १०·८ सें० मी०	६	७	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे भीष्म-युधिष्ठिर संवादे गंगा माहात्म्य समाप्तम् ॥
२६ × ११·४ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	४१	पू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्री अष्टादश पुराणोक्त गंगामाहात्म्य संपूर्ण पौषमासे शिते पक्षे त्रयोदश्यां गुरुवासरे महताब द्विते नेदंलिखितं पुस्तकं शुभं सवत् १८९६ श्री कृष्णायनमः ॥
२६·२ × १० सें० मी०	११ (६-१३,१५, २२,२४)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × १२·६ सें० मी०	७ (१-५,७-८)	१०	३२	अपू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री अष्टादश पुराणोक्तं श्री गंगा माहात्म्यं संपूर्णम् श्री संवत् १९१७ ... ॥
२६·८ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३४	पू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्री अष्टादश पुराणोक्तं गंगामाहात्म्य संपूर्ण ॥ संवत् १९२७ ......
२९ × १४ सें० मी०	२१	१४	३४	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री गया माहात्म्ये वाराहकल्पे अष्टमोंध्यायः समाप्तंमंगलं ददात संवत् १८६५ वर्षे फाल्गुन शुदि दशमी १० शुक्र वासरे लिषत मिदं पुस्तकं लक्ष्मणेन चंडी पुरम मध्ये ...... ।
२५ × ११·२ सें० मी०	३३ (१–३३)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२८·२ × १३·५ सें० मी० (सं सू० ३-२०)	३२ (१–३२)	१२	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री वायुपुराणे श्वेत वाराह कल्पे गया महात्म्येऽष्टमोध्यायः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	४५२७	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९०	५२७०	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९१	४८८०	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९२	४८८६	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९३	६६८९	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९४	७०६५	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९५	७६०७	गयामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९६	५४६५	गायत्रीमाहात्म्य			दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३२·२ × १५·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	२२	३३	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री वायु पुराणे स्वेत बाराहकल्पे श्री सत कुमार नारद संवादे सर्वतीर्थ माहात्म्यकथनं नामाष्टमोध्यायः ८ ॥ संवत १८६४······(पृ० सं० १८)
५२·२ × १०·४ सें० मी०	३३ (१–३३)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री वायुपुराणे गया महात्ये अष्टमोध्यायः श्री गया गदाधरार्पणमस्तु ॥ ··· ··· ··· ··· ··· ···
१५·२ × १२·६ सें० मी०	२६ (१–२६)	१३	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री वायुपुराणे श्वेतबाराह कल्पे गया माहात्म्येऽष्टमोऽध्यायः संवत् १८८२ श्रावण मासेऽशुभ पक्षे + + + ॥
२०·६ × ८·८ सें० मी०	१२ (२–१३)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गरुड पुराणे गयामाहात्म्ये षष्टोध्यायः ॥ ॥समाप्तं ॥
२४·१ × ११·६ सें० मी०	३४ (१–३४)	१२	२२	पू०	प्राचीन सं० १८११	इति श्री वायु पुराणे श्वेत बाराह कल्पे गया माहात्म्ये अष्टमोध्यायः ॥···स ॥ १८०११··· ··· ।
२१·३ × ९·६ सें० मी०	३० (१-८,१०, १२-२३,२५-३३)	८	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री वायु पुराणे श्वेत वराह कल्पे गया माहा··· ···
३१·५ × १५·३ सें० मी०	८ (१४,१६-२१)	१३	३१	अपू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री गया माहात्म्यं समाप्तं शुभमस्तु मंगलं ददातु संवत् १९१६ लिखितं पं० श्री दूबे शिवरामणेन + + +
२२·६ × ११·८ सें० मी०	३ (२–४)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं० १७६८	इति गायत्री माहात्म्यम् ॥ संवत् १७६८ मार्ग शुक्ल ८ अष्टम्यां + + + ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	५३२२	गायत्रीव्याख्यान			दे० का०	दे०
९८	४७२६	गीतामाहात्म्य			दे० का०	दे०
९९	१४३९	गीतामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१००	१२७९/२	गीतामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१०१	८९७	गीतामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१०२	४५६६	गुरुमहिमा			दे० का०	दे०
१०३	४२००/५	चंडीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१०४	६६५९	चतुर्दशयात्रा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·६ × ८·६ सें० मी०	२ (१–२)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति गायत्री व्याख्यानं ॥
१८·८ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	५	१४	पू०	श०१७७६	इति बाराह पुराणे भगवत्पृथ्वि संवादे ॥ गितामाहात्म्य संपुर्णमस्तु ॥२५॥ श्री कृष्णार्पमस्तु शुभंभवतु ॥ शके १७७६ आनंददाम सवत्सरे आषाढ मासे कृष्ण पक्षेदशम्यां तिथौइदं पुस्तकं इत्पुय-नामरामभट्टात्मजंकृष्णांभट रवहा···॥
१७·३ × ११ सें० मी०	४	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री बाराह पुराणे श्री गीता महात्म्यं संपूर्णम् ॥
१६ × ११·५ सें० मी०	११ (१–११)	१३	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता महात्म्य समाप्तम् १ ॥
२३·७ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	२७	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति संवत् ॥ १९१६ ॥ साल मिति कार्तिक शुदि ॥४॥ रोज॥७॥ शुभम् ॥
१२.३ × १०·८ सें० मी०	५ (१–५)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१८३१	लिखितं लेषरा शुल्केनमिदं पुस्तकं यथा प्रति संवत् १८३१ शावन १२ भौमः (अंत) ॥
१३·८ × ८·९ सें० मी०	१०४	७	१५	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय पुराणे सार्वणिके मन्वंतेर देवी माहात्म्ये···प्रदानं नाम त्रयोदशोध्यायः ॥ शुभम् ॥
१५·३ × ७·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२०	अपू०	प्राचीन सं०१८४५	इति चतुर्दश यात्रा समाप्तः ॥ संवत् १८४५ माघ मासे ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	६६६०	चतुर्दशयात्रा			दे० का०	दे०
१०६	६१५८	चित्रकूटमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१०७	२०५२	चित्रकूटमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१०८	१४१३	चित्रगुप्तमाहात्म्य कथा			दे० का०	दे०
१०९	५३४८	जन्माष्टमीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
११०	५२६१	तुलसीपूजनमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१११	५५६०	तुलसीमालामाहात्म्य			दे० का०	दे०
११२	७८९०	तुलसीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·८ × ९·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	१५	पू०	प्राचीन	इति चतुर्दश यावा समाप्तः ॥
३३·८ × १६·३ सें० मी०	२७ (१–२७)	१२	४४	पू०	प्राचीन सं० १८९९	इति श्री मद्वृहद्रामायणे वालमीकीये श्री चित्रकूट माहात्म्ये नाम षोडसोध्यायः ॥१६॥ माघवदि ३० संवत् १८९९ ॥ श्री चित्रकूटमध्ये सीतापुर ग्रामे पैसुरनी तटे मंदाकिनी संगमे राघौ प्राग श्री चित्रकूट मध्ये ॥
२३·१ × १३·३ सें० मी०	४ (१–४)	११	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × १०·८ सें० मी०	५ (४–८)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पुराने उत्तरखंडे भीष्मपुलस्त संवादे चित्रगुप्तस्य माहातमकथास्मापतः मंगल ददात् ।
३३·५ × १२·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे नारदयुधिष्ठर संवादे जन्माष्टमी महात्म्यं संपूर्णम् । शुभंभूयात् × × × संवत् १९ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां शनिवासरे × × × ॥
२१·५ × १० सें० मी०	३ (१–३)	९	२९	पू०	प्राचीन सं० १८३०	इति श्री वामनपुराणे तुलसी पूजनमाहात्म्यंनाम सामाप्तं ॥ संवत् १८३० कुवार सुदि ६ लिः त्रिपाठीवोधारामेण॥
२३·२ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
३३·४ × १२·४ सें० मी०	६ (१–६)	९	४०	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री स्कन्धपुराणे तुलसी माहात्म्य स्तवराज समाप्तम् ॥ सम्वत् १९०२ मीती अगहनवदी ५ शुभंम् नमामि नारायन पाद पंकजं करोमि नारायन पूजनं सदा वदामि नारायन नामनिर्मलम् × × × × ×

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	६२८९	तुलसीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
११४	३९३३	तुलसीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
११५	४३०२	तुलसीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
११६	६७७६	दुर्गामाहात्म्य			दे० का०	दे०
११७	५१३६	देवबोधिनी माहात्म्य			दे० का०	दे०
११८	७४०७	देवीनामविलास	साहिबकौलानंद नाथ		दे० का०	दे०
११९	२३१८	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२०	६८३१	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·७ × १५·४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१७	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे पार्वती हर संवादे तुलसीमाहात्म्येऽष्टादशोध्याय: १८ समाप्त: शुभं भूयात् संवत् १९१९ शाके १७८४ फाल्गुन वदि ॥
३१·८ × १४·२ सें० मी०	३	१९	५३	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ११·२ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	४४	पू०	(खंडित) प्राचीन	इति श्रिय पद्मपुराणे विष्णु धर्मोत्तरे अष्टमेतुलसि माहात्म्ये पंचदशोध्याय: १५ संवत्··· ··· ··· ॥
२५ × १०·३ सें० मी०	७२ (१–७२)	५	२८	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सार्वणिके-मन्वन्तदेवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्द्वर प्रदानन्नाम ॥१३॥ शाके १७७३ संवत् १९०८ के साल जेष्ठ कृष्ण ८ शुक्रेक: लिखितं श्री मिश्र लक्ष्मी प्रसादेन सौभाग्यपुरेम्लेछराज्ये ॥ बालगोविन्द पाठार्थं ॥ श्रीरक्तशुभं भूयात् ॥ (पृ०७१)
२६·५ × ११·६ सें० मी०	१२ (५०-५५, ५८-६३)	१०	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे कार्तिक शुक्ले देव वा वोधिनी महात्म्यं २६ ॥
२५·१ × १७·४ सें० मी०	१०४ (१–१०४)	२१	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री नाम विलास: सपूर्ण: समाप्तं कृतिरियं श्री मन्महामहेश्वराचार्य सकलदेशिक वरवरेहं पूज्यते मचरण सरोज साहिब कौलपादानाम ॥ शुभ मस्तु लेखक पाठकयो × × × ॥
३१·६ × ११·६ सें० मी०	३५ (पृ० १ से ४ तक स्फुटपत्र)	६	४२	अपू०	प्राचीन सं०१९४१	इति मार्कडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये··· संवत् १९४१ मिति अश्विनिशुक्ला पूर्णिमालिपि कृतं ॥
२२·९ × १२·६ सें० मी०	१०	७	२१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे-देवी माहात्म्ये × (पृ० ४०) ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	६२००	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२२	१६३२	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२३	३७२०	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२४	३०७५	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२५	१०१	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२६	४१०६	देवीमाहात्म्य (नारायणीस्तुति)			दे० का०	
१२७	४००८	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१२८	३३२२	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०व

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·६ × ७ सें० मी०	१३१ (१-८८,९०-१२३,१२५-१३३)	५	१८	अपू०	प्राचीन	इति मार्कण्डेय पुराणे शावर्णिके मन्वंत्तरेदेवी महात्म्यसुरथ वैश्ययोर्वर प्रधानं नाम त्रयोदशोध्याय: ॥१३॥
२२ × १०·५ सें० मी०	७८ (१–७८)	७	२२	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वतरे देवि माहात्म्ये सुरथवैश्य ·· ··· ···सं०१८६८ कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ दशम्यांरविदिनेइंद ···॥
१४·९ × ९·१ सें० मी०	३८ (३१–६७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरेदेवी माहात्म्ये देव्या स्तुति: ॥ (पृ० ६०)
२१ × ९·७ सें० मी०	५५ (१–५५)	७	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री माक्कंण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये··· ··· ··· सं० १८६२··· ···॥
२० × ९·९ सें० मी०	६३ (१ से ७६ तक स्फुट)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	८	२३	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इतिश्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्ये नारायणी स्तुति: एकादशोध्याय: ११··· ···चैत्रमासे कृष्णपक्षे द्वितीया रविवासरे संवतु १८८१ उपरांत लिषितं पं श्री वेहरिया षेतासि श्री महाराज वैष्ण उद्धवदास पठनार्थ अस्थान हीरपुर श्री जानकीनाथायनम: =
२५·२ × १२·९ सें० मी०	४५ (१ से ५३ तक स्फुट)	१०	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८१६	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सप्तसतिका समाप्तं षोडसोध्याय: शुभमस्तु ॥ मंगल भूयात ॥ सं० १८१६ ॥
२०·४ × १२·५ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	२१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	३३१६	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३०	३२६६	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३१	३१४०	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३२	३५३३	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३३	३४४६	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३४	२७०३	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३५	२७९७	देवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३६	१७४२	देवीमाहात्म्य (सटीक)		जयसिंह मिश्र	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.३ × १०.६ सें० मी०	१२३ (१-३, ३-१२२)	६	१५	अपू०	प्राचीन	इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिकेमन्वतरे देवी माहात्मे मधुकैटभवधोनाम त्रयोदशोध्यायः १३ ॥
१८.७ × ११ सें० मी०	४३ (२-४४)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
१९.८ × ११.३ सें० मी०	४० (१-४०)	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति मार्कण्डे पुराणेसावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्बरप्रदाननाम त्रयोदशोध्यायः संवत् १८७३ के साल मिती पौष सुदी सात, सप्तम्यां बुधवासरेकः।··· ···
१८.७ × १०.७ सें० मी०	६ (४५-५०)	९	२३	अपू०	प्राचीन	
१९.५ × ११.९ सें० मी०	८१ (१-८१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सूर्य्य सावर्णिके मन्वत्तरे देवी माहात्म्ये सुरथवैंस्ययोवर प्रादानोनाम त्रयोदसमोध्यायः ॥
१७.८ × ८.३ सें० मी०	८ (१-२, ४-९)	८	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहा काली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः।
२६.६ × १४.७ सें० मी०	१	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि केमवन्तरे देवी महात्मने मधुकैटभवधो नां प्रथमोध्यायः ॥१॥ उवाच ॥ अर्द्ध ॥ २४॥ श्लोक ॥६६॥ एवं
२८.२ × १५.१ सें० मी०	१२ (२-६, ९-१५)	१५	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री जयसिंह मिश्र विरचितायां देवी महात्म्यं टीकायां कीलकार्थ विवरणं समाप्तम् शुभमस्तु ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३७	६०६	देवीमाहात्म्यकौमुदी	रामकृष्ण		दे० का०	दे०
१३८	१८२८	द्वारकामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१३९	७३१८	धनुर्मासमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१४०	५००४	धनुर्माहात्म्य			दे० का०	दे०
१४१	३९३७	धनुर्माहात्म्य			दे० का०	दे०
१४२	६६१	नृसिंहचतुर्दशीमाहात्म्य			मि० का०	दे०
१४३	७३४६	नैमिषारण्यमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१४४	२०३३	नैमिषारण्यमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९ × १२.३ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	५०	पू०	प्राचीन सं० १७७५	इति देव्याः कौमुदी समाप्ताः ॥ संवत् १७७५ समाप्रसुहीपुरसन बसी ॥
२८.८ × १३.६ सें० मी०	४१ (१–४१)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं० १९४०	इति श्रीस्कंदपुराणे श्री द्वारकामहात्म्ये प्रल्हाद प्रोक्त सहितायां चतुर्विशोध्यायः ॥२४॥ संवत् १९४० मा कार्तिक शुद १४ ने भौमे संपूर्णम् ॥ ...
२७.५ × ११.५ सें० मी०	६ (१–६)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचरात्रागमे धनुर्मास माहात्म्येपंचमोयध्यायः ५ ॥
३३ ६ × १३.२ सें० मी०	८ (१–८)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचरात्रागमे धनुर्मास माहात्म्येपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ समाप्तं सुभमस्तू ॥
३३ × १३.१ सें० मी०	६ (१–६)	९	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री पंचरात्रागमे धनुर्मास माहात्म्ये पंचमोध्यायः समाप्तं शुभमस्तु ॥ × × × ॥
२१.५ × ९.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नृसिंहाविर्भावः श्री नृसिंहचतुर्दशी महात्म संपूर्ण सुभमस्तु ॥
२० × १०.५ सें० मी०	७	९	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे नैमिषारण्य-माहात्म्येमिश्रित माहात्म्ये पंचदशो ×
३२.७ × १४.९ सें० मी०	१९ (२–२०)	१४	४१	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इति जनक वसिष्ट यात्रा पद्धति समाप्तं नैमिषारण्य माहात्म्यं मिश्रिका माहात्म्यं समाप्तं संवत् १८६५ चैत्र कृष्ण १ गुरौ काशी क्षेत्रं शरीरं त्रिभुवन भवन ... ... ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	४२४६	पंचक्रोशमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१४६	६६६१	पंचक्रोशयात्राविधि			दे० का०	दे०
१४७	६६६४	पंचक्रोशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१४८	४३१८	पंचक्रोशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१४६	६०४	पंचक्रोशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५०	३७८६	पुरुषोत्तममास एकादशी माहात्म्य			दे० का०	दे०
१५१	१३४१	पुरुषोत्तममासनियमविधि			दे० का०	दे०
१५२	२१५३	पुरुषोत्तममाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४×१२.६ सें० मी०	१८ (१–१८)	१५	५३	पू०	प्राचीन सं०१८२२	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते प्रायश्चित्त विधौष्टा-दशोध्यायः ॥ संवत् १८२२ के शाल ॥ श्री कासि विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥शुभ मस्तु॥ श्रीमहाराजाधिराजा श्री मन्महाराजा श्री राजा अल्हाद सिंह देव राज्ये उचहरा ग्रामे लिषितं नेमसाहि चउरिहा ॥
२०.४×८.३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे तृतीय विभागे पंचक्रोशयात्रा विधिः समाप्तः ॥ श्री शिवार्पण मस्तु ॥
२०.५×६.५ सें० मी०	३३ (१–३३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मवैवर्त्ते काशीरहस्ये पंचक्रोशी यात्रायां अध्यायः ॥×××× पंचे-क्रोशी माहात्म्यमुत्तमं ॥ श्री अन्नपूर्णा देव्यैनमः ॥
२४.६×१०.१ सें० मी०	२२ (१–२२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते तृतीय विभागे पंच-क्रोश माहात्म्ये एकादशोध्यायः ॥
२४.५×११.४ सें० मी०	२	१६	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवॅवर्तप्रायश्चित्तनिर्णये-ष्टमोध्यायः ॥
२४.७×१२.१ सें० मी०	६ (१–६)	९	३६	पू०	प्राचीन सं०१८६१	इति श्री पद्मपुराणे श्री कृष्णयुधिष्ठिर संवादे अधिक मासैकादशी कृष्णा मोक्षदाख्या माहात्म्यम् सं० १८६१···
२५.४×१५ सें० मी०	३ (१–३)	१५	३२	पू०	प्राचीन	इति पुरुत्तममासे नियम विधि ॥ श्रीं हरिश्शरणम् ॥
३१×११.८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	४७	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू० ३-२२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५३	५६६१	पुरुषोत्तममाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५४	७१९	पुरुषोत्तममाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५५	१९८५	पुरुषोत्तममाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५६	४६५१	पुरुषोत्तममाहात्म्य			दे० का०	दे०
१५७	६६९०	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)			दे० का०	दे०
१५८	७३६६	प्रबोधिनी एकादशी-माहात्म्य			दे० का०	दे०
१५९	४६४७	प्रबोधिनी एकादशी-माहात्म्य			दे० का०	दे०
१६०	३४०	प्रबोधिनीमाहात्म्यं			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १६ सें० मी०	११३ (१–११३)	१०	३६	पू०	सं०१९१० (जीर्ण)	इति श्री स्कंद पुराणे जैमिनि ऋषि संवादे चतुरशीति साहस्रे पुरुषोत्तम माहात्म्ये संपूर्ण ४८ शुभ संवत् १९०१० श्रावन सु ... ... ॥
२५·५ × ११·२ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे पुरुषोत्तम माहात्म्ये लक्ष्मी विष्णु संवादे षड्विंशोध्यायः ॥ २६ ॥
३३ × १७ सें० मी०	३७ (६४-६७, ७०-१०६)	९	३७	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × १३ सें० मी०	४० (१ से ४२ तक स्फुट पत्र)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराने श्री पुरुषोत्तम माहात्म्ये क्षेत्र वर्णनं नाम पंचाशीतितमोध्यायः ॥
२३·५ × ११·७ सें० मी०	९ (१–९)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	इति पुष्कर प्रादुर्भावे टीकायां तृतीयोध्यायः ॥ (पृ० ७)
२८·८ × ११·५ सें० मी०	११	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति स्कन्द पुराणे देव प्रबोधिनीनाम एकादशी माहात्म्ये शुभं भूयत् ॥
१९·८ × ११·८ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२२	पू०	प्राचीन	ईति श्री प्रबोधनि एकादशीकार्तिक समाप्ता रामजी ॥ × ×
३५ × १३·६ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३९	पू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	२७६८	प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६२	४४३६	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६३	५७२	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६४	५२५८	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६५	६६५३	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६६	४३६२	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६७	७८८७	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१६८	५६१२	प्रयागमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १३·३ सें० मी०	१११	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ११·६ सें० मी०	३७ (११५-१२५, १३५-१५०)	१०	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडेप्रया प्रयाग माहात्म्ये सूतशौनक संवादार्गत शेषसनकादि संवादे श्री प्रयागमाहात्म्ये श्रवण पठनफलादि निरूपणं नाम शतनमोध्याय: १०० श्री वेणीमाधवायनम: श्री सम्वत् १८८६ फाल्गुणस्यमले पक्षे नवम्यां बुधवासरे अलेखि रामदीनेन कीटगंजे ··· ········
२२·५ × ११ सें० मी०	५ (३१–३५)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × ९·३ सें० मी०	२० (१–२०)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्य पुराणे नंदि नारद संवादे प्रयाग महात्म्ये दशमोध्याय: ॥१०॥ शुभंभवतु ॥
२१·४ × ८·५ सें० मी०	१८ (१-४, ६-१९)	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्य पुराणे नंदि नारद संवादे प्रयाग माहात्म्ये दशमोध्याय: ॥ प्रयाग माहात्म्यं समाप्तं ॥ शुभमस्तू ॥
२२·६ × ११·५ सें० मी०	१२१ (१से१४०तक स्फुट पत्र)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे प्रयाग माहात्म्ये माघ विशेष धर्म निरूपणे पंचाशत्तमोध्याय:··· ··· ··· ······॥
३४.२ × १७·५ सें० मी०	११२ (१–११२)	१६	४३	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे सूत· शौनक संवादागंत शेष सनकादि संवादे प्रयाग माहात्म्ये श्रवणपठनफलादि × × × संवत् १८९२ सते अष्टादशेऽब्देनेत्रनवतीतमेयुते कार्तिके शुक्ल एकादश्यां रविवासर संयुते लिखितंराम × × × ×
२२·६ × ११.६ सें० मी०	५२ (५, ६, १२, ७६-१२४)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे पाताल खंडे प्रयाग माहात्म्ये द्वितीयोध्याय: ॥ (पृ० ६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	२६३७	बदरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७०	७८६५	बदरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७१	२१९८	बदरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७२	५२५५	विल्वद्रिमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७३	३८०२/२	भक्तिविर्वद्धिनी शुक्लैकादशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७४	२५४५	भस्ममाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७५	३४६९	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७६	५२०	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १२ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	४३	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति स्कान्देख्ये महापुराणे कैलास प्रसंगायां श्री वदरी माहात्म्यं चंद्रगुप्तोपाख्यान समाप्तं……संवत् १८९२ ॥
३१·६ × १२·६ सें० मी०	२५ (१–२५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री सनत्कुमार संहितायामूर्द्धभागे वदरीमाहात्म्ये दशमोध्यायः १० ॥ समाप्तोयं वदरी माहात्म संवत् १८९५ श्री रामचंद्र मनमः श्री राम ॥
२७ × १०·५ सें० मी०	१३ (१-२,४-६, १६-१८, २०-२२,२४,२५)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × ९·७ सें० मी०	५ (१–५)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे बिल्वद्रि महात्म्ये उमामहेश्वर संवादे चतुर्विशोध्यायः ॥ × × × × × ॥
२४ × १०·६ सें० मी०	२$\frac{१}{२}$	८	३१	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री कृष्णायुधिष्ठिर संवादेऽधिक मासेभक्ति विर्वाद्धनी शुक्लैकादशी माहात्म्यं समाप्तिमगमत् ॥ सं०१८९८……॥
३०·५ × १५ सें० मी०	६१	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंधपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे सूत शौनक संवादे भस्म माहात्म्यं नाम षोडशाध्यायः … … … … … ॥
२८ × ९·६ सें० मी०	२७ (१–२७)	८	४१	पू०	प्राचीन सं०१८०२	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे श्री भागवत माहात्म्य निरूपने श्रवणविधि कथनं नाम षष्ठोध्यायः ॥ संवत् १८०२ जेष्ट सुदि १२ शौकह लिषित मिदं पुस्तकं ॥
२७·६ × १३·४ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	२६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७७	५३९२	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७८	६२७०	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१७९	७६६७	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८०	२४०४	भागवतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८१	४२८३	भागवतमाहात्म्य (षष्ठ अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१८२	३९१९	मंदारमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८३	२६८२	मथुरामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८४	३९६३	मथुरामाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ × १६·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	१४	५४	पू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे श्री मद्भागवतमाहात्म्ये सप्ताह श्रवण-विधिनिरूपणंनाम षष्ठोध्यायः ॥ ··· संवत १८९६ ॥ शके १७६१ ॥ वैशाख कृष्ण सप्तमी रविवासरे तद्दिने संपूर्णं ॥
३४·७ × १८ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं० १९३१	इति श्री पद्मोतरखण्डे श्री मद्भागवत माहात्म्यंषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ समाप्तं शुभमस्तू ॥ मगलं भूयात ॥ संवत् १९३१ ॥
२३·८ × ११ सें० मी०	३ (१–२,४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौरीसंमोहन तंत्रे श्री भागवत माहात्म्ये द्वितीयपटलः २ ··· ···
३१·२ × १२ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्री पद्मपुराणे भागवत माहात्मये षष्टोध्यायः ६ संवत् १९२३ शाके १७८८ श्रावण शुक्ल १० ··· ··· ॥
३०·२ × १३ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे भागवत महात्म्येविधि कथणं नाम षष्ठोध्यायः संवत् १८४२ जेष्ठ वदि कृष्ण-पक्षः सप्तमी सोमे ग्रहः पोस्ति लिखितां कायस्थ मनियार सिंघ चंदिया ग्रामे वैठे ब्राह्मण पठनार्थं ··· ··· ॥
१५·७ × ११·९ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२२	पू०	प्राचीन	आत्मानमत्वनिहतं प्रचकार देवस्त-त्वद्भुतं व्रज नरेश्वर मुक्ति हेतुम् ॥ २५ ॥
३२·३ × १६ सें० मी०	३५	१२	३०	अपू०	प्राचीन	इत्यादि वाराह पुराणे मथुरा महात्म्ये कुंड प्रभावो नाम पंचदशोध्यायः १५ ॥
३४·१ × १३·१ सें० मी०	७९ (३-४३, ४५-८२)	८	३९	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इत्यादि वाराहपुराणे भगवच्छास्त्रे मथुरा माहात्म्ये ध्रुव तीर्थ प्रभावो-नाम एकोनत्रिंशोध्यायः ॥ संवत् १९१८ आषाढ शुक्ल १२ बुधवासरे ॥ इंद पुस्तक श्री इश्विर जीत सिंह वर्मण ··· ··· ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	३२८६	मलमासमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८६	४९७१	मल्लारिमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८७	७६३४	महिषीदान माहात्म्य	गागा भट्ट		दे० का०	दे०
१८८	५६६७	मायापुरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१८९	२३७६	मायापुरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९०	२४०२	मायापुरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९१	१३०	मायामाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९२	५४५३	मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी माहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·७ × ९·१ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	२९	अपू०	प्राचीन	
२४·९ × १३·१ सें० मी०	५५ (१–५५)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे क्षेत्र खंडे मल्लारिमहात्म्ये महिमा वर्णनं नाम द्वाविंशोध्यायः ॥ श्रीरस्तु ॥
२१·५ × ९ सें० मी०	१	१३	३१	पू०	प्राचीन	इति गागाभट्ट कृते महिषीदान ॥···
२७·२ × १०·९ सें० मी०	१७ (३–९)	११	३९	अपू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे ब्रह्मा नारद संवादे माया पुरी महात्म्येऽष्टमोध्यायः × × × × संवत् १८८१ जेष्ट मासे कृष्णे पक्षे शुभ तिथो ॥ द्वादश्यां १२ भौमवासरे × × × ॥
२६·९ × १६·७ सें० मी०	७२ (१-५२, ५४-७२)	१२	२८	पू०	प्राचीन	इतित्तयों महाभाग दैवयोगा ··· ··· माथा पुर्य्यां महा ॥
२७·७ × १२·७ सें० मी०	६५ (१–६६)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री स्कंदपुराणे केदारखंडे मायापुरी माहात्म्य··· संवत् १८८६ मासोत्तम मासे पौषमासे शुक्लपक्षे······ ॥
२७·५ × १३·५ सें० मी०	३३ (१-४, ६-३४)	१४	३३	अपू०	प्राचीन	स्कंद पुराण से,
२५ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यपुराणे मार्ग कृष्ण एकादशी माहत्म्यं समाप्तम् ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	४४०१	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९४	१४८७	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९५	३५९६	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९६	१२२	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९७	४७५६	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे-
१९८	५२४२	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
१९९	५१५६	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२००	६६५४	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.५ × ११.६ सें० मी०	१०४ (१–१०४)	८	३३	पू०	प्राचीन स०१६३२	इति श्री पद्मपुराणे ब्रह्मनारायण संवादे मार्गशीर्ष माहात्म्ये त्रिशोध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६३२ मार्गशीर्ष शुद्ध ४ गुरुवार स्वार्थपरार्थ··· ··· ॥
२० × ११.५ सें० मी०	१६	८	२४	अपू०	प्राचीन	
३२ × १६ सें० मी०	७६ (१–७६)	१३	३१	पू०	प्राचीन सं०१८६३	इति श्री स्कंदपुराणे मार्गशीर्षमाहात्म्ये त्रिशतमोध्यायः ३० संवत् १८६३ भाद्रपदे शुक्ल पक्षे राधाष्टम्यां रविवारे लिखितं श्रीरिछारिया जुगलप्र-देनात्म पठनार्थं
३१.४ × १५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
३४.६ × १६.६ सें० मी०	२७ (१-८, १०-२८)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशिरमाहात्म्ये भगवद्व:ह्न संवादे षोडशोध्यायः ॥ श्री कृष्णायनमः ।
२७.५ × १२.६ सें० मी०	२८ (१–२८)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे मार्गशिरमाहात्म्ये भगवद् ब्रह्मसंवादे भगवत्पूजनंनाम चतुर्दशोध्यायः १४ ॥ (पृ० २८) × × ×
२४.७ × ११.१ सें० मी०	३ (२–४)	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये द्वितीयोध्यायः ॥२॥ ··· ··· (पृ० ४)
२०.६ × ६.६ सें० मी०	६२ (१–६२)	१४	३५	पू०	प्राचीन सं०१६२७	इति श्री स्कंदपुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये त्रिशोध्यायः । यादृशपुस्तकं दृष्ट्वातावृशं लिखितंमया । यदि शुद्धम शुद्धंषा मम दोषो न विद्यते ॥ संवत् १६२७ शके १६६२ भाद्रेमासे कृष्णपक्षे प्रतिपति भौम वासरे × × × × ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय को आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०१	७१९८	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०२	७२१३	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०३	२३७४	मार्गशीर्षमाहात्म्य			मि० का०	दे०
२०४	५५२९	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०५	२०३१	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०६	७३७३	मार्गशीर्षमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०७	४२४२	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२०८	११०६	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.१ × ११ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये भगवद्ब्रह्म सम्वादे दशमोध्यायः ॥ (पृ० १९)
३१.७ × १२.३ सें० मी०	५ (१–५)	९	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंदपुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये भगवद्ब्रह्म संवादे × × (पृ० २)
३१.१ × १२.९ सें० मी०	३६ (१-२४, २४-३५)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीस्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये भगवद्ब्रह्म सम्वादे षोडशोऽध्यायः १६ समाप्तः रुपेन्दु ॥
३४.९ × १३.६ सें० मी०	९ (१–९)	९	४८	अपू०	प्राचीन	
३३.५ × १४.८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१४	४१	अपू०	प्राचीन	
२९.९ × १०.९ सें० मी०	१२ (२७-३८)	१०	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८२४	इति श्री स्कन्दपुराणे मार्गशीर्ष माहा- श्रीभगवद्ब्रह्म संवदेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ वेदाब्ध्यवसुचन्द्रैश्च सम्वत्सरोविधीयते (१८.४?) ॥ तत्समये सेवकेनापि लिखितं पुस्तकं ॥ शुभम् ॥ मार्गशीर्षेऽसिते पक्षे शिवरात्र्यां भृगौदिने ॥
३४ × १७.९ सें० मी०	८ (१–८)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	सर्वेषानेवधर्माणां स्नानमाघं विदुर्बुधाः विना स्नानं कृतं कर्म गजभुक्त कपित्थवत् ॥ १७ ॥ (पृ० २)
२९.४ × १४.२ सें० मी०	१०९ (१–१०९)	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्रीवायुपुराणे माघमाहात्म्येद्रुहिणनारद संवादे··· ··· ···लिपिकृतम् संवत् १९१४ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०९	३९३१	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१०	२६७४	मावमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२११	७२४	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१२	३२६	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१३	७३१	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१४	४८१२	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१५	४८७६	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१६	४८८९	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.५ × १४.२ सें० मी०	३८ (१-१८,२२-४१)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे वशिष्ठ-दिलीप संवादे माघ स्नान माहात्म्यं नामाऽष्टमोध्यायः ॥१८॥ समाप्तः शुभमस्तु ॥
३३.६ × १४.३ सें० मी०	४३ (१–४३)	१३	५७	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे वशिष्ट-दलीपसंवादे माघमाहात्म्ये पंचमोध्यायः ५ अथसंवत् १८६८ मासोत्तमे वैशाष कृष्णपंचम्यां आदिवारे लिखितं मिश्र रामसिह ब्रह्मचारी ··· ···
३३.५ × १३ सें० मी०	६५ (१-५८,५८-६४)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१९१५	इति श्री पद्मपुराणे पंचाशत्साहस्रयां संहितायां उत्तरखंडे वसिष्टदली संवादे माघमहात्म्ये पंचकन्याऋषि पुत्रोपाख्यान पंचमोध्याय ५ शुभसंवत् १९१५ मिति फाल्गुणवदि २ शनिवासरे लिखितं वंसिधरमिश्र स्वयं पठनार्थं मंगलंभूयात् शिवायनमः ॥
३३ × १५ सें० मी०	३८ (१-१३,१८-३१,३१-३६,३८-४२)	१३	४५	अपू०	प्राचीन सं०१८६१	इति श्री पद्मपुराणोत्तर खंडे माघमाहात्म्येवशिष्टदिलीप संवादे दशमोऽध्यायः १ ··· ··· ··· संवत् १८६१
२५ × ११ सें० मी०	४६ (२–४७)	१२	४४	अपू०	प्राचीन सं०१८०९	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखण्डे वशिष्ठ दिलीप संवादे माघमाहातमे नाम पंचमोध्यायः ॥ समाप्तः ॥ ··· ··· ··· संवत् १८०९ वैशाखेन त्रयोदश्यां गुरुवासरे लिखितं ब्राह्मणेन ॥
२२.७ × ८ सें० मी०	१९ (४५से१०३ तक स्फुटपत्र	६	३७	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
३१.४ × १४.३ सें० मी०	५७ (१–५७)	१४	२७	पू०	प्राचीन सं०१७६०	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे वासिष्ट दिलीप संवादे माघ महात्म्ये समाप्तं × × × संवत् १७६० समये पौष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ षष्टी शनिवासरे × × × × ॥
२५.५ × ९.५ सें० मी० (सं०सू० ३-२४)	६७ (१से६९तक स्फुट पत्र	९	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे वशिष्ठ दिलीप संवादे माघमाहात्म्ये द्वादशोध्यायः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७१८७	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१८	५६६३	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२१९	७४२८	माघमाहात्म्य			मि० का०	दे०
२२०	७५५८	माघमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२१	७५८३	मिश्रितमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२२	७०७१	यमुनामाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२३	५१४३	रविव्रतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२४	४६७४	राजगृहीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·२ × १२·६ सें० मी०	५२ (१६–७०)	१३	५०	अपू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्री वायुपुराणे माघमाहात्म्ये ब्रह्म नारद संवादे त्रिंशोध्यायः ॥३०॥ संवत् १८४६ ॥ फाल्गुनमासेऽसितपक्षे चतुर्दश्यां रविवासरे बिद्वत्परमहंसपयोहारीन्द्रजिधतिना लिखायितं माघमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ × × ×
१३·४ × ६·५ सें० मी०	११ (१–११)	८	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे वशिष्ट दिलीप संवादे माघ माहात्म्ये चतुर्थोध्यायः ॥४॥
२७ × ११·३ सें० मी०	११५ (१-११५)	६	४५	पू०	प्राचीन सं० १९५५	इति श्री वायुपुराणे माघमाहात्म्ये ब्रह्म-नारद संवादे त्रिंशोध्यायः ॥ श्री वेणी माधवार्पण मस्तु ॥ शुभ संवत् १९५५ माघ शुद्ध १२ सौम्यवासरे समाप्तिम् ।
३२·७ × १४·३ सें० मी०	३३ (१–३३)	१६	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे वशिष्ट दिलीप संवादे माघ माहात्म्ये दशमोध्यायः ॥१०॥ (पृ० ३४)
२०·७ × १०·१ सें० मी०	२४ (१०-४५, ४७)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीस्कंदपुराणे उमामहेश्वर संवादे मिश्रितमाहात्म्ये एकादशोध्यायः…… (पृ० ४५)
३० × ११·२ सें० मी०	६ (१-५,१०)	६	५०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मयपुराणे पाताल खंडे यमुना माहात्म्य वर्णनं नामाऽष्टमोध्यामः … (पृ० १०)
२४·४ × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	२४	पू०	प्राचीन सं० १६०१	इति श्रीस्कंदपुराणे ब्रह्मानंदिसंवादे रविव्रतमहात्म्यं संपूर्णम् ॥ संम्वत् १६०१ मासे बैशाखे कृष्णे पक्षे तिथौ ८ कास्यांमध्ये स्थितिः लिखितं परमेस्वरदत्तें…
१४·३ × ८·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीवायुपुराणे उमामहेश्वर संवादे राजगृही माहात्मेद्वितीयोध्यायः शुभ मस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२२५	६६५२	राणादेवीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२६	२५५७	रामधनुर्बाणपरत्वम्			दे० का०	दे०
२२७	३८६	रामनाममाहात्म्य	अच्युताश्रम		दे० का०	दे०
२२८	५२५	रामनाममाहात्म्य			दे० का०	दे०
२२९	६१०	रामनाममाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३०	७४२४	रामनाममाहात्म्य	अच्युताश्रम		दे० का०	दे०
२३१	१९५०	रामनाममाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३२	२५८०	रामसारसंग्रह			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.६ × ९ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कृष्ण युधिष्ठिर संवादे राणादेवी माहात्म्ये अष्टमोध्याय: ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥××
२७·२ × १३·८ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३३	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री सनत्कुमार संहितायां श्री व्यास युधिष्ठिर संवादे श्री रामधनुर्वाण परत्वेष्टमोध्याय: ॥ १९२० ॥ संवत्
३२·७ × १४·५ सें० मी०	६०	१८	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीरामनाम माहात्म्ये श्रुति स्मृति पुराणेतिहासोक्ते अच्युताश्रम विरचिते ··· ···श्री लक्ष्मणाय श्री शत्रुघ्नाय च नम: ॥
३२ × १४ सें० मी०	४१ (११ से ६३ तक स्फुट)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × ८ सें० मी०	६ (२–७)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं० १७६५	इति भविष्योत्तरे उमा महेश्वर संवादे राम नाम महात्म्यं संपूर्णं ॥ श्री राम ॥ संवत् १७६४ आश्विन वदी १४
३५·७ × १७·२ सें० मी०	२०९ (१–२०९)	१८	१७	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री राम नाम महात्म्ये श्रुतिस्मृति पुराणेतिहासोक्ते अच्युताश्रम विरचिते सप्तत्रिंशोतमं प्रकरणं शुभम् समाप्तं संवत् १९०९ श्रवण वदि ९ वार शन शुभम् ॥
३२·२ × १३·८ सें० मी०	१० (१२६–१३५)	१८	४६	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × १२·५ सें० मी०	१७ (१-१०, २१-२७)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्रीरामसार संग्रहत संपूर्णम् समाप्तम् । शुभमस्त । ओम् सर्वजगताम् ॥ ओम् श्री रामायनमों नम: ॥ संवत १९१४ ॥ श्लोकसंख्या ३०८ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३३	७२०६	रामायणमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३४	१८१७	रामायणमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३५	३५०५	रुक्मिणीव्रतमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२३६	७१०६	लक्ष्मीजन्मप्रभावकथन			दे० का०	दे०
२३७	३८०२/२	विशालाक्षी एकादशी-माहात्म्य			दे० का०	दे०
२३८	५९२	विष्णुनाम माहात्म्य			दे० का०	दे०
२३९	४७५५	वृंदावनमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४०	५२२४	वैद्यनाथविभव	काशीनाथ		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·५×१२·३ सें० मी०	४ (१–४)	९	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे उत्तरखंडे श्री नारदसनत्कुमार संवादे रामायण माहात्म्ये फलनुकीर्तन नाम प्रथमोध्याय: ॥ (पृ० ३)
२३·८×११·८ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे उत्तरखंडे रामायण महात्म्ये नारदसनत्कुमार संवादे फलानुकीर्त्तन नाम पंचमोध्याय: ॥ संपूर्णमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
१९×१५·८ सें० मी०	४ (१–४)	१४	२५	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्री कल्किपुराणे रूमिणी व्रत महात्म्यय् अथवा श्रावणे शुक्ले ··· ··· ··· सं० १९१८···
२३×११·७ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति विष्णु पुराणोक्तं लक्ष्मी जन्म प्रभाव कथनं संपूर्णं ।।···
२४×१०·६ सें० मी०	१½	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री कृष्ण युष्ठिर संवादेऽधिकमासे कृष्णपक्षे विशालाक्षी एकादशी माहात्म्यं समाप्तिमगात् ।।
२४×११·३ सें० मी०	७ (१–७)	१३	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री आदिपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे विष्णोर्नाम माहत्म्यं समाप्तं ॥ श्री रामार्पणमस्तु ॥ श्री ॥
३२·२×१२·१ सें मी०	६३ (१–६३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे पार्वती शिव संवादे विविध कर्म कथनं नामाद्वादशोऽध्याय: इति श्री वृंदावन माहात्मं संपर्णं शुभमस्तु संवत् १९०३ मिति चैत्र सुदि ५ भौमेक: श्रीरामचन्द्र नामोनम: × × × ॥
२५·४×१२ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशीनाथ कृतौ वैद्यनाथ विभवे प्रथमोऽक्रम: ।.··· (पृ०-५)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	४८६४	वैद्यनाथमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४२	३८२४	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४३	२४३१	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४४	३६७६	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४५	३६३०	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४६	३६२८	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४७	३४३८	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२४८	२७३१	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × १२·५ सें० मी०	६५ (१,११-७३)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपद्मपुराणे पंच पचाशत्संहितायांपाताल खंडे वैशाख माहात्म्ये समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु ॥
२६·४ × १२·२ सें० मी०	४८ (१–४८)	१०	५५	अपू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्रीपद्मपुराणे पाताल खंडे वैशाष माहात्म्ये यमब्राह्मण संवादे नाम त्रयोविंशोध्यायः ॥ समाप्तं शुभ मस्तु ॥ सं० १८६१ केशाल ॥
३४ × १३·१ सें० मी०	६५ (१–६५)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री स्कंद पुराणे वैशाख माहात्म्ये पृथु नारद संवादे चतुर्विशोऽध्यायः २४ समाप्त शुभमस्तु लिषा लाला कुंज विहारी रीमाबैठे तरह रीमा मिति चैत सुदि २ का संवत १९१९
३२·५ × १२·६ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुरा × × × ×॥
३६ × १४·२ सें० मी०	५५ (१३–६७)	१०	४२	अपू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री स्कंद पुराणे वैशाख माहात्म्ये चतुर्विशोऽध्यायः ॥२४॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १९११ आश्विन मासे शुक्ल पक्षे षष्ठयां गुरुवासरे लिखित मिद पुस्तकं श्री द्वारकानाथ शर्मणा ॥
२३.८ × ११·१ सें० मी०	७५	१२	२७	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५ सें० मी०	७० (१-१६,१६-६९)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं० १९१६	श्री स्कंद पुराणे बशाख महात्मे नाम त्रिशोअध्यायः ३० संवत् १९१६ के मिति चैत्र माशे शुक्ल पक्षे ११ बुधवासरेकः लिषितं सिद्धि श्री महाराज धिराजा श्री महाराजा श्री राजाबहादुर श्री कृष्णचंद्र··· ··· ··· ···
(सं० सू० ३-२५)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४९	७४०४	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५०	५७९६	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५१	७०४६	वैशाखमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५२	५६१०	व्योममाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५३	४५९६	व्रात्यस्तोम सरणि	माधव		दे० का०	दे०
२५४	२५६९	शालिग्राममाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५५	२६७	शालिग्राममहिमा			दे० का०	दे०
२५६	२४११	शिवचर्तुदशीमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११·५ सें० मी०	१०४ (१–१०४)	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री स्कंदपुराणे वैशाख माहात्म्ये चतुर्विंशोध्यायः संवत् १९२० मिती चैत्र शुक्ल ६ बुधवासरे ॥ × × ×
२८·२ × १२·३ सें० मी०	३६ (१–३६)	१२	४०	पू०	प्राचीन सं० १८०३	इति श्री पद्मपुराणे पातालखंडे यम ब्राह्मण संवादे वैशाख माहात्म्यं संपूर्णं शुभंभूयात् त्रिशद्‌गजेन्दु वर्षेहिमेषा(ब)र्के चंद्रवासरे माधवे शुक्लपक्षे त्वेकादश्या लिखितं मया १··· ···
२३ × ११·५ सें० मी०	८४ (१,७-८,१९-३४,३७,४०-१०४)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	इति पद्मपुराणे वैशाष माहात्म्ये पातालखंडे नारद··· ··· ··· ···संवत् १७७६ × × ×
१८·२ × ९·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति भविष्य पुराणे सप्तमीकल्पे व्योम माहात्म्यम् ॥
१८·७ × १४ सें० मी०	७ (१–७)	१३	२६	पू०	प्राचीन सं० १९७१	
२५· × १०·५ सें० मी०	३	१०	२२	पू०	सं० ४२? (संभवतः १९४२)	इति शालग्रामशिला माहात्म्यंसमाप्तं ॥ संवत् ४२ आश्विन शुक्ल ८ भौम वासरे ॥ राम ··· ··· ···
३० × १३·७ सें० मी०	३	१०	३०	अपू०	प्राचीन	[गरुड पुराण से]
३४ × १३·५ सें० मी०	१० (११-१६, १९-२२)	११	४५	अपू०	प्राचीन	[ग्रंथनाम के लिये हाशिये पर "ब्रह्मो" लिखित है ।]

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५७	७७९२	शिवपंचाक्षरी माहात्म्य विधान			दे० का०	दे०
२५८	५४३०	शिवपुराणमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२५९	२६६	शिवरात्रिकथामाहात्म्य			दे० का०	दे०
२६०	१४६०	हिंगुलेश्वरीमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२६१	५२७१	हिरण्यनदमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२६२	४९७७	हिरण्यनदमाहात्म्य			दे० का०	दे०
२६३	८०९	हिरण्यनदमाहात्म्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मंत्रराज समुच्चये शिवपंचाक्षरी विधान संपूर्ण ॥ (पृ० ८)
३५·६ × १९·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं०१९४१	इति श्री स्कान्दे महापुराणे सनत्कुमार संहितायां श्री शिव पुराण माहात्म्ये शिव पुराण श्रावण व्रतिनाम्पुस्तक बहु पूजनवर्णनो नाम सप्तमोध्यायः ॥ समाप्तिमगमच्छिव पुराण माहात्म्यम् ॥ श्री संवत् १९४१ ॥ फाल्गुणे ॥
२८·६ × १४·८ सें० मी०	५ (१–५)	९	२४	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति श्री स्कंद पुराणे भीष्म युधिष्टर संवादेशीव रात्रि कथा माहात्म्य संपूर्ण समाप्तं ॥ सं० १८९० मिति श्रावण वदि १ वार बुधवार ।
१८ × ६ सें० मी०	६९ (२५-३१, ३७-९८)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाल कृष्ण पंडित पुराणे वैवसतममन्वंतरे देवी हिंगुलेश्वरी महात्म्ये दशोऽध्यायः १५ ॥
२१·२ × १२·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	३०	पू०	प्राचीन सं०१९६१	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री हिरण्य नद माहात्म्यं संपूर्णम् ॥ सं० १९६१ ॥ शाके १८२६ ॥ मार्ग शिर सुदी १५ ॥
२२·६ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीहिरण्यनदमाहात्म्य संपूर्ण । संवत् १८७० तत्र वर्षे माहामांगल्य प्रदे मासोत्तमे मासे × × × × ॥
२९·८ × १३·६ सें० मी०	५ (१–५)	९	२८	पू०	प्राचीन सं०१८९४	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे हिरण्यनद माहात्म्यं संपूर्ण संवत १८९४ तत्र वर्षे अश्विन मासे कृष्ण पक्षे अमावेश्यां··· ··· ···लिखितं रामदियालु ब्राह्मणे शुभंभूयात् ।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
वेद						
१	४४९६	अग्निष्टोम साम			दे० का०	दे०
२	५१४४	अग्निष्टोम साम			दे० का०	दे०
३	४७९९	अवाक् कारिका			दे० का०	दे०
४	२६५५	अष्टाध्यायी* (ब्राह्मण ग्रंथ)			दे० का०	दे०
५	१८६८	अष्टाध्यायी			दे०का०	दे०
६	५७१७	आरण्यक			दे० का०	दे०
७	६७०४	आश्वलायन सूत्र (अश्वमेध हौत्र)			दे० का०	दे०
८	४१३१	उपास्मै			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	६	३५	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्ठोम साममाप्तः ॥ शुभंभवतु ॥ ग्रंथसंख्या १२५ ॥
२६.५ × ११.७ सें० मी०	९३ (१–९३)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × ११.२ सें० मी०	४	१२	२२	पू०	प्राचीन	इत्यबाकः कारिका समाप्तः श्री रस्तु ॥
१९.९ × ९.८ सें० मी०	११४	७	२४	अपू०	प्राचीन सं०१६६८	इत्यष्टाध्यायी नाम एकादशमंकांडं समाप्तः ॥ ··· ···संवत् १६६८ वर्षे अधिक आषाढ़ शुद्ध ११ सोमे··· ···
२४.५ × ९.२ सें० मी०	३	७	२८	अपू०	प्राचीन जीर्ण	
२०.७ × ८.८ सें० मी०	६८ (१-३,५-६९)	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति पंचम आर्चिके तृतीयोध्यायः ॥ × × ×
२२.२ × ९.६ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	४१	पू०	प्राचीन	
१३.५ × ७.५ सें० मी०	२१ (१-१८,२०-२२)	४	१४	अपू०	प्राचीन	इति उपास्मं समाप्तं ॥ सिद्धार्थे नाम संवत्सरे चैत्र मासे रामनवमीस संपूर्णं॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
९	४१८०	ऋग्विधान			" का०	दे०
१०	३८९८	ऋग्वेद			दे० का०	दे०
११	१५१३	ऋचाकल्प			दे० का०	दे०
१२	४६७०	कात्यायन सूत्र (प्रथम अध्याय)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३	४७४५	कात्यायनीय यज्ञसूत्र	कात्यायन्		दे० का०	दे०
१४	५३३२ / ८	गायत्रीमंत्रव्याख्या			दे० का०	दे०
१५	४६६९	गृह्यसूत्र (प्रथमकांड)			दे० का०	दे०
१६	७०५०	गोप्रसवशांति सूक्त			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४.६ × १०.८ सें० मी०	३४ (२–३५)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	इत्यृग्विधानं समाप्तं ॥ वेद पुरुषार्पणमस्तु ॥ ... ...
२३.८ × ९.७ सें० मी०	६	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२५.७ × १२.५ सें० मी०	४	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२०.४ × १० सें० मी०	९ (१–९)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनसूत्र प्रथमोध्यायः समाप्तः ॥
२२.२ × १०.५ सें० मी०	४९ (६–५४)	१०	३९	अपू०	प्राचीन सं० १८३८	इति कात्याययज्ञसूत्रे एकादशमोध्यायः पूर्वार्द्धः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १८३८ पौ० शु० १० भौमवासरे लिखितं ॥
२१.६ × १५.६ सें० मी०	१	११	२२	अपू०	प्राचीन सं० १९३४	... अथ गायत्री मन्त्र व्याख्या ॥ ...
१५.४ × ८.८ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	१७	पू०	प्राचीन	अथ गृह्य सूत्र प्रथम कांड समाप्तं ॥
१८ × ९.२ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	

(सं० सू०-३-२६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	३८२३	चरणव्यूह			दे० का०	दे०
१८	३८४३	चरणव्यूह			दे० का०	दे०
१९	५७३४	दंडक			दे० का०	दे०
२०	५७२५	देवीसूक्त			दे० का०	दे०
२१	१८०३/२	देवीसूक्त			दे० का०	दे०
२३	३१२०	देवीसूक्तभाष्य			दे० का०	दे०
२४	३६१७	निघंटु			दे० का०	दे०
२५	३६३५	निरुक्त			दे० का	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६ × ७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति चरणव्यूह समाप्ताः ॥··· ···
२० × १० सें० मी०	५ (१–५)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १८.४	इति चरण व्यूहः समाप्तः ॥ संवत् १८७४ ॥ मार्गशीर्ष २ सौम्यवासरे··· ··· ··· ···
२३·७ × ११ सें० मी०	३७ (१-३६, ३८)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री दंडक समाप्तम् ॥
२१·५ × ८·४ सें० मी०	१	७	२७	पू०	प्राचीन	इति देवीसूक्त समाप्तं । शुभ मस्तु ॥
१६·३ × ६ सें० मी०	१ (१–३४)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति देवीसूक्त समाप्तं ॥
२७·२ × ११·४ सें० मी०	३ (१–३)	११	६१	पू०	प्राचीन	इति देवीसूक्तभाष्यं ॥ समाप्तं ॥
२३ × ६·१ सें० मी०	११ (१–११)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ७·१ सें० मी०	१०८ (१–१०८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति नैरुक्ते त्रयोदशोध्याय ॥ संवत् ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	२५५६	निरुक्त (१-२ अध्याय)			दे० का०	दे०
२६	१७३८	निरुक्त पूर्वार्द्ध (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०
२७	४५३५	निरुक्त (१-६ अध्याय)			दे० का०	दे०
२८	५१५८	नीलसूक्त			दे० का०	दे०
२९	४१२५	परिभाषा			दे० का०	दे०
३०	७०३२	पदगाढ			दे० का०	दे०
३१	६३६७	पवमानपंचसूक्त			दे० का०	दे०
३२	६४१२	पवमान सूक्त			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०·८ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति निरुक्ते षष्ठ पादः द्वितीयोध्यायः समाप्तः ॥
२२·२ × १०·५ सें० मी०	५९ (१–५९)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·१ सें० मी०	५१ (१–५१)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति नैरुक्ते षष्ठोऽध्यायः ॥ दुंदुभिर्माघ मासे च भूत शुक्रे शुभे दिनेनैरुक्ते पूर्व षटकंच लिखितं केशवेनवै ॥ लेखपाठयोः शुभंभूयात् ॥
२०·५ × ११·६ सें० मी०	४ (४–७)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति नीलं सूक्तं समाप्तं
१६·१ × ७ सें० मी०	६ (१-५,७)	७	२४	अपू०	प्राचीन	इति परिभाषा समाप्ता ॥
२४·१ × ६·१ सें० मी०	३४ (३-१७,१९-३७)	६	३६	अपू०	प्राचीन	इति पदगाढ़ः समाप्तः ॥
१६.६ × १०·१ सें० मी०	५३ (१–५३)	६	२२	पू०	आधुनिक	इति पवमान पंच सूक्तानि समाप्तानि ॥
२२·४ × ८·८ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति पवमान चतुर्थोध्यायः ॥··· ···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	५७०१	पवमान सूक्त			दे० का०	दे०
३४	१३६१	पवमानसूक्त (ऋग्वेद)			दे० का०	दे०
३५	४४६८	पितृ सूक्त			दे० का०	दे०
३६	४७८२	पितृसूक्त			दे० का०	दे०
३७	१३११	पुरुषसूक्त			दे० का०	दे०
३८	४२२२	पुरुषसूक्त			दे० का०	दे०
३९	१२८५ / ८	पुरुषसूक्त			दे० का०	दे०
४०	४७१५	पुरुषसूक्त			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	व	९	१०	११
१४·४ × ७·८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति पवमान सूक्ते प्रथमोध्यायः ॥
२१·५ × ८ सें० मी०	१९	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२४ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	प्राचीन सं०१९३०	इति श्री पितृसूक्तम्सम्पूर्णम् शुभमस्तु श्रीरस्तु संवत् १९३० मिति आषाढ शुदी सप्तमी बुधे श्री शंकरो जयत्तितराम ॥
२०·५ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	७	२५	पू०	प्राचीन	साक्षात् परमेश्वर प्रीत्यर्थं पितृ सूक्त जाप्य महंकरिष्ये ॥ (पृ० १)
२३·२ × १३·७ सें० मी०	३	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१४·१ × ८·५ सें० मी०	३ (३–५)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति पुरुषसूक्तं समाप्तं ॥
१७·२ × ९·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१८९९	इति पुरुषसूक्तम् संवत् १८९९ शकः १७६४ अषाढ शुक्ल १ बलदेवत्रिपाठिनः पठनार्थं शुभं भूयात् ०
१६·७ × १२·३ सें० मी०	५ (१–५)	१३	२७	पू०	प्राचीन	इति विधान प्रोक्त पुरुष सूक्तविधिः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	४५८६	पुरुषसूक्त (सटीक)		नित्यमंगल	दे० का०	दे०
४२	७५२५	पुरुषसूक्त व्याख्या			दे० का०	दे०
४३	५१८६	प्रकृतिहौत्रविचारव्यवस्था	कृष्णविश्वेश्वराश्रम प्रसाद (उप० नारायण)		दे० का०	दे०
४४	६४६८	प्रतिगरा (आश्वलयनीय)			दे० का०	दे०
४५	५०१३	प्रातिशाख्य	अनंतभट्ट		दे० का०	दे०
४६	३७५६	प्रातिशाख्य	अनंतभट्ट		मि० का०	दे०
४७	३०३३	प्रातिशाख्य (तीन अध्याय)	शौनकाचार्य		दे० का०	दे०
४८	६२४५	ब्राह्मणाच्छंशिन			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.९ × १२.८ सें० मी०	१९ (१–१९)	१५	३४	पू०	प्राचीन	श्री मन्मौनिकुलवर्य नारायणाख्य सवाचार्यकिंकरेण नित्यमंगलाख्य विदुषा रचिता श्री मत्पुरुष सूक्त व्याख्या संपूर्णा श्री मद्दिगंबरावधूतार्पणमस्तु ॥
२४.८ × १०.६ सें० मी०	८ (१–८)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति पुरुष सुक्त मंत्र व्याख्या ॥
२७.६ × ११.८ ३सें० मी०	३० (१-४,१-३, १–२३)	९	३८	अपू०	प्राचीन सं०१९४५	इति श्री कृपाकृष्ण विश्वेश्वराश्रमप्रसाद रचित मेघं करेत्युपनामक नारायण बुध्यारूढ प्रकृति हौत्र विचार व्यवस्था समाप्ता ॥ वाशिकरेत्युपनाम्ना बालमुकुंद भटेन लिखितं ॥ श्री सं० १९४५ श्रा० कृ० ८ मं० ॥ (पृ० ४) इति श्रीमत्कात्यायनाचार्यकृत वाजसनेयि हौत्रिके ॥ सूत्रे पंचमोध्याय: ॥ समाप्तोयंग्रंथ: ॥ श्री संवत् १९४५ ॥ शक्के १८१० ॥ श्रावणे मासे शुभे कृष्णेपक्षे १ तिथौ सौम्यवासरे ॥ वाशिकरोपाह्वबालमुकुंद भट्ट दंडे लिखितम् ॥
२२.३ × १०.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	पू०	प्राचीन	श्री: अथाश्वलायनसूत्रासारेण प्रतिगरा: लिख्यंते । (प्रारंभ)
२४.२ × १०.६ सें० मी०	१	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्प्रथम शाखिनागदेव भट्टात्मजेन श्रीमदनंतभट्टेन विरचिते कात्यायन कृत प्राति शाख्य ··· ··· ··· ॥
२४.१ × १०.६ सें० मी०	६०	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदनंतभट्ट विरचिते कात्यायनप्रणीत प्रातिशाख्यभाष्ये पदार्थ प्रकाश षष्ठोध्याय: (पृ० ६२)
१७.३ × ८.२ सें० मी०	५८ (१–५८)	७	३१	पू० (तीन अध्याय)	प्राचीन सं०१८००	इति श्री शौननकाचार्य विरचितंदाशतयी प्रातिशाख्यं समाप्तं ॥ संवत् १८०० समये पौष शुद्ध द्वितीया भौमे लिखितं मिदं पुस्तकं पुराणिक जनार्दनभसुत गोपालेन ॥··· ··· ···
२४.७ × ७.४ सें० मी० (सं०सू०३–२७)	१४	५	३२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	७०७५	ब्राह्मणाछंसिन् पर्याय			दे० का०	दे०
५०	६७१५	बृहतीसहस्रशस्त्रं			दे० का०	दे०
५१	६८६३	बृहतीसहस्रशस्त्रम्			दे० का०	दे०
५२	५३०६	मंत्रदर्शनदीपिका (प्रतीकाक्षर)			दे० का०	दे०
५३	१५७०	मंत्ररामायणव्याख्या	नीलकंठ सूरि		दे० का०	दे०
५४	७५८४	मंत्रार्थप्रदीपिका (वेदमंत्रभाष्य)	शत्रुघ्न		दे० का०	
५५	७८१८	महीधर भाष्य (वेददीप)	महीधर		दे० का०	दे०
५६	६४६७	मैत्रावरुणप्रयोग			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·७ × ८·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणाछंसिनः पर्यायः शस्त्राणि ॥
२३·६ × १०·५ सें० मी०	४० (१–४०)	११	४५	पू०	प्राचीन सं० १८०१	इति बृहती सहस्त्रशस्त्रं समाप्तं ॥··· ···। संवत् १८०१ वैशाख शुद्ध द्वितीयायां समाप्तम् ॥
२३·३ × ९·६ सें० मी०	५४ (१–५४)	९	३६	पू०	प्राचीन सं० १७९०	इति बृहती सहस्त्रशस्त्र समाप्तां ॥ संवत् १७९० श्रावण कृष्ण ११ भृगुवारे लिखितं ॥ ·· इदं पुस्तकं रामह्रदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नील कंठस्य ॥ ······
३०·५ × ११·६ सें० मी०	२८	३२	९	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १८ सें० मी०	४६ (२–४७)	१०	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणाज्ञ मर्यादाधुरंधर चतुर्धर वंशावतंस श्री गोविंद सूरिसूनोः श्री नीलकंठस्य कृति स्वोद्धृत मंत्र रामायण व्याख्या समाप्तिमगमत्॥ रामचंद्रायनमः ॥ श्री रामाय नमः ॥
२६ × १४·२ सें० मी०	४५ (१–४५)	१४	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८९०	इति श्री महमहोपाध्याय श्री शत्रुघ्न विरचितायां मंत्रार्थ प्रदीपिकायां नवग्रहादिमंत्र व्याख्यान परिछेदः समाप्तः ···संवत् १८९० शाके १७५५······
२३·२ × १३·७ सें० मी०	२५ (१-११, २०-३३)	१४	२८	अपू०	प्राचीन	श्री मन्महीधर कृते वेददीपे मनोहरे × × × इति अश्मन्नूर्जाध्याय भाष्यं संपूर्णं × × ×
२३·३ × १०·८ सें० मी०	१२ (२–१३)	१२	४१	अपू०	प्राचीन सं० १८२३	इति मैत्रावरुणस्य वालखिल्यशंसन शस्त्रमप्तोर्यामस्य ॥ ॥ संवत् १८२३ दुर्मुख नामाब्दे ग्रीष्मर्तौ आषाढ कृष्ण प्रतिपत् इन्दुवासरे सदाशिव कविश्वरेण लिखितं श्रीरस्तु ॥······

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	३४२६	शुल्क यजुर्वेद संहिता			दे० का०	दे०
५८	१७५७	यजुर्वेदसंहिता			दे० का०	दे०
५९	४७६६	यज्ञ भास्कर (चातुर्मास्य)			दे० का०	दे०
६०	३४९९	रक्षोन्घ सूक्त, पितृ सूक्त			दे० का०	दे०
६१	६२११	रात्रिसूक्त			दे० का०	दे०
६२	१८०३/२	रात्रिसूक्त			दे० का०	दे०
६३	३३१२	रूद्रजाप (षडंग)			दे० का०	दे०
६४	४०१७	रुद्रजाप (षडंग)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·२ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति शुक्लयजुः संहितायां चत्वारिंशतिमोध्यायः ॥ ६
२४·४ × १० सें० मी०	२१	७	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री संहितापाठे वि'''शोध्यायः ॥ २० ॥ संवत् १८ ॥ ८१ ॥ श्रावणमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां च विदुवासरे समासतंहस्त अक्षर मोरो दयाराम देषपांडे परोश्र लिखितं ॥
२७·८ × ११·७ सें० मी०	८२ (१–८२)	७	२६	पू०	प्राचीन (जीर्ण) सं० १९४०	'' नत्वा श्री भास्कर गुरुन श्री कात्यायन दैवतान ॥ यज्ञ सूत्र प्रवेशाय क्रीयते यज्ञभास्करः ॥ १ ॥ अथ चातुर्मास्यानि (प्रारंभ पृ० १) वाशिकरोपाव्ह काशीनाथ शर्मणा लिखितं श्रावण शु० सं० १९४० शुभम् (पृ० ८२)
२०·१ × १०·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × ८·५ सें० मी०	१	७	३६	पू०	प्राचीन	इति रात्रि सूक्तं ॥
१६·३ × ६ सें० मी०	१	६	२६	पू०	प्राचीन	इति रात्री सूक्त संपूर्णम ॥
१३·४ × ८·४ सें० मी०	५ (१–५)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रजाप्ये तृतीयोऽध्यायः ॥
२४·४ × १२·२ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	३१	अपू०	प्राचीन	इतिरुद्रजाप्ये सप्तमोध्यायः × × (पृ० १५)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	५१९३	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
६६	६४८६	रुद्रजाप			दे० का०	
६७	१९९६	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
६८	३८६१	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
६९	३७६२	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
७०	४५५४	रुद्रसूक्त			दे० का०	दे०
७१	७७२०	रुद्रसूक्त			दे० का०	दे०
७२	५२२५	रुद्राभिषेक			दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १०·५ सें० मी०	१२ (२-३,१४-१५,१६,२१-२७)	८	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्रीवाजसनेहि सांहि रुद्रजापे षष्टमोध्याय जेष्ट सुद अ० बु: सं० १८७५ संवतु लिष्यतं पंश्री सुकल इक्ष्या ··· ···
२३·५ × ११ सें० मी०	८ (२४–३१)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति रुद्र जापे षष्ठमोऽध्यायः ॥ (पृ० २८)
२६·६ × ११·८ सें० मी०	१५ (२–५, ७–१७)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२३ × ६·८ सें० मी०	३१ (१-६,११-२०,२३-३३ पृ० १७ (दो)	५	३४	अपू०	प्राचीन सं० १६४१	इति संहितायाः पाठेरुद्रजाप्ये नवमोऽध्यायः ९ शुभमस्तु मिती फालगुणकृष्ण त्रयोदश्याम् सम्वत् १६४१ के हरयेनमः ॥·····
२४·२ × ११ सें० मी०	२४ (१,३-२२, ३३-३५)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्ये सप्तमोध्यायः ॥ (पृ० ३४) × × × ×
१९ × १३·५ सें० मी०	१३ (१–७,१३, १३–१८)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति रुद्र सूक्त समाप्तं पंचमोध्यायः ॥ (पृ० १७)
१५·७ × ६·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × ६·७ सें० मी०	२६ (१–२६)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८७६	इति यजुशाखीयो रुद्राभिषेक: संपूर्णम् ॥ संवत् १८७६ जेष्ट वदि ११ भृगुवार लिषतं··· ··· ··· ···॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६३५६	रुद्राभिषेक			दे० का०	दे०
७४	६७५	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
७५	२६८६	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
७६	४०४२	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
७७	३६४८	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
७८	१८५०	रुद्राष्टाध्यायी (द्वितीयोध्यायः)			दे० का०	दे०
७९	४३७८	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
८०	१२६२	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·५ × ७·५ सें० मी०	३८ (१–३८)	६	१९	पू०	प्राचीन	
१४·५ × १०·५ सें० मी०	३४	१०	१५	अपू०	प्राचीन	
२९·८ × १२·१ सें० मी०	१६ (३–१८)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × ९·५ सें० मी०	३१ (१–३१)	५	२०	पू०	प्राचीन सं०१९१५	इति सांतपाद समापतं सं० १९१५ चैत्रवदि ८ सनोलिष्यतं पं० श्री ललास्यामले।
२४ × १० सें० मी०	७ (१–७)	७	३६	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१०	५	९	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्र जाप्पे द्वितीयोऽध्याय: २॥ श्रीगंगायैनम: भक्तान सुखी करोतु ॥
१४·५ × ७·९ सें० मी०	१८ (२–१९)	७	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८२४	संवत् १८२४ फागुन वदि १० शुक्रे ॥ यादृसं पुस्तकं दृष्ट्वातादृशं लिखितं-मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धंवा ममदोषो न विद्यते ॥ शुभंभूयात् ग्रंथ समाप्तोय रुद्र श्री शिवार्पण मस्तु शुभंभवतु ॥
२० × ११ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू०३-२८)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	७१७७	रुद्राष्टाध्यायी			दे० का०	दे०
८२	६०१४	रुद्री			दे० का०	दे०
८३	२४८	रुद्रीपाठ, अष्टमोध्याय			दे० का०	दे०
८४	७१७५	लक्ष्मी सूक्त			दे० का०	दे०
८५	५७५४	लक्ष्मी सूक्त			दे० का०	दे०
८६	१५९९	लक्ष्मी सूक्त			दे० का०	दे०
८७	६०१०	वाजपेय होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
८८	६०८५	वाजसनेय संहिता (उत्तरविंशी)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७×८·१ सें० मी०	१५ (५-१५, २३-२६)	६	१९	अपू०	प्राचीन	
२२·५×१२ सें० मी०	९६ (१-९६)	४	१४	पू०	प्राचीन	इति संहिता पाठे रुद्री समाप्ता ॥ ...
२७·५×११ सें० मी०	३८ (१-३८)	५	२९	पू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्री रुद्रपाठे अष्टमोध्यायः ॥८॥ संवत् १९२७ ॥
१५·९×८ सें० मी०	५ (१-५)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री लक्ष्मी सूक्तं समाप्तम् ॥ .... संवत् १८६८....
११·८×७ सें० मी०	५ (१-५)	५	१६	पू०	प्राचीन	श्री लक्ष्मी सूक्त समाप्तः ॥
१५·५×९·५ सें० मी०	५	७	१९	पू०	प्राचीन सं० १८४५	इति श्री लक्ष्मी सूक्त संपूर्ण ॥ संवत् १८४५ पौष शुक्ल २ चंद्र वासरे लिषतं मिश्र माणक चंद ॥
२१·६×९·७ सें० मी०	१६ (१-१६)	२०	६४	पू०	प्राचीन सं० १७८७	इति बृहस्पति सवस्य ॥ समाप्तो वाजपय हौत्र प्रयोगः ॥ संवत् १७८७ रौद्रनाम संवत्सरे भाद्र पद वदि एकादश्यां सौम्यवासरे तद्दिने लिखितमिदं पुस्तकं जोगलेकरोपनामकरामचंद्रेण ॥
२३·७×१२·३ सें० मी०	८० (१-८०)	९	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इतिश्री वाजसनेय संहितापाठे चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४० ॥ सं० १८७५ [illegible] ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	६३२४	वाजसनेय संहिता (पद-पाठ पूर्व और उत्तर)			दे० का०	दे०
९०	२२२३	वाजसनेय संहिता			दे० का०	दे०
९१	४१७८	वाजसनेय संहिता			दे० का०	दे०
९२	९९६	वाजसनेयी संहिता			दे० का०	दे०
९३	३२८	विरजा होम			दे० का०	दे०
९४	५४७२	विष्णुपूजन वेदोक्तमंत्र (पुरुषसूक्त)			दे० का०	दे०
९५	७०७४	वृषाकृकपि शस्त्रशंसति			दे० का०	दे०
९६	५६३	वेददीपेषडंग (सटीक)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१·३ × ६·१ सें० मी०	२६५ (पूर्वपाठ-२-से१७४ तक स्फुटपत्र उत्तर पाठ १-१२१)	७	२८	अपू०	प्राचीन श०१७५१	इति वाजसनेसंहितायां उत्तरपाठपदे नव त्रिंशतिमोध्यायः··· ··· (पृ० ११६) इति वाजसनेसंहिता पद पाठे विंशति-मोध्यायः ॥ शके १७५१ वर्षे··· ··· (पूर्व पाठ, पृ० १७४)
१८·२ × ६·२ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	५	२२	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १४·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री वाजिपेय संहितायां दीर्घ पाठे पञ्चमोध्यायः ॥
२२·७ × १२·८ सें० मी०	४० (१११-१५०)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १ ·३ सें० मी०	५	८	२२	पू०	प्राचीन	
२७·१ × ११·७ सें० मी०	२ (१–२)	६	२६	पू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री विष्णु पूजन वेदोक्तमंत्र समाप्तं ॥ राम ॥ संवत् १८७६ ॥
२० × ७·७ सें० मी०	११ (१–११)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति··· ··· ···॥
२७·३ × १३·३ सें० मी०	६२ (१–६२)	११	२७	पू०	प्राचीन सं०१८३०	इति श्री वेददीपे षडंग नाम्पंलिखितं··· ··· ···इदं पुस्तकं शुभं सं० १८३० वर्षे कार्तिक कृष्णा ११ भौमवासरे ॥ शुभं मंगुलं ददाति ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	६०१७	वेद मंत्र संग्रह	-		दे० का०	दे०
९८	६९३६	वेद-मंत्र-संग्रह			दे० का०	दे०
९९	४१७१	वेद मंत्र-संग्रह			दे० का०	दे०
१००	६२५९	वेदमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
१०१	३३४८/४६	वेदोक्तम्	रामानुज		दे० का०	दे०
१०२	१६०१	वैदिक मंत्र-संग्रह (षड्ग्रध्याय)			दे० का०	दे०
१०३	५०	शतरुद्रिय व्याख्यान			दे० का०	दे०
१०४	५१७७/२	शांतिपाठ			दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × ६·१ सें० मी०	११ (१–११)	१३	२८	पू०	प्राचीन	
१६·२ × ६·७ सें० मी०	७	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × ६·५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२७ (१–२७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुज कृतं वेदोक्तम् श्री राम जी श्री
२५ × १६ सें० मी०	५	२०	१८	पू०	प्राचीन	इति षट रध्यासमाप्तम् ॥
१८.५ × ६·५ सें० मी०	१६	१०	२७	×	प्राचीन	इति शत्रुघ्नकृत षंडगव्य व्याख्यानम्
१६·५ × ११.८ सें० मी०	४ (१–४)	११	१५	पू०	प्राचीन	··· कस्मे देवाय हवका विधेभ संपुरनं सपतं ··· ···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	१३८१	शांति प्रकरण (आदित्योपनिषद्)			दे० का०	दे०
१०६	२९७१	श्रीसूक्त			दे० का०	दे०
१०७	७२३१	श्रीसूक्त			दे० का०	दे०
१०८	६०२३	श्रीसूक्त			दे० का०	दे०
१०९	७५५१/२	श्रीसूक्त			दे० का०	दे०
११०	३२८०	श्रीसूक्त और विष्णुसूक्त			दे० का०	दे०
१११	३४११	श्रीसूक्त विवरण			दे० का०	दे०
११२	६८९४	श्रौतकारिका			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५ × १२·५ सें० मी०	२४ (३–२६)	९	१२	अपू०	प्राचीन	इति अथर्वण वेद आदित्यो उपनिषत् संपूर्णम् ।।
१६·५ × १०·३ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	पू०	श० १८०१ ८००१(?)	इति श्री सूक्त समाप्तः ।। ... ... शके ८००१ (?) प्रमाथीनाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्षा ऋतौ श्रावण शुक्ल २ छंदो समाप्तं ।।
१४·७ × ८·८ सें० मी०	५ (१–५)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्त समाप्तं ।।
२१ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	पू०	प्राचीन सं० १९३२	श्री सूक्तं समाप्तं लिखतं ब्राह्मण राम नारायण संवत् १९३२ का जेष्ट कृष्ण पक्ष ९ शनीवार ।।
२३ × ११·३ सें० मी०	३ (१–३)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री सूक्त समाप्तः ... ...
१५·५ × ७·५ सें० मी०	९ (२२–३०)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·३ सें० मी०	६ (१–६)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × ७·८ सें० मी० (सं० सू० ३-२९)	८३ (१–८३)	१०	२८	पू०	प्राचीन	...संवत नंदन संवत्सरे आषाढमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां सोम वासरे श्रौत कारिका पुस्तकं सदा शिवेन लिखितं परोपकारार्थं ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६९७	कात्यायन श्रौतसूत (१–५ अध्याय)	कात्यायन		दे० का०	दे०
११४	५६४७	षडंग			दे० का०	दे०
११५	१८९०	षडंगमंत्रव्याख्या			दे० का०	दे०
११६	१६०४/४	षडंग रुद्रपाठ			दे० का०	दे०
११७	५५९०	षडंग रुद्रपाठ			दे० का०	दे०
११८	६०९०	षडंग रुद्रपाठ			दे० का०	दे०
११९	२०७६	संध्यामंत्रव्याख्या			दे० का०	दे०
१२०	५७८१	संहिता पाठ (१–४ अध्याय)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × १०·४ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायनीये श्रौत सूत्रे पंचमोऽध्यायः ॥ श्री
२६·३ × १६·६ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	२८	पू०	प्राचीन	इति षडंग पाठे षष्ठोध्यायः
२८·७ × १४·४ सें० मी०	५४ (१–५४)	१४	३०	पू०	प्राचीन सं०१८७७	इति श्री वेद दीपे हलायुधे च षडंगमंत्र व्याख्याभाश्यं समाप्तम् ॥ अथ शुभ संवत् १८७७ वर्षे चैत्रशुक्ला त्रयोदशी १३ चंद्रवासरे लिखितमिदं
१३·६ × ७·६ सें० मी०	४३ (१–४३)	५	१७	पू०	प्राचीन	इति रुद्रत्रय समाप्तः ॥ शुभ मस्तु । शुभं भयात ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
१५·३ × ८·४ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री षडांग संपूर्ण ॥ सुभसंवत् १८७७ अश्विन सुक्ल ७ लिखितं पं० श्री वैष्णव नाराइणदास ॥
१९·९ × १० सें० मी०	२५ (१–२५)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति षडांग समाप्तिमगात् ॥ ... संवत् १९१३ वर्षे कार्तिक कृष्ण ...
३२·१ × १२·४ सें० मी०	७ (१–७)	११	४१	पू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्री मंत्रार्थ दीपिकायां संध्यामंत्र व्याख्या समाप्ता । सं० १९२० श्रा० प० कृ० प० र० लि० तु० प० बुधसिंह
१७·२ × ८·२ सें० मी०	२० (१–२०)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति संहितायां पाठे चतुर्थोध्यायः × × × × ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	१२०७	संहितापाठ			दे० का०	दे०
१२२	४३२५	सर्वतोमुख			दे० का०	दे०
१२३	१००५	सहस्रशीर्षा मंत्र			दे० का०	दे०
१२४	८२३	सहस्रशीर्षा मंत्र			दे० का०	दे०
१२५	५५३९	सहस्रशीर्षा मंत्र			दे० का०	दे०
१२६	३६४०	सामवेद			दे० का०	दे०
१२७	३२५६	सूक्तसंग्रह (हरिसूक्त, देवीसूक्त आदि)			दे० का०	दे०
१२८	५०९९	सूक्तसंग्रह			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १२ सें० मी०	६ (३८ से ८८ तक स्फुट)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	समाप्तः सर्वतोमुखः ॥
१७ × ६·३ सें० मी०	४ (१–४)	४	१६	पू०	प्राचीन	इति विसर्जनम् ॥
१५·८ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री सहश्र शिर्षा समाप्तम् सं० १८७० मार्ग सूक्ल सनि० ॥
२३·६ × ८·३ सें० मी०	३	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सहस्र शीर्षा ॥
१८·४ × ८·३ सें० मी०	१८ (१–२, ६-२४)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१६·७ × १० सें० मी०	२६	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२० × ७·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	२७	पू०	प्राचीन	अथ शुक्लेप्रथमः ॥ सूत्राणि लिख्यते ॥ (प्रारंभ) × × × इति कृ० पंचमः सूत्रं समाप्तं ॥ (पृ० ५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२३६/१४	सूर्यगायत्रीमंत्र			दे० का०	दे०
१३०	३५४२	सूर्याथर्वांगिरस			दे० का०	दे०
१३१	१७८३	सोमयाग पद्धति (संस्कृत टीका)		कर्कपाध्याय	दे० का०	दे०
१३२	३४६५	सौर मंत्राणि			दे० का०	दे०
१३३	७५६१	स्वस्तिवाचन			दे० का०	दे०
१३४	३४७४	स्वस्तिवाचन	गोसाइशिवःनाथ पुरी		दे० का०	दे०
१३५	२६१७	स्वस्तिवाचन			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × १०.५ सें० मी०	१	१३	१४	पू०	प्राचीन	ॐ आदित्यायं विद्महे सहस्र किरणाय-धीमहितन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥
१४.४ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	५	१९	पू०	प्राचीन	
२७.५ × ११.७ सें० मी०	२३७	७	३७	अपू०	प्राचीन सं० १९९३	इति श्री कर्कपाध्याय कृतौ हौत्रिकपरि-शिष्ट भाष्ये पंचमोध्यायः ॥ स० १९४५ मि० आश्विन शु० ३ सोम-वासरे ... ... ॥
१५.५ × ९.१ सें० मी०	११ (१–११)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति सौर समाप्तः ॥
२२ × ९.७ सें० मी०	२ (१–२)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १०.७ सें० मी०	६ (१–६)	८	४०	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री दानखंडोक्त वेदोक्त पुराणोक्त स्वास्तिवाचनं संपूरणं। लिपिकृतं गोसांइ शिवनाथ पुरी श्री पायलीभध्यो संवत् १८६७ ॥
१५.२ × १० सें० मी०	२	६	१५	पू०	प्राचीन	इति स्वास्त्यवाचन्संपूर्णं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
व्याकरण						
१	७७५७	अंत्याक्षरी कंटकोद्धारः	शिवराम		दे० का०	दे०
२	२९९४	अक्षरलेखनप्रकार			दे० का०	दे०
३	५३९४	अनिट्कारका			दे० का०	दे०
४	६३४९	अनिट् स्वर (सटीक)			दे० का०	दे०
५	६३२०	अनिट् स्वर टीका			दे० का०	दे०
६	५८४४	अमोघनंदिनीशिक्षा			दे० का०	दे०
७	५६६६	अव्ययपाठ			दे० का०	दे०
८	५६५१	अव्ययार्थ			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्रिलोक चंद्रात्मजकृष्ण राम सूनु शिव राम कृतिः भंत्याक्षरी कंटकोद्धारः ॥
१७·१ × १० सें० मी०	२	९	२१	अपू०	प्राचीन	
२५ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इत्यनिट कारिका समाप्ताः संवत् १९१२।
२८ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२४	पू०	प्राचीन	
२६·९ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	८	३८	पू०	प्राचीन	
२५·३ × १०·२ सें० मी०	९ (१–९)	८	२९	पू०	प्राचीन श० १७३६	इत्यमोघनंदिनीसिक्षा समाप्ता संवत् ॥ १७३६ शाके कार्तिक शुक्लएकादश्यां··· ॥
२७ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	
२७·४ × १४·० सें० मी०	२ (१–२)	५१	५२	पू०	प्राचीन	इति अध्ययार्थ समाप्तं शुभमस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

(सं०सू० ३-३०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	४८८२/२	अव्ययार्थ			दे० का०	दे०
१०	८८८	अव्ययार्थ			दे० का०	दे०
११	७५८	अव्ययार्थ			मि० का०	दे०
१२	२६४२	अव्ययार्थ			दे० का०	दे०
१३	४८२७	अष्टाध्यायी	पाणिनि		दे० का०	दे०
१४	६८२३	अष्टाध्यायी	पाणिनि		दे० का०	दे०
१५	५४१	अष्टाध्यायी	पाणिनि		दे० का०	दे०
१६	७८८२	अष्टाध्यायी (पाणिनीय व्याकरण)	पाणिनि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.३ × १३.४ सें० मी०	३	१०	१५	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × १२.५ सें० मी०	३	११	३२	पू०	प्राचीन	अव्ययऽर्थ समाप्तम् ॥ राम
२४.५ × १२.५ सें० मी०	३	६	२८	पू०	प्राचीन	अव्ययऽर्थ समाप्तम् ॥ राम ॥
२२.१ × ९.४ सें० मी०	६ (१–६)	८	३३	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इत्यव्यानि ॥ संवत् १८ सै २८ के शाल चैत्र शुक्ल पारिवारवीक: लिखितमिदं भोदूरामस्य पुस्तकं स्वपठार्थ ॥
३० × ११.५ सें० मी०	१८	१२	४५	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इत्यष्टमोऽध्याय: समाप्तम् संवत् १८८७। समय नाम पौष मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यां रवि वासरे बुभावन उपस्य लिपिविरल...॥
२१.३ × ९.३ सें० मी०	७३ (२-७३,७५)	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति अष्टाध्यायी समाप्त: ॥
२०.२ × ८.४ सें० मी०	९ (१–९)	७	३६	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × ९.६ सें० मी०	७ (१–७)	८	३७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१७	७८७१	अष्टाध्यायी (पाणिनि व्याकरण अष्टमाध्याय	पाणिनि		दे० का०	दे०
१८	२७००	अष्टाध्यायी	पाणिनि		दे० का०	दे०
१९	२१४७	अष्टाध्यायी सूत्र	पाणिनि		दे० का०	दे०
२०	६१६८	आख्यात चंद्रिका			दे० का०	दे०
२१	७३४८	आख्यात प्रक्रिया			दे० का०	दे०
२२	६२०२	आख्यात प्रक्रिया	पद्माकरभट्ट		दे० का०	दे०
२३	४४२८	आख्यात प्रक्रिया (सारस्वत)			दे० का०	दे०
२४	३०१५	आख्यातप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.७ × ९.४ सें० मी०	४३ (८--५१)	९	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पाणिनीयस्य व्याकरणेऽष्टमोध्यायः ॥ समाप्तः इदं पुस्तकं लिखितं शिवप्रसाद ॥
२७.३ × ११.४ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३०	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२१.२ × ९.८ सें० मी०	२६ (२९-५४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × १३.८ सें० मी०	२४ (१–२४)	५	३०	अपू०	प्राचीन	
१०.१ × ११ सें० मी०	१५ (१,२,४-५, ७-१७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२२.१ × १०.४ सें० मी०	९९ (१–९९)	९	२५	अपू०	प्राचीन	लक्ष्मी नृसिंहं प्रणिपत्य काश्यां बुधांश्च पद्माकर भट्ट मुख्या सारस्वतीयां चतिवादि वृत्तिं क्रमाल्लिखेयं गण१ प्रसादात् अथ आख्यीत प्रक्रिया निरूप्यते ॥ (पृ० १)
२४ × १०.४ सें० मी०	४३ (१-३७,३९-४३,९९)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × १०.८ सें० मी०	६ (१-४८,४९-५२)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचितायामाख्यात प्रक्रिया समाप्ता ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	३८७९	आख्यात प्रक्रिया			दे० का०	दे०
२६	४४	आख्यात प्रक्रिया			दे० का०	दे०
२७	६१०	आख्यात प्रक्रिया			दे० का०	दे०
२८	४६०७	आख्यात प्रक्रिया			दे० का०	दे०
२९	१४१४	आख्यात व्याकरण			दे० का०	दे०
३०	६७९९	उणादिवृत्ति	उज्वल दत्त		दे० का०	दे०
३१	७४६०	उणादि सूत्र विवृति			दे० का०	दे०
३२	१९०५	उदात्त अनुदात्त उदाहरण			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.६ × १२.२ सें० मी०	१४	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
३४५ × १३.७ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	३४	पू०	प्राचीन	कर्त्तप्रत्यये जाते नियमः कर्म्म क्रिययोः १ इति श्री आख्या…कर्तासम्पूरणम् तिलक रामेण लिपिकृत्तम् १० ॥
२२.६ × ८.९ सें० मी०	१८ (१ से ३४तक स्फुट पत्र)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२.८ × ११.२ सें० मी०	६	९	३१	अपू०	प्राचीन	अथाख्यात प्रक्रियानिरूप्यये ॥ (प्रारंभ)
२१.५ × १०.४ सें० मी०	१३	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२४.६ × ९.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	३५	पू०	प्राचीन	इत्युज्वलदत्त विरचितायामुणादि वृत्तौप्रथमः पादः ॥
२४.३ × ९.९ सें मी०	३१ (३८-६७, ७१)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १३ सें० मी०	३ (१–३)	११	५०	पू०	प्राचीन	इत्यलम् उदात्तमनुदात्त स्वरितोदाहरणम् शुभमस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	३९६५	उपलेखाभाष्य			दे० का०	दे०
३४	५०८६	उपसर्गार्थ			दे० का०	दे०
३५	७४१५	एकाक्षरमालिका	विश्वशंभुमुनि		दे० का०	दे०
३६	७७८०	कर्त्तृवाद	श्रीमिश्र		दे० का०	दे०
३७	९३६	कारकखंडनमंडन (त्रिलोचन पंजिका)	श्रीमनिकंठमिश्र		दे० का०	दे०
३८	१३४०	कारिका	वरदराज		दे० का०	दे०
३९	६०१५	काशिकावृत्ति (द्वि०, तृ० और पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
४०	६२३६	कृदंत चंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×८ सें० मी०	२० (१–२०)	६	३५	पू०	श०१६७३	इत्य पलेखाभाष्ये अष्टमोवर्गः समाप्तः शुभं भवतः शके १६७३ वृषानाम संवत्सरे आषाढ शुद्ध दशमीतद्दिनी पुस्तकं समासं ॥
१४·६×१३·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	१८	अपू०	प्राचीन सं०१६३६	इत्युपसर्गार्थ समापितंम् श्री कृष्णाय नम संवत् १६३६ शाके १८०३ लिखतं जानकिदास पठनार्थं सुभंमस्तु मंगलं दधातु ॥
२४·४×८·२ सें० मी०	६ (१–६)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्व शंभु मुनि प्रणीता एकाक्षरमालिका समाप्ता ॥
२३·३×१०·८ सें० मी०	२ (२–३)	१२	३४	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री मिश्रकृतं कतृवादः ॥ सं० १८७१ वै० सु० १ ॥
२५×८·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रगल्भ भट्टाचार्य श्री मनिकंठ मिश्र मुनिना कृत त्रिलोचन पज्जिकायां कारक खंडन मंडन समाप्तं··· ···॥
१८·२×७·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री वरदराज विरचिता कारिका समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥
२४×१०·५ सें० मी०	२८५ तृतीय अ० ९२ (१–९२) चतुर्थ अ० १०१ (१-३९,४१-१०२) पंचम अ० ९२ (१–९२)	११	३४	अपू०	प्राचीन	इति काशिकायां वृत्तौ पंचमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥— (पृ० ४७) तृतीय अध्याय
२७·३×११ सें० मी०	२४ (२७–५०)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं०१९२६	इति कृदन्त प्रक्रिया समाप्ता ॥ शुभं भुयात् ॥ श्री संवत् ॥ १९०२६ ॥···

(सं० सू०-३-३१)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	६१०२	कैयटभाष्य प्रदीप	कैयट		दे० का०	दे०
४२	६८०१	कौमुदीविलास			दे० का०	दे०
४३	६८७८	गणपाठ	पाणिनि		दे० का०	दे०
४४	४५५१	चंद्रकीर्ति टीका (तद्धित प्रक्रिया)			दे० का०	दे०
४५	६४९३	जनयतेप्रयोगशुद्धि विचार	गोविन्द		दे०का०	[illegible]
४६	६७७७	तत्वकौमुदी			दे० का०	दे०
४७	१३७०	तत्वकौमुदी (संस्कृतटीका)		लोकेशकर	दे० का०	दे०
४८	१८२५	तत्वदीपिका (पूर्वार्द्ध) (सिद्धांत चंद्रिका)		लोकेशकर	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.६ × १०.७ सें० मी०	१४ (१–१४)	३३	३५	पू०	प्राचीन	इत्युपाध्याय जैयटपुत्र कैयट कृते भाष्यप्रदीपे प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमेपादे प्रथममाह्निकम् ॥
२५ × १०.२ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	४०	अपू०	प्राचीन	
३०.५ × १२ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२३.६ × १०.६ सें० मी०	२४ (१५१-१७४)	८	४०	अपू०	सं०१६१०	इति श्री चंद्रकीर्तिटीकायां तद्धीत प्रक्रियायां समाप्तं शुभमस्तु मंगलंददातु संवत् १६१० ॥
२२.४ × ९.१ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३६	पू०	प्राचीन सं०१६४७	इति श्रीमतद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंदेन विरचिता जनयते इति प्रयोग शुद्धिः समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १६४७ शके १५१२ पौष शुद्ध श्री नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंदस्येयंकृतिः ॥
२६.२ × ११ सें० मी०	६६ (१से७२तक स्फुट पत्र)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
३०.४ × १३ सें० मी०	२७ (२–२८)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
२८.४ × १४.४ सें० मी०	९७ (१–९७)	१४	३३	पू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्रीलोकेशकर विरचितायां सिद्धांत चंद्रिका व्याख्यायां तत्वदीपिकायां पूर्वार्द्धं शुभमूसमाप्तमिति संवत् १८७० तत्रवर्षे महामांगल्यप्रदे मासोत्तमे मासे आषाढ़ मासे शुक्लपक्षे शुभतिथौ प्रतिपदायां चंद्रवासरान्वितायां ‥‥‥ शुभमस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	६१७६	तत्वदीपिका (पूर्वार्द्ध) (सिद्धान्तचंद्रिकाव्याख्या)	लोकेशकर		दे० का०	दे०
५०	४२१६	तत्वदीपिका			दे० का०	दे०
५१	४०४७	तत्वदीपिका	लोकेशकर		दे० का०	दे०
५२	१६९	तत्वदीपिका			दे० का०	दे०
५३	४८४	तत्वदीपिका (कृदंत प्रक्रिया)	लोकेशकर		दे० का०	दे०
५४	४८२३	तत्वदीपिका	लोकेशकर		दे० का०	दे०
५५	६७४६	तत्वदीपिका			दे० का०	दे०
५६	३०९८	तत्वदीपिका (आख्यरात प्रक्रिया)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.६ × १४.४ सें० मी०	८३ (१–८३)	१२	५२	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इति श्री लोकेशकर विरचितायां तत्व दीपिकायां सिद्धान्त चंद्रिका व्याख्यायां पूर्वार्द्धम् समाप्तम् ॥ शुभमस्तु संवत् १८७७ मीति भादौवदी वार शुक्रवार शुभमस्तु ॥
३४.७ × १२.६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१४	४८	पू०	प्राचीन सं० १९३२	संवत् १९३२ मिति मार्गशिर वदी १ रविवासरे लिखिता तत्वदीपिका शिवकरणेन द्विजेन वहेडी नगरस्थेन शुभं लेखक पाठकयोः शमस्तु श्रीरस्तु ॥
३४ × १२.५ सें० मी०	८६ (१–८६)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री लोकेशकर विरचितायां सिद्धांत चंद्रिका व्याख्यां तत्वदीपिकायां पूर्वार्द्ध॥ श्री गौरी पतयेन्मः ॥ संवत् १९१७ मासोत्तम मासे चैत्रे मासे... ... ...
३५ × १३.४ सें० मी०	३	१२	५१	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२ सें० मी०	३०	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्रीलोकेश विरचितायां तत्व दीपिकायां कृदन्त प्रक्रिया सा च शुभ दास्तु शिवाय्र्य मस्तु श्री गौरीशंकराभ्यां नमो-नमः श्री मंगल मूर्तये नमः संवत् १९१८ वैशाख कृश्न त्रयोदशी भौमवासरे लिखितं उन्नार्द्ध मिश्र बेनी राम जी। श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम...
२१.८ × १०.४ सें० मी०	८० (२-८,१३-८५)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री विद्यानागास्थयिलोकेशकर शर्मणा विहितायामिहि टीकायां स्वनान्तलिकवं समाप्तम् ॥... ... ... (पत्र संख्या ८५) × × ×
२७ × ११.२ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × १२.२ सें० मी०	२८ (१–२८)	१२	५३	पू०	प्राचीन	इत्याख्यात प्रक्रिया समाप्तिमगमत् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्यांनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	४६८२	तत्वबोधिनी (सिद्धांतकौमुदी)			दे० का०	दे०
५८	१११	तत्वबोधिनी (सिद्धांतकौमुदी)		जिनेंद्र सरस्वती	दे० का०	दे०
५९	७८१६	तत्वबोधिनी (सिद्धांतकौमुदी)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
६०	१७८१	तत्वबोधिनी			दे० का०	दे०
६१	८७७	तद्धित, सुबंत प्रकरण			दे० का०	दे०
६२	७४६८	धातुकारक प्रक्रिया			दे० का०	दे०
६३	१७८५	ॐधातुगणपाठ	गुणाकरकृष्ण पंडित		दे० का०	दे०
६४	१५३७	धातुपाठ	भीमसेन		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×११·४ सें० मी०	५२ (१-१२,१६-५७)	११	५४	अपू०	प्राचीन	
३२·२×१२ सें० मी०	१२८ (१-१२८)	६	४६	अपू०	प्राचीन	
२३·६×१०·५ सें० मी०	१४० (१-१४०)	११	४०	अपू०	प्राचीन	
३४·५×१३ सें० मी०	१	३५	२६	अपू०	प्राचीन	
२६·५×११·२ सें० मी०	१४२	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२४·८×१०·२ सें० मी०	२३ (३६-५८)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२२·२×८·७ सें० मी०	३० (१-३०)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१६६१	संवत् १६६१ समये नाम पौषवै सुदि तृतीया दिने गुरौ लिषितमिदं पुस्तकं गुणाकरकृष्ण पंडिताभ्यां ॥ शुभं संगृह्यपुस्तकान्यष्टौसंशोध्य च पुनः पुनः ॥ कष्टादलेखिकृष्णेनसद्धातुगण पुस्तकम् ॥१॥ ... ...
२४·६×१०·२ सें० मी०	१० (१-१०)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति भीमसेन प्रोक्त धातुपाठः ॥ समाप्तः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	३७९४	धातुपाठ	पाणिनि		दे० का०	दे०
६६	१४५	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
६७	५२१४	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
६८	६८०३	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
६९	५५७०	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
७०	५५३७	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
७१	६२९०	धातुपाठ	,,		दे० का०	दे०
७२	७६१०	धातुप्रयोग			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १३·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री पाणिनीय मुनि मते धातुपाठः समाप्त मगमत् श्री शिव ॥
२७ × ११·४ सें० मी०	३ (१–६)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२२ × ६·३ सें० मी०	१०	७	३५	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति चुरादि धातुपाठ नीलकंठ भट्टेन लि० ॥
२४·९ × ९·३ सें० मी०	२ (१–२)	१३	४२	पू०	प्राचीन	
१९·७ × ११·४ सें० मी०	२७ (१–२७)	१२	२४	पू०	प्राचीन	
३३ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	५४	पू०	प्राचीन	धातु पाठ समाप्तम् ... ...
१६·६ × ११·८ सें० मी०	१२	१६	१४	अपू०	प्राचीन	
२६·७ × ११·३ सें० मी०	१४	१०	२८	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू० ३-३२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	४७१८	धातुरूपावली			दे० का०	दे०
७४	६७०	नंदिकेश्वर काकिका	उपमन्यु	नंदिकेश	दे० का०	दे०
७५	१२६१	पदार्थ संहिता			दे० का०	दे०
७६	६८०४	परिभाषापाठ			दे० का०	दे०
७७	१०११/२	परिभाषा प्रकरण			दे० का०	दे०
७८	१६६०	परिभाषामंजरी			दे० का०	दे०
७९	७४२७	पारिभाषार्थमंजरी			दे० का०	दे०
८०	३३०	परिभाषार्थमंजरी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १०·८ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर काशिका समाप्ता ॥ श्रीरामानम ॥ श्री लक्ष्मणायनमः ॥ ... इति श्री उपमन्यु कृतादि सूत्र नंदिकेश्र काशिकायश्त्व विर्माशिनी समाप्ता ॥
२२·५ × ९·५ सें० मी०	७	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ९·२ सें० मी०	५ (१–५)	८	३५	पू०	प्राचीन	इतिपरिभाषापाठेः । समाप्तः । पुरुषोत्तमेनलिषितं शुभं भवतु श्री विश्वेश्वर × × ×
२९ × १८·२ सें० मी०	४ (४–७)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति श्रीपरिभाषा प्रकरणं समाप्ता श्री राम ॥
२४·५ × १०·५ सें० मी०	४६ (२९–७४)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
३४·७ × १३ सें० मी०	१०	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५	१६ (१–१६)	९	३९	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	४६९८	परिभाषार्थसंग्रह-चंद्रिका	स्वयंप्रकाशानंद		दे० का०	दे०
८२	६७९५	परिभाषावृतिः	महोपाध्याय श्रीसीरदेव		दे० का०	दे०
८३	७५४८	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
८४	७८३९	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
८५	५७९०	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
८६	५७८७	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
८७	५८३७	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
८८	१९३८	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७७ × ११ सें० मी०	६० (१–६०)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ६·२ सें० मी०	६४ (१–६४)	११	६५	पू०	प्राचीन	महोपाध्याय श्री सीरदेव कृता परिभाषावृत्तिः समाप्ता ॥
३२·६ × १२·१ सें० मी०	५१ (१ से ५४ तक स्फुट पत्र)	१०	३७	अपू०	प्राचीन सं० १६०८	शुभमस्तु··· ··· ···१६०८ श्रावन वदि १२ × × × ×
३४·६ × ६·६ सें० मी०	६	१०	५१	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १० सें० मी०	२३ (१–२१, २३-२४)	११	४०	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × ७·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३२	अपू०	प्राचीन	नत्वासाम्ब शिवं ब्रह्म नागेश कुरुते सुधी बालानां सुखबोधाय परिभाषेन्दु शेखरम् ॥१॥ (आदि)
२६·७ × ६·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	४६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	२४१६	परभाषेंदुशेखर	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
९०	२३६	परिभाषेंदुशेखरः	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
९१	४५१३	परिभाषेंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
९२	४७९२	परिभाषेंदुशेखर	नागोजीभट्ट		दे० का०	दे०
९३	४७३३	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		दे० का०	दे०
९४	४८०२	परिभाषेंदुशेखर	नागेश भट्ट		मि० का०	दे०
९५	२४२७	परिभाषेंदुशेखर (संस्कृत टीका सहित)	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
९६	२८९३	परिभाषेंदुशेखर प्रकाशिका	वैद्यनाथ भट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२४·५ × १०·५ सें० मी०	५२	६	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवभट्ट सूत सती गर्भजः नागोजिभट्ट कृतः परिभाषेंदु-शेखरः समाप्तः ॥
२६·६ × ११·३ सें० मी०	४० (१–४०)	१०	४४	पू०	प्राचीन सं०१८२०	इति श्री मदुपाध्यायोपनामक सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते परिभाषेंदु शेखरः संपूर्णः ॥ श्रीहरिर्जयति ॥ संवत्सरे १८२० साके १६८३ जेष्टमासे कृष्णपक्षे चतुर्थ पंलीषतं राम फलका एथ ॥
२५·२ × १०·४ सें० मी०	३७ (१–३७)	१५	४३	पू०	प्राचीन सं०१८३५	इति श्री मदुपाध्यायोपनामक सदाशिव भट्टसुत सतीगर्भज नागोजी भट्टकृत परिभाषेंदु शेखरस्समप्तः ॥ मिति स्रावने शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां लिखितं स्वपठनार्थं संवत १८३५ ॥
३३ × १२·३ सें० मी०	५१ (१–५१)	१०	४७	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री मदुपाध्यायोपनामक सती गर्भ जनागोजी भट्टकृतः परिभाषेंदुशेखरः संपूर्णम् ॥ शुभसंवत् १८८१ केसाल भाद्रमासे शुक्लपक्षे १४ सोमवासरे···
२७·६ × ११·३ सें० मी०	२०	११	५६	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·६ सें० मी०	२०	५	४१	अपू०	प्राचीन	नत्वा साम्बशिवं ब्रह्म नागेश कुरुते सुधीः ॥ बालानां सुख बोधाय परिभाषेंदु शेखरम् ॥१॥··· (प्रारंभ)
२५·२ × १०·८ सें० मी०	१११ (१–१११)	६	५१	अपू०	प्राचीन	
२५·४ × १०·७ सें० मी०	८४	१२	५४	अपू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री मत्यायगुण्डो पाध्यस्य महादेव सुत वैद्यनाथ भट्ट कृत परिभाषेन्दुशेषर प्रकाशिका समाप्ता ॥ शुभमस्तुः संवत् १८८२ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	२८२२	पाणिनिर्लिंगानुशासन सूत्र वृत्ति	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
९८	१४०३	पाणिनीय शिक्षा	पाणिनि		दे० का०	दे०
९९	५४६	पाणिनीय शिक्षा			दे० का०	दे०
१००	७३३९	पाणिनीय शिक्षा ?			दे० का०	दे०
१०१	२४९९	पाणिनीय शिक्षा			दे० का०	दे०
१०२	७४९०	पातंजल महाभाष्य			दे० का०	दे०
१०३	५८०१	पातंजल महाभाष्य प्रदीपोद्योत (प्रथम अध्याय)		नागोजीभट्ट	दे० का०	दे०
१०४	५३१७	पूर्वपक्षावली			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·६ × १३·३ सें० मी०	७ (१–७)	१३	४१	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री भट्टो जी दीक्षित विरचितायां पाणिनी भिङ्गानुशासन सुत्रवृत्तिः समाप्तः भाद्रेमासि शुक्ल पक्षे अष्टम्यां शनिवासरे संवत १८८३ शाके १७४८ ॥
२३·२ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	२९	अपू०	प्राचीन	
१५·९ × १०·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१६	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ११·५ सें० मी०	७ (२–८)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × १०·८ सें० मी०	११	९	४१	अपू०	प्राचीन	
२५·९ × ११ सें० मी०	२२ (१–२२)	१५	६०	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·५ सें० मी०	२५ (१–२५)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इतिशिवभट्ट सुत सती गर्भ संभव नागोजीभट्टेन कृते भाष्यप्रदीपोद्योते प्रथमस्य प्रथमे आद्यमान्हिकं ॥……
२९·१ × ११·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	३९	अपू०	प्राचीन	
सं०सू०३-३३)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४६२७	पूर्वपक्षावली			दे० का०	दे०
१०६	५६५२	प्रक्रिया कौमुदी			दे० का०	दे०
१०७	७७६१	प्रक्रिया कौमुदी			दे० का०	दे०
१०८	६१०६	प्रत्याहारमंडन	रामचंद्र पाठक		दे० का०	दे०
१०९	२२१०	प्रबोधचंद्रिका	बैजल भूपत		दे० का०	दे०
११०	१७१५	प्रबोधचंद्रिका	बैजल भूपत		दे० का०	दे०
१११	३२८५	प्रबोधचंद्रिका	बैजल भूपत		दे० का०	दे०
११२	७७५५	प्रबोधचंद्रिका	बैजल भूपाल		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × ११·६ सें० मी०	३५ (१–३५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री पूर्वपक्षावली समाप्ताः ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १९०९ मिति चैत्र शुक्ल पक्ष द्वितीया २ वार चंद्र तद्दिने लेषयित्वातुपुस्को यं प्रयत्नतः ॥
२६·५ × १२ सें० मी०	५१ (९१–१४३)	९	४१	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·६ सें० मी०	१२ (७–१८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२७·४ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	५४	पू०	प्राचीन सं० १९६३	इति श्री मत्पाठक मुरारि सूनुपाटकलक्ष्मणाग्रज पाठक रामचंद्र विरचितंर प्रत्याहार मंण्डनं समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १९६३ ॥ शुभमस्तु ॥ पौषः ॥ मासः ।
२१·८ × ७·६ सें० मी०	२४ (१–२४)	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १७६६	प्रबोधचंद्रिकायांचकृतौ वैजलभूपतेः ॥ एषाविशेषतः सुष्टुसमाप्ता संधि चंद्रिका शुभमस्तु ॥ संवत् १७६६ मार्ग सुदि सप्तमी ··· ··· ··· ···
२५·८ × १२·३ सें० मी०	१२ (१–४, १८–२५)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२३·९ × ७·८ सें० मी०	१७	६	२८	अपू०	प्राचीन	इति प्रबोधचन्द्रिकायां कृतौ वैजल भूषतेर्विभक्ति चन्द्रिकामद्धे समाप्तात्पादि चन्द्रिका ॥२॥ × × × ×
२२·७ × ८·४ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री मद्वैजल भूपाल कृता प्रबोध चंद्रिका समात्ता ॥ संवत् १८७६ शके १७४१ विकृति नाम संवत्सरे पौष शुक्ल पौर्णिमायां × × × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	१०२१	प्रश्न व्याकरण			दे० का०	दे०
११४	११६६	प्रश्नसार ग्रंथ			दे० का०	दे०
११५	५३०३	प्रश्नोत्तर			दे० का०	दे०
११६	३१५५	प्राकृतप्रकाश	वररुचि		दे० का०	दे०
११७	६८२४	प्रातिपदिक स्वरविकृति	पाणिनि		दे० का०	दे०
११८	४६०५	प्रातिशाख्य			दे० का०	दे०
११९	७३१३	प्रौढ़मनोरमा	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१२०	४७८८	प्रौढ़मनोरमा	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × ११ सें० मी०	९० (१–९०)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं०१८०७	इति श्री प्रश्न व्याकरणंस्य ज्ञान कर्मनिमितासर चुडामनि प्रश्न प्रकरणं समाप्तः सं० १८०७ बै० ब० १३ बृहस्पति ।
२३·७ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
५२·९ × १२·२ सें० मी०	२ खर्रा	५२	२०	पू०	प्राचीन	
२६·७ × ११·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १०·८ सें० मी०	२०	१४	८७	पू०	प्राचीन	इति पाणिनीयकृत सूत्रानुसारेण प्रातिपदिक स्वरस्य विवृतिः ॥
१९·९ × ९·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × ११·८ सें० मी०	७८	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजिदीक्षित विरचितायां प्रौढमनोरमायां सिद्धांत कौमुदी व्याख्यायां पूर्वार्द्धं समाप्ता ॥ संवत् १८०९ वैशाख शुक्ल सप्तम्या ······
३३·२ × १२·३ सें० मी०	४८	९	५२	अपू०	प्राचीन	॥ इति कारकाणि ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	५२०७	प्रौढ़मनोरमा			दे० का०	दे०
१२२	३०५६	प्रौढ़मनोरमा (तिङन्त, तद्धित, समास प्रकरण)			दे० का०	दे०
१२३	३४५८	प्रौढ़मनोरमा			दे० का०	दे०
१२४	१७६१	फिट् सूत्र (१-४) पाद	शांतनावाचार्य		दे० का०	दे०
१२५	६८६	बाल बोधिनी			दे० का०	दे०
१२६	७४२६	बालबोधिनी (सटीक)			दे० का०	दे०
१२७	५४०८	बृहच्छब्देंदुशेखर (सिद्धांतकौमुदीव्याख्या)			दे० का०	दे०
१२८	४२८४	भाष्य (प्रदीपउद्योत) (४-८ अध्याय)	नागोजीभट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·२ × १२ सें० मी०	२१२ (१-१२, ५४-२५४)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२७·२ × ११·१ सें० मी०	७३	१२	३४	अपू०	प्राचीन सं०१९१२	इति समासाश्रया विधयः मि० पौ० शु०···सं०१९१२ ?
२३·७ × ११·४ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ८·५ सें० मी०	१	११	३९	अपू०	प्राचीन	इति शांतनावाचार्यं प्रणीते षुफिट् सूत्रे-चतुरीयःपादः ॥ श्री रस्तु ॥
२२ × ९·५ सें० मी०	८ (२–९)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री महामहोपाध्याय विरचिता वालधनी समाप्ता ॥ सं० १८७१ शाके १७३६ पौषमासे शुल्क पक्षे चतुर्दश्यां भौमवासरे पुस्तकं समाप्ता । आलेख्यदः पुस्तकं वलिदानि पण्डित नरिन्द्र पुरके-स्वपाठार्थं ॥
३२·५ × १३ सें० मी०	११ (१–११)	११	५२	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
३४·८ × १८.४ सें० मी०	९२८	१६	६१	अपू०	प्राचीन	इति कालोपनामक शिवभट्टसुत सती गर्भज नागोजी भट्ट विरचिते भाष्य प्रदीपो ध्रोतेष्टमाध्याय चतुर्थपादे प्रथम सान्हिकम ग्रंथस्समाप्तः सांवत् १८८५ फागुनवदी ५ वार सोमार के ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	६८२५	भाष्यप्रदीपोद्योत	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
१३०	५९९०	भास्करपरिभाषा	भास्कर		दे० का०	दे०
१३१	४०६४	मध्यकौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०
१३२	२२११	मध्यकौमुदी	,,		दे० का०	दे०
१३३	२६३४	मध्यकौमुदी (कृदंत प्रक्रिया)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१३४	७४१	मध्यकौमुदी (तिङंत प्रकरण)	,,		दे० का०	दे०
१३५	२६४४	मध्यकौमुदी (तिङंत प्रकरण)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१३६	२६३५	मध्यकौमुदी (सुबंत प्रकरण)	वरदराज		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·२ × १२ सें० मी०	२५४ (१-१८३, २३६-२६३)	११	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवभट्ट सुत सती गर्भज नागो जी भट्ट कृते भाष्यप्रदीपोद्योते प्रथमस्य प्रथमेष्ट ममान्हिकं ॥ (पृ० २४६)
२३·२ × १० सें० मी०	१८ (१–१८)	९	४६	पू०	प्राचीन	... ...श्री गुरून्पितरौ नत्वाग्निहोत्री भास्कराभिधः भास्करं परिभाषाणं तनुते बालबुद्धये २ ..... (पृ० १)
२३ × १०·२ सें० मी०	१९ (१,११-१७, २०-२३,२८-३२)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ८·२ सें० मी०	१३४ (१-१३२, १४४-१४५)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री वरदराज विरचितायां मध्य कौमुदी आख्यात संपूरनम् ॥ श्री ॥ शुभमस्तु
२२·२ × ११·४ सें० मी०	३१ (१–३१)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति कृदंतप्रक्रिया ॥
२७·१ × ११·६ सें० मी०	४८ (१–४८)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति लकरार्थप्रक्रिया ॥ मध्य कौमुद्यां तिङंतं भग्नपृष्ट कटि ग्रीवस्तब्ध दृष्टि-रधोमुखः ॥ कष्टे न लिखितं ग्रंथयत्नेन परिपालयेत् ॥
२१·२ × ११·४ सें० मी०	७७ (१–७७)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं०१८२३	इति तिङंत समाप्तं ॥ संवत् १८२३ का० कृ० ९ सो··· ··· ··· ···
२१·५ × ९·८ सें० मी०	३४ (११–४५)	७	२२	अपू०	प्राचीन सं०१८२१	इति श्री वरदराज विरचितायां मध्य कौमुद्यां सुबंत समाप्त ॥ सं० १८२१ शाके१६८६ पौष शुदि कृष्ण पक्षोयम् ॥
(सं०सू० ३-३४)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३७	४२४०	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१३८	१६६१	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०
१३९	१५२	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४०	१४०	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराज	छात्र	दे० का०	दे०
१४१	६५४	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४२	४५७	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४३	४४९	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४४	२५३	मध्यसिद्धांत कौमुदी (सुबन्त प्रक्रिया)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १०·९ सें० मी०	३७ (पृ० १० से ७० तक स्फुट)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति विभक्त्यर्थाः– (पृ० १०)
३१ × १३.५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२८·६ × १४ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	३१	अपू०	प्राचीन	
२६·७ × १३·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	४१	अपू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री वरदराज विरचितायां मध्यसिद्धांत कोमुद्याम् प्रथम वृत्तिस्समाप्तः। सं० १८९२ शाके शाल १७५७ मिति फल्गुन श्रुदि द्वादशी चंद्रवासरे इदं पुस्तकं समाप्तम् लिखितं टिका छावेणेयम् यादृशं लिखितंमयायदि श्रुद्धमशुद्धवा मम दोषो नदीयते ॥
२६·७ × ११·६ सें० मी०	१०७ (१-१९,१-१०,१३-९०)	११	३९	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
३१·६ × १४·४ सें० मी०	२७ पृ० ६ से ५२ तक स्फुट)	१२	३९	अपू०	प्राचीन	
३१·६ × १४·२ सें० मी०	१५ पृ० ४ से ४१ तक स्फुट)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १० सें० मी०	४० (१–४०)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति सुवन्त प्रक्रिया ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	२५०	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४६	५०३	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४७	५०१	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४८	५००	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१४९	५४५	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१५०	३८२७	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	..
१५१	३६१०	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०
१५२	३५७	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·१ × ११·१ सें० मी०	४४ (१-४३,५०)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·२ सें० मी०	८०	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × ९·६ सें० मी०	१३ (३१-४१,७३-७४)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	८७	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२०·१ × ७·४ सें० मी०	९ (१८–२६)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२८ १ × ११·३ सें० मी०	२२	११	४०	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १२·५ सें० मी०	१५६ (१-१४६, १५०-१६१, पृ० ११६ दो बार)	१३	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्री चवितिकंठि वरदराज भट्टकृता मध्य सिद्धान्त कौमुदी समाप्ता ॥ संवत् १८६४ ॥··· ··· ·········
२३·२ × ११·२ सें० मी०	१७ (१-१३,१३-१६)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५३	७६६	मध्यसिद्धांत कौमुदी (समास प्रकरण)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१५४	४८५८	मध्यसिद्धांत कौमुदी (कृदंत, कारक, समास, तद्धित, स्वर प्रक्रिया)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१५५	५३४१	मध्यसिद्धांत कौमुदी			दे० का०	दे०
१५६	४९८५	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराज भट्ट		दे० का०	दे०
१५७	६६८०	मध्यसिद्धांत कौमुदी (कृदंत प्रक्रिया)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१५८	२२०८	मध्यसिद्धांत कौमुदी (सुबंत प्रक्रिया)	भट्टोजी दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५८००	मध्यसिद्धांत कौमुदी (सुबंत प्रकिया)	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१६०	५९८३	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × ११·७ सें० मी०	५० (१से४२तक स्फुट पत्र)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १२ सें० मी०	१०५ (१-७६,७६-१०४)	१०	२९	पू०	प्राचीन	कृतिर्वरदराजेस्य मध्यसिद्धान्तकौमुदी ॥ ... ...
२४·७ × ११·१ सें० मी०	४९ (१-४९)	९	३०	अपू०	प्राचीन सं०१८२७	इति स्वर प्रक्रिया ॥ ॥ ॥ एषा वरद राजेन बालानामुपकारिका । अकारिं पाणिनीयानां मध्य सिद्धान्त कौमुदी ॥ १॥ कर्तिर्वरदराजेस्यमध्यसिद्धान्त कौमुदी × × × संवत् १८२७ आषाढ वदि × × × × ॥
२३·८ × ११·१ सें० मी०	१५१ (१-१३९, ४१-१५२)	१०	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति चवि टिकटिकटि वरदराजभट्ट कृत मध्य सिद्धांत कौमुदी समाप्ता ॥ संवत् १८३४ शाके १६९९ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा रविवासरे शुभे योगे काश्यां बालक दास स्थले लिखित हरिदास वैष्णवः ॥ शुभं ॥
२२·५ × ८·७ सें० मी०	२६९ (१-३४,१-१०३,१-१३२)	७	२९	पू०	प्राचीन	पुषा वरदराजेन बालानामुपकारिका अकारि पाणिनीयानं मध्यसिद्धांतकौमुदी ॥ कृतिर्वरदराजस्य मध्यसिद्धांतकौमुदी॥ तस्याः संख्यातु विज्ञेया खबाणकरवन्हिभि ॥
२३·८ × ११·२ सें० मी०	३३ (१-३३)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सुबन्त प्रक्रिया समाप्तमगमत्
३० × १०·२ सें० मी०	७० (२-७१)	७	३७	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × १० सें० मी०	३७ (पृ०१ से २७ तक स्फुट पत्र)	९	४४	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	५६८४	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१६२	६२७६	मध्यसिद्धांत कौमुदी	,,		दे० का०	दे०
१६३	६२३१	मध्यसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे०
१६४	५४३८	मनोरमारत्न (अव्यय प्रकरण)			दे० का०	दे०
१६५	२२२	महाभाष्य प्रदीप प्रकरण	महर्षि पतंजलि	कैयट	दे० का०	दे०
१६६	२२६५	महाभाष्यप्रदीप	,,	कैयट	दे० का०	दे०
१६७	४३०	रूपकौमुदी			दे० का०	दे०
१६८	५२४	रूपतरंगिणी	त्रिपुरारिप्रसाद		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·४ × १० सें० मी०	४८ (१–४८)	८	४१	अपू०	प्राचीन	
२२·९ × १०·४ सें० मी०	३७ (१–३७)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·४ ३सें० मी०	१९ (१,५-१४, १४,१५,१८-२३)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२० × ८·४ सें० मी०	७ (२–८)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·६ सें० मी०	१०१ (२-१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२०·२ × ८·४ सें० मी०	५१ (१-१३,१-२)	५	२२	अपू०	प्राचीन	
३४ × १६ सें० मी० (सं०सू०३–३५)	३५ (२–३६)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	पूर्णो रूपतरङ्गिण्यामाख्यातांशोऽतिसुन्दरः। कृतायामीश्वराख्येन त्रिपुरारिप्रसाद ॥ शुभमस्तु ॥·········राम ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	६२१४	रूपावली			दे० का०	दे०
१७०	७५७७	लक्षणावली	हीरावल्लभ पार्वतीय		दे० का०	दे०
१७१	७५७३	लक्षणावली	,,		दे० का०	दे०
१७२	११९७	लक्षणावली	,,		दे० का०	दे०
१७३	३९६४	लक्षणावली	,,		दे० का०	दे०
१७४	५१४८	लक्षणावली	,,		दे० का०	दे०
१७५	५६७५	लक्षणावली	,,		दे० का०	[illegible]
१७६	३९५०	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०.५ सें० मी०	६	८	२५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
३२.५ × १३ सें० मी०	१	१०	५१	अपू०	प्राचीन	अथ लक्षणावलि लिख्यते (प्रारंभ। ।
३५ × १३ सें० मी०	५ (१–५)	११	५२	पू०	सं० १९५५	इति श्री मद्हीराब्रह्ममयोर्बतीय वीरंचिता लक्षणावलिः समाप्ता मिति कार्तीक शुदी ६ संवत् १९५५ शुभं भूयात् ।।×× × ×
२८.३ × ११.९ सें० मी०	९ (१–९)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री ·· ···· ···लक्षणावलिः समाप्तिमगात् शुभम् सम्वत् ।।१९४५।। शुभम्भूयात् ।।
२६.१ × १०.६ सें० मी०	७ (२–८)	१०	३१	अपू०	सं० १९२३	इति श्रीमद्हीरावल्लभ पार्बतीय विरचितं लक्षणावलिः समाप्तम् गणेशिलालसुधिरान् लिपिकृतम् संवत १९२३ मिति कार्त्तिक वदि १ संभूनाथ शिवः १।।
२७ × ११.५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३२	पू०	प्राचीन	
२६.७ × ११.२ सें० मी०	७ (१-६,११)	६	३१	अपू०	सं० १९३८	इति लक्षणावली समाप्तः······संबत् १९३८ के साल··· ··· ···
२७.६ × ११.१ सें० मी०	५८ (१–५८)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इत्युपाख्याय योपनामक शिव भट्ट सुत सतोगर्भज नागोजो भट्ट कृते लघुशब्देंदुशेखरे सिद्धांत कौमुदी व्याख्याने कृदंत विस्तरस्तु वृहच्छब्देंदुशेखरे ष्टव्यः ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७७	४०८३	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१७८	२५४२	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१७९	५५१	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८०	३०६४	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८१	४७००	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८२	६७४५	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८३	५८२१	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८४	५६१६	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × ११·३ सें० मी०	११० (९१-२००)	११	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिव भट्ट सुत सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते लघुशब्देंदुशेखरे तिङ्तं संपूर्णं ।
२८·२ × ११·८ सें० मी०	७१ (१,२१-९०)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	१६४ (२ से २६३ तक स्फुटपत्र)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·७ सें० मी०	२६ (१-३,१-२६)	११	४८	पू०	प्राचीन	इत्युपाध्यायोपनामक शिवभट(ट्ट) सुत सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते लघुशब्देंदुशेखरे सिद्धांत कौमुदी व्याख्याने कृदंतं विस्तरस्तु वृच्छदेंदुशेखरे द्रष्टव्यः ॥··· ···
२७·८ × ११·२ सें० मी०	११ (१-७,९-१२)	१२	४३	अपू०	प्राचीन	···नत्वाफणीशन्नागेशस्तुनुतेर्थ प्रकाशकम् मानोरमोमार्द्धदेहं लघुशब्देंदुशेखरम्··· × × × (प्रारंभ)
३२·२ × ११·५ सें० मी०	३९ (१–३९)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
३३·३ × १०·२ सें० मी०	२२ (२-९, ११-२४)	१०	५६	अपू०	प्राचीन	
२९·६ × ११·६ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	५८	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	६०५३	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८६	७६९६	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८७	७६८७	लघुशब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८८	४१०८	लघुशब्देंदुशेखर (वैदिक प्रक्रिया)	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
१८९	६३१४	लघुशब्देंदुशेखर (सटीक)	नागेशभट्ट		दे० का०	
१९०	२७१२	लघुसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०
१९१	१०७४	लघुसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे०
१९२	५०४८	लघुसिद्धांत कौमुदी	तरदराज		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·७ × १२ सें० मी०	४८	१६	४०	अपू०	प्राचीन	
३१·२ × ११·६ सें० मी०	५	११	६०	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × ११·६ सें० मी०	१२२ (१-३९, ७०-१५२)	९	५२	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × ११·२ सें० मी०	२१ (१-९, ११-२२)	११	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवभट्ट सुत सती गर्भज नागोजी भट्ट विरचिते सिद्धांत कौमुदी व्याख्याने लघुशब्देंदुशेखरे वैदिक प्रक्रिया समाप्ता शुभमस्तु ॥
३१·२ × ११·२ सें० मी०	७९ (१-७९)	१०	४७	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·६ सें० मी०	९५ (१—९५)	७	३३	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्री भट्टोजीदीक्षित शिष्य वरदराज कृता लघु सिद्धांतकौमुदी ॥ संपूर्णा ॥ शुभमस्तु ... ... संवत् १८९६ के साल ॥
२६ × ११ सें० मी०	५३ (८—६०)	१०	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	इति श्रीभट्टोजी दीक्षित शिष्य वरदराज भट्टकृता लघु सिद्धांत कौमुदी संपूर्ण ॥ संवत् १८२८ ॥
२३·७ × १०·८ सें० मी०	१० (१०—१९)	८	१९	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	४९७५	लघुसिद्धांत कौमुदी	वरदराज		दे० का०	दे.
१९४	७१९९	लघुसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे.
१९५	३९९	लघुसिद्धांत कौमुदी	वरदराजाचार्य		दे० का०	दे.
१९६	८३७	लघुसिद्धांत चंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे.
१९७	१६०३	लिंगानुशासन (संस्कृत टीका)	हेमचंद्र		दे० का०	दे.
१९८	१६३५	लिङ्गानुशासन (संस्कृत टीका)	हेमचंद्र		दे० का०	दे.
१९९	१०८५	लिंगानुशासन वृत्ति	वररुचि		दे० का०	दे
२००	१९	लिंगानुशासन सूत्रवृत्तिः	भट्टोजि दीक्षित		दे० का०	दे

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × १४·१ सें० मी०	३० (१–३०)	११	२६	अपू०	प्राचीन	
२६·९ × ११·१ सें० मी०	९३ (१-३, ३-९२)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति श्री वरदराजकृता लघुसिद्धांत-कौमुदी समाप्ता ॥ श्री सीताराम चंद्राभ्यांनमः ॥ लिखिता स्वार्थं परार्थ वा संवत् १९२५ ॥
२२·५ × १०·५ सें० मी०	८	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·५ सें० मी०	४८ (१–४८)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति श्री रामाश्रमविरचिता लघुसिद्धांत चंद्रिका समाप्ता ॥ संवत् ॥ १८१२ ॥
३० × १३·५ सें० मी०	३ (४–६)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३० × १४ सें० मी०	२	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
३३ × १५ सें मी०	१५ (१—१५)	११	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री आचार्य वररुचि विरचिते लिंगानुशासने लिंग वृत्ति समाप्ता ॥ श्रीराम श्रीराम श्रीराम ॥
२५·५ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं०१८७६ श०१७४१	इति श्री भट्टोजि दीक्षित विरचिताया पाणिनि सर्वादीनि सर्वनामानि स्पष्टार्थयन्त्रि सूत्री लिङ्गनुशासन सूत्रवृत्ति समाप्तः । संवत् १८७६ शाके १७४१ ॥

(सं०सू०३-३६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०१	६९६८	लिंगानुशासन सूत्रवृत्ति	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
२०२	९८४	लिंगार्थविचार (पूर्वार्द्ध)			दे० का०	दे०
२०३	२७२७	वाजसनेयी शिक्षा			दे० का०	दे०
२०४	६०६१	वार्त्तिकपाठ			दे० का०	दे०
२०५	६८२२	वार्त्तिकपाठ			दे० का०	दे०
२०६	[illegible]३९०४	विकृतिवल्ली (टीका) (विकृतिकौमुदी)	आचार्य व्याडि	गंगाधर	दे० का०	दे०
२०७	४२९४	विपरीतग्रहण प्रकरण			दे० का०	दे०
२०८	६७७८	विभक्तिप्रयोग			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.९ × १२.८ सें० मी०	५ (१,३-६)	१६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजिजदीक्षित विरचितायां पाणिनि सर्वादीनि सर्वनामानिस्पष्टार्थे यन्त्रिसूत्री लिंगानुशासनं सूत्रवृत्ति स्समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १८८० माघासिता १ ॥
३३.४ × १३ सें० मी०	१४	१४	६३	अपू०	प्राचीन	
१६ × १०.५ सें० मी०	१९	७	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्री याज्ञवल्क्य मुनि कृता वाजसनेयीशिक्षा समाप्ता ॥ श्री संवत् १९२० समये वैशाख कृष्ण १४ कीर्ति धरेण लिखितं स्वार्थ परमार्थ च (हासिये पर ग्रंथ नाम 'या० शि०' लिखित है ॥)
२७.५ × १२.२ सें० मी०	४ (१–४)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१९३२	इति वार्त्तिक पाठ समाप्तः ॥ संवत् १९३२ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ प्रतिपदायां भानुवासरे लिखितमिदं पुस्तकं पंडरावटं के नरण छोडेन ॥
२१.६ × ८.८ सें० मी०	२४ (१-११, २०-३२)	९	३६	अपू०	प्राचीन	
२०.१ × ९ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३२	पू०	श०१५०३	स्वास्तिश्री गंगाधरभट्टाचार्य विरचितायां विकृति कौमुद्यां टीकायां व्याड्याचार्य प्रणीत जटाद्यष्ट विकृति लक्षण प्रतिपादके विकृतिनाम्निग्रंथे जटा विकृति लक्षणं नाम प्रथमं पटलं संपूर्णम्······शके १५०३ वृषनाम संवत्सरे आषाढ़ शुक्ल तृतीयायां ॥
१६.८ × ११.९ सें० मी०	६ (१–६)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशाय नमः अेतत् विपरीतग्रहण प्रकरण लिख्यके ॥ (प्रारंभ)
२६.३ × ११.४ सें० मी०	३ (५०–५२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	५७३१	वैयाकरणकारिका			दे० का०	दे०
२१०	४०२५	वैयाकरणभूषण			दे० का०	दे०
२११	२६८	वैयाकरणभूषणसार	कोंणभट्ट		दे० का०	दे०
२१२	२६४१	वैयाकरणभूषणसार	कोंणभट्ट		दे० का०	दे०
२१३	६७६८	वैयाकरण भूषणसार (स्फोटवाद)	कोंणभट्ट		दे० का०	दे०
२१४	७४६६	व्याकरण (म० ती०)			दे० का०	दे०
२१५	५३३१	व्याकरण (म० ती०)			दे० का०	दे०
२१६	२४५२	व्याकरण टीका (म० ती०)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·३ सें० मी०	३ (२–४)	६	४४	अपू०	प्राचीन सं०१६३५	इति श्री वैयाकरणकारिका संपूर्णम् राम ।। सं: १६३५ मी० फा० सु० ३ ।
२६·२ × १२·७ सें० मी०	१२ (८१–९२)	१२	५६	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री वैयाकरण भूषणेनामार्थ परिछेदा समाप्त: ॥ ··· (पत्रसंख्या ८६) × × ×
२८·८ × १२·३ सें० मी०	८० (१–८०)	१२	४६	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२६·२ × ८ सें० मी०	७८ (१–७८)	७	४६	पू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणपारावार पारीणधुरिण रंगोजी भट्टात्मज कोंण भट्ट कृते वैयाकरण भूषणसारे स्फोट वाद: समाप्त: ।।
२४·८ × १०·४ सें० मी०	५२ (१–५२)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाण पारावारी पारीणधुरीण रंगोजी भट्टात्मज कोंड भट्टकृते वैयाकरण भूषणसारे स्फोटवाद: समाप्त: ॥ संवत् १८८७ मिति फालगुनशुक्ल दशाम्यां इंदुवारे × ×
२६·२ × ७ सें० मी०	९ (२–१०)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ९·३ सें० मी०	९ (१–९)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१६३८	समाप्ता संवत् १६३८ मार्गशीर्स मासे शुक्लपक्षे वारमंगर के ·········· ···
२७·७ × ८·७ सें० मी०	१८०	८	४८	अपू०	प्राचीन	(हासिये पर ग्रंथनाम के लिये 'म० वैं०, 'म० ती०' तथा 'म० सु०' लिखित है।)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	५१०२	व्याकरण शिक्षा			दे० का०	दे०
२१८	५६८०	व्याकरण शिक्षा			दे० का०	दे०
२१९	४५२४	व्युत्पत्तिप्रकाश			दे० का०	दे०
२२०	७११९	(व्याकरण) शिक्षा			दे० का०	दे०
२२१	५४८३	शिशुबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
२२२	३७७२	शिशुबोध	काशीनाथ		दे० का०	दे०
२२३	६४९६	शब्दकौस्तुभ	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
२२४	३०६५	शब्दकौस्तुभ	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११·७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री व्याकरण शिक्षा समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥
२४·४ × ११·२ सें० मी०	५३ (१-३६, ३८–५४)	७	१९	अपू०	प्राचीन	
३३·६ × १३ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १९३०	इतिव्युत्पत्ति प्रकाशः ॥ संवत् १९३० ॥
१२·४ × ७·९ सें० मी०	३ (२,५–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × १०·१ सें० मी०	६ (३–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री काशिनाथ विरचिते शिशुबोधः समाप्तः ॥
२४·५ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	८	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री काशिनाथ विरचिते शिशुबोधः समाप्त ॥
२४·२ × ९·४ सें० मी०	५१ (१–५१)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मट्टोजि दीक्षितेन विरचिते-लक्ष्मीधरसूनु ॥
२८·५ × १०·८ सें० मी०	१९ (४–२२)	११	५६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२५	२१२२	शब्दकौस्तुभ	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
२२६	२२०६	शब्दकौस्तुभ	"		दे० का०	दे०
२२७	६२५७	शब्दकौस्तुभ	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
२२८	२२६०	शब्दकौस्तुभ	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
२२९	३४६०	शब्दरत्न	हरि दीक्षित		दे० का०	दे०
२३०	२१८	शब्दशक्तिप्रकाशिका	जगदीश		दे० का०	दे०
२३१	२१७	शब्दानुशासन	हेमचंद्र		दे० का०	दे०
१३२	३५९२	शब्देंदुशेखर			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × १०·३ सें० मी०	१०२ (१-२,४-५, ३-५,१-९५)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाण पारावार-पारिणस्य लक्ष्मीधर सूरेः सूनुना भट्टो-जी भट्टेन कृते श्री शब्द कौस्तुभे द्वितीय-स्याध्यायस्य चतुर्थपादे·········
२८ × ११·७ सें० मी०	१०२ (१–१०२)	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री शब्दकौस्तुभे तृतीयस्यप्रथमे पादेषष्ठमांक पादश्च समाप्तः ॥ ···
२८ × १२·२ सें० मी०	१५५ (१–१५५)	१०	४७	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × ११·६ सें० मी०	३० (१–३०)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीशब्द कौस्तुभे तृतीयस्य द्वितीये पादे तृतीय माह्निकं समाप्तश्च द्वितीयः पादः ॥
२६·७ × ११·५ सें० मी०	९९ (१-५५,१२७-१७०)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति हरि दीक्षित कृते शब्दरत्ने कारकं समाप्तं ॥ (पत्र सं० ५५)
३५ × १३·५ सें० मी०	३	११	४४	अपू०	प्राचीन	
३६·७ × १३·२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·५ सें० मी०	८६	१३	५१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३३	९०	शब्देन्दुशेखर			दे० का०	दे०
२३४	८९	शब्देन्दुशेखर	मन्नू देव		दे० का०	दे०
२३५	४६६८	शब्देंदुशेखर (उत्तरार्द्ध)	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
२३६	३०४०	शब्देंदुशेखर (सटीक)			दे० का०	दे०
२३७	५५२६	शब्देंदुशेखर (सटीक)	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
२३८	६४८	शब्देंदुशेखर	नागेशभट्ट	लोकेशकरशर्मा	दे० का०	दे०
२३९	१४९९	शब्देंदुशेखर (त्रिपथगा टीका)	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२४०	१५३७	शेखर (संस्कृत टीका)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५ × ११ सें० मी०	१६० (१-५१, ५३-८८, ९६-१६७)	११	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८७४	इति हलंताः पुल्लिगाः सतंव १८७४ ॥
२५ × ११ सें० मी०	४३ (१-४३)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × ११·३ सें० मी०	८९ (१-८९)	१२	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मदुपोध्यायोपनाम शिवभट्ट-सुत सती गर्भजनागेश भट्ट रचिते-शब्देंदुशेखराख्येसिद्धांतकौमुदी व्याख्याने उत्तरार्द्धं समाप्तं ॥शुभमस्तु॥ × ×॥
२६·४ × ११·६ सें० मी०	२५ (१-२५)	१४	४४	अपू०	प्राचीन	
२७·२ × ११·३ सें० मी०	९७	९	३६	अपू०	प्राचीन	
३१·२ × १५ सें० मी०	४४ (३ से ५९ तक स्फुट पत्र)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × ११ सें० मी०	१३ (१-१३)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
३१·८ × १२ सें० मी०	१८६ (१ से १९९ तक स्फुट पत्र)	११	६८	पू०	प्राचीन	इति विभक्त्यर्थाः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	१७५५	श्रुतिबोध (संस्कृत टीका सहित)	वररुचि		दे० का०	दे०
२४२	४१४६	संस्कृतमंजरी			दे० का०	दे०
२४३	३५७३	संस्कृतमंजरी	माहेश्वर		दे० का०	दे०
२४४	४५७६	संस्कृतमंजरी	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२४५	१०८७	संस्कृतमंजरी			दे० का०	दे०
२४६	३५८९	संस्कृतमंजरीव्याख्या			दे० का०	दे०
२४७	५१६४	समासचक्र			दे० का०	दे०
२४८	४८९३	समासचक्र			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ म	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री पंडित वररुचि विरचित श्रुतिबोधास्य: ॥
२८·५ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	३८	पू०	प्राचीन	इति संस्कृत मंजरी समाप्त ॥
२५·३ × ११·५ सें० मी०	५ (१-३,५-६)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं० १९०२	इति माहेश्वरेण विरचितं संस्कृत मंजरी संपूर्णम् शुभमस्तु संवत १९०२ ॥
३१·६ × १२·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	३९	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री रघुनाथ विरचिता संस्कृत मंजरी समाप्तं ॥ १ ॥ संवत् १९०९ मार्गशिर कृष्ण ६ गुरु वासरे हस्ताक्षर व्रज ॥ मोहनदासस्य ॥
२३·७ × ९·७ सें० मी०	१६ (२–१७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	वाल बुद्धि प्रकारार्थं दिङमात्रं लिखितं मया ॥ इति संस्कृत मंजरी समाप्तोयं ॥
३१·२ × १२·१ सें० मी०	३ (७–९)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति संस्कृत मंजरी समाप्ता ॥
२०·९ × ९·२ सें० मी०	२	१२	३२	अपू०	प्राचीन	इति समासक्रं समाप्तं ॥
२४·१ × १०·९ सें० मी०	५ (१–५)	८	३३	पू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४९	५८९५	समासचक्र			दे० का०	दे०
२५०	४७६२	समासचक्र	जगन्नाथ भट्ट		दे० का०	दे०
२५१	६२३८	समासचक्र			दे० का०	दे०
२५२	२६६४	समासचक्र			दे० का०	दे०
२५३	१४६	समासप्रकरण			दे०का०	दे०
२५४	२९०२	समासाश्रयविधि			दे० का०	दे०
२५५	७५८१	सर्वगणधातुपाठ			दे० का०	दे०
२५६	५६५३	सारबोधिनी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × १०.२ सें० मी०	७ (१–७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति समास चक्रं समाप्तं ।।
२२.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१-२,६-८,१३)	७	२१	अपू०	प्राचीन शक१७७२	इति समास चक्र समासः ।। ……… … ……हस्ताक्षर बाला जी नारायण जोशिका से कर ।। मा० वा ११ ।। शके १७७२ ।।
२७.२ × १३.५ सें० मी०	३ (१–३)	६	३६	अपू०	प्राचीन	……अथ समास चक्र लिख्यते… … (प्रारंभ)
२३ × ६.८ सें० मी०	५ (१–५)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति समाश्चक्रं समाप्तं ।।
२४.६ × ११ सें० मी०	२	१४	५०	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२६ × ११.५ सें० मी०	४० (१–४०)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति समासाश्रय विधयः ।।
२६.१ × ११ सें० मी०	८ (१-४,६-७, ११-१२)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६.१ × १०.६ सें० मी०	३३ (७–३९)	६	४२	अपू०	प्राचीन	इति सारबोधिन्यां द्वितीय पटल्लासः (पृ० ८)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५७	७४६६	सारस्वत			ᐧ० का०	दे०
२५८	६२४७	सारस्वत			दे० का०	दे०
२५९	५७८५	सारस्वत			दे० का०	दे०
२६०	५५४५	सारस्वत			दे० का०	दे०
२६१	५५२८	सारस्वत			दे० का०	दे०
२६२	८२	सारस्वत			दे० का०	दे०
२६३	१५७	सारस्वत	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२६४	२२२	सारस्वत	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १०·८ सें० मी०	८ (३–५, ७–११)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × ११·४ सें० मी०	२०	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
१६·४ × १४·५ सें० मी०	१६	१८	१६	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १२·८ सें० मी०	१४	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × ९·७ सें० मी०	२५	८		अपू०	प्राचीन	
२८·८ × १३·५ सें० मी०	२१	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·४ सें० मी०	५२ (६-२१, २३-५७)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १३ सें० मी०	४८	७	२८	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६५	१५०६	सारस्वत		नरेंद्र	दे० का०	दे०
२६६	५००६	सारस्वत			दे० का०	दे०
२६७	५२४०	सारस्वतप्रसार (प्रथमावृत्ति)		वासुदेवभट्ट	दे० का०	दे०
२६८	५०३६	सारस्वतचंद्रिका (टीका)			दे० का०	दे०
२६९	८१	सारस्वतचंद्रिका			दे० का०	दे०
२७०	७३५१	सारस्वतचंद्रिका पूर्वार्द्ध सटीक			दे० का०	दे०
२७१	७६१३	सारस्वत-पूर्वार्द्ध			दे० का०	दे०
२७२	२१९२	सारस्वत-पूर्वार्द्ध	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२१.२ × ११ सें० मी०	५ (८–१२)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२६ × १२.३ सें० मी०	५ (३,८–११)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
३२.३ × ८.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टवासुदेव विरचिते सारस्वतप्रसारे तद्धित प्रक्रिया समाप्तिमगमत् प्रथमा वृत्तिसमाप्ता ।।श्री।।
३२.४ × १५.३ सें० मी०	१० (६–१८)	१४	४७	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ७.८ सें० मी०	११	११	३४	अपू०	प्राचीन	
२३.६ × १०.४ सें० मी०	६ (१६,२१-२२, २८,३२, ४१)		२०	अपू०	प्राचीन	
२७.२ × ११.१ सें० मी०	७	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११.३ सें० मी०	१२ (२४-३४, ३६)	७	२६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	७४०	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२७४	७५	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२७५	४५०३	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२७६	३४५४	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२७७	१४०४	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	
२७८	१४०६	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
२७९	३५४४	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
२८०	२४५१	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·१ × १२ सें० मी०	४५ (१४-८८)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत परमहंस परिव्राजका अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचित सारस्वती प्रक्रिया समाप्ता शुभंमस्तु सर्व जगतां राम ।
३० × १३·५ सें० मी०	३४	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·४ सें० मी०	३ (१६-१८)	१०	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८५२	इति श्री अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचितायां सारस्वती प्रक्रिया समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १८५२ ॥
२६·८ × ११·२ सें० मी०	६४	८	३६	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति विसर्ग संधिः ॥ पंचसंधि समाप्ता ॥ श्रीरामजी सदा सहाय ॥ श्रीसरस्वती ॥
२२ × १०·७ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११·८ सें० मी०	४२ (२-१७,१६-४४)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १५·५ सें० मी०	७१	१०	३१	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमदनुभूति स्वरूपाचार्य विरचिता सारस्वती प्रक्रया समाप्ता ॥ चैत्रकृष्ण ३ संवत् १८६१ शुभं भवतु ॥ मंगल ददातु ॥ श्री राम... ... ...

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	
२८१	३२३१	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे
२८२	४१४४	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे
२८३	३२२८	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		का०	दे
२८४	५७४	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे
२८५	५६०	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२८६	५४७७	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२८७	५४५०	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे
२८८	३५५	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·८ × ११·३ सें० मी०	५७ (१–५७)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१७०७	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य नरेंद्रपुरी चरणादि अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचिते सारस्वताख्योस्यादि प्रक्रिया समाप्तं संवत् १७०७ मीती फालगुन शुद्धादसि१३ लिखितं मिजि रामसाहाय॥
२५·९ × १०·९ सें० मी०	३७ (३,५–३८)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११·८ सें० मी०	१३ (१-१२,१४,)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३७	पू०	प्राचीन सं०१९३४	इति विसर्ग संधि समाप्तम् शुभमस्तु राम जी सदा सहाय सं० १९३४ शाके १७९९ मासे फालगुण शुक्ला १४ आदित्य वासरे लिपि कृतं।
२४·८ × १०·८ सें० मी०	६६	९	३२	पू०	प्राचीन सं०१८२३	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमदनुभूति स्वरूपाचार्य्य विरचितायां सारस्वती प्रक्रिया समाप्तं॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ अनुभूति स्वरूपाय नमः॥ शुभमस्तु॥ संवत् १८२३ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे दशम्यां बुध वासरे॥
२५·५ × ११·८ सें० मी०	५८ (४-१७,३०-३५,४०-४२, ४४-४६,४८-७७)	११	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्यविरचितायां सारस्वती प्रक्रियायां आख्यात प्रक्रिया समाप्ताः॥ × × ×॥
२७·६ × ११·५ सें० मी०	१० (१-१०)	७	४५	पू०	प्राचीन	इति विसर्ग संधिः समाप्तः
२५·५ × ११ सें० मी०	८	१०	४०	पू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
२८९	१८२७	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९०	२२१	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९१	८५७	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९२	७४३५	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९३	७८४०	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
२९४	२१५०	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	०
२९५	१९९९	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९६	५०९	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × १०·८ सें० मी०	९६ (१-९६)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१८४९	इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्य्यविरचितायां सारस्वतीप्रक्रियायां कृदंतप्रक्रियासमाप्ता।। ······संवत् १८७३ ।। वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षेतिथौ प्रतिपदायां १ ।।· ·शुभम्
३२· × १३·५ सें० मी०	६३ (१२–७४)	८	२६	अपू०	प्राचीन सं०१९४४	इति श्री अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचितायां सारस्वत प्रक्रियायां ततद्रीज प्रक्रिया समाप्ता मासा नाम मासोत्तमे मासे भाद्रपदमासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ प्रतिपदायां शनिवासरे न्वीतायां लिपिकृतम् चरण दत्त विद्यर्थि
२७·३ × ११·५ सें० मी०	५० (९-१२-२७, ३०-४४,४६-४९,६०७५)	१०सू	३५	अपू०	प्राचीन सं०१८१९	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य विरचितं अनुभूति स्वरूपाचार्य सारस्वत प्रकृया समाप्तम् ।। शुभमस्तु सं० १८१९
२४·९ × ११·१ सें० मी०	६१	६	३०	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
२३·६ × १०·१ सें० मी०	४२	१०	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८२५	इतिश्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य विरचितायां-सारस्वती प्रक्रिया समाप्ता ।। शुभमस्तु।। संवतु १८२५ आषाढ़ शुक्ल चतुर्थ्यां शनिवासरे लिषितंमिदं पुस्तकं × ×
२४·८ × ९·९ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२७·१ × ११·७ सें० मी०	७७ (२-३,५-७९)	९	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य विरचितायां सारस्वती प्रक्रियायां प्रथम प्रवृत्तिः ।।
२१·७ × १३·५ सें० मी० (सं०सू०३-३९)	५८ (१-५८)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	३८४८	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९८	३७८३	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
२९९	४८७८	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३००	२२८३	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
३०१	५१२०	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०२	६११६	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०३	२९१८	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०४	४५८२	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १५ सें० मी०	५४ (१-५४)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·५ सें० मी०	५ (१-२, ४-६)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १३·७ सें० मी०	७४ (१-२, १३-८४)	१०	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८४८	इति श्री अनुभूति स्वरुपाचार्य विरचितायं सारस्वती प्रक्रुया समाप्ता ॥ श्री श्री श्री संवत् १८४८ वर्षे जेष्ट वदि अष्टमी बुधदिनेलिषतं मिश्र लक्ष्मण × × × × × ॥
२४·३ × १०·५ सें० मी०	२५ (७, १३-२५, २५-२६, २६-३४)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × १३·६ सें० मी०	२५ (१-२५)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२६·४ × १२·५ सें० मी०	५६ (१-५६)	१३	३७	पू०	प्राचीन	
२२ × १०·१ सें० मी०	२८	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२७ × १२ सें० मी०	१३ (१-११, ३६-३७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य परमात्मनंबालधी वृद्धि सिधये सारस्वतीमृजं कुर्वे प्रक्रियां यातिविस्तरां १... (पत्र-संख्या-१, प्रारंभ)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०५	५९८९	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०६	५२१६	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०७	३७०२	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
३०८	३४०६	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३०९	४१७३	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१०	१३२७	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		मि० का०	दे०
३११	५३१	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१२	४२७४	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × ११ सें० मी०	५३ १,११-४५, ४९-६६	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९२३	सम्वत् १९२३, इति अनुभूति स्वरूपाचार्य विरचिते व्याकरणे सारस्वत संपूर्ण ......
३०·५ × १२.५ सें० मी०	३ (१–३)	११	३९	अपू०	प्राचीन	
२०·४ × १३·६ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	२३	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × १०·८ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	८	२०	पू०	प्राचीन सं० १८२८	इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य श्री अनुभूति स्वरूपाचार्य सारस्वती प्रक्रिया संपूर्णम् व्याकरण की पोथी पाठसमाप्तः लिपित गोविंद परसद दुबे उपमन्यः मार्ग वदी १ सनिवासरे कृष्णपक्षे संवत् १८२८ सके १६९३
३१·५ × १६·५ सें० मी०	३० (१–३०)	१५	४२	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति श्री परमहंस परिव्राजकानुभूतिस्वरूपाचार्य विरचितायां सारस्वती प्रक्रियायां स्यादिः प्रक्रिया समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु ॥ संवत् १९३४ अस्वनवद ७ शनवासर ॥ ... ...
१८·२ × १०·५ सें० मी०	१०	७	१८	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२·२ सें० मी०	१४० (१–१४०)	९	२८	पू०	प्राचीन सं० १९४२	इति तद्धित प्रक्रियाः समाप्तं सं० १९४२ आश्विनस्य सिते पक्षेपंचम्यां चंद्रवासरे गंगा प्रसादपठनार्थं वनवारी लिखि कृतम् ।।१।। शुभमस्तु मंगल ददातु श्री राम चंद्रायनमः कृष्णायनमः
२४ × ९·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१३	४५४५	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१४	४५७० / ४	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१५	५१४६	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१६	५१३६	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
३१७	४६८७	सारस्वतप्रक्रिया			दे० का०	दे०
३१८	१८७५	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३१९	४०८	सारस्वतप्रक्रिया (उत्तरार्ध)	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२०	४२६०	सारस्वतप्रक्रिया (कृदंत)	अनुभूति स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०×११·८ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	३७	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य परमात्मानं बालधी वृद्धि सिद्धये॥ सारस्वती मृजं कुर्वे प्रक्रिया नाति विस्तराम् ॥ (प्रथम पत्र, प्रारंभ)
२१·५×१३·२ सें० मी०	१२	१९	१४	अपू०	प्राचीन	तत्र तस्यां सरस्वती प्रोक्तायां तावत्नाम आदौ मया अनुभूति स्वरूपाचार्य संज्ञा संगृह्यते कस्मै प्रयोजनाय संव्यवहाराय कोऽर्थसम्यग् संव्यवहाराय इत्यन्वयः ॥ (अंतिम पत्र)
२२·२×९ सें० मी०	३०	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२२·८×९·३ सें० मी०	३९ (१९,२२-२६, ३०-५७,५९-६४)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२७·९×११·२ सें० मी०	२	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२७·४×१३ सें० मी०	५८ (१–५८)	११	२७	पू०	प्राचीन सं०१८५०	इति श्री अनुभूति स्वरूपाचार्येण विरचिता सारस्वती प्रक्रिया संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १८५० ॥ वर्षे··· ···अनुभूति प्रक्रिया शुभमस्तु ॥
२८·२×१२·७ सें० मी०	२५ (२ से ३० तक स्फुट पत्र)	११	३२	अपू०	प्राचीन	
२४×१०·३	१५ (१–१५)	७	२७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२१	४१०	सारस्वतप्रक्रिया (तद्धित प्रकरण)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२२	४१४७	सारस्वतप्रक्रिया (तद्धित प्रकरण)			दे० का०	दे०
३२३	४६४०	सारस्वतप्रक्रिया (सटीक)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२४	८५२	सारस्वतप्रक्रिया (तद्धित प्रक्रिया)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२५	६८२१	सारस्वतप्रक्रिया (तद्धित प्रकरण)			दे० का०	दे०
३२६	४८१६	सारस्वत प्रक्रिया (तद्धित प्रकरण)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२७	४७३६	सारस्वतप्रक्रिया (पंचसंधि)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३२८	६८२१	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)	अनुभूति-स्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × १३·५ सें० मी०	६७	९	३०	अपू०	सं०१९०९ ?	इति तद्धित प्रक्रया समाप्तं संवत् अस्विन मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थ्यां गुरू वासरे ......राम राम राम राम राम ...
२४·९ × १०·७ सें० मी०	८१ (१–८१)	८	२७	पूर्ण	प्राचीन सं०१८८३	इति तद्धित क्रिया समाप्तं सुभ मस्तु संवत, १८८३ अस्वन वदि ५ ॥
२७·३ × १२·७ सें० मी०	३३ (१–३३)	१३	३१	अपू०	प्राचीन	अथ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यः श्री अनुभूति स्वरूपोनिः ... ... सारस्वतीं प्रक्रियां चिकीर्षः ॥ (प्रारम्भ) × × ×
२६·५ × ११ सें० मी०	१४ (१-८,१०-११ २८-२९,४६)			अपू०	प्राचीन सं०१९३०	इति तद्धति प्रक्रया समाप्तम् संवत्१९३० माघ सासे यः शुक्लापक्षे शुभ तिथौ अस्टम्यां रवि दिने शुभं ।
२६·२ × १२·५ सें० मी०	२५ (१–२५)	१५	३७	पू०	प्राचीन	इति तद्धित प्रक्रिया समाप्तः ॥ प्रथम वृत्ति सारस्वतीया समाप्तः ॥
२४·२ × १०·६ सें० मी०	६१ (१–६१)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य श्री-मदनूभूतिस्वरूपाचार्य विरचितातध्धीत-प्रक्रीया समाप्ता ॥
२२·३ × १०·५ सें० मी०	१ (१-११)	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति पंच संधि संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥
२४·५ × १०·८ सें० मी०	१०३ (१–१०३	६	२५	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इत्यानुभूति स्वरुपाचार्य निरचितायां सारस्वति प्रक्रियायां प्रथमा वृत्ति समाप्तः ॥ सं० १९१२ श्रावण शुक्ला ५ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२९	५७१२	सारस्वतप्रक्रिया पूर्वार्द्ध	परिव्राजकाचार्य		दे० का०	दे०
३३०	१८५८	सारस्वतप्रक्रिया पूर्वार्द्ध			दे० का०	दे०
३३१	७२८	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३३२	६३१२	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३३३	३८६७	सारस्वत प्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३३४	१७८८	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३३५	१०४३/३	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)			दे० का०	दे०
३३६	१२६७	सारस्वतप्रक्रिया (पूर्वार्द्ध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·९ × १२·९ सें० मी०	५५ (१-१४,१६-५६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य विरचितायां सारस्वत प्रक्रिया पूर्वार्द्ध समाप्तः ... ... संवत् १८७२ सांवण शुदी १३ वार बृहस्पतिवार ।
२१·९ × ९·८ सें० मी०	६९ (१–६९)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति तद्धिति प्रक्रिया समाप्तोयं प्रथमावृति । पूर्वार्द्ध ॥
३२·५ × १३·४३ सें० मी०	५५ (१–५५)	९	३२	अपू०	प्राचीन सं० १९३९	इति श्री मत्य परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री मदनुभूतिस्वरूपाचार्य विरचिता-सारस्वतो प्रक्रिया समाप्तः संवत् १९३९ वैशाष कृष्णा १२श निवार लिषित आसारामः शुभं ॥
२८·५ × १२·६ सें० मी०	५० (१,१-४९)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति तद्धित प्रक्रिया समाप्तं पूर्वार्द्धं ।... संवत् १८८५ तत्र वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे...
२७ × ११·६ सें० मी०	६५ (१२-३५, ३८-७९)	७	२८	अपू०	प्राचीन सं० १९३०	इति तद्धित प्रक्रिया समाप्ता । शुभंमूयात् सम्वत् १९३० ॥
२८·५ × १४·६ सें० मी०	३१ (१०-१६,२३-४१,४५-४९)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२२ × १३ सें० मी०	३३ (१–३३)	११	१५	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १३·३ सें० मी०	४९ (४–५२)	११	३०	अपू०	प्राचीन	इति तद्धितप्रक्रिया संपूर्णम् लिखितमिदं शालग्रामस्य पुत्र लक्ष्मणदास शुभमस्तुश्री ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३७	४१२७	सारस्वतप्रक्रियाभाष्य			दे० का०	दे०
३३८	१६४३	सारस्वतप्रक्रियाविवृति			दे० का०	दे०
३३९	३४१६	सारस्वतप्रक्रियाभाष्य	काशिनाथ		दे० का०	दे०
३४०	३०३६	सारस्वतप्रक्रियाभाष्य	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३४१	३०३१	सारस्वतव्याकरण			दे० का०	दे०
३४२	१७१४	सारस्वतव्याकरण			मि० का०	दे०
३४३	२३९७	सारस्वतव्याकरण (बालबोधिनी टीका)			दे० का०	दे०
३४४	३२०५	सारस्वतव्याकरण-दीपिका	चंद्रकांतसूरि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२८·२ × ११ सें० मी०	११ (१३–२४)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
३० × १२·७ सें० मी०	५	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
३१·५ × १२·४ सें० मी०	३७ (१–३७)	१३	५७	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति श्री काशिनाथ कृतौ सारस्वत भाष्ये प्रथम वृत्तिः। संवत् १८८० समये कार्तिके मासिकृष्णे प्रदोषेलिपितं।
२६ × ११४ सें० मी०	१५	१२	४८	अपू०	प्राचीन (खंडित)	
२६·८ × ११·३ सें० मी०	६२ (४–६५)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १२·५ सें० मी०	५ (४२-४३, ४५,५४,५७)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
२८·७ × ११ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × १३·१ सें० मी०	२०७ (१–२०७)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १८२६	इति श्री··· ······श्री चंद्रकांति सूर विरचितां श्री सारस्वत व्याकरणस्य दीपिकां संपूर्णं स्फुटमष्ट सहस्त्राणि ····· संवत् १८२६ जेष्ठ मासेसुभे कृष्णपक्षे ·· ···॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४५	२८४	सारस्वतव्याकरण पूर्वार्द्ध	अनुभूतिस्वरूपाचार्य		दे० का०	दे०
३४६	४६१	सारस्वतसूत्र	नरेंद्र		दे० का०	दे०
३४७	३४	सारस्व॰ सूत्र			दे० का०	दे०
३४८	१३१८	सारस्वतसूत्र			दे० का०	दे०
३४९	४२२५	सारस्वतसूत्रपाठ			दे० का०	दे०
३५०	६८०२	सारस्वतसूत्रपाठ			दे० का०	दे०
३५१	७६८३	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३५२	५३२०	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	म	द	९	१०	११
२६·८ × १३·३ सें० मी०	२८ (३-२९,३१)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १३·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति यक श्रावण शुक्ला २ भौमवासरे संवत् १६३६ का ॥...पठनार्थं महाराज श्री ओंकारनाथ जी ॥ शुभंभवतु ।
२७·८ × ११·६ सें० मी०	१२	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१९४६	इति श्री सारस्वतसूत्र पाठ समाप्तम् ॥ फालगुण मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दश्यां भौम वासरे शतब्द पुस्तकं दृष्टा संपूर्ण क्रीयतेऽधुना ... ...संवत् एकोनविंशऽधिक १९४६ शाके शाहलस्य १८०८ लिखितं गंगा चरण छालेण शुभम्भूयात् श्री ददातु श्री पुस्तकः ॥
२६·४ × १३·४ सें० मी०	८ (१–८)	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १२·८ सें० मी०	९ (१–९)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति कृत्यादयः इति श्री सारस्वत् सूत्रपाठ समाप्त ॥
२४·९ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति सारस्वत सूत्रपाठः ॥ इदं पुस्तकं सदासिवव्यासस्य ॥
३३ × १५·५ सें० मी०	४८ (३८ से ९९ तक स्फुटपत्र)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२७·२ × ११·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	६२६४	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३५४	६१८०	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०
३५५	५३०३	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०
३५६	५३३५	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षिति		दे० का०	दे०
३५७	४८०७	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३५८	५४८८	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०
३५९	३५९	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६०	३२०४	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·२ × ११ सें० मी०	८३ (१ से ८४ तक स्फुटपत्र)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × ११·८ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × ११·१ सें० मी०	५५ (१–५५)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·६ सें० मी०	३८ (१-३६, ४२-४३)	१२	५१	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११·५ सें० मी०	५५ (१–५५)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	
३१·६ × ११·९ सें० मी०	१८	९	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·४ × १२·२ सें० मी०	१७९ (१–१७९)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धान्त कौमुद्यां कृदन्ताः समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥
३१·५ × ९·९ सें० मी० (सं० सू० ३-४१)	७८	९	५४	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६१	३०६२	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६२	८३५	सिद्धांत कौमुदी	भटोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६३	२१९	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६४	७३४	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६५	४७३	सिद्धांत कौमुदी अजंत पुंलिग (सटीक)	भट्टोजी दीक्षित	कैयट	दे० का०	दे०
३६६	५४९	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	कैयट	दे० का०	दे०
३६७	४३००	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३६८	१७६३	सिद्धांत कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × १०·८ सें० मी०	२८ (१–२८)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	
२३ × ९·५ सें० मी०	१६८	९	४०	अपू०	प्राचीन	
३० × १२·५ सें० मी०	६५ (१–६५)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·२ सें० मी०	३३३	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२७·१ × ११ ६ सें० मी०	१५ (१-११, १३-१६)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२८·२ × ११·८ सें० मी०	१७६ (१-९, ९-१६, १६-१७४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८७९	
२५·५ × १०·३ सें० मी०	१२४	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ८·८ सें० मी०	८५	८	४१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय को आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६९	२७५१	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७०	११८१	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७१	१२३२	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७२	३४९७	सिद्धांतकौमुदी	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७३	३४८१	सिद्धांतकौमुदी (तत्वबोधिनी टीका)	भट्टोजी दीक्षित	ज्ञानेंद्र सरस्वती	दे० का०	दे०
३७४	४८२४	सिद्धांतकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७५	२३०३	सिद्धांतकौमुदी (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
३७६	२२०७	सिद्धांतकौमुदी (कृदंत प्रक्रिया, सटीक)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × १२·२ सें० मी०	२६ (२३, ३९-६४)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × १०·८ सें० मी०	१४८ (१-१५, २४-९१, १६-१११)	११	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	इतिश्रीभट्टोजीदीक्षितविरचितायां सिद्धांतकौमद्यांतङत प्रकरणं समाप्तम् ॥ वस्वाद्रिनागेंद्रमिते शरेतिथौछायासुतस्याहनिनंदनेऽद्बे अलेखि सिद्धांतकौमदी परामघौसदानन्दकशर्म्मकेण गोविंदमाधव राधाकृष्ण हरे···॥
२३·७ × ८·३ सें० मी०	११२ (१–११२)	८	४२	पू०	प्राचीन	इत्यमोध्यायः ॥ वैदिकि समाप्तः ॥ श्रीरस्तुशुभं ॥
२४·१ × ९· सें० मी०	१४१ (१-६१, ६४-१४३	९	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजिदीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुत्तरार्द्धेतिङंतं समाप्तम् ॥ श्री रामोजयति ॥ शुभंभवतु ॥
२७·३ × ११ सें० मी०	४२ (१–४२)	११	५१	अपू०	प्राचीन	
२९·२ × ११·८ सें० मी०	१२४ (१-५४, ५४-१२३)	११	४८	पू०	प्राचीन सं० १८५८	इतिश्रीभट्टोजिदीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्या मुत्तरार्द्धें पाणिनीयलिङ्गानुशा सनसूत्र वृत्तिः । समाप्तेयंकैसिद्धांत कौमुदी संवत् १८५८ ॥
२६·३ × ११·१ सें० मी०	१६० (१–१६०)	९	३२	अपू०	प्राचीन सं० १७९४	इति श्रीमद्भट्टोजी दिक्षित विरचितायां सिद्धांतकौमुद्यांपूर्वार्द्धे······संवत् १७९४ शुचि (शुचि) मासे कृष्णपक्षे······॥
२८·५ × ११·७ सें० मी०	११०	९	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदवेदांतप्रतिपादिताद्वैतसिद्धातस्थापनाचार्य लक्ष्मीर पुत्रभट्टोजीदीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुदीव्याख्यायां प्रौढ़मनोमायाङ्कृदन्तप्रक्रिया ॥ श्रीराम···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७७	३६६३	सिद्धांतकौमुदी (कारक)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७८	५३४२	सिद्धांतकौमुदी (तिङंत प्रकरण)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३७९	४६२७	सिद्धांतकौमुदी (तिङंत प्रकरण)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८०	८६५	सिद्धांतकौमुदी (तिङंत प्रकरण)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८१	४२६०	ॐसिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८२	४४१०	सिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८३	१४०७	सिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८४	२४५६	सिद्धांत कौमुदी (पूर्वार्द्ध)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·९ × ८·४ सें० मी०	२४ (१-२०,२२-२६)	७	३८	अपू०	प्राचीन सं०१९३८	इति सिद्धांतकौमुद्यांकारकं समाप्तम्॥ वसुरामाङ्कचन्द्रैर्ब्दे नवम्यांमाधावेऽसिते॥ जनार्द्दनो लिखत्काश्यां कारकस्य च पुस्तकम् ॥श्री कृष्णायनमः ॥ (पत्र-संख्या २०)
२४·२ × १०·४ सें० मी०	८७ (१–८७)	१२	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धांतकौमुद्यामुत्तरार्द्धेतिङंतं समाप्तं॥
३१·८ × १०·६ सें० मी०	१८३ (१–१८३)	७	३९	पू०	प्राचीन सं०१९२४	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायाः सिद्धान्तकौमुद्यातिङन्त प्रकरणं समाप्तम् ॥ सम्वत् ।१९।२४
२५·२ × ११·५ सें० मी०	३६ (३-३४,३७-४०)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·६ सें० मी०	४७ (४४–९०)	१३	५३	अपू०	प्राचीन सं०१६८०	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्यां पूर्वार्द्धं समाप्तं ॥ शुभमस्तु॥ श्रीविश्वनाथायनमः॥ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॥४॥ संवत् १६८० वर्षे कार्त्तिक मासे पुर्नवाशि लिषितं काशीक्षेत्रे ॥ श्री गोपालायनमः ॥
२४ × १०·६ सें० मी०	१४८ (५६–२९२)	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्यां पूर्वार्द्ध संपूर्णम् ॥
२३·५ × ८·२ सें० मी०	८४ (१–८४)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्या पूर्वार्द्धं समाप्तं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्टातादृशं लिखितंमया ॥ यदि शुद्धमशुद्धंवा मम दोषो न दीयते ॥ श्री राम ॥ राम ॥
२२·८ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	९	२२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	११८४	सिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध।	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८६	२६०४	सिद्धांतकौमुदी, पूर्वार्द्ध (प्रौढ़मनोरमा टीका)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८७	१३४	सिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८८	५५८३	सिद्धांतकौमुदी(उत्तरार्ध)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३८९	४७८९	सिद्धांतकौमुदी (तत्वबोधिनी टीका)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३९०	२१३२	सिद्धांतकौमुदी तत्वबोधिनी	भट्टोजी दीक्षित	ज्ञानेंद्र सरस्वती	दे० का०	दे०
३९१	४९३१	सिद्धांतकौमुदी (धातुपाठ)			दे० का०	दे०
३९२	२११६	सिद्धांतकौमुदी (पूर्वार्द्ध) तत्वबोधिनी	भट्टोजी दीक्षित	ज्ञानेंद्र सरस्वती	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·२ × ११·५ सें० मी०	५७ (१–५७)	११	४१	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्रीभट्टोजी दीक्षित, विरचितायां सिद्धांतकौमुद्यां पूर्वार्द्धसमाप्तं ॥ रामोजयति ॥ शुभमस्तु।…… सं० १८७० अश्विनमासे कृष्णपक्षे तृतीयायां सोमयुतायां सिद्धांतकौमुदी तद्धितमलेखि …।
३० × १०·३ सें० मी०	६६ (१–६६)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां प्रौढ मनोरमायां सिद्धांतकौमुदी व्याख्यां पूर्वार्द्ध समाप्तिमगात् ॥ श्रीरस्तु ॥
३१·२ × १५ सें० मी०	४ (१३–१६)	१२	३७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२५·६ × ११·५ सें० मी०	१४२ (१७–१५८)	७	३५	अपू०	प्राचीन	इति भट्टोजिदीक्षित विरचितसिद्धान्त कौमुद्यां उत्तरार्द्धेतिङन्त × × ×॥
३२ × १२ सें० मी०	१५७ (१–१५७)	११	५८	पू० (अंशतः)	प्राचीन	नत्वा विश्वेश्वरं सावं कृत्वा च गुरुवंदनं सिद्धान्त कौमुदी व्याख्या क्रियते तत्व बोधीनी १ ………… (प्रारंभ)
३१·३ × ११·७ सें० मी०	१५७ (१–१५७)	९	५५	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री वामनेन्द्रस्वामि चरणारविंदसेवकज्ञानेंद्रसरस्वती कृतौ सिद्धांत कौमुदी व्याख्यायां तत्ववान्याख्यापांतिङन्तकांड समाप्तम् ॥ सं० १८६७ ॥
३१·७ × १२·१ सें० मी०	६ (१–६)	१४	४६	अपू०	प्राचीन	
३१·७ × ११·५ सें० मी०	३९० (१–२७८, १–११२)	९	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यमवोनेद्रंस्वामिचरणारविंदसेवक ज्ञानेंद्र सरस्वती कृतौ सिद्धांतकौमुदी व्यायंतत्वबोधिन्याख्यायांपूर्वार्द्धसमाप्तमागात् ॥

(सं० सू०-३-४२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०१	२९५६	सिद्धांतकौमुदी (सुवंत)			दे० का०	दे०
४०२	२९४४	सिद्धांतकौमुदी (वैदिकी प्रक्रिया)			दे० का०	दे०
४०३	६२३५	सिद्धांतकौमुदी (सुबंत)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
४०४	५८४०	सिद्धांतकौमुदी (सुबंत)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
४०५	६२६३	सिद्धांतकौमुदी (सुबंत प्रकरण)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
४०६	६२३२	सिद्धांतकौमुदी (सुबंत प्रकरण)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
४०७	४९७०	सिद्धांतकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	भट्टोजीदीक्षित		दे० का०	दे०
४०८	४०९७	सिद्धांतकौमुदी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२३.२ × १०.३ सें० मी०	२२ (६,१७,१९-२२,२४-३८)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ९.७ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२७.२ × ११ सें० मी०	३६ (१-२,८-४१, ४१,४२,४३)	५	२४	अपू०	प्राचीन	······मुर्नि त्रयं नमस्कृत्य तदुक्ती परिभाव्य च ॥ वैयाकरण सिद्धांत कौमुदीयं विरच्यते ॥१॥··· ···(प्रारंभ)
२६ × ११.३ सें० मी०	१८ (१,११०–१२६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२७.३ × ११.१ सें० मी०	६४ (४५ से १६६ तक स्फुट पत्र	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२७.२ × ११.५ सें० मी०	६२ (३ से १३७ तक स्फुट पत्र)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × १०.९ सें० मी०	४७ (१–४७)	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्टोजीदीक्षितविरचितायां सिद्धांत कौमुद्यामुत्तरार्द्धं समाप्तं × शुभमस्तु ॥
२९.४ × ११.९ सें० मी०	१९०	८	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	इति तद्धित प्रक्रिया समाप्तः शुभमस्तु कार्तिक सुदि सुवोधिनी एकादशी ॥ संवत् १८७८·········॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९३	६२९४	सिद्धांतकौमुदी (तत्वबोधिनी टीका)	भट्टोजी दीक्षित	ज्ञानेंद्र सरस्वती	दे० का०	दे०
३९४	७३३०	सिद्धांतकौमुदी (तिङन्त)	भट्टोजी दीक्षित	,,	दे० का०	दे०
३९५	६८००	सिद्धांतकौमुदी (पाणिनीय लिंगानुशाम-सूत्रवृत्ति)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
३९६	५०९४	सिद्धांतकौमुदी व्याख्या (प्रौढ़मनोरमा)	भट्टोजी दीक्षित	भट्टोजी दीक्षित	दे० का०	दे०
३९७	५८३८	सिद्धांतकौमुदी व्याख्या (तत्वबोधिनी)	,,	ज्ञानेंद्र सरस्वतो	दे० का०	दे०
३९८	२९०२	सिद्धांतकौमुदी (तिङन्त; प्रौढ़मनोरमा)	भट्टोजी दीक्षित	भट्टोजी दीक्षित	दे० का०	दे०
३९९	२९३१	सिद्धांतकौमुदी (कृदंतप्रौढ़मनोरमा)	भट्टोजी दीक्षित	,,	दे० का०	दे०
४००	६२३३	सिद्धांतकौमुदी (लिंगानुशासनसूत्रवृत्ति)	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ २ × १०.५ सें० मी०	४८ (१–४८)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२४.४ × १०.२ सें० मी०	२३७	६	१९	अपू०	प्राचीन	इति लकार र्थ प्रक्रिया ।। इतिश्री भट्टोजि दीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्यां तिङन्त समाप्तं ।। × × × ×
२४ ५ × ९.६ सें० मी०	७ (१–७)	९	५०	पू०	प्राचीन	इतिश्री भटोजिदीक्षित विरचितायां सिद्धान्तकौमुद्यां पाणिनीय लिंगानुशासंसूत्रवृत्ति समाप्त ।।
३१.५ × १२ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	९	४४	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इतिश्री भट्टोजीदीक्षितविरचितायां सिद्धांतकौमुदी व्याख्यायां प्रौढमनोरमायां तिङन्त कांड समाप्तम् ।। संवत् १८५८ मीति चैत्रवद्य ।
२०.५ × ९.५ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	३७	अपू०	प्राचीन	तत्वबोधिनी सिद्धान्तकौमुदी व्याख्या।।
३२.३ × १२.३ सें० मी०	९९ (१–९९)	११	४१	पू०	प्राचीन	इतिश्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुदी व्याख्यायां प्रौढ़मनोरमायां तिङन्त कांड समाप्तम् ।। श्री रामचन्द्राय नमः।। श्रीमत्सीतारामचंद्रायं-नमः श्रीरस्तु ।
३२.२ × १२.२ सें० मी०	८९ (१–८९)	११	४६	पू०	प्राचीन	इति मत्पद वाक्य प्रमाण पारावर पारीण भट्टोजी दिक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुदो व्याख्यां प्रौढ़ मनोरमा समाख्यां कृतंत समाप्तम् ।। श्री शुभं भूयात् ।। शुभं भवतु ।। श्रीरस्तु ।।
२७.५ × ११.४ सें० मी०	८ (१–८)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं०१९३९	इति श्री भट्टोजिदीक्षित विरचितायां पाणिनीय लिङ्गानुशासन सूत्रवृत्तिः समाप्ता ।। सम्वत् १९३९ ।।···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०९	३९८६	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
४१०	२३	सिद्धांतचंद्रिका उत्तरार्द्ध	श्री रामाश्रम		दे० का०	दे०
४११	६४०	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामभद्राश्रम		दे० का०	दे०
४१२	२४५८	सिद्धांतचंद्रिका (कृदंत प्रकरण)	रामचंद्राश्रम (रामाश्रमाचार्य)		दे० का०	दे०
४१३	५१२२	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४१४	२२	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४१५	३९५६	सिद्धांतचंद्रिका	,,		दे० का०	दे०
४१६	३९४२	सिद्धांतचंद्रिका (आख्यात प्रक्रिया)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·२ × १२·८ सें० मी०	१०९ (१-३८,३९-११५)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
३४ × १३·५ सें० मी०	६१ (१-४,६-६७, ७-३१)	१५	३०	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १५ सें० मी०	५३ (१-४७-५२-५७)	१२	३४	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इतिश्री श्री रामभद्राश्रम विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां उत्तरार्द्धः समाप्तः··· लिखितां सिद्धांता चंद्रिका संवत् १८६५।
२५·४ × १४·६ सें० मी०	२१ (१-३,५-२२)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति रामचंद्राश्रम विरचितायां सिद्धांत-चंद्रिका कृदंत प्रकरणं समाप्तम् ॥
३२·३ × १२·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
३५ × १३·५ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १९२४	इति श्रीरामाश्रम विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां पूर्वार्द्धः ॥ संवत् १९२४
२५.४ × १०·३ सें० मी०	२९ (१–२९)	११	५०	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·९ सें० मी०	५१ (१–५१)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १८२५	इतिख्यातप्रक्रिया समाप्तं ॥ संवत् १८२५ ॥ ज्येष्ट मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदायां भूमिवासरे श्री गणेशायनमः···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१७	३९४०	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४१८	३३२३	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	,,		दे० का०	दे०
४१९	११८७	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४२०	११७८	सिद्धांतचंद्रिका	,,		दे० का०	दे०
४२१	११६९	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे०का०	दे०
४२२	१०५३	सिद्धांतचंद्रिका (तत्वदीपिका व्याख्या)	लोकेशकर		दे० का०	दे०
४२३	११२१	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४२४	३५५३	सिद्धांतचंद्रिका	श्रीरामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·२ × ९ सें० मी०	३०	८	४५	अपू०	प्राचीन	
३३·२ × १२·६ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × १२·७ सें० मी०	७ (१-२,५-९)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२८·४ × १२·२ सें० मी०	५८ (१–५८)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाभद्राश्रम विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां उत्तरार्द्धः समाप्ताः ॥
३१·५ × १२·५ सें० मी०	५७ (१९–४७, ५३–८१)	११	४१	अपू०	प्राचीन सं०१८९९	इति श्री लोकेशकर विरचित्तायां सिद्धांत-चंद्रिका व्याख्यायां तत्वदीपिकायां पूर्वार्द्धम् आषाडमामासे कृष्णपक्षे दशम्यायां रविदिने सिद्धांत चंद्रिकाव्याख्या पूर्णांतामगमत् संवत् १८९९ शाकेशालवाहन १७६४ लिखितं भयारोविद्यार्थि पठनार्थं मिश्रकेवलरामपंडित शुभं भूयात् ॥··· ··· ···
२७·१ × १४·१ सें० मी०	२२ (१·३,६-२३)	१२	३०	अपू०	प्राचीन	
२२ × ११·४ सें० मी० (सं०सू०३-४३)	५४ (१-३,५-८, ११,३५-८०)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२५	४२३०	सिद्धांतचंद्रिका (तद्धितप्रकरण, सटीक)	रामाश्रमाचार्य	माधवाचार्य	दे० का०	दे०
४२६	४२३९	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४२७	३५१२	सिद्धांतचंद्रिका	रामाभद्राश्रम		दे० का०	दे०
४२८	३४५५	सिद्धांतचंद्रिका (सटीक)			दे० का०	दे०
४२९	४४६३	सिद्धांतचंद्रिका (तद्धित प्रक्रिया)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३०	२७६६	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३१	२६८८	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
४३२	१७२८	सिद्धांतचंद्रिका (स्वरप्रकरण)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·६ × ९·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३९	पू०	प्राचीन सं०१९२६	इति श्री माधवाचार्य विरचितायां सिद्धान्त चन्द्रिकायां इदानीं रामाश्रम कृतौ पूर्वार्द्धम्समाप्तम् शुभमस्तु··· ··· सम्वत् १९२६ के
३३·९ × १४·५ सें० मी०	४५ (१–४५)	८	३०	पू०	प्राचीन सं०१९४४	इति श्रीरामाश्रम विरचितायां सिद्धान्त चन्द्रिकायामुत्तरार्द्धं समाम्। संवत् १९४४ माघमासे कृष्णपक्षे एकादश्यां चन्द्रवासरे लिखितं··· ··· ···
२९ × ११ ५ सें० मी०	७१ (६ से २०८ तक स्फुटपत्र)	१०	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८८९	इति श्रीरामभद्राश्रम विरचितं सिद्धान्त चन्द्रिका समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णायनमः सं० १८८८ चैत्रमासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ पतिपदायां रविवासरे ॥
२४·४ × ११·८ सें० मी०	१७४	८	३४	अपू०	प्राचीन	
२९ ३ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमविरवितायां सिद्धान्त चंद्रिकायां तद्धित समाप्तं ॥··· ···
२२·५ × ११ सें० मी०	४ (८२–८५)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमाचार्य विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां आख्यातप्रक्रिया संपूर्णा समाप्ता ॥
३० × १४·३ सें० मी०	३१	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ७·७ सें० मी०	२० (१–२०)	७	४०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३३	४१३६	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३४	१७६४	सिद्धांतचंद्रिका पूर्वार्द्ध, समास विधिपर्यंत)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३५	१८६४	सिद्धांतचंद्रिका उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३६	४२०८	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध) (आख्यात प्रक्रिया)			दे० का०	दे०
४३७	४२०३	सिद्धांतचंद्रिका(उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
४३८	४१८५	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४३९	१३६३	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४४०	४०३	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८×१८·३ सें० मी०	४७ (१–४७)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमाचार्य्य विरचितायां सिद्धांत चन्द्रिकायामुत्तरार्द्ध सम्पूर्णम् ॥
२३·८×८·४ सें० मी०	४७ (१–४७)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति समासाश्रय विधयः ॥
२५·५×१०·७ सें० मी०	१५ (२–१६)	७	३३	अपू०	प्राचीन	
३३·२×१२·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	३९	पू०	प्राचीन	इत्याख्यात प्रक्रिया समाप्ता ॥…… … … …
३१·३×१३·८ सें० मी०	१५ (१-११,१५-१८)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२७·२×११·४ सें० मी०	४१ (३७–७७)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·५×१०·५ सें० मी०	३	६	२५	अपू०	प्राचीन	
३०·५×१६ सें० मी०	६५	९	३२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	२२०	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		० का०	दे०
४४२	१६८	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४४३	५१६	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४४४	१५३	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४४५	१५६	सिद्धांतचंद्रिका (सारस्वत)			दे० का०	दे०
४४६	५२	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४४७	४८	सिद्धांतचंद्रिका	रामचंद्राश्रम		दे० का०	दे०
४४८	४९	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·५ × १२·९ सें० मी०	७६ (१–७६)	६	३७	पू०	प्राचीन	
३४ × १२·७ सें० मी०	५७ (१५-५२, ५९-७७)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·४ सें० मी०	२९ (४से४५ तक स्फुट पत्र)	८	३०	अपू० (कृमिकृतित)	प्राचीन	
३३ × १२·७ सें० मी०	४२ (२–४३)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १४·२ सें० मी०	८ (९,११-१५)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १४·५ सें० मी०	४८	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
३२·५ × १६ सें० मी०	३४ (१-६,९-१२, १६-३९)	१५	३९	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १८५८	इति श्रीरामचंद्राश्र विरचिता सिद्धान्त चंद्रिका समाप्ता। अवलाद्यो हयग्रीव कमलाकर इश्वर ।। सुरासुरनराकार मधुपापीत पत्कजः ।।१।। अथ सुभसंवत्सरेऽस्मिन श्रीनृपवत विक्रमादित्य राज्ये संवत् १८५८ कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे शुभ तिथौ सप्तम्या ७ बुधवार पुस्तकस्य लिखितं दुनिचंद आप्तपठनार्थ शुभंमस्तु ।
३२ × १२·८ सें० मी०	२८ (१-२२,२४	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९०५	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४९	४६	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्ध)	रामचन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
४५०	४३	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५१	५५४६	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५२	५५४९	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य (रामाभद्राश्रम)		दे० का०	दे०
४५३	३७६३	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५४	३६९३	सिद्धांतचंद्रिका (सटीक)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५५	३९०७	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्धसटीक)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५६	३५०	सिद्धांतचंद्रिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३६·९×१३ सें० मी०	७७ (१से११६तक स्फुट पत्र	८	२८	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	
३१·५×१३·८ सें० मी०	७० (६–७५)	११	३७	अपू०	प्राचीन सं०१९३३	सं० १९३३ वैशाख कृ मासे कृष्णपक्षे शुभ तिथौ प्रतिपदायां रविवासरे लिपि कृतं गुरवे नम: सरस्वत्यैनम: शिवाय-नम: लक्ष्मणायनम:
२४·६×११·५ सें० मी०	५९ (१-३३,३५-३६,४०-६३)	११	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमविरचितायां सिद्धान्त चंद्रिकायां पुर्वार्द्धः समाप्तः राम सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम: ॥
२५×१०·८ सें० मी०	५२ (१–५२)	११	३५	पू०	प्राचीन सं०१८२४	इति श्री रामाभद्राश्रमविरचितायां सिद्धांत चन्द्रिका पूर्वार्द्ध समाप्तः ॥ × × × संवत् १८२४ श्री विश्वेर गंगादिव्यैनमः × × × × ॥
२१·७×१२ सें० मी०	३२	१०	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री रामाश्रमाचार्य विरचिता सिद्धान्तचंद्रिका समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८८१ शाके १७४६ मुकामछत्रपुर ज्येष्टशुक्ल १३ वुधवासरे तद्दिनेडाल-चंदनाम शुक्ल ब्राह्मणेन लिष्यते ॥
३३·५×१८ सें० मी०	८७ (१–८७)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं०१९३८	इति श्री सिद्धांत चंद्रिका व्याख्या सुबो-धनी समाख्यातासदानंदीया समाप्ता ॥ ··· ॐ नमोभगवते वासुदेवाय श्रीसंवत् १९३८ मासोत्तमे मासे आश्विन शुक्ल १ प्रतिपदायां शनिवासरान्वितायां ··
२५·५×११·८ सें मी०	३५ (१-७,७-८, १३-३८)	१४	४८	अपू०	प्राचीन सं०१९१२	इति श्री रामाश्रमाचार्य्य विरचितायां सिद्धान्त चंद्रिकायां उद्धरार्द्धस्समाप्तः शुभंभूयात् ॥ श्री त्रिपाठीनागौरी शङ्करेण लिखितमस्ति स्वकार्य्यम मीती चैत्र सुदि ६ का सम्वत् १९१२ सालमा श्री सूर्य्यनारायणानमः राम०
२६·२×११ सें० मी०	१५ (२०,२२-३५)	६	३०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५७	५६८१	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४५८	३२२	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४५९	५४७०	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४६०	५४९९	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४६१	७०५	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४६२	७०७	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्ध)	रामभद्राश्रमाचार्य		मि० का०	दे०
४६३	४६५३	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४६४	१०१८	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·७ × ११ सें० मी०	६९ (१–६९)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·८ सें० मी०	१९ (१–१९)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२७·९ × १४·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × १२ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १३·५ सें० मी०	६२	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १३·७ सें० मी०	५४	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री रामभद्राश्रमाचार्य विरचितायां सिद्धांतचंद्रिकायां पूर्वार्द्धं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
३४·८ × १३ सें० मी०	१३ (१–१३)	४	३८	अपू०	प्राचीन	
३५ × १३·१ सें० मी०	५१ (१–५१)	८	४०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४६०३	सिद्धांतचंद्रिका (तद्धितप्रक्रिया)	(रामभद्राश्रम) रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४६६	६१८१	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४६७	६१६९	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामचंद्राश्रम		दे० का०	दे०
४६८	२९२९	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४६९	५३१२	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४७०	५०८७	सिद्धांतचंद्रिका			मि० का०	दे०
४७१	५१८९	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४७२	६५२१	सिद्धांतचंद्रिका (तद्धितप्रक्रिया)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३१·६ × ११·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	३९	पू०	प्राचीन	इति रामभद्राश्रम विरचितायां तद्धित प्रक्रिया समाप्तामासोतममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे तृतीयाम् ।
२६·६ × ११ सें० मी०	५१	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	५९ (१–५९)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं० १९०६ (?)	इति श्री रामचंद्राश्रम विरचितायां सिद्धांतचंद्रिकायां पूर्वार्द्धः समाप्तः शुभं भूयात् मंगलंददातु ॥······
२६·७ × ११·३ सें० मी०	१० (२-७, ७-९, ७७)	७	३६	अपू०	प्राचीन	
३१·५ × १५·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	१५	६२	अपू०	प्राचीन	
२८ × १०·९ सें० मी०	६८ (१–६८)	५	२५	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × १०·४ सें० मी०	२४ (१–२३) (पत्र ७ दो)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२६·९ × ११·४ सें० मी०	६९ (१-२६, २६-६८)	७	३५	पू०	प्राचीन सं० १९३९	इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता सं० १९३९ फा० कृष्ण १४ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७३	७६२८	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४७४	६२७८	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४७५	७०९४	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	दे०
४७६	७७१९	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
४७७	७६०५	सिद्धांतचंद्रिका			दे० का०	,,
४७८	७०९६	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४७९	७१६८	सिद्धांतचंद्रिका (सुबंत)			दे० का०	दे०
४८०	७६५९	सिद्धान्तचंद्रिका (उत्तरार्द्ध) (आख्यात प्रक्रिया)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	,,

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·४ × ११·६ सें० मी०	७३ (१–७३)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमाचार्य्य विरचितायां सिद्धान्त चन्द्रिकायां पूर्वार्द्ध समाप्ता।
२४·६ × ११·२ सें० मी०	६० (१–६०)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रम विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां पूर्वार्द्धः समाप्तः ॥
२५ × ८·४ सें० मी०	१३ (१-८, १०-१४)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·४ सें० मी०	१३ (२६, २८-३९)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × ११·१ सें० मी०	६	९	४६	अपू०	प्राचीन	
२८·६ × ११.२ सें० मी०	४४ (१–४४)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमाचार्य विरचितायां सिद्धान्त चन्द्रिकायां मुत्तरार्द्ध समाप्तः ॥ × × × ×
२६·८ × ११·४ सें० मी०	७३ (१–७३)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२७·२ × १०.७ सें० मी०	९४ (१–९४)	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्री रामाश्रमाचार्य विरचितायां सिद्धान्त चन्द्रिकायांमुत्तरार्द्धे आख्यात प्रक्रिया समाप्ता सम्वत् १८८८ लिखित मिदं पुस्तकं सीतारामाख्येण विदुषा ॥ श्री रामायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८१	७६१८	सिद्धांतचंद्रिका (उत्तरार्द्ध)	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४८२	७५७५	सिद्धांतचंद्रिका (कृदंत)	रामभद्राश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
४८३	७२७९	सिद्धांतचंद्रिका (पूर्वार्द्ध) (तद्धितप्रकरण)			दे० का०	दे०
४८४	५०८३	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०
४८५	३९३४	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०
४८६	२५९०	सूत्रपाठ	सरस्वती		दे० का०	दे०
४८७	५५६१	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०
४८८	७०४	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.९ × १५.८ सें० मी०	१९०	७	२२	अपू०	प्राचीन	
३३ × १२.६ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	३४	पू०	प्राचीन सं० १९३०	इति श्री रामभद्राश्रमाचार्य्य विरचितायां सिद्धांत चंद्रिकायां कृदंत प्रक्रिया समाप्ता ॥ संवत १९३० शाके शालिवाहनीये १७९५ ··· ··· ···
३०.२ × १०.९ सें० मी०	४१ (१–४१)	९	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति तद्धित प्रक्रिया संपूर्ण ॥ समाप्तम्॥ लेखक पाठकयोः संवत् १८८० चैत्रवदी ५ शुक्रे तादिन संपूर्णमिदं पुस्तकम् ×
३३ × १५.९ सें० मी०	३ (२–४)	१३	४३	अपू०	प्राचीन सं० १८९३	इति श्री कृत प्रकरणम् ॥ संवत् १८९३ इदं रामयशेन लिपीकृतं ॥
२२.३ × ११.१ सें० मी०	८ (२-७, ९-१०)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति वृत्सूत्र पाठः समाप्तः ॥ लिखितं पुस्तकं लक्ष्मी नाथेन ॥
२३.४ × ११.१ सें० मी०	७ (१–७)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इति सरस्वतीकृत सूत्रपाठ विरचितायां समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८७७ ॥
२९.२ × १०.४ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	
२७ × ९.३ सें० मी० (सं० सू० ३-४५)	६	८	३४	पू०	प्राचीन	इति सूत्र पाठः समाप्तम् ।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८९	५६३५	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०
४९०	६९९७	सूत्रपाठ			दे० का०	दे०
४९१	४८६६	सूत्रप्रकाश			दे० का०	दे०
४९२	७४९६	सूत्रानुसारिणी परिभाषाविवरण			दे० का०	दे०
४९३	६३२२	स्फुटव्याकरणसंग्रह			दे० का०	दे०
४९४	५८२३	स्फुटव्याकरणसंग्रह			दे० का०	दे०
×	×	×	×	×	×	×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·६ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	११	३१	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·६ सें० मी०	८ (१–८)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति कृत सूत्रपादः ॥
२७·८ × ११·६ सें० मी०	२० (१–२०)	१३	५३	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ९·५ सें० मी०	३ (१-२,६)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
२८·२ × १२·१ सें० मी०	५	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १२·३ सें० मी०	३ (४१–४३)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
×	×	×	×	×	×	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
व्रतकथा १	७४५३/२	अनंतचतुर्दशी व्रतकथा			दे० का०	दे०
२	५८४५	अनंतचतुर्दशी व्रतकथा			दे० का०	दे०
३	३७२	अनंतचतुर्दशी व्रतकथा			दे० का०	दे०
४	४०४	अनंतचतुर्दशी व्रतकथा			दे० का०	दे०
५	६०	अनंतचतुर्दशी व्रतकथा			दे० का०	दे०
६	७१८१	अनंतव्रत			दे० का०	दे०
७	१७३७	अनंतव्रत			दे० का०	दे०
८	१३५१	अनंतव्रत			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × १४·७ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१२	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्टिर संवाद अनंत चतुर्दशी व्रतकथ समाप्तः ॥ संवत् १८८५ शाके १७५० मितीभाद्रपद कृष्णा २ बुधवासरे लिषतम् गोबिंद मिश्र × × × ॥
३४·२ × १३·४ सें० मी०	५ (१–५)	६	५०	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × १२·६ सें० मी०	७ (१–७)	११	१६	पू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन सं० १८३३	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंत व्रत चतुदर्शीव्रत कथा समाप्त। सं० १८३३ अश्वन्वदि २ मंगलबार का दिन शुभंमस्तु।
२६·५ × १४·५ सें० मी०	६	१०	३२	पू०	प्राचीन सं० १९४०	इति श्री मनभिविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे श्री अनंतव्रत कथापूजा समाप्ताः ... ...सं० १९४०?
२७ × १५ सें० मी०	१७ (२–१८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्ण युधिष्ट संवादे अनंत चतुदर्स ग्रंथव्रतकथा संपूर्णम् १ ॥
२१ × ६·६ सें० मी०	१२ (१–११,१६)	७	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८६२	इति अनंत व्रत समाप्तः ॥ संवत् १८॥ ६२ ॥ शके ॥ १७ २७ ॥
१६ × १०·७ सें० मी०	११ (२,५,७-१३)	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·५ सें० मी०	१०	७	२०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रम और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	७६६४	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०	५६०५	अनंतव्रतकथा			दे० का०	
११	२०५१	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२	२१५१	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३	२१७३	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४	४२९६	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५	७०२१	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
१६	४९५६	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १०·६ सें० मी०	११ (१–११)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भविषयोत्तर पुराणे अनंतव्रतकथा समाप्तम् ॥
२२·८ × १०·८ सें० मी०	११ (१–११)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति अनंतव्रतकथा समाप्तः·········
१५·३ × ८·७ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	१८	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति श्री भविष्योत्तरे पुरांने श्रीकृष्ण जुद्धि हर संवादे अनंतवृतकथा समाप्ति। संवत् १६०।२। साके। १७।६७॥ सुभं रामचंद्राय: नम: ॥
१८·६ × ७·४ सें० मी०	८ (१–८)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १४·६ सें० मी०	६	१६	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री भविष्यो···अनंतव्रतकथा समाप्ता ॥ संवत् १८६८ मा० शु०
२१·४ × ११·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × ६·७ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योतर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे अनंतव्रतकथा संपूर्ण ॥
२५·५ × १३·४ सें० मी०	५ (१–५)	११	३२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	६३४५	अनंतव्रत कथा			दे० का०	दे०
१८	५३४९	अनन्तव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९	५३५०	अनन्तव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०	४६३८	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१	४७०६	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२	४८५४	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३	४८४१	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४	८२९	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × ९·८ सें० मी०	६ (४-८,१०)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
३४ × १२·६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४१	पूर्ण	प्राचीन सं०१९११	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंतव्रत कथा समाप्तम् शंवत १९११ पौष मासे शुक्लपक्षे प्रति पदायां बुद्धवासरे × × ×
२१·६ × १२·२ सें० मी०	१० (१,३–११)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं०१९२९	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंतव्रत कथा समाप्ता ।। सम्वत १९२९ तत्रवर्षे महामंगल मासे आश्विनमासे शुक्लपक्षे शुभतिथौ द्वादश्यां + + + ।।
१४·७ × १४ सें० मी०	६ (५,७-१०, १३)	९	१३	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १०·१ सें० मी०	३ (३–५)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·१ सें० मी०	९ (१-२,७-१३)	९	३४	अपू०	प्राचीन सं०१८७४	इतिश्रीभविष्योत्तरपुराणे अनंतव्रत कथा संपूर्णम् ।। संवत् १८७४ मिति भाद्रपद शुदि ९ भृगुवार लिखितं मानमंदिरमध्ये सोमेश्वर समीपे शुभंभूयात् शुभमस्तु ।।
१९·३ × ९·६ सें० मी०	१४ (१-१४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं०१९०५	इति श्री पद्मपुराणे अनंतव्रत कथा संपूर्ण ।। संवत् १९०५ श्रावण मासे शुक्लपक्षे पंचम्यायां रविवारान्यतायां ।।
२३·३ × ९·८ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति भविष्योत्तर पुराणे सोद्योपनमनंतव्रतं समाप्तं ।। श्री अनंतार्पणमस्तु··· ···संवत् १८८२ शाके १७४७ ।। दुर्मुखनामसंवत्सरे । आशाऽशुद्ध···तदिने [illegible]प्तिमगमत् ।।

(सं०सू० ३-४६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	७८७	अनन्तव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६	७४५	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२७	२४४८	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२८	२४८३	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
२९	३९८२	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३०	३२०२	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३१	१२२०	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३२	१६७०	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ११·५ सें० मी०	५ (६–१०)	७	३०	अपू०	प्राचीन सं०१९४९	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंतव्रत कथा समाप्तम् ॥ सवत् १९४९ शाके १८१४ आषाढ़ मासे कृष्णे पक्षे ८ शनिवासरे ॥ शिवायनमः शिव शिव···
२५ × १०·५ सें० मी०	१४	५	२८	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणें अनंतव्रत-कथा समाप्तं ॥१॥ सवत् १९०२ लिषतं रत्नलालेन अनंतस्य कथाभवेत शाद शूक्ला शशिवारं दशम्याश्च तिथि भवेत् श्री गणेशायनमः ।
२०·७ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री भवष्योत्तर पुराणे अर्जुनकृष्ण संवादे अनंत व्रतकथा संपूर्ण ॥ शुभ भवेत् ॥
१८·७ × ९·९ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२९	पू०	प्राचीन सं०१९७३	श्री स्कंधपुराणे श्री कृष्णयुधिष्ठिर संवादे अनंतव्रत-कथा समाप्तम् ॥ १९७३ ॥
२९·२ × १०·५ सें० मी०	३	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंतव्रत-कथा संपूर्ण समाप्तं ॥
२८ × ९·९ सें० मी०	६ (१–६)	८	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंतव्रत-कथा समाप्ता ॥ रामजी ॥
२१·१ × ९·७ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२४	पू०	प्राचीन सं०१८८०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्ण युधिष्ठिर अनंतव्रत कथा समाप्तं संवत् १८८०······लिखितं विहारीलालेन ॥
१५·७ × १२·५ सें० मी०	९	११	१७	अपू०	प्राचीन सं०१८२०	इति श्री भविष्यति पुराणे अनंतव्रत-कथा समाप्त संवत १८२० ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	३४७६	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३४	४१७२/२	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३५	२८०१/८	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३६	२८४७	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३७	६७७३	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३८	१८४०	अनंतव्रतकथा			दे० का०	दे०
३९	३६१२	अन्नपूर्णाव्रतकथा			दे० का०	दे०
४०	६४३	अमावस्या (सोमवती) कथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.९ × १०.३ सें० मी०	११ (१–११)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कृष्णयुधिष्ठिर संवादे अनंतचतुर्दशी व्रतकथा समाप्ता ॥ ······ ॥
१८.८ × १३.८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	शृणु पांडव प्रयत्नेन अनंत व्रतमुत्तमं ··· ··· ··· (पृ० स० १)
१७.५ × १३.५ सें० मी०	५	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नृसिंह पुराणे अनंत व्रतकथा समाप्ता ॥
२४.५ × १५ सें० मी०	७	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भ० अनंत व्रत कथा समाप्ता ॥
२३.३ × ११.९ सें० मी०	७ (१–७)	९	३४	पू०	प्राचीन सं० १८२९	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अनंत व्रतकथा समाप्तम् । शुभमस्तु संवत् १८२९ शाके १६९४ ॥
१४.६ × ८ सें० मी०	११ (२–१२)	८	२१	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अनंत कथा समाप्तः संवत् १८२८ शाके शोल १६९० वर्षे लीष···· ॥
२८.३ × १३ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३७	पू०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्री भविष्योत्तर पुराने श्री कृष्णाऽर्जुन संवादे अन्नपूर्णावृत्त कथा समाप्ता शुभमस्तु संवत्त १८४२ शाके १७०७ पौष कृष्ण १ शुक्रे कलितं श्री त्रिपाठी जुडावण राम····
१७.२ × ९ सें० मी०	६ (१-४,७-८)	७	१९	अपू०	प्राचीन सं० १९४२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे सोमा अमाउस कथा समाप्तः मिति भादौ सुदि ९ गुरौ संवतु १९४२ मुकांवर गापुर लिखितं विप्रपं श्री तिवारी माधो दास जू ॥ श्री राधा कृष्ण जू =

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	२८६१	अरुंधतीव्रतकथा			का०	दे०
४२	३६१	आदित्यवारव्रत			दे० का०	दे०
४३	३९९३	आदित्यव्रतकथा			दे० का०	दे०
४४	९५४	उपांगललिताव्रतकथा			दे० का०	दे०
४५	१७२५	ऋषिपंचमीकथा			दे० का०	दे०
४६	३३२	ऋषिपंचमीव्रत (सोद्यापन)			दे० का०	दे०
४७	७५८६	ऋषिपंचमीव्रत			दे० का०	दे०
४८	७५५४	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८×१५ सें० मी०	४	१३	३९	पू०	प्राचीन	इति हेमाद्रौ स्कंदे अनुंधती व्रतकथा समाप्ता ॥
१९·६×१२·१ सें० मी०	५ (१–५)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति सूर्य पुराणे मारिचिब्रह्मसंवादे-आदित्य वार व्रतं संपूर्णं ॥ आदित्या-र्पणमस्तु ॥ श्रीराम···
३१·८×१२·२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराने कशपनारदसंवादे दसादित्य व्रतकथा संपुरनं श्रीरामयनमः
२१×९ सें० मी०	९	१३	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे उपांग ललित व्रतकथा समाप्ताः ॥ इपे मासि सिते पक्ष पंचमी भौमवासरे ॥ श्री भवान्यै-नमः ॥ वोगी रामोलिखत्काश्यां स्वाथि कंच पराथकं ॥
२१×१२·२ सें० मी०	४ (३–६)	९	१९	अपू०	प्राचीन सं०१८६३	इति श्री पद्मपुराने ऋष पंचमी कथा संपुर्ण समाप्ता संवतु। १८६३ पौषसुदि सनौ संवतु लिपतं पं० श्री फेरुदुकीपाल-ध्य स्लोक। ६० ॥ श्रीरामराधा क्रुस्न।
३५·१×१३·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं०१९४३	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे ऋषिपंचमी व्रतोद्यापन विधि विधि समाप्तिमगात् शुभमस्तु संवत् १९४३ आश्विन कृष्ण चतुर्थी शुक्रवासरे लिषतं भिषम सैन शुभम् ॥
२१·७×७·९ सें० मी०	९ (१–९)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे ऋषी पंचमी व्रत समाप्त × × ×
३३·६×१५·१ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४०	पू०	प्राचीन सं०१८४५	इति भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णयुधि-ष्ठिर संवादे ऋषिपंचमी व्रत कथासमाप्तं संवत् १८४५ × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	७३३५	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५०	७७१४	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५१	५८५२	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५२	५७०२	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५३	२३४०	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५४	५२०२	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५५	८०१	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५६	३७८८	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × ११ सें० मी०	७	१०	१८	अपू०	प्राचीन सं० १९४३	ऋषि पंचमी × × × × ×
२९ × १०·५ सें० मी०	६	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्टिर संवादे ऋषिपंचमी व्रतकथा समाप्ता ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ ×
२१·७ × ९·१ सें० मी०	३ (१–३)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति ऋषिपंचमी व्रतकथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ × × × × ×
२५·७ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	११	३०	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे युधिष्ठिर कृष्ण संवादे ऋषिपंचमी व्रतकथा समाप्ता शुभस्तु ॥ सम्वत् १९१६ मिती वैशाख कृष्ण पक्ष ३० × × × × ॥
२१·५ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री पद्मपुरानेरिषि पंचमीकथा शंपूर्न समाप्तं ॥ सुभमस्तु ॥ मंगलं-ददातु ॥ शंवतु १९०२ शाके १७६७
१५·५ × ११ सें० मी०	७	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति ते कथितं राजन व्रतानां व्रतमुत्तमं सर्वकामप्रद चैव नारीणां पाप नाशनम् शृणु राजन प्रयत्नेन विधानं ऋषि पूजनं जलपूर्ण शुचि कुंभं वेणुपात्रेण संयुतं तस्योपरि ऋषीन् स्थाप्य··· ··· (प्रथम पत्र)
२६·२ × ११·१ सें० मी०	६ (१–६)	८	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे कृष्ण युधिष्ठर संवादे ऋषि पंचमी व्रतकथोद्यापन समाप्तं ॥ संवत् १८८२··· ···पुस्तकं लिपिकृतं कृष्ण सहाये महर नंदस्य पठनार्थं शुभं भूयात् ॥
२३·७ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे ऋषिपंचमी कथासमाप्ता शुभमस्तु विष्णोः प्रसादात् ॐ नमोभगवते वासुदेवाय ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२५८६	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५८	४०८१	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
५९	२८४५	ऋषिपंचमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
६०	५४६६	ऋषिपंचमीव्रतकथा (उद्यापनसहित)			दे० का०	दे०
६१	४४६०	एकादशीकथा			दे० का०	दे०
६२	६८३	एकादशीकथा			दे० का०	दे०
६३	५५०५	एकादशीमाहात्म्यकथा			दे० का०	दे०
६४	१३५५	एकादशीव्रत			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × १० सें० मी०	८	८	२५	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिस्टर सवादे ऋषिपंचमी व्रतकथा समाप्ता ॥
३४·७ × १३·२ सें० मी०	५ (१–५)	९	३७	पू०	प्राचीन सं० १९२९	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे युधिष्ठिर कृष्ण संवादे ऋषिपंचमी व्रतकथा समाप्तम् ॥ अन्ते मासिऽसित्ते पक्षे पंचम्यां रविवासरे ॥ अलेषि पुस्तकं सम्यक साम लालस्य हेतवे ॥ सवत् १९२९ ॥
२५ × १०·५ सें० मी०	४	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे ऋषी पंचमी व्रतकथा समाप्तं ॥ भाद्रे मासे शुक्ल पंचम्यां भौम वासरे ॥
२४·६ × १०·६ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८९९	इति ऋषिपचमी व्रतकथा संपूर्ण × × (पृ० १२) सं० १८९९ आ० कृ० ३ गु०
२० × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माडपुराणे पौष शुक्लपक्षे पुत्रदैकादशी कथासमाप्ता ॥ शुभमस्तु
३१ × १२ सें० मी०	८२	८	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्ण युधिष्ठिर संवादे पुरुषोतम शुक्ल पक्षस्या सुभद्रा नामका एकादशी महात्म्य सपूर्ण २·········श्री गंगार्पण मस्तु ॥ तत्सत् ॥
१५·५ × ८·२ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२८	पू०	प्राचीन सं० १८३८	इति श्री मत्स्यपुराणे एकादशी महात्म्य कथा समाप्त सुभमस्तु ॥···सम्वत् १८३८ जेष्ट मासे शुक्ल पक्षे पञ्चम्या ······ ········
१८·५ × १२	७	८	२२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	१२६५	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
६६	२६७७	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
६७	२५००	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
६८	२६३	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
६९	३७७१	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	
७०	३८३४	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
७१	५१२५	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
७२	५६०९	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × ११·५ सें० मी०	७ (१८-१९, ५२-५६)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२६·४ × १४·५ सें० मी०	५४ (१–५४)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्तिक शुक्ला देवोत्थायनी एकादशी समाप्तम् संवत् १८८७ ज्येष्ट मासे कृष्णेपक्षे शुभंतिथौ ।।
२३·२ × ९·५ सें० मी०	८ (१–८)	९	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री नारदीय पुराणे रुक्मांगद चरित्रे एकादशी व्रतकथा समाप्ता ।।
३२·७ × १२·८ सें० मी०	२३ (९-१३, २०-३७)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्तिक शुद्धयेकादशि सप्त ।। शुभं भवतु ।।
३१ × १०·२ सें० मी०	८ (१–८)	९	३६	पू०	प्राचीन सं० १९००	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे एकादशी व्रतकथा समाप्ता शुमस्तु श्रियैनमः ।। रामचन्द्रायनमः ।। सम्वत् १९००।। पौष मांसे शुक्लपक्षे पंचम्यां ।। चंद्रवासरे ।। राम राम··· ···
२७·५ × १३·१ सें० मी०	३	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे वैशाखी कृष्णा वरूथिनी नामैकादशी कथा संपूर्ण (पत्रसंख्या १)
२४·५ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	९	३९	अपू०	प्राचीन सं० १७३३	इति श्री वृहन्नारदीये पुराणे एकादशी व्रत कथनं नाम एक विशोध्यायः ।। शुभमस्तुः संवत् १७३३·········

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	५५१८	एकादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
७४	७६४०	एकादशीव्रतोद्यापन			दे० का०	दे०
७५	२८०८	कजलीव्रतकथा			दे० का०	दे०
७६	३४७७	कपर्दीव्रत			दे० का०	दे०
७७	५८५६	कपिलाष्टमी			दे० का०	दे०
७८	५४५४	कमलाएकादशीकथा			मि० का०	दे०
७९	५११	कुशपलाशव्रतकथा			दे० का०	दे०
८०	१९४४	कुशपलाशव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६·५ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे एकादश्युत्पत्तिकथनेनुरुदैत्याख्यान संपूर्ण कथा समाप्ता ।। शाके ज्यानन्द बाणे तनु रस करये सांगरोवाचलानां ग्रामे मगधे विराज्ञाति च गण सहित लीषीत्तं मदन टोपलायथापठ्येत्त ·······।।
२३·१ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × ११·७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कज्जली व्रतकथा समाप्तं ।। सुभमस्तु ।।
१५·२ × ८·४ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कांदे कपर्दी व्रतं संपूर्ण ।। श्रीकपर्दीविनायकार्पणमस्तु ।।
२१ × १०·५ सें० मी०	४	१५	३६	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ११·१ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीब्रह्मवैवर्त्त पुराणे श्रावणीकृष्ण कमलानामैएकादशी कथा संपूर्ण ।।
२५·७ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कुशपलाशाख्य व्रत कथा समाप्ता: ।। शुभमस्तु श्रावणे मासि सितेपक्षैकादश्यांमंदवासरे ।। लिखितं विश्वनाथेन हलषष्टी व्रतं शुभंम् श्री कृष्णार्पणमस्तु स्वार्थं परोपकारार्थं ।।
२६·३ × ११·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन सं०१६४७	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कुशपलाशाख्य व्रतकथा समाप्त सुभं भूयात मिती भाद्र वदि० २ संवत् १६४७ ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	३५७८	कृष्णचतुर्दशीफलम्			दे० का०	दे०
८२	२३८६	कृष्णजन्माष्टमीकथा			दे० का०	दे०
८३	१४८०	कृष्णजन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
८४	२४९८	कृष्णजन्माष्टमी व्रतकथा			दे० का०	दे०
८५	५७५७	कृष्णजन्माष्टमी व्रतकथा (जन्माष्टमी व्रतोद्यापन)			दे० का०	दे०
८६	७३०१	कोकिलाव्रतकथा			दे० का०	दे०
८७	१९६	कोकिलाव्रतकथा (उद्यापन सहित)			दे० का०	दे०
८८	३२५५	गजगौरीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १३·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति कृष्णचतुर्दशीफलं ।
२३ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे कृष्ण जन्माष्टमी कथा समाप्ता ।।
२२·६ × ११·४ सें० मी०	११ (१–११)	१०	२३	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री विष्णु पुराणे इन्द्रनारद संवादे कृष्णजन्माष्टमी व्रतकथा समाप्ता शुभमस्तु ।। संवत् १८८१··· रामोविजयेतराम ।।
१८·६ × ११ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे इंद्रनरद (नारद) संवादे कृष्ण जन्माष्टमी व्रतकथा समाप्ता ।।
२३·६ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	१२	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री नारदी पुराणे इंद्रनारद संवादे कृष्णजन्माष्टमी व्रत कथा समाप्ता ।। अथ जन्माष्टमी व्रतोद्यापनं लिख्यते ।। × × ×
१५·२ × ६.७ सें० मी०	८ (५–१२)	१२	१६	अपू०	प्राचीन	
२३ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	१३	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री कोकिला व्रतकथा समाप्ता ।। शुभंभवतु ।।
२३ × ८.६ सें० मी०	४ (१–४)	६	४१	पू०	प्राचीन	इतिश्री स्कंदपुराणे गजगौरी व्रतं संपूर्णं ।। लिखितं नीलकंठात्मज विनायकेन स्वार्थं परार्थंच श्री गणेश ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंधकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	११७२	गणेशकथा			दे० का०	दे०
९०	४७०७	गणेशकथा			दे० का०	दे०
९१	४७३९	गणेशचतुर्थी कथा			दे० का०	दे०
९२	४२९७	गणेशचतुर्थीकथा			दे० का०	दे०
९३	३२७४	गणेशचतुर्थीकथा			दे० का०	दे०
९४	६९३	गणेशचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
९५	७२८१	गणेशचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
९६	३९७७	गणेशव्रत			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·४ × ११·५ सें० मी०	२ (१–२)	१२	३८	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कृष्ण युधिष्टिर-संवादे गनेश कथा समाप्तं शुभ मस्तु मंगलं ददातु संवत १८४७ शाके १७१२॥
३३·६ × १३·२ सें० मी०	६ (१–६)	६	४८	पू०	प्राचीन	इति स्कंदेस्य मतकाख्यान गणेश कथा च संपूर्णा ॥
१९·६ × १२·२ सें० मी०	२ (१, ३)	११	२१	अपू०	प्राचीन	
२८·८ × १२ सें० मी०	७ (१–७)	११	४३	पू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन सं०१९१०	इति श्री शिवपुराणे सूतसौनकसंवादे गणपत्योपाख्याने गणेशचतुर्थीकथा ॐ तत्सत् सं० १९१० मार्गशीर्षशुक्ला १३ लिखतं मुरलिधर मिश्र स्वात्मज पठनार्थम् शिवोहं ··· ··· ···
२६·४ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	८	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री मत्स्यपुराणे गणेश चतुर्थी कथा समाप्तमगात् सं० १८६५ माघकृष्ण पक्षेऽष्टमी कुजवासरे ॥
१६·७ × ७·६ सें० मी०	१० (३-६,६,१०, १३,१४, १६,१७)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·६ सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१९००	इति श्री स्कंद पुराणे श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर संवादे गणपति चतुर्थी व्रत संपूर्णं शुभमस्तु भाद्रपद कृष्ण ७ गुरौ सं० १९०० × × ×
२३·३ × ११·६ सें० मी०	२ (१–२)	११	२६	अपू० (खंडित)	प्राचीन	वासरि मनि रवि तमसां रासंन्नासयति विघ्नानां ॥२०.।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	७२१०	गणेशव्रतकथा			दे० का०	दे०
९८	७३९२	गणेशव्रतकथा			दे० का०	दे०
९९	७३८८	गणेशव्रतकथा			दे० का०	दे०
१००	३६२६	गुणगौरीव्रतकथा			दे० का०	
१०१	६२४३	गोपद्मव्रतकथा			दे० का०	
१०२	४३२	चंदनषष्ठी			दे० का०	दे०
१०३	४३०४	चंदनषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०४	४६४९	चंदनषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × १२·८ सें० मी०	२	८	३८	अपू०	प्राचीन	इ श्री मत्स्य पुराणे शव्रतकथा संपूर्ण ॥ संवत् १९१० भाद्रपद कृष्ण पक्ष जन्माष्टमो का लिषा पुस्तक × × × ॥
२५·३ × १०·३ सें० मी०	२१	७	३२	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × १०·५ सें० मी०	१४	६	३०	अपू०	प्राचीन	
११·७ × ६·८ सें० मी०	६	५	११	अपू०	प्राचीन सं० १८६०	इति पद्मपुराने गंधर्वकन्या नंदीस्वर संवादे गुरा गौग्वित कथा समाप्तं ॥ चैत्र शुक्लेः ४ शनिः शः १८६० साः १७२५ श्रीगौरी शंकराय नमः ॥
२०·४ × १०·१ सें० मी०	४ (४–७)	८	२४	अपू०	प्राचीन	सूत ऊवाच ॥ शृणुध्वमृषयः सर्वेव्रतानां मुत्तमं व्रतं ॥ गोपद्म मिति विख्यातं सर्व पाप हरं परं ॥४५॥ सर्वं दुखोपशमनं सर्व संपत्प्रदायकं ॥ ······ ··· (पृ० ६)
२४ × १०·५ सें० मी०	५	८	२७	अपू०	प्राचीन	
३२·४ × १२·३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे चंदनषष्टी समाप्तम् संपूर्ण संवत् १९११ चैत्रमासे कृष्णपक्षे षष्टम्यांशुक्रवासरे लिषितं दत्त रामेण करोदा ग्रामवासिना १ शुभं भूयात् मंगलं ददातु × × × ॥
२५·५ × ११·१ सें० मी०	३ (१–३)	९	२८	पू०	प्राचीन सं० १९२९	इति श्री भविष्योउत्त पुराणे चंदनषष्ठी व्रत कथा समाप्तम् ॥ शुभं भूयात् मंगलं ददाति लिपि कृतं मिश्र गंगा सहाय······ संवत् १९२९ साके साल वाहनस्य १७९४ श्रावण कृष्णपंचमी ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	२०६४	चंदनषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०६	३८००	चंदनषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०७	३२१२	चंदनषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०८	६४८८	चतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१०९	२५९१	चित्रगुप्तकथा			दे० का०	दे०
११०	२५७३	चित्रगुप्तकथा			दे० का०	दे०
१११	७५२	चित्रगुप्तकथा			दे० का०	दे०
११२	१७	जन्माष्टमी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १० सें० मी०	५ (२–६)	७	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे इंद्र नारदांबरीकब्रह्मासंवादे चंदनषष्टी कथा समाप्तम् सं० १८६६ भाद्रपद वदि द्वतिया रविवासरे लिषितं पुस्तग गुरू हर सुषराय के प्रताप सेति ॥ स्वयं पठनार्थं ॥ शुभमस्तु मंगलं ददाति ॥ गुरूभ्योनमः ॥
२५·१ × १३·२ सें० मी०	३ (१–३)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१९००	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे चन्दनषष्ठी व्रतकथा समाप्ता सं० १९००······
२८ × १३·३ सें० मी०	२ (१–२)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × १२·८ सें० मी०	७ (३-८,१०)	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे पौष चतुर्थी व्रत कथा समाप्तं (पृ०–८)
२२ × ९ सें० मी०	८ (३–१०)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × ९ सें० मी०	२	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११ सें० मी०	४	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	२६७५	जन्माष्टमी कथा			दे० का०	दे०
११४	७२८४	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
११५	२१९७	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
११६	७२०२	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
११७	५१९५	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
११८	६३५३	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
११९	४०३०	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२०	३६९४	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९ × १५·३ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३२·२ × १२·५ सें० मी०	११	८	२८	अपू०	प्राचीन सं०१९०६	इति श्री जन्माष्टमी कथा व्रत संपूर्णा श्रीराम···· संवत् १९०६ भाद्रपद मासे······ ···॥
२६ × ९·७ सें० मी०	९ (१-६,८-१०)	८	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री नारदपुराणे इंद्रनारद संवादे जमाष्टन्मी व्रतकथा समाप्तं ॥ ······ ······ संवत् १८९८······॥
२६·२ × ११·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ११·३ सें० मी०	२ (६–७)	११	३३	अपू०	प्राचीन सं०१८४८	इति श्री विष्णुपुराणे जन्माष्टमी व्रत कथा संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत्१८४८ ॥ श्रीराधाकृष्णाप नमोनमः × × ×॥
२५·८ × ११·१ सें मी०	६ (१–६)	१०	३४	पू०	प्राचीन स १८९८	इति श्री भविष्योत्तरे जन्माष्टमी व्रत-कथा समाप्तम् संवत् १८९८ श्री नारायणाय नमः ॥
३०·३ × १८ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४२	पू०	प्राचीन सं०१९१०	इति श्री पुराणे इंद्रनारद संवादे जन्माष्टमी वृतकथा समाप्तिः ॥१॥ सम्वत् १९१० भाद्रकृष्ण ॥

(सं० सू० ३-४९)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	२६६८	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२२	२८१९	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२३	२८९५	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२४	१५८३	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२५	१८३५	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२६	१८६६	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२७	१८९१	जन्माष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१२८	५४५५	जयाएकादशीकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.८ × १२.५ सें० मी०	८ (१-७,९)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्य पुराणे इंद्र नारद संवादे कृष्ण जन्माष्टमी व्रत कथा समाप्तं ॥
२३.६ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री विष्ण पुराणे जन्माष्टमी व्रत-कथा समाप्त शुभमस्तु मंगलंददातु लेष-कानां पाठकानांच मंगलं श्रोताणां पापहा-निस्यात् धनधान्य पुत्र पौत्रकं १ संवत् १८३४ भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे तिथौ १ सनिबासरे तादिन पुस्तक समाप्तं ॥
१९ × १०.५ सें० मी०	९ (१–९)	११	२५	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १२.२ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२५	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इती श्री विष्ण पुराणे जन्माष्टमी व्रत कथा सपूर्णं समाप्तम् .... ॥
२१.७ × ११.६ सें० मी०	७ (१–७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	
२२ × ११.७ सें० मी०	३ (८–१०)	१२	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८५९	इति श्री विष्ण पुराणे जन्माष्टमी व्रत कथा समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ मंगलं ददात् संवत् १८५९ ॥ वर्षे श्रावणशुदि त्रयोदशी बुधवासरे ॥ पुस्तक् लिखितं हरसुषरायसुत आतमारामका ॥....
२९.३ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं० १८५१	इति श्री विष्ण पुराणे जन्माष्टमीकथा समाप्तम् ॥ संवत् १८५१ समये अश्वन मासे कृष्णपक्षे... ... ॥
२२.२ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे माघ शुक्ला जयानामैकादशी कथा संपूर्णा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	७५०३	जानकीनवमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३०	७३९३	तीजव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३१	४६०७	तुलसीविवाहव्रत			दे० का०	दे०
१३२	३६२३	तृतीयव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३३	५१२८	तृतीयाव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३४	३१२७	दशादित्यव्रत			दे० का०	दे०
१३५	३३७३	दशादित्यव्रत			दे० का०	दे०
१३६	२८४४	दशादित्यव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·८ × ११·५ सें० मी०	५ (१–५)	७	३१	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री जानकी नबमी व्रत कथा संपूर्न ···संवतु १९२६ मुकाम परगापुर की गढी महादेव की कुटरिया मध्ये···
२३·२ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १२ सें० मी०	७ (२–८)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	प्रातस्नानवती चास्तु तुलसी बनपालिता कार्तिकस्यसिते पक्षे नमम्यां विष्णुना सहा शौवर्नेनतुलस्यास्य विवाहं कारयेध्धरि कार्तिकेनवृतंसम्यग्करोति विधवयथा तेन व्रत प्रभावेन विधवां न भविष्यसि (पृ० सं० ३-४, पंक्ति सं० ८से)
१५·५ × ९·७ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १८३२	इति श्री शिव पुराने महादेव पार्वतीसंवा-तृतीयाव्रत-कथा समाप्तः शुभमस्तु ॥ संवत् १८३२ के पौष सुदी × ×
१२·९ × ७·६ सें० मी०	९ (१–९)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति दशादित्य व्रत ।
१६ × ८·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे वसिष्ठ नारद संवादे दशादित्यव्रतं समाप्तं ॥
२०·५ × १२·३ सें० मी०	५	११	२१	पू०	प्राचीन सं० १८७४ श० १७३९	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे कस्यप नारद संवादे दशादित्य व्रत कथा संपूर्णं समाप्तां शुभमस्तु मगलं ददातु संवत् १८७४ शाके १७३९ मासे श्रावणेमासे शुभे शुक्लपक्षे तियौ सप्तम्या भौमवारे॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३७	३७१५	दशादित्यव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३८	४६११	दशादित्यव्रतकथा			दे० का०	दे०
१३९	७४४५	दशादित्यव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४०	५६८१	दशाफलव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४१	१२४६	दूर्वाअष्टमीव्रत			दे० का०	दे०
१४२	३५१६	द्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४३	२१५४	नकुलनवमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४४	२८३६	नागपंचमीकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·२ × ५·५ सें० मी०	१४ (१-१३-१५)	६	१६	अपू०	प्राचीन सं० १७९८	इति श्री ब्रह्मांड पुराने कस्यप नारद संवादे दसादित्य व्रतकथा समाप्तं ॥ शुभंभूयात् संवतु १७९८ शाके १६६३ जेष्ट सुदि ६ शनी श्री
१५·५ × ९·७ सें० मी०	१० (२–११)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री ब्रह्मांड पुराने कस्यप नारद संवादे दसादित्य व्रतकथा संपूर्ण समाप्तं॥ संवत् ॥ १८८७ ॥ वैसाष वदि ॥७ × × × × ॥
२१·६ × ९·१ सें० मी०	४ (१–४)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे कश्यपनारद संवादे दशादित्य व्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु ॥
२३·५ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	१२	३८	पू०	प्राचीन	स्कंद पुराणे दशाफल व्रत संपूर्णं ॥
२१·५ × ८·५ सें० मी०	८ (१–८)	१२	३३	पू०	प्राचीन सं० १७४७	सं० १७४७ ज्ये० शु० १ ज्योतिर्विद रघुवत्सेन लिखितं ॥ परोपकारार्थं ॥
२१ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	८	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे नकुल नवमीव्रतकथा समाप्ता शुभमस्तु ॥ संवत् १७३२ समये नाम श्रावण वदि २ चंद्रवासरे लिखितं थानेश्वर त्रिपाठिन ॥ शुभंभूयात् ॥
२०·९ × ८·४ सें० मी०	३ (१–३)	९	३३	पू०	प्राचीन सं० १७३२	
१७ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे नागपंचमी कथा संपूर्ण संवत् १९२३ सक: १७८८ सावन सुदी ......॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	४५८५	नागपंचमीव्रत			दे० का०	दे०
१४६	२९९६	नारायणधर्मकथा			दे० का०	दे०
१४७	२८१८	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१४८	४३९०	पद्मललिताएकादशीकथा			दे० का०	दे०
१४९	५९०४	पापाकुंशाएकादशी-व्रतकथा			दे० का०	दे०
१५०	५४६८	पौर्णमासीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५१	३२७	प्रदोषव्रतकथा	श्रीवदनसिंह देव		दे० का०	दे०
१५२	५७६८	फाल्गुन कृष्ण विजया-एकादशी कथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२·६ × १०·८ सें० मी०	६ (१–६)	९	२५	पू०	प्राचीन सं० १७७१	इति भविष्योत्तरे नागपंचमी व्रत ··· ॥ संवत् १७७१ समये अश्विन वदि ३ बुधे पुस्तक लिषितं ॥
१७ × ·८·५ सें० मी०	७ (१–७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भा० म० प० नारायणवर्म धारणं नामोष्टमोध्यायः ॥
२४ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	९	३३	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति हेमाद्रौनृसिंह चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु मंगलं ददातु संवत् १८६१ शाके १७२६ कातिक वदि ६ वुधे कौ लिषतं पं श्रीनायक शिव लाल आत्मार्थंस्तु ॥ पत्र ६ ॥
२२·२ × ११·४ सें० मी०	३ (१–३)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री वराह पुराणे चैत्री शुक्लापद्म ललिता नामैकादशी कथा संपूर्णा ॥ शुभमस्तु ॥
२१·८ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे अश्विन शुक्ला पापांकुशानामैकादशी कथा संपूर्णा ॥
२४·८ × १०·३ सें० मी०	३ (१,३,४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन सं० १७४४	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे पौर्णमासी व्रत कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७४४ मार्गवदि १२ द्वादशी सोमवासरे पुस्तक लिषितं शिव चतुर्वेदिनात्म-पाठार्थम् ॥
२७·१ × ११·१ सें० मी०	९ (१–९)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री कोदण्ड परशुरामे···श्री वदन सिंह देव विरचिते समय विनिर्णयोक्षे-त्रेव योदृशी निर्णयः राधाकृष्ण जी गोपीउ···
२२·२ × १०·८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे फाल्गुणी कृष्णा विजया नामैकादशीकथा संपूर्णं ॥

(सं०सू० ३·५०)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१५३	२६७	बहुलाव्याघ्रव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५४	३२६७	बहुलाव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५५	१८८८	बुधाष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५६	७४६७	बुधाष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१५७	७३६०	भौमव्रतकथा-पूजाविधिः			दे० का०	दे०
१५८	७१२९	मदनद्वादशीव्रत			दे० का०	दे०
१५९	५८६२	मनोविनायकव्रत			दे० का०	दे
१६०	५७३	मलमासव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.८ × ११.१ सें० मी०	४ (१-४)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री भविष्य पुराणे बहुलाव्याघ्र व्रत कथा संपूर्ण ॥... लिखितं विश्वनाथेन बहुलाव्रतमुत्तमम् ॥... संवत् १६११ आद्र कृष्णा द्वितीयायां श्री कृष्णार्पणमस्तु स्वार्थ परोपकारार्थ ॥
२१ × १० सें० मी०	६ (१-६)	८	२५	पू०	प्राचीन सं०१६१०	इति श्री भविष्योतर पुराणे बहुला व्रत कथा समासंभु ॥ सं० १६१० माघकृष्ण प्रतिपदा रविवार लिखितं ॥ बेणी माधवस्य ॥
२७.३ × १२.८ सें० मी०	३ (१-३)	११	२७	अपू०	प्राचीन सं०१६०५	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे बुधाअष्टव्रत कथा कथा संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १६०५ भाद्रपद्र मासे शुक्लपक्षे...॥
२२.३ × ११ सें० मी०	३ (२-४)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२३.२ × १०.१ सें० मी०	१० (१-१०)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६३	× × भौम व्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु ॥ × × × इति भौमपूजाविधिः समाप्त लिषितं रछिपालराम धतुरहा संवत् १८६३ मासे अस्वनि सुक्लः २ × ×
२४.६ × ८.८ सें० मी०	२	१२	५५	पू०	प्राचीन	इति मत्स्यपुराणेमदनद्वादशीव्रतं ॥
१४.६ × १०.७ सें० मी०	८ (१-८)	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे मनोविनायक व्रतं संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥
२५.५ × १०.६ सें० मी०	६ (१-६)	८	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६८	इति श्री मार्कंडे पुराणे मार्कंडेय युधिष्ठीर संवादे मलमास व्रत कथा समाप्ताः । शुभमस्तु ... शिवोभव ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	३४६५	महालक्ष्मीकथा			दे० का०	दे०
१६२	६६५	महालक्ष्मीव्रत			दे० का०	दे०
१६३	३८०५	महालक्ष्मीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१६४	३२०३	महालक्ष्मीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१६५	७५०५	महालक्ष्मीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१६६	५४४६	महालक्ष्मीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१६७	५४८४	मार्गशीर्षशुक्लैकादशी-कथा			दे० का०	दे०
१६८	१५२२	यमद्वितीया			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५ × १२.७ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन सं० १९४७	इति भविष्योत्तर पुराने श्री कृष्णयुधिष्ठिर संवादे श्री महालक्ष्मी व्रत कथा सपूर्णं १९४७…… ।
१५.७ × ८.६ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणें महालक्ष्मी व्रतं समाप्त ॥
२३.१ × १०.९ सें० मी०	६ (१–६)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्रीस्कंदपुराणे उमामहेश्वरसंवादे महालक्ष्मी व्रतकथा समाप्ता संवत् १९-२६ अश्विन कृष्णैकादश्यां भृगुवासरे छजमलशर्म्मणा लिपि कृतं स्वात्मजगंगाप्रसादस्यपठनार्थ शुभं ॥
१९.१ × ९.२ सें० मी०	११ (१-२,४-१२)	९	२५	अपू०	प्राचीन सं० १९२८	इति श्री भविष्योतरपुराणे महालक्ष्मी-व्रतकथा समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥…… संवत् १९२८ समये आश्विनवदि चतुर्थी ४ लि भृगुवासरे लिखितं लक्ष्मीदास गणेशसुतस्य शुभस्थाने…… ।
२४.२ × ११.२ सें० मी०	७ (१–७)	७	२९	पू०	प्राचीन सं० १९५२	इतिश्री भविष्योत्तर पुराने श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे श्री महालक्ष्मी व्रत कथा संपूर्ण ॥ संम्वत १९५२…… ।
२४.२ × ९.५ सें० मी०	७ (१–७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तरे महालक्ष्मी कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२०.४ × १० सें० मी०	३ (१–३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी कथा समाप्ता ॥
२३.३ × ११.४ सें० मी०	३ (१–३)	११	२७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	७५०६	यमद्वितीया (कायस्थ उत्पत्ति)			दे० का०	दे०
१७०	५१२९	यमद्वितीया कथा			दे० का०	दे०
१७१	७१५५	राधिकाष्टमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१७२	८९५	रामनवमीव्रत			दे० का०	दे०
१७३	३१३९	रामनवमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१७४	१७३९	रामनवमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१७५	७३८५	रामोत्सवव्रतकथा			दे० का०	दे०
१७६	२९२८	लक्ष्मीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × १० सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १९५२	इति श्री पद्मपुराणे पाताल खंडे कायस्थोत्पत्ति संपूर्ण सं० १९५२...... ।
११ × ६ सें० मी०	५ (१–५)	६	१४	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री यमद्वितीया व्रतकथा समाप्त शुभमस्तु संवत् १९०२ आषाढ़ सुदी ११ मंगलवासरे ॥
१६·४ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णनारदसंवादे श्री राधिकाष्टमीव्रतकथा संपूर्णम् शुभमस्तु ॥
२२·५ × १०·४ सें० मी०	१३ (१,५-१६)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति स्कंदपुराणे अगस्तिसंहितायां अगस्त्यसुतीक्ष्या संवादे रामनवमीव्रतं ॥
२१·४ × १०·१ सें० मी०	७ (१–७)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री लैंगे विष्णु संहितायां हरगौरी संवादे रामनवमी व्रतकथासंपूर्णा ॥ राम ॥ राम ॥
३१·५ × १४·३ सें० मी०	४ (१–४)	११	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री लैंगेविष्णुसंहितायां देवीशिव संवादे श्री रामनवमी व्रतकथा समाप्ता ॥
२२·२ × १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८९४	इति श्री महारामायणेचतुःषष्ठिसाहस्र्यां संहितायां उमामहेश्वर संवादे रामोत्सवव्रतकथा समाप्ता शुभंभूयात् ॥ संवत् १८९४ ॥ भाद्रसुदी ॥५॥ मुकाम वादा ॥ श्री रस्तु ॥
२३ × १०·७ सें० मी०	५	९	२६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७७	७९६	ललितादेवीकथा			दे० का०	दे०
१७८	६१६	ललितादेवीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१७९	३२५९	ललिताव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८०	७८१३	वटसावित्रीकथा			दे० का०	दे०
१८१	६२३	वटसावित्रीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८२	२५८२	वटसावित्रीव्रतकथा			दे० का०	
१८३	५८९०	वामनद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८४	३७८७	वामनद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.८ × १०.५ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १७०६	इत्यनद्व्रतमाख्यातं सतिहासं महार्णव: ॥ ···इदं पुस्तकं मुकुंद पंडित दक्षिणी ब्राह्मणेन लिखित्वा श्रीरस्तू । सं० १७०६ ···
१६.८ × १०.४ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १७०६	इदं पुस्तकं मुकुंद पंडित दक्षिणी ब्राह्मणेन लिखित्वा श्रीरस्तू । सं० १७०६ समये मार्गेश्वर मासे शुक्ल पक्षे द्वितीयाया पुण्य तिथौ सोमवासरैत दिने समाप्त: ॥
२१.७ × ६ सें० मी०	६ (१–६)	११	३१	पू०	प्राचीन सं० १७२४	इति श्रीस्कंद पुराणे कालिकाखंडे ऋषिस्कंद संवादे उपाग ललिता व्रतसमाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत्–१७२४ ··· ···
२४.६ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे वटसावित्रीकथा समाप्ता संपूर्ण शुभस्तु ॥
१८.३ × ८.५ सें० मी०	५ (४–८)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
१७.१ × ११.५ सें० मी०	११ (१–११)	६	१७	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	सावित्रीवटपूजा··समाप्तं । शुभमस्तु इति ॥
३३.५ × १३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	५३	अपू०	प्राचीन	
२७.१ × ११.८ सें० मी० (सं०सू०-३-५१)	३ (१–३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इतिश्री वायुपुराणे वशिष्टाम्बरीषसंवादे श्रीवामन द्वादशी व्रतकथा समाप्तिमगमत् ॥ सं० १८६१··· ।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	३५०३	वामनद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८६	१३३१	वामनद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८७	७५७४	वार्षिकव्रतपूजाकथा			दे० का०	दे०
१८८	६००३	विनायकचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१८९	३९४८	विनायकचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९०	७५६३	व्यतीपाायातयोगव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९१	७७१५	व्रतार्क (रामनवमीव्रत)			दे० का०	दे०
१९२	७१७१	शिवरात्रिपूजाकथा एवं (शिवरात्रिनिर्णय)			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	१८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री वायु पुराणे वशिष्ठाम्बरीष संवादे श्री वामन द्वादशीव्रत कथा समाप्तिमगमत् ॥
२८ × १२.५ सें० मी०	३	१०	३०	पू०	प्राचीन सं० १-८२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे वावनद्वादशी व्रतकथा संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८८२ मास भाद्रपद एकादश्या गुरुवासरे शुभंब्रूयात ॥
३३.२ × १२.८ सें० मी०	३ (१–३)	१३	५३	अपू०	प्राचीन	अथ वार्षिक व्रतपूजा कथा संग्रहो लिख्यते × × (प्रारंभ)
२६.२ × १०.२ सें० मी०	६ (२–७)	९	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे विनायक चतुर्थी व्रत कथा समाप्ता ॥
२०.४ × ९.७ सें० मी०	४ (१–४)	९	२६	पू०	प्राचीन सं० १८३१	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विनायक चतुर्थी व्रतकथा समाप्तः शुभमस्तु ॥ संवत् १८३१ शाके १६९५ भाद्रे कृष्ण पक्षे ९…॥
३१ × १२.३ सें० मी०	८ (१–८)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति व्यतीपात व्रतं सपूर्णं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया × × ×
२७.३ × ११.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे अगस्ति संहितायां अगस्ति सुतीक्ष्ण संवादे संवादे रामनवमी व्रत सपूर्णं ॥
२७ × ११.३ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे शिवरात्रि व्रतोद्यापन ॥ (पृ० सं० १५) × × इति शिवरात्रि निर्णयः ग्रंथ :—३७० ॥ श्री सीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	७५७२	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९४	५८६०	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९५	५८१५	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९६	२९७२	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९७	२६१	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९८	११६	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
१९९	२५७८	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०
२००	२८३९	शिवरात्रिव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
:४२ × १०·४ सें० मी०	६ (१–६)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री लिंगपुराणे शिवरात्रि व्रतकथा समा॥ अथ हवनानंतर पूजाविधान ॥ × × ×
२३·५ × ९·७ सें० मी०	२८	८	३०	अ० (जीर्ण)	प्राचीन	
२२·४ × ९·२ सें० मी०	११ (२१–३१)	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां उमामहेश्वर संवाद शिवरात्रि व्रतकथा समाप्ता ॥
२४ × १०·१ सें० मी०	५ (१–५)	९	२९	पू०	प्राचीन सं० १७७२	इति श्री शिवपुराणे शिवरात्रिव्रतकथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ मगलंददाति ॥ संवत् १७७२ माघ सुदि १५ ··· ···
२९·२ × १४ सें० मी०	३ (१–३)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × १०·४ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १९०३	इति श्री लिङ्गपुराणे शिव रात्र व्रतकथा संपूर्ण शुभमस्तु सवत् १९०३ के साल ॥ लिखितं संभूनाथ प्रधानरिमावैठे ॥ राम ॥ राम ॥ श्रीराम
२१ × १९·२ सें० मी०	१२ (१-११, २१)	१३	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवपुराणे शिवरात्रिव्रतकथा समाप्त ॥
२३·४ × १०·९ सें० मी०	१७ (१-१४, १६-१८)	९	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री लिंगपुराणे उमामहेश्वर संवादे शिवरात्रि व्रतकथा समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८४७ कार्तिक सुदी ······ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०१	७७०१	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०२	७३८६	श्रावणद्वाशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०३	७७०	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०४	३६९०	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०५	११७१	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे०का०	दे०
२०६	३६७४	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०७	३५७६	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२०८	१३४२	श्रावणद्वादशीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·८ × ९·७ सें० मी०	११ (१–११)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति भविस्योत्तर पुराणे कृष्ण युधिष्टिर संवादे श्रवन द्वादसिव्रतकथा संपूर्णमस्तु।।
२४·६ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रवण द्वादशी व्रतकथा समाप्ता ।। संवत् १९४ (२) के भाद्रवदि ३० कः पुस्तकमिदमलेखि रामन. थेन ×
२२·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	९	२१	पू०	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रवण द्वादशी व्रतकथा समाप्तं ।। ··· श्रीरस्तु।। संवत् १८५८ शके १७२२ आश्विनमासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां ७ सोमवासरे लिखितं ··· ···
१५·५ × ९·५ सें० मी०	९ (१–९)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कृष्णयुधिर संवादे श्रवणद्वादशी कथासंपूर्णम् ।। ···
१६·६ × १३·२ सें० मी०	९	२४	१९	पू०	प्राचीन सं० १९५१	इति श्री विष्णु पुराणे श्रवनद्वादशीकथा संपूर्ण भादों सुदी ९ संवत् १९५१ लिषतं श्री वलदेव ।।
२१ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३३	पू०	प्राचीन सं० १९४४	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे ब्रह्मनारद संवादे श्रावणद्वादशी व्रतकथा समाप्ता ।। शुभमस्तु निर्णयामृते ।। भा० शु० ११ सोमे संवत् १९४४
२४ × ११·५ सें० मी०	६ (१–५,७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८३१	इति हेमाद्री भविष्योतरे श्रावनद्वादशी व्रतं शंवत् १८३१ भाद्रपद शुक्ल ७ ।।
३३ × १२·७ सें० मी०	६ (१–६)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे ब्रह्मनारद संवादे श्रवणद्वादशी व्रतकथा समाप्तां शुभमस्तु श्रीरस्तु । लेखक पाठकयो ।। इदं पुस्तकं लिखितं श्री महापात्र ठाकुर प्रसाद श्रीरनाथ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रंथांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०९	३२६६	श्रीराधाजन्मोत्सव-व्रतकथा			दे० का०	दे०
२१०	८५४	संकष्टचतुर्थीव्रत			दे० का०	दे०
२११	१०	संकष्टचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१२	३८०६	संकष्टचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१३	२४१७	संकष्टचतुर्थीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१४	१२६८	संकष्टनाशनगणेशव्रत			दे० का०	दे०
२१५	२०३६	संतानसप्तमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१६	७५५५	संतानसप्तमीव्रतकथा (हिंदीटीकासहित)			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	३१	पू०	प्राचीन सं० १८९१	इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे श्री राधा जन्मोत्सव व्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु ॥ सवत ॥ १८९१ शाके १७५६ कार्तिक कृष्ण ॥४॥ भौमवासरानुत्त लिखितं श्रीमिश्र राम गरीब जी ॥ स्वयं पाठर्थ-यरार्थवा ॥
२५ × ११ सें० मी०	८	९	३६	अपू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय पुराणे व्यासयुधिष्ठर संवादे संकष्ट चतुर्थी व्रत संपूर्ण ॥ शुभ-मस्तु सर्वजगतम्: मिदं पुस्तकं मिश्र जोतगराय स्व आत्म पठनं शुभमस्तु ॥
२८ × १३·५ सें० मी०	४ (३–६)	९	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री स्कंदपुराणे भविष्योत्तर षडे-संकष्ट चतुर्थी व्रतकथा संपूर्ण संवत् १८९२ कार्तिक शुदि द्वितीया शुक्रवार, शुभमस्तु, शुभंबूयात ॥ श्री ॥ ?॥
२५·८ × १३·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२६	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इतिश्रीनारदीयपुराणे व्यासयुधिष्ठर-संवादे संकष्टचतुर्थीव्रतकथा समाप्ता शुभमस्तु संवत् १९१६ चैत्रकृष्ण त्रयो-दशी शुक्रवासरे चंद्रपुरे मिश्रसेढमल्ल जीतस्यात्मजेन छज्जुरामेण लिखिता स्वपठनार्थ शुभंभवतु ॥
२५ × ११·३ सें० मी०	४	११	३०	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री नारदाय पुराणे सप्तऋषिसंवादे गणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत कथासमाप्त ॥ शुभंभूयात् ॥ सम्बत् १८८२ भाद्रपद १॥
२१ × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
१९·३ × ८ सें० मी०	१२	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १८७८	इति भविष्योत्तर पुराणे अभुक्ताभरने संतान सप्तमी व्रतकथा संपूर्ण ॥ शुभ-मस्तु ॥ संवत् १८७८ भाद्रशुक्ल ४ ता दिन समाप्तं ॥
१६ × १२·३ सें० मी०	१३	१४	१३	पू०	प्राचीन सं० १९६५	इति भविष्योत्तर पुराने अमुक्ताभर्न संतान सप्तमी व्रतकथा शम्पूर्ण मंगलं ददातु भादौवदि ११ संनौ सम्वत् १९६५ × × × ॥

(सं०सू०३-५२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	३००० / ३	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१८	६१५६	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२१९	६०७९	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२०	२२५४	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२१	७०३६	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२२	६६९१	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२३	५१५०	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२२४	६३५२	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·२ × ११·८ सें० मी०	५२	१६	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८४५	इति श्री स्कंद पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रतकथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८४५ मार्गशुक्ल रविवारे···
३३·३ × १६·५ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	३५	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्री इतिहाससमुचये सत्यनारायण व्रतकथा पंचमोध्याय. ५ ततनिराजनम् ···। इति श्री सत्यपुजा समाप्तं शूभ भूयात् शम्वत १९११ मीति माघ वदि ११रविवासर गौरीशंकरेण लिखितं व्रतं।
२७·२ × ११·९ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्री सत्यनारायण पुजान प्रकारराजा रवाङ्ग जध्व जगापाशामगमनाम सप्तमोध्याया ॥ ··· ···के संवत् १९१४ मीति आसउउ शुदी ११२ ॥
२६·६ × १२·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराण रेवाखंडे सत्यनारायण कथा समाप्ता ॥ शुभम् मंगलम् ॥
२६ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखंडे सत्य नारायण कथा समाप्तं ··· ···संवत् १९२३ राम
२२ × ११·८ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री इतिहाससमुच्चये सत्यनारायण व्रतकथा समाप्तः ।
२६·२ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	४२	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रतकथा समाप्ता ॥ सवत् १८६७ के साल मितो जेठवदि ११ वुधेका
२४ × १०·८ सें० मी०	१० (८–१७)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री इतिहास समुच्चये सत्यनारायण व्रतकथायां चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ सपूर्णम् ॥ अथ श्री सत्यनारायणपूजन विधान लिख्यते ॥ (पृ० १६) × × इति श्री सत्यनारायणपूजन समाप्तम् लिख्यतं कायस्थ छोटेलाल संवत् १८६६ ॥ श्राः कृः तिः ११ ॥ भौम

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२५	५ः५१	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२ ६	४५५०	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
ःर७	४६७१	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	
२२८	७५३	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
२२९	३७४१	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	
२३०	३७२९	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
२३१	३८२	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	[illegible]
२३२	६२	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	[illegible]

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × ११·७ सें० मी०	१२ (१–१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १९४३	इति श्री स्कंद पुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण कथायां [illegible] नाम पंचमोऽध्यायः ५ संवत् १९४ आषाढ़ शुक्ला प्रति पदि भृगुवासरे लिखितं मया राम॥
२५ × १०·५ सें० मी०	१७ (७-८,१३-२६,२९)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × ११·८ सें० मी०	१५ (१-१४,१६)	९	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणोपाख्याने श्रीमद्वाचस्पति विरचित चंद्रव्रतेतिहासे पंचमोऽध्यायः श्री मत्सदासत्यनारायण × × × ।
२२·८ × १२·३ सें० मी०	२२ (१, -२३)	७	२२	अपू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री इतिहाससमुच्चये सत्यनारायण व्रतकथा समाप्तः…संवत् १९०४ चैत्र कृष्णादशम्यायां १० गुरुवासरे…साव ग्रामजी पुस्तकमंकला करोमि ब्राह्मण प्रभुलालक शुभम् ॥
२१ × १३·१ सें० मी०	१५	१०	२५	अपू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री इतिहास समुच्चये सत्यनारायण सतानंद संवादो नाम चतुर्थमोध्यायः समाप्तम । भाद्रमासे । शुक्लपक्षे तिथौ॥ येकादस्यां ॥११॥ भौमवासरे ॥ संवत् १९१० ॥
२६·५ × ११·५ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	३३	पू०	प्राचीन	…सत्यनारायण कथायां सप्तमोध्यायः॥ समाप्तोयं … …
२७ × १३·५ सें० मी०	१६	९	२७	पू०	प्राचीन सं० १९२९	इति श्री सत्यनारायण कथा समाप्तम् ॥ सं० १९२९ कार्तिक मासे शुक्लेपक्षे षष्ठेयां ६ बुधवासरे लिखितं मिश्र शिव दियाल ॥ शुभमस्तु ॥ मंगलं ददातुश्री ॥
२८ × १३ सें० मी०	११ (१–११)	११	४८	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री स्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण व्रतकथा समाप्ता: सं० १९१६ मत्तवेचस्मये फैजबकलमस्वामी बलदेव व फरमायसू राम सुखक्षिमरशुभम्

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३३	४०६७	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३४	४११८	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३५	४०२३	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३६	४०२२	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३७	४२३२	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३८	१४४६	सत्यनारायणव्रतकथा			दे० का०	दे०
२३९	२८७४	सप्तमीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४०	१७३३	सप्तमीव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	८	२६	पू०	प्राचीन	
२३·२ × १२·८ सें० मी०	१४ (१-२,२-१२, १९)	८	२०	अपू०	प्राचीन सं० १९०१	इति इस्कंद पुराणे रेवाखंडे सत्यनारायनव्रतकथा संपूर्ण कार्तिक वद ३० स्नौ संवत् १९०१ लिष्यतंपंनन् चौबे जतारा इस्थित सुभं भवत (पृ० सं० १९)
२६·४ × १६·७ सें० मी०	११ (१–११)	१३	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९२८	इति श्री स्कंधपुराणे रेवाषंडे नारायन नारद संवादे सत्यनारायन व्रतकथा चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ अषड सुदि ५ सं० १९२८······
२४·२ × १२·७ सें० मी०	२२ (३–२४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इतिश्री महापुरानेइतहाससमुचयेसत्य नारायण चतुर्थमोध्यायः ।। शुभंवत् ॥ कार्तिक कृष्णे ३० गुरौ संवत् ।१९०६॥ संपूर्न समाप्तं ॥······
२५·७ × ११·२ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३६	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इतिश्री स्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण व्रतकथा समाप्ता संवत् १९३५ वैशाख कृष्णत्रयोदश्यां भौमे रशिवकरणे नलिखिता शुभं ॥
२४·७ × १५·४ सें० मी०	१५ (१-१३,१५-१६)	१०	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री इतिहास समुच्चये सत्य नारायण व्रतकथा संपूर्णा समाप्तं ॥······ पठतं पं० श्री गणपत अवस्ती ॥
२४ × ९ ९ सें० मी०	६ (१–६)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्री भविष्योत्तरे···सप्तमी व्रतकथा समाप्ता ॥ संवत् १९१४ भादे मासि ··· ··· ॥
२२·५ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८८७	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३६३३	सावित्रीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४२	३८८९	सावित्रीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४३	३७२१	सावित्रीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४४	५८९८	सावित्रीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४५	२८२०	सिद्धिविनायकव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४६	१९४	सिद्धिविनायकव्रतकथा			मि० का०	दे०
२४७	२५२६	सूर्यव्रतकथा			दे० का०	दे०
२४८	३२८४	सूर्यव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२७·१ × १२·२ सें० मी०	११ (१–११)	६	३०	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति श्री स्कंद पुराणे साविती व्रतकथा संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ······ संवत् १६१२ शाके १७७७ तदिने लिखितं स्वार्थं परोपकारार्थं च: ॥
२१·८ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	× × कुर्वतां शृण्वतां चैव सविव्रीव्रत मादरात् ।८५॥
२३·८ × १० सें० मी०	४ (२–५)	७	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८१६	इति श्री महाभारते आरण्यके पर्वणि साविती व्रत·कथा समाप्ता: ॥शुभमस्तु॥ संवत् १८१६ शाके १६८४ माघ मासे कृष्णपक्षे द्वादशी भौमवासरे लिखित मिदं·· ······· ॥
२३·७ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणे साविती व्रत संपूर्ण ॥
२१·८ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री स्कंद पुराणे सिद्धि विनायक व्रत कथा संपूर्ण ॥ संवत् १८८६ शाके १७५१ चैत्र शुक्ल गुरौ १३
२३·३ × १२·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे कृष्णयुधिष्ठिर संवादे सिद्धिविनायक व्रतकथा संपूर्णा ॥
१४·६ × ८·५ सें० मी०	५ (४–८)	७	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे सूर्यव्रत कथा-समाप्ता ॥ शुभमस्तु ····· ॥
२०·६ × ६·३ सें० मी०	२ (४–५)	७	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्त पुराणे कृष्णार्जुन संवादे सूर्यषष्टी व्रत कथा समाप्तम् ॥ संवत् १८६१ शुभमस्तु १ × × × ॥

(सं०सू०३-५३)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४९	४३४८	सूर्यषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५०	३२५७	सोमवतीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५१	३७१९	सोमवतीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५२	३७३९	सोमवतीव्रतकथा			मि० का०	दे०
२५३	२७७२	सोमवतीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५४	७७९४	सोमवारव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५५	४५००	सोमवारव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५६	५३६५	सोमव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·७ × १२·३ सें० मी०	२ (१–२)	११	५३	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सूर्यषष्टी व्रतकथा समाप्तम् ॥ संवत् १९१२ भाद्र पदस्यसिते पक्षे षष्टमा चंद्र वा से लिखितं दत्तारामेन··
१९·६ × ७·४ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति समाप्तः ॥ श्रीरामकृष्णायनमः ॥ इति सोमवती कथा समाप्तः ॥
२६ × १५ ६ सें० मी०	७ (१–७)	१४	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते सोमवती व्रतकथा सामोद्यापनं समाप्तम् ।
२१·२ × ११·४ सें० मी०	२२ (१–२२)	५	२२	पू०	प्राचीन सं०१९४१	इति महाभारते सोद्यापनं शु० ॥ लिपिकृतं गंगा प्रसादेन सोमोति व्रतं कथा शुभ सम्वत् १९४१ चैत्रकृष्ण अष्टम्यां सोमवासरे शुभ ॥
२३ × १०·७ सें० मी०	९ (१–९)	९	३१	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे भीष्मयुधिष्ठिर सवादे सोमवती कथा समाप्ताः ॥ संवत् १८४७ कार्तिक वदि ५ गुरौ को लिषितं पं०····
१५·१ × ८·८ सें० मी०	४	१४	२२	अपू०	प्राचीन	
१५·८ × ९·९ सें० मी०	७ (१-३,५-८)	११	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे षोडश सोमवार संपूर्ण शुभंभवतु श्री उमामहेश्वरार्पण मस्तु ॥
२७·५ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	८	४१	पू० (खंडित)	प्राचीन सं०१९३२	इति श्री महाभारते···भीष्मपर्वणि सोमव्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु संवत १९३२ मी० श्रावण शुक्ल १० लिषीतं देवराज पंडित ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५७	२५८१	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५८	११७०	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२५९	७	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६०	६४०८	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६१	४५२३	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६२	३६०६	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६३	१६२१	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६४	१५१८	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × ११ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १९२८	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे हरतालिका वृत्त समाप्तं भा० शु० ३ रवौ० संवत् १९२८ लिषत भमानी प्रसाद पठनार्थं ।
१९·६ × १२·२ सें० मी०	६ (२–७)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे हरतालिका कथा ………… ॥
१९ × १०·५ सें० मी०	७ (२–८)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे हरितालिका व्रतकथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १०·४ सें० मी०	३ (१–३)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति श्री भविष्यतपुराने हरितालिका कथा समाप्तं सुभमस्तु × × × सवत् १८८५ के ॥
२७ १ × १२·७ सें० मी०	४ (१-२, ४-५)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री लिगपुराणे उमामहेश्वर संवादे हरितालिका व्रत कथा समाप्तम् संवत् १८६६ ।
२३·५ × १२·५ सें० मी०	३ (२–४)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवपुराणे हरितालिका व्रतकथा समाप्ता शुभमस्तु ॥ भाद्रेमासिसिते पक्षे प्रतिपत् भौमवासरे तद्दिने पुस्तकं पूर्णं नव ६ घं २ क मितेऽह्निके ॥
२५·५ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे हरितालकथा संपूर्णं ॥ शुभमस्तु
१७ × ८ सें० मी०	२ (७–८)	८	२१	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६५	११५०	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६६	३२६९	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६७	४०५०	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६८	३८	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२६९	७५३७	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२७०	७३७१	हरितालिका व्रतकथा			दे० का०	दे०
२७१	७८४३	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
२७२	७१८०	हरितालिकाव्रतकथा			दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × ८·६ सें० मी०	१२ (२-५, ७-११, १४-१६)	×	×	अपू०	प्राचीन सं० १८८६	इति हरितालिका व्रतकथा समाप्तः ॥ सम्वत् ॥ १८८६ समेनामभा द्रेमासेसिते पन्जे पुर्णिवायां रविवासरान्वितायास्व हस्तस्तं पुस्तं लिपित्वा द्वारकानाथ छात्रेण राम शुभमस्तु ॥
१३·५ × ७·५ सें० मी०	१५ (१-१५)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
३२·२ × १६·६ सें० मी०	४ (१-४)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरे हरितालिका व्रत पूजाकथा समाप्तं सं० १९६१ शुभमस्तु॥
१८ × ११ सें० मी०	१०	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे हरितालिका व्रत समाप्तः ॥
२३·६ × १०·५ सें० मी०	९ (१, ४, ६, ८-११, १३-१४)	७	२९	अपू०	प्राचीन	
३४·३ × १३·२ सें० मी०	५ (१-५)	७	४२	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री हरितालिका व्रतकथा समाप्तम् ॥ शुभंभूयात् ॥ × × × सम्वत् १९०८ ॥
१६·५ × ९·१ सें० मी०	२ (१०-१३)	७	२५	अपू०	प्राचीन	इती श्री भविष्योत्तर पुराणे हरितालिका व्रतकथा समाप्त ॥ × × ×
२३·८ × १२ सें० मी०	६ (१-६)	७	४१	पू०	प्राचीन सं० १७६८	इति श्री शिवपुराणे हरितालिका व्रत कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १७६८··· ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	५०७१	हलषष्ठीव्रतकथा			[illegible] का०	दे०
२७४	२४४६	हलषष्ठीव्रतकथा			दे० का०	दे०
२७५	४१४६	हस्तगौरीव्रत			दे० का०	दे०
२७६	२७९५	होलिकाव्रतकथा			दे० का०	दे०
साहित्य						
१	६१९१	अनंगरंग	कल्याणमल्ल		दे० का०	दे०
२	६०११	अनंगरंग	कल्याणमल्ल		दे० का०	दे०
३	५४५६	अनर्घ्यराघव (सटीक)	मुरारि		दे० का०	दे०
४	१०४५	अनेकार्थध्वनिमंजरी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·८ × १० सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	९	३१	पू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री ब्रह्मा पुराणे उत्तरखंडे महादेवी भट संवादे हलषष्टी व्रतं समाप्तं शुभम मस्तु संवत् १८३४ भाद्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ । १३ शनिवासरे लि।पितं
२७·७ × ११·९ सें० मी०	५ (१–५)	७	४६	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्ण प्रोक्तं हस्त गौरी व्रत समाप्तं : हस्ताक्षर रामचंद्र नीचणकरस्येद संवत् १८१२ ॥
१३·८ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १८३७	इति भविष्योत्तर पुराणे होलिका व्रत कथा संपूर्णा ॥ संवत् १८३७······॥
२२·२ × १०·२ सें० मी०	४१ (१–४१)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मल्लाउ षानमल्ल विनोदाय महाकवि कल्याण मल्ल विरचिते श्री अनंगरंगे संभोग निरुपणं नाम दशम-स्थलं ॥
२३·३ × १०·९ सें० मी०	२८ (२–२९)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १८५७	इति श्री मल्लाउनवल्ल विनोदाय महा-कवि कल्याणमल्ला विरचिते उनंगरंगे वशी करणादितिरूपणंनाम सप्तम उल्लासः ॥ इति श्री अनंगरंगे ग्रंथ समाप्त ॥ संवत् १८५७ ······ ॥
२७·३ × ११·९ सें० मी०	३४ (१२–४५)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री अनर्घ्यराघ टीकायां यशोदार्प-णिकायां प्रथमोकः ॥
२४ × १०·४ सें० मी०	१२ (२–१३)	११	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८७४	इत्यनेकार्थध्वनिमज्जर्य्याश्लोक पदाधि-कारस्समाप्त ॥ संवत् १८७४ साके १७३९ ॥ पौष मासिसिते पक्षे त्रयोद-श्यां भौमवासरे ॥··· ···

(सं० सू० ३-५४)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	नि
१	२	३	४	५	६	७
५	६१८४	अभिज्ञानशकुंतल	कालिदास		दे० का०	दे०
६	४८७२	अभिज्ञानशाकुंतल	कालिदास		दे० का०	दे०
७	३२५१	ॐअमरुकशतक	अमरुक		दे० का०	दे०
८	७११५	अमरुशतक (टीका)	अमरुक		दे० का०	दे०
९	४०८२	अलंकारकौस्तुभ	नरसिंह		दे० का०	दे०
१०	६५४९	अलंकारचंद्रिका (कुवलयानंद टीका)	वैद्यनाथ		दे० का०	दे
११	४३४९	अलंकारचंद्रिका			दे० का०	दे
१२	६३२६	अलंकारचूड़ामणि(सटीक) (काव्यानुशासन वृत्ति) (टीका)	हेमचंद्र		दे० का०	दे

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ७·४ सें० मी०	६० (२५–८४)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२८·७ × १०·४ सें० मी०	४३ (१–४३)	९	५०	पू०	प्राचीन	... कालिदास ग्रथित वस्तुनानवेन अभिज्ञान शाकुंतल नामधेयेन नाटकेनोपस्थातव्य-मस्माभिः (पृ० १)। इति निष्क्रांतासर्वे सप्तमोंकः। शुभमस्तु ॥(पृ० सं० ४३)
२५ × ८·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३९	पू०	प्राचीन सं०१८७६	इति अमरूतकं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६७६ समये चैत्र वदि नवमी भ्रिगुवास लिखितं पुस्तकं काश्यां मनोहर मिश्र ॥
२१·५ × ८·८ सें० मी०	१२ (१-२,५-१४)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री अमरूशतक टीका सम्पूर्णम् ॥
२७·७ × ९·५ सें० मी०	१०७ (१–१०७)	८	४०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·६ सें० मी०	१०९ (१–१०९)	१०	४६	पू०	प्राचीन सं०१७५०	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणम्....हमज वैद्यनाथ कृताऽलंकार चंद्रिकाख्याकुवलयानंद टीका संपूर्णा ॥.... संवत् १७५० समय महीना मार्गशीर्ष वदी दशमी ता दीन लिष्यते ॥...
२५·२ × ११·५ सें० मी०	४ (२–५)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × १०·१ सें० मी०	३० (४१–७०)	१५	३९	अपू०	प्राचीन	इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायामलंकार चूडामणिसंज्ञ स्वोपज्ञ काव्यानुशासन वृतौ अष्टमोध्यायः ॥ समाप्तमिति ॥......

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३	१६१९	अलंकारसर्वस्व	राजानकरुय्यक		दे० का०	दे०
१४	२०६१	आनंदलहरी (सस्कृतटीका)			दे० का०	दे०
१५	५५४७	आनंदलहरी (सटीक) (सौंदर्य लहरी)		नरसिंह	दे० का०	दे०
१६	३१४८	आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य		दे० का०	दे०
१७	३५२७	उत्तररामचरित	भवभूति		दे० का०	दे०
१८	७५८६	उदाहरणचंद्रिका	वैद्यनाथ		दे० का०	दे०
१६	२७६२	ऋतुसंहार	कालिदास		दे० का०	दे०
२०	२५७०	ऋतुसंहार	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १३.४ सें० मी०	२ (१०-११)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२५.२ × १०.३ सें० मी०	१३ (१-१३)	१३	६०	पू०	प्राचीन	ग्रंथनाम के लिये हाशिये पर सं० टी०' शब्द लिखित है। इत्यानंदलहर्यां टीका समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरामचन्द्रायनमः ॥
२६.८ × १०.८ सें० मी०	७६ (१-७६)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री नरसिंह विरचिता समूला आनंदलहरी टीका समाप्ता × × × ॥
३१.५ × १०.८ सें० मी०	५७ (१-५७)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्गोवर्धनाचार्य विरचिता आर्या सप्तशती समाप्ता: ॥
२६.३ × ८.३ सें० मी०	६८ (१-६८)	७	४२	पू०	प्राचीन	इति निष्क्रांता. सर्वे नायकाभ्युदयो नाम सप्तमोंक: ॥ शुभमस्तु ॥ उत्तररामनाम नाटकं ॥
२८.५ × ९.७ सें० मी०	१८ (१-१८)	९	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सदुपाख्य वैद्यनाथ कृतायामुदाहरण चंद्रिकायां द्वितीय उल्लास: ॥········· (पृ० सं०-१५)
२४.६ × ११ सें० मी०	१२ (२-१३)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११.५ सें० मी०	७ (४-८,१०, १२)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कालीदास कृतां ऋतुसंहारे बसन्तवर्ननो नाम षष्ठस्सर्ग: शुभम् समाप्ता: ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१७२१	ऋतुसंहार	कालिदास		दे० का०	दे०
२२	५७८०	एकश्लोकीअपूर्वकाव्य			दे० का०	
२३	५२८८	कथासरित्सागर	सोमदेवभट्ट		दे० का०	दे०
२४	५६४४ / ७	कर्णानंद	गो० कृष्णचंद्र		दे० का०	
२५	५२८४	कर्णामृत	लीलाशुक		दे० का०	
२६	१५६५	कलिचरितम्	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०
२७	८४२	कविकर्पटीक	शंखधर		दे० का०	दे०
२८	३०९२	कविकर्पटीक	शंखधर		दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × ११ सें० मी०	६ (४-८,१०, १३-१५)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ९·६ सें० मी०	८ (१–८)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति व्याख्यानं बर्णङ्कयुक्तः पंडित बल्लभी भाष्यं टिप्पनं समाप्तमिति × × × ॥
२३ × १२·५ सें० मी०	५४ (१–५४)	१७	३७	अपू०	प्राचीन	इति भट्ट श्री सोमदेव विरचिते कथा सरित्सागरे लावन कलंब के प्रथम स्तरंगः ॥
१३ × ८·५ सें० मी०	६८ (१–६८)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्कृष्ण चंद्रगोस्वामिना विरचित श्रीमत्कर्णानंद मूल संपूर्ण शुभमस्तु ॥
२४·३ × १०·३ सें० मी०	९ (८–१६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति लीलाशुक विरचित कर्णामृते द्वितशकं संपूर्ण……
२० × ९·३ सें० मी०	७	९	२२	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचितः कलिचरितम् श्री सम्वत् १९११ माघ शुक्लैकादश्यां रविवासरे विन्यासितम्
३२·६ × ११·१ सें० मी०	६	१०	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री कविराज शंखधर विरचिता कविकर्पटीक रचना समप्ता
२३·७ × १०·३ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कविराज शंखधर विरचिरतायां कविकर्पटीक रचना समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विवरण	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	१७५४	कविकर्पटीक	शंखधर		दे० का०	दे०
३०	५१३७	कविकर्पटीक	शंखधर		दे० का०	दे०
३१	७४९९	कविकल्पलता	देवेश्वर		दे० का०	दे०
३२	३९७१	कविकल्पलता	देवेश्वर		दे० का०	दे०
३३	६५५९	कादंवरी (पूर्वखंड)	वाणभट्ट		दे० का०	दे०
३४	४२५८	ॐकार्त्तवीर्योदयकाव्य (चतुर्दशसर्गतक)	चंद्रचूड़भट्ट		दे० का०	दे०
३५	३६०८	ॐकाव्यप्रकाश	मम्मट		दे० का०	दे०
३६	५३५	काव्यप्रकाशश्लोक-दीपिका		श्रीजनार्दन व्यास	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	१३	४२	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति श्रीकविराजक शंकोद्धर विरचिते कविकर्णटीक रचना समाप्ता ॥०॥··· ···संवत् १८८० मासे पौषेमासि शुक्ले पक्षे प्रतिपदिवासर शुक्रवासर लिखिता शिव प्रसाद शुक्लेन ॥
२७·१ × ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	९	४३	पू०	प्राचीन सं० १९४५	इति श्री कविराज शंखधर विरचिता कवि कर्पटी संपूर्णा ॥ संवत् १९४५ चैं० शु० १ ॥
२७·२ × १०·७ सें० मी०	३९ (१-४,६-२९, ३१-४१)	८	५१	अपू०	प्राचीन	मालवेन्द्र महात्म्य श्री मद्वागभट्टनन्दनः देवेश्वरः प्रतनुते कविकल्पलतामिमाम् २ २ × × ×
१७·५ × ८·५ सें० मी०	१९ (५-१३,३०, ३५,३८-४५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति कवि कल्पलतायां द्वितीयस्तवकः समाप्तः (पृ० ४४)
२७·२ × ११·५ सें० मी०	२१५ (१–२१५)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री वाण कृतौ कादवय्यीं पूर्व खण्डं समाप्तम्
२०·५ × ११·५ सें० मी०	३७ (१-१६,३५ ५५)	१०	३६	अपू०	प्राचीन सं० १६९३	इति श्री चंद्रचूड विरचिते कार्तवीर्योदये काव्येचतुर्दशः सर्गः संवत् १६९३ शाके १५५८ धार संवत्सरे माघवदि पंचम्यां लिखितं पुस्तकं श्री रामोजयति ॥ भट्ट श्री चंद्रचूडेन प्रचंडा पुरवासिनो॥ कार्त्त-वीर्योदयः काव्यं शंकराय समर्पितं ॥
२७·१ × १०·५ सें० मी०	८५ (१–८५)	१०	४५	पू०	प्राचीन श० १५०७	इति काव्यप्रकाशे मम्मट कृते अर्थालंकार निर्णयोनामदशम उल्लासः ॥ इति श्री काव्यप्रकाशः संपूर्णः ॥ संख्या ७०० ॥ श्लोकवृत्त १२४२ गद्यपद्य ७६ प्रकृतार्था ४६ एवं १३१४ अनुष्टुप् २०००॥ शके १५०७ व्ययनाम संवत्छरे भाद्रपद वदि नवमी कान्हदेवेन लीख्यते पुस्तक···
२९·८ × १२·८ सें० मी०	४८ (१से१४१तक स्फुट पत्र)	८	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री जनार्दन व्यास विरचितायां काव्य प्रकाश श्लोक दीपिकायां दोष निर्णयोनाम सप्तमोल्लासः ॥

(सं०सू० ३-५५)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७	६१७६	काव्यप्रकाश (उदाहरणचंद्रिकाटीका)	राजानकमम्मट	वैद्यनाथभट्ट	दे० का०	दे०
३८	७३८२	काव्यप्रकाश (सटीक)	राजानकमम्मट	भवदेवमिश्र	दे० का०	दे०
३९	३६६५	काव्यप्रकाश (सटीक)	राजानकमम्मट		मि० का०	दे०
४०	७१२०	काव्यप्रकाश (सरलाटीका)	राजानकमम्मट	राजाराम	दे० का०	दे०
४१	४१५	काव्यप्रकाश (प्रदीपोद्योतटीका)	मम्मट	नागेश भट्ट कनकलाल ठक्कुर	दे० का०	दे०
४२	५८	काव्यप्रकाश (सरलाटीका)	मम्मट	राजाराम	दे० का०	दे०
४३	१७४७	काव्यप्रकाश (सारबोधिनीटीका)	मम्मट	श्रीवत्सलांछन भट्ट	दे० का०	दे०
४४	११२५	काव्यप्रकाश (सारबोधिनीटीका)	मम्मट	श्रीवत्सलांछन भट्ट	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.२ × १०.८ सें० मी०	१७० (१–१७०)	११	४३	पू०	प्राचीन सं०१७८	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञ धर्मशास्त्र पारावारीण तत्सद्विट्ठल भट्टात्मज श्री राम भट्टसूरि सूनुना वैद्यनाथेन विरचितायां काव्य प्रकाशोदाहरण विवृतावुदाहरण चंद्रिकाख्यायां दशमउल्लासः संपूर्णः ॥ संवत् १७८२ आषाढशु० ८।
३०.५ × १० सें० मी०	३२ (१–३२)	९	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री महामहोपाध्याय श्री सट्ठकुर भवदेवप्रियशिष्य मैथिल सीन्मे श्रीकृष्णतनय महामहापाध्याभिधान भावार्थ सन्मिश्र श्री भवदेव कृतायां काव्यप्रकाशटीकायां चतुर्थोल्लास व्याख्येतिशिवम् ॥श्रीकृष्णः।
१९.९ × ७.७ सें० मी०	११	७	३२	अपू०	प्राचीन सं०१९३६	इति श्री काव्यप्रकाश कारिकायां अर्थालंकार निर्णयोनाम दशम उल्लासः ॥ × × × × श्री एतत्काव्यप्रकाशकारिका पुस्तकं ऋतुरामङ्कचन्द्रेब्दे····संवत् १९३६ श्री स्वार्थपरार्थस्तु ॥
१९.९ × ७.७ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × ११.३ सें० मी०	२२	१०	४५	अपू०	प्राचीन	
२०.३ × ६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३५	पू०	प्राचीन सं०१९३६	यादृशं पुस्तकं दृष्टंतादृशं लिखितंमया। यदि शुद्धमशुंध चेन्मदोषो न विद्यते॥१॥ संवत् १९३६ पौष्यासिते पक्षे द्वादश्यां टोपरो पाद्गध दोरशास्त्रिणः पुत्रेण बटुकनाथ शर्मणा लिखितम् ॥६॥
२६.९ × १२.८ सें० मी०	२२ (१–२२)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति सारवोधिन्यां तृतीयोल्लासः ॥
३०.६ × १०.७ सें० मी०	१५५ (१–१५५)	१२	३८	पू०	प्राचीन सं०१७२०	इति श्री महामहोपाध्याय श्री विष्णु भट्टाचार्य चक्रवर्त्ति पुत्र श्री वत्सलांछन भट्टाचार्यं कृतौ काव्यप्रकाश टीकायां सारवोधिनी····संवत् १७२०····· कार्तिके शुक्ल पंचम्यामलेखि ॥ शुभं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	३४०७	काव्यप्रकाश	राजानकमम्मट		दे० का०	दे०
४६	३०९०	काव्यप्रदीप	महामहोपाध्याय श्री गोविंद		दे० का०	दे०
४७	४६३६	काव्यादर्श (३परिच्छेदांत)	दंडी		दे० का०	दे०
४८	२२०९	किरातार्जुनीय	भारवि		दे० का०	दे०
४९	३२२३	किरातार्जुनीय	भारवि		दे० का०	दे०
५०	४२६४	❀ किरातार्जुनीय (१८सर्गांतक)	भारवि		दे० का०	दे०
५१	२८५३	किरातार्जुनीय(प्रथमसर्ग)	भारवि		दे० का०	दे०
५२	२८७६	किरातार्जुनीय (द्वितीयसर्ग)	भारवि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × ९.६ सें० मी०	१३२ (१–१३२)	७	४१	पू०	प्राचीन	इति काव्यप्रकाशे अर्थालंकार निर्णयो नामदश उल्लासः ।। लिखापितमिदं भगवंतेन स्वपठनार्थं ।।शुभंभूयात् ।।·····
२८ × ११ सें० मी०	३२ (१–३)	१२	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहामहोपाध्याय श्रीगोविंद कृते काव्यप्रदीपे अथं व्यंजनवता निर्णयस्तृतीय उल्लास. (पृ० सं० २० से उद्धृत)
३२.२ × १२.३ सें० मी०	८५ (१-९,११-२८)	१०	५६	अपू०	प्राचीन सं०१७४६	इत्याचार्य दंडिनःकृतौ काव्यादर्शे सुकर दुष्करयम कवि भावनो नामतृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ।। शुभमस्तु × × शुभसंवत् १७४६ सन्येनाम आषाढ़वदि ८ भौमवासरे ।। सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराज भवसि देव राज्ये शुभस्थाने नगरे रीवा तस्मिकाले वर्तमान × × ×
२६.५ × ८.२ सें० मी०	८१ (१–८१)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२५ × ९.३ सें० मी०	९६	७	३२	अपू०	प्राचीन सं० १७५७	इति श्रीकिरतार्जुन ये महाकाव्ये लक्ष्म्यंके भारव.धनं जया वस्त्र लाभोनामा ष्टादशः सर्ग । सम पिमगयात् संवत् १७५७ शाके १६ २ सिद्धयनिाम विकृति समय आषाढ़ शुद्धदशम ··· ···
२४.५ × १०.६ सें० मी०	९२ (१–९२)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१९८३	इति श्री किरातार्जुनीये महाकाव्येभारवि कृतौ लक्ष्म्यंके धनंजयोनास्त्र लाभोनाम अष्टादशः सर्गः ।। शुभंभवत् । संवत् १९८३ समये जेष्ठ सुदि प्रतिपदा भौमदिने पुस्तकमिदं···।।
२७.५ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	७	३७	पू०	प्राचीन सं०१९३०	इति श्री किरातार्जुनीये महाकाव्ये व्यवसायदीपनो नाम प्रथमः सर्ग···संवत् १९-३० मार्गसीर्ष शु०१ गुरुवासरे लि० ।।
२७.२ × ११.९ सें० मी०	६ (१–६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री किरातार्जुनीये महाकाव्ये लक्ष्म्यंके कवि श्री भारवि कृतौ कृष्णद्वपायन गमनोनाम द्वितीयः सर्गः २ ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३	६९६७	किरातार्जुनीय (सटीक)	भारवि	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
५४	१९८१	किरातार्ज्जुनीयम् (व्याख्या)	भारवि	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
५५	४०१८	किरातार्जुनीय (व्याख्या)	भारवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	०
५६	५४७५	किरातार्जुनीय (सटीक) (१५वाँ सर्ग)	भारवि	गोपाल	दे० का०	दे०
५७	५६२८	किरातार्जुनीयम् (द्वादशसर्गतक)	भारवि		दे० का०	दे०
५८	२७१७	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
५९	३९४३	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
६०	१३८	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.९ × ९.१ सें० मी०	३६ (१–३६)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय श्री मल्लिनाथसूरि विरचितायां किराताज्जुनीय व्याख्यायां घंटापद समाख्यायां ··· ।
२४.५ × १० सें० मी०	७९	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्यमाण पारावारीण श्री महामहोपाध्याय कोलवल्द मल्लिनाथ सूरि विरचितायां घंटापथ समाख्यायां किरातार्जुनीय व्याख्यायां अर्जुनवरप्रदानो नामाष्टादशः सर्गः समाप्तः ॥ शुभंभूयात् ॥
२४.४ × १०.१ सें० मी०	१२ (१-१०,१०-११)	१२	४२	पू०	प्राचीन	
२४.४ × १० सें० मी०	८३ (१–८३)	९	३३	पू०	प्राचीन सं० १७८३	इति श्री किरातार्जुनीये महाकाव्येभारविकृतौ अर्जुनविजयोनामा द्वादशः सर्गः ॥ श्रावणे मासि कृष्ण पक्षे शदाम्यां रविवासरेब्द १७८३ शुभंभूयात
२५.३ × १०.७ सें० मी०	४५ (१–४५)	७	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८३८	इति श्री कुमारसंभवे कालिदास कृतौ ···संवत् १८३८ केशालसमये नाम चैत्र सुदि ११··· ॥
२५.३ × ९.७ सें० मी०	६२ (१–६२)	७	३१	अपू० (खंडित)	प्राचीन सं० १८००	इति श्री कुमारसंभवो महाकाव्ये कालिदस कृतौ गौरीविवाहो नाम सप्तमः सर्गः ॥ संवतु १८०० ॥ शाके १६६५ माघेमांशे शुकलपक्षे त्रयोदस्यांतिथौ चंद्रवासरे को लिषितं इदं पुस्तकं आतमीयं पठनार्थं ॥ श्रीगणेशायनमः
२८ × १३.५ सें० मी०	८	९	४०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१	३०७४	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
६२	४६८२	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
६३	२२०५	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
६४	७५६१	कुमारसंभव	कालिदास		दे० का०	दे०
६५	७७८५	कुमारसंभव अष्टमसर्ग	कालिदास		दे० का०	दे०
६६	७१	कुमारसंभव (टीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
६७	६१४६	कुमारसंभव (सप्तमसर्गांतक)	कालिदास		दे० का०	दे०
६८	४१२३	कुमारसंभवम् सर्ग १-२ (संजीवनीटीका)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × ८·८ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·४ × ११·५ सें० मी०	२ (१–२)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × ७·६ सें० मी०	१७ (२५से५२तक स्फुटपत्र)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं०१६७८	इति श्रीकुमार संभवे महाकाव्ये कालिदास कृतौ उमापरिणयोनाम ··· संवत् १६७८ समये आश्विनशुदि ···॥
२८·२ × १२·६ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कुमारसंभवे महाकाव्ये कालिदास कृतौ पार्वती प्रदानोनाम षष्टः सर्गः ॥ ·· (पृ० संख्या-२३)
२३ × ९·१ सें० मी०	६ (१–६)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीकुमारसंभवे महाकाव्ये कालिदास कृतौ सुरतवर्णनंनामाष्टमः सर्गः॥ ······
३२·४ × १५·१ सें० मी०	५०	१९	५४	अपू०	प्राचीन सं०१८६१	इति श्रीपदवाक्य प्रमाण पारावरिण-महोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथ सूर विरिचियां कुमार संभव टीकायां··· संवत् १८६१ मार्ग सीरवदी १२ कृष्ण पक्ष बुधवार दिने इदं पुस्तकं लिकतं कृष्णलाल ॥
२३·२ × ९·१ सें मी०	५३ (१–५३)	८	२९	पू०	प्राचीन सं०१७३४	इति श्री कुमार संभवे महाकाव्ये कवि श्री कालिदास कृतौ उमाविवाह वर्णनं नाम सप्तम. सर्ग ॥ कुमारः समाप्तः ७॥ रामार्पणमस्तु ॥ संवत् १७३४ शके विक्रमे × × × ॥
२० × १३ सें० मी०	६४	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मवाक्य प्रामाण पारावारीणा महोपाध्याय मल्लिनाथसूर विरचितायां कुमार संभवाख्यासंजीवनी समाख्या प्रथमसर्गः समाप्तः ॥

(सं० सू० ३-५६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
६९	५०६१	कुमारसंभव (संजीवनीटीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
७०	२८२८	कुमारसंभव (संस्कृतटीका)	कालिदास	सरस्वतीतीर्थ	दे० का०	दे०
७१	२९५८	कुमारसंभव (संस्कृतटीका)	कालिदास		दे० का०	दे०
७२	६२५	कुमारसंभव (संस्कृतटीका)	कालिदास		दे० का०	दे०
७३	६५७७	कुवलयानंद	अप्पयदीक्षित		दे०का०	दे०
७४	३१७९	कुवलयानंद	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०
७५	५६६०	कुवलयानंद	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०
७६	७१११	कुवलयानंद	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.६ × १०.६ सें० मी०	१७	१०	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाण पारावारिण श्री महोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां कुमार संभवाख्यायां संजीविनी समाख्यायां पंचमः सर्गः ॥ (पृ० सं० ४१)
२४.५ × १० सें० मी०	५०	१०	३९	अपू०	प्राचीन	
२४.९ × १० सें० मी०	२१ (१-१६, १८-२२)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११.४ सें० मी०	५	१४	४०	अपू०	प्राचीन	
२४.४ × ११.२ सें० मी०	९० (१-९०)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदद्वैतविद्याचार्य श्रीभारद्वाज कुलजलनिधि कौस्तुभ श्री रंगराजाध्वरीद्रवरदसूनोरप्पदीक्षितस्य कृतिः कुवलयानंदः समाप्तः ॥ ...
२५.२ × १०.५ सें० मी०	५८ (१-५६ ५८,६१)	११	४८	अपू०	प्राचीन सं० १८४०	श्रीमदद्वैतविद्याचार्य श्रीभरद्वाजेकुलजलनिधि कौस्तुभ श्रीरंगराजाधरीद्रवरदसूनोऽप्प दीक्षितस्य कृतिः कुवलयानन्दः समाप्त. ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीचन्द्रचूडकरलेखविलासलीलापोषे विधौ विजयतेशुदि शैवतिथ्याम् वर्षेखवेदगजभूमि मितेविवर्षे भूयोऽनुरागतरलोत्कत्तया-मतीनस्म् श्री काशी विश्वेश्वरायनमः...
२३.७ × १०.३ सें० मी०	९ (१-९)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति कुवलयानंद कारिकाः समाप्ताः ॥
२६.५ × १० सें० मी०	७१ (१-७१)	९	४९	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदद्वैतविद्याचार्य श्री मद्भ्राज कुलजलनिधिः श्री कौस्तुभ श्रीरंगराजाध्यरिवर्य सूनोरप्येजी दीक्षितस्य कृतिः कुवलयानंदः संपूर्णेतिक् ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	६७८	कुवलयानंद	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०
७८	१६४७	कुवलय नंद	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०
७९	१५६०	कुवलयानंद (अलंकारकारिका)	,,		दे० का०	दे०
८०	१९७५	कुवलयानंद (अलंकारचंद्रिकाटीका,	,,		दे० का०	दे०
८१	१९७४	कुवलयानंद (सटीक)	,,		दे० का०	दे०
८२	६३३	कृष्णकर्णामृत	लीलाशुक		दे० का०	दे०
८३	२८८०	कृष्णकर्णामृत (प्रथमसे तृतीयपरिच्छेदतक)	लीलाशुक		दे० का०	दे०
८४	१७९४	(श्री) खंडकाव्य			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	४५	अपू०	प्राचीन	
२८ × १२·५ सें० मी०	११ (२–१२)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × ९·७ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३०	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति कुवलया नन्दालंकार कारिका समाप्ता शुभमस्तु ॥ संवत् १८३६ केशाल पुस्तक लिखा ॥
२२·३ × १२·३ सें० मी०	३९ (१,४-८, १०-४२)	१०	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पादं वाक्य प्रमाणाज्ञतत्सदाम भटात्मज वैद्यनाथकृताऽलंकारचंद्रिकाख्या कुवलयानंद टाका संपूर्णम्० ॥ ॥ शुभमस्तु ॥
२२·३ × १२·३ सें० मी०	८८ (१-८७-९०)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२५ × ११½ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री लीलाशुक विरचिते कर्णामृते- शतक प्रथम प्रकरणं समाप्तं ॥ कृष्ण गोपाल चूडामणयेनमः ॥
३२·२ × १२ सें० मी०	२७ (१-९,१-९, १-९)	९	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री लीलाशुकविरचिते श्रीकृष्णामृत स्तोत्र तृतीयशतकं संपूर्णतामगमत् ॥
२९·५ × १६ सें० मी०	४	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री खण्डकाव्य संपूर्णं ॥ लिखितं मिदंपुस्तकं पंडित त्रिलोचनरिह अस्थाने परमहंसार्थ आश्विन १६ प्रतिपदातिथौ सूर्यवासरे शुभं पोथि काव्येदिपत्रे४ श्लोक २२ मध्यान्ह वेलायं ॐहरि नारायणे···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	४३३४	गंगालहरी	जगन्नाथपंडित		दे० का०	दे०
८६	४५७४	गंगालहरी	पं० जगन्नाथ		दे० का०	दे०
८७	७८८९	गंगालहरी	पंडितराजजगन्नाथ		दे० का०	दे०
८८	७४२०	गंगालहरी	पंडितराजजगन्नाथ		दे० का०	दे०
८९	७५३८	गंगालहरी	पं० जगन्नाथ		दे० का०	दे०
९०	४६७५	गंगालहरी (टीकासहित)	पं० जगन्नाथ		दे० का०	दे०
९१	५२७२	गंगालहरी (सटीक)	पंडितराजजगन्नाथ		दे० का०	दे०
९२	१२१	गाथासप्तशती (संस्कृतटीका)	हाल		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·८ × ८·८ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री जगन्नाथ पंडित निर्मिता गंगा लहरी समाप्ता ॥
२२·३ × १२·५ सें० मी०	८ (१-२,४-७ ९-१०)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १२·७ सें० मी०	८ (१–८)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री पंडितराज जगन्नाथ कृता गंगा लहरी समाप्तेमगात् ॥ × × ×
१९·९ × ७·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	२५	पू०	प्राचीन	
१५·७ × १०·७ सें० मी०	११ (१–११)	९	२१	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्री जगन्नाथ विरचिता गंगा लहरी स्तोत्रं संपूर्ण ॥ मिती कार्तिक वद्य ११ संवत् १९०७ ·······।
३२·८ × १४·८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	५१	अपू०	प्राचीन सं०१८९३	इति श्री पंडित राज जगन्नाथकृता गंगा-लहरि समाप्तिमगात् ॥ संवत् १८९३॥
२५·२ × १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	१३	५०	अपू०	प्राचीन	
३२·५ × १३·९ सें० मी०	२५ (१-२४,२७)	१५	३८	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

ांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९३	३५७२	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९४	३१०५	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९५	३१९१	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९६	३२०६	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९७	३२६०	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९८	३३६४	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
९९	३३६८/४६	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१००	६३६	गीतगोविंद	जयदेवकवि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·३ × ९·३ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री गीतगोविंद काव्य समाप्तः संवत् १८५५ शाके १७१६ द्वितीश्रावणे मासे कृष्णपक्षे तिथौ सप्तम्यां भृगुवासरे ···
१७·२ × ११·७ सें० मी०	१४९ (२-६३, ६७-१५४)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	
१२·२ × ५·४ सें० मी०	२ (३, ६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११ सें० मी०	४६ (२-३५, ३३-४६)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे श्री कवि नृप श्री जयदेव कृते स्वाधीन भर्तृका वर्णने प्रीतपीतांबरोनाम द्वादशः सर्गः ॥
१९·३ × ११ सें० मी०	३२ (१–३२)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ८·४ सें० मी०	४९ (३–५१)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे जयदेव कृते महाकाव्या सुप्रीतपीताबरोवसहादसाः पः ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	७३	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे जयदेवकृतौ स्वाधीन भर्तृका वर्णने संप्रीत पीतांवरो नाम द्वादश सर्गः १२ श्रीराम ॥
३० × १२ सें० मी०	१० (५–१३, १६)	९	५०	अपू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री गीतगोविन्दो जयदेवकृत समाप्तिमगमत् श्रीसंमत् १८८२ आषाढ़ कृष्ण द्वादश्यां चन्द्रवासरे लेखनेन समाप्तोऽभवत् गीतगोविन्दः राधाकृष्णाभ्यां नमः । रामायनमः ॥

(सं०सू०-३-५७)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	५८२	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०२	३६०२	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०३	५४४२	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०४	२०८०	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०५	५७५१	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०६	५६१५	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०७	५६८०	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
१०८	६२३६	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·७ × १० सें० मी०	४६	९	२०	पू०	प्राचीन	इति रामलक्षमणौ कौशिकानुज्ञेयासुर सरितकृतनमस्कारे ॥ भणितमिदमादरंधीर जयदेव कवि तारयसि भवजलधिपारे नमोदेविगंगे नमो मातृगंगे ॥
२३·५ × ११·७ सें० मी०	१७ (२–१८)	७	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे मुग्ध मधुसूदनोनाम तृतीयसर्गा: × × × (पृ० सं० १६)
१६·५ × ११·३ सें० मी०	४१ (२–४२)	१३	१८	अपू०	प्राचीन सं० १७९९	इति श्रीगीतगोविंदे महाकाव्ये श्रीजयदेव कृतौ स्वाधीन भर्तिकावर्नने सुप्रीतयां तावरो नाम द्वादशो सर्ग.······ संवत १७९९ (?) (पृ० सं० ४१)
२५ × १०·५ सें० मी०	१६ (१-११, २५-२९)	८	२९	अपू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री गीतगोविंदं नाम महाकाव्यं समाप्तं। संवत् १९१७ मार्गशीर शुक्ला १५ लिषितं स्वार्थ घासीरामेण।।
१६ × ७·७ सें० मी०	४७ (२–४८)	७	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे महाकाव्ये रासलीला वर्णनं सामोद दामोदरो नाम प्रथम: सर्गा: ।।१।। (पृ० सं० ९)
२६·५ × १०·४ सें० मी०	२५ (४-९,११-२६,२९-३१)	७	२९	अपू०	प्राचीन सं० १७२८	श्री गीतगोविंदत: २ इश्री त विस्वा नर्तृ वने पी पी व ना द्वा श ग्र्गा: १२ संवतु १७२८ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे ३० गुरुवासरे······ ॥
१५·३ × ९ सें० मी०	५५ (१–५५)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८७९	इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये स्वाधीन भर्त्तृकावर्ननं सुप्रीतपीतांवरोनाम द्वादश: सर्ग: ।। २१।।··संवत् ।।१८।।७९।। लिष्यतं पं० श्री चौवे गंगाराम
२३·५ × १५·५ सें० मी०	२० (१–२०)	२१	१७	पू०	प्राचीन सं० १७८०	इति श्री गीतगोविदभिधंकाव्यं समाप्तं।। आगरा मद्ये लखतं यादवजी महादेव नागर वडनगरा ग्नाति ॥···संवत १७८० वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे मती [illegible]।।···

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९	७४३४	गीतगोविंद	जयदेव		दे० का०	दे०
११०	३३९५	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव	वनमाली	दे० का०	दे०
१११	९६६	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव		दे० का०	दे०
११२	६५३	गीतगोविंद (रसमंजरी टीका)	जयदेव	म०म०शंकर मिश्र	दे० का०	दे०
११३	२३९९	गीतगोविंद (संस्कृतटीका)	जयदेव	नारायणपंडित	दे० का०	दे०
११४	२२६४	गीतगोविंद (संस्कृतटीका)	जयदेव		दे० का०	दे०
११५	२३९५	गीतगोविंद (संस्कृतटीका)	जयदेव		दे० का०	दे०
११६	२४९५	गीतगोविंद (संस्कृतटीका)	जयदेव		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८.८ × १०.३ सें० मी०	१४	९	१८	अपू०	प्राचीन	
२४ × १३.६ सें० मी०	३ (१–३)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०.५ सें० मी०	२० (२–२१)	१६	६८	अपू०	प्राचीन	
३०.८ × १२.६ सें० मी०	७० (२०-८९)	११	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहामहोपाध्याय दिनेश्वर मिश्रात्मज श्री महामहोपाध्याय शंकर मिश्र विरचितायां श्री सालिनाथकारितायां गीतगोविंद टीकायां रसमन्जरी समाख्यायां द्वादश सर्ग समाप्त शुमस्तु राम ॥
२५.२ × ११.९ सें० मी०	५६ (१३, १४, २७-७९, ८१, ८२)	१५	४१	अपू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्री गीतगोविंद टीकायां नारायण पडितेन कृतायां भीषीदास कारितायां पदद्योततिकायां द्वादशः सर्गः…संवत् १८६२ मितिमार्गशिर शुदि १३ बुधे ……शुभमवतु ॥
३०.२ × १६.१ सें० मी०	५६ (१–५६)	१४	४३	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्रीगीतगोविंद टीकायां…संवत् ॥१९२२ ॥
२४ × १४.८ सें० मी०	९८	१६	२६	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १४.८ सें० मी०	८६	१३	२६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११७	७३३७	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव		दे० का०	दे०
११८	४८२०	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव		दे० का०	दे०
११९	४४९७	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव		दे० का०	दे०
१२०	७४०८	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव	भीषीदास	दे० का०	दे०
१२१	५११७	गीतगोविंद (सटीक)	जयदेव	नारायणपंडित	दे० का०	दे०
१२२	५७७८	गीतगोविंद (१३वाँसर्ग)	जयदेव		दे० का०	दे०
१२३	१५२४	गोपिकागीत			दे० का०	दे
१२४	२९४८	गोवर्धनसप्तशती (आर्यासप्तशती)	गोवर्धनाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.६ × ११.१ सें० मी०	१२१ (१–१२१)	७	३५	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री गीतगोविंदे महाकाव्ये जयदेव-कृते सुप्रीतपीतांबरो नाम द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥ श्रीराधा कृष्णाभ्यांनमः सं० १६१५ ···
३२.१ × १६ सें० मी०	५३ (१–५३)	१२	५३	पू० (जीर्ण)	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री जयदेव कृतौगीतगोविंदे सुप्री-तिपीतां बरोनामद्वादश सर्गः १२ अयं गीतगोविंदः श्री वृंदावनमध्य रसिक विहारि कुञ्जे नंदरामेन लिखितः कार्तिक शुक्लपक्षे पंचम्यां संपूर्णतामगमत् संवत् १८ स ७१ ॥
१६.६ × १४.८ सें० मी०	१५ (४,२५-३८)	१६	२७	अपू०	प्राचीन	
३४ × १३.१ सें० मी०	७७ (२-३३; ४०-८४)	१०	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे सू प्रीतिपीतांबरो नाम द्वादशसर्गः ॥१२॥ समाप्तशुभं भयात् ॥ सम्वत् १६१४ फाल्गुणस्य-शितेपक्षे × × इति श्री गीतगोविंदे टीकायां नारायण पंडित कृतायां भीषी दास कृतायां पदद्योतनिकायां द्वादश सर्गः १२ ॥
२५.५ × ११.२ सें० मी०	८४ (१-४४, ४६- ८५)	६	४३	अपू०	प्राचीन सं०१७६२	इति श्रीगीतगोविंदटीकायां नारायण पंडित कृतायां पदद्योतनिकायां द्वादशः सर्गः ॥ समाप्तोयं गीतगोविन्दः॥ ··· संवत् १७६२ लिखितं महानवम्यां वैवेनीदत्तेन पुस्तकमिति ॥
२४.३ × १०.७ सें० मी०	३४ (१–३४)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री गीतगोविंदे जयदेव कविकृते त्रयोदशः सर्गः ॥ समाप्तः ॥ १३॥शुभं
१३.५ × १३.५ सें० मी०	४	११	१३	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकत्रिंशत्तमोध्यायः ३१ गोपिका गीत समाप्ताः छः संवत् १६११ बुधवार।
२६.८ × ८.५ सें० मी०	४	८	४५	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२५	६३४	घटकर्परकाव्य	घटकर्पर	अज्ञात	दे० का०	दे०
१२६	७२६७	घटकर्परकाव्य (सटीक)	घटकर्पर		दे० का०	दे०
१२७	७४१९	घटकर्पर (सटीक)	घटकर्पर		दे० का०	दे०
१२८	५७६	घटखर्परकाव्य	घटखर्पर		दे० का०	दे०
१२९	७४२३	घटखर्परकाव्य (व.लवोधिनी विवृति)	घटखर्पर	गोविंद-ज्योतिर्विद	दे० का०	दे०
१३०	७८८९	चंद्रालोक	जयदेव	प्रद्योतन भट्टाचार्य	दे० का०	•
१३१	५६५४	चंद्रालोक	जयदेव		दे० का०	दे०
१३२	७०८१	चंद्रालोक	जयदेव		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४ × १२ सें० मी०	४	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति घटकर्पर काव्य समाप्तम् ॥
२२.३ × ११.१ सें० मी०	११ (१–११)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति घटकर्परस्य टीका समाप्ता ॥
२१.४ × ८.५ सें० मी०	५ (१–५)	१५	३३	पू०	प्राचीन	॥इति ॥ श्री घट ॥कर्परं ॥ काव्यं ॥ समा ॥ प्तं ॥ तिलकैः समाप्तं ॥
२६ × ११.५ सें० मी०	१२	७	३६	पू०	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री घटखर्परेण कृत घटखर्पराख्यं काव्यं सटीक समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८५८ मार्गशिरवदि चतुर्थि ४ भौमवासरे पुस्तग लिखतं लक्ष्मण ब्राह्मण घृत कौशसगोत्रस्य ॥
१९.७ × ८ सें० मी०	२४ (१–२४)	९	३१	पू०	प्राचीन श० १५१०	इति श्री समस्त विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंद विरचिता बालावबोधिनी घटखर्पर विवृतिः समाप्तिमगमत् ॥ श० १५१० भाद्रशु० ८ ॥
२२.६ × १२ सें० मी०	५३ (१-५०, ५०-५३)	११	३४	पू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्री पीयूषवर्ष पंडित श्री जयदेव विरचिते चंद्रालोकेऽभिधास्वरूपोनाम दशमोमयूखः १० + × मिश्र वलभद्रात्मज सकल शास्त्रारविद प्रद्योतन भट्टाचार्य विरचिते चंद्रालोक प्रकाशे शरदागमे दशमोमयूखः १० समाप्तोयं ग्रंथः सम्वत् १८६२ आश्विन × ×
२९.८ × ११.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्री पीयूष वर्षपंडित जयदेव विरचिते चंद्रालोकालंकारे विचारो नाम प्रथमो मयूषः समाप्तः (पृ० ५) ॥
२५.४ × १०.९ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री जयदेव कवि रचिते चन्द्रालोकलंकारऽभिधान निरुपणो नाम दशमो मयूषः॥

(सं०सू० ३-५८)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	३८२२	चंद्रालोक	अप्पय्यदीक्षित		दे० का०	दे०
१३४	३९	चंद्रालोक	जयदेव		दे० का०	दे०
१३५	७१४२	चंद्रालोक			दे० का०	दे०
१३६	६३०७	चंद्रालोक			दे० का०	दे०
१३७	३२६४	चंपूकाव्य	केशवभट्ट		दे० का०	दे०
१३८	२९५४	चंपूप्रवंध			दे० का०	दे०
१३९	१८८१	चतुःश्लोकी	यामुनाचार्य		दे० का०	दे०
१४०	५६७६	चित्रमीमांसाखंडन			दे० का०	[illegible]

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.४ × १३ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १८३५	इत्यलंकारश्चन्द्रालोकाभिधः समाप्तः ॥ ··· ··· सम्वत् १८३५ ॥
२५ × ११.३ सें० मी०	११	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८१५ शा. १६८०	इति चंद्रालोकः समाप्तः ॥ सम्वत् १८१५ शाके १६८० ज्जेष्ठवदि २ बुद्धे।
२०.४ × ८.५ सें० मी०	८ (१–८)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति अलंकारशतं समाप्तं ॥
२२.८ × १०.१ सें० मी०	४ (१-३,५)	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × १०.५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति मन्महाराजाधिराजस्पृहनीय शौर्योदार्य धुर्यता गांभीर्याद्यनेकानयगुणगणविराजमान श्रीमदुमापतिदलपानिराजाद्योजितभट्टकेशव विरचिते चंपूकाव्ये पंचमः स्तवकः ॥५॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८६४ आश्विन सु ११ चंद्रवासरे समापिमगत् ॥
३१ × १२.५ सें० मी०	६९ (३३,३७-१०५)	८	३४	अपू०	प्राचीन	लल्लादीक्षित वाधत्रकर विरचिते वाघेल वंशावत··· एकोनविंशति··· सुकर्माणि समाप्तिः ॥
३२ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	११	४४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्यामुनाचार्य विरचिता चतुः श्लोकी संपूर्ण ॥०॥ श्रीमते वेंकटेशाः नमः श्रीमतेहयग्रीवाय नमः ॥श्रीराम।
२९ × ११ सें० मी०	१५	९	५२	अपू०	प्राचीन	इति चित्रमीमांसाखण्डने संशयालंकृतिः॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	५०८०	चौरपंचाशिका	चौर कवि		दे० का०	दे०
१४२	७६६५	चौरपंचाशिका	चौर कवि		दे० का०	दे०
१४३	३२१	चौरपंचाशिका	चौर कवि		दे० का०	दे०
१४४	५१४	छंदकल्पलता			दे० का०	दे०
१४५	२५०५	छंदशास्त्र			दे० का०	दे०
१४६	७८३८	छंदालंकार संग्रह			दे० का०	दे०
१४७	३६३८	छंदोमंजरी			दे० का०	दे०
१४८	३६३७	छंदोमंजरी			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·८ × ९·७ सें० मी०	५ (८–१८)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं० १९३५	इति बिल्हण द्विपंचाशिका समाप्ता-लिखिता पं श्री पडित मथुरा प्रसादेन संवत् १९३५ × × × ॥
२५·२ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति चौर पंचासिका समाप्ता शुभमस्तु ॥ संवत् १ ७१ ॥
२५ × १३·२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री चौरपञ्चाशिका ग्रंथ: ॥
२४·२ × १० सें० मी०	८	१४	३६	पू०	प्राचीन	किंतुमहाकवयो तद्विषये निरंकुशादृश्यते॥ इति श्री ।
२४ ७ × १० ५ सें० मी०	३ (२–४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × ८ सें० मी०	४९	७	३४	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × ७·८ सें० मी०	९ (१–९)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति छंदोमंजरी समाप्तः ॥
१९ × ८·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	२६	पू०	श० १६७६	इति छंदोमंजरी समाप्ता ॥ श्रावणवद्य अष्टम्यां मंदवारे अमरावती ग्रामनगरे सदाशिव कवीश्वरेण लिखितं ॥ शंके १६७६ जयनामाब्देवत्सरे ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४९	३३५१	छंदोमाला	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१५०	५८६३	जानकीगीत	हर्य्याचार्य		मि० का०	दे०
१५१	१५८०	꣼ जिनशतक	समंतभद्र		दे० का०	दे०
१५२	१०४४	दिव्यसूरि चरित (नित्यसूरी)			दे० का०	दे०
१५३	१०७१	दुर्घट काव्य (सटीक)			दे० का०	दे०
१५४	६०५१	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रमाचार्य		दे० का०	दे०
१५५	४६३	धर्मशर्माभ्युदय काव्य (प्रथम से तृतीय सर्ग तक)	हरिश्चंद्र		दे० का०	दे०
१५६	५६४४ / १७	ध्वनिनिर्णय			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·२ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३८	पू०	प्राचीन	श्री शार्ङ्गधरेणाग्निहोत्रिणा रचितामिमा ॥ छदोमाला सदाकंठे धारयंतु सदाजना: ॥ श्री ··· ··· ···
१६·५ × १०·४ सें० मी०	१७	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १९८४	इति श्री जानकी गीत सम्पूर्णम् शुभम् प्रति पं श्री देउलिया पंच श्री लक्ष्मी प्रशाद जू के नासे टहरोली संवत् १९८४ ॥
२८·३ × १०·७ सें० मी०	४ (१–४)	१८	६६	पू०	प्राचीन सं० १५२४	इति जिन शतक समाप्तं ॥ ब ॥ ॥ ब ॥ ग्रंथ एवं २६३ ॥ संवत् १५२४ वर्षे पोष वदि १३ शनि लिषिता गणि अमर चंद्र पठनार्थं ॥
३०·५ × १६ सें० मी०	६९ (१–६९)	१२	४६	अपू०	प्राचीन सं० १९०३	इति दिव्य सूरी चरितेष्टादश: सर्ग: मिती माघ सुदि गुरौ का सं० १९०३ केसाल ॥
३२·५ × १२·५ सें० मी०	१३	१२	४१	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति दुर्घट समाप्त: शुभज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे अष्टम्यां शनिवासरे लिखितोय शिवप्रसादेन निजार्थं शुभ संवत् १८८४ राम राम राम ॥
२१·८ × १३·३ सें० मी०	६ (१–६)	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री रामाश्रमाचार्य विरचिता दुर्ज्जनमुख चपेटिका संपूर्ण संवत् १९०३ चैत्र कृष्ण चतुर्दशी भौमवासरे।
२८·८ × १३·२ सें० मी०	४३ (१–३२, १–११)	७	३६	पू०	प्राचीन सं० १९५४	इति महाकवि श्री हरिश्चन्द विरचिते धर्मशर्माभ्युदये महाकाव्ये तृतीय सर्ग: संपूर्ण: ॥ मिती पौष शुक्ला तृतीया रविवासरे सं० १९५४ तारीख २६ दिसंबर सन् १८९७ ॥
१३ × ८·५ सें० मी०	९ (७१–७९)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशपादपद्मोपाजीविपौचार पर्याय प्रशिष्य विरचितो ध्वनिनिर्णय: समाप्ता ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	३१४७	नलचंपू (प्रथमसर्ग)	त्रिविक्रम भट्ट		दे० का०	दे०
१५८	४४५८	नलोदय काव्य (सुबोधिनीटीका)	कालिदास		दे० का०	दे०
१५९	२०९७	नलोदयकाव्य	कालिदास		मी० का०	दे०
१६०	३६१७	नवसाहसांकचरित	पद्मगुप्त		दे० का०	दे०
१६१	३६८९	नागानंद (नाटक)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१६२	३६५८	नायिकावर्णन	श्रीराम कवि		दे० का०	दे०
१६३	५०९५ / ३	नीतिशतक (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
१६४	४७५०	नृसिंहचंपूकाव्य	केशव भट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·२ × ९·७ सें० मी०	२० (१–२०)	७	४२	पू०	प्राचीन श०१७९५	इति श्री त्रिक्रमभट्ट विरचितायां दमयंती कथायां हरचरणसरोजंक: प्रथम उछ्वास: समाप्त: ॥······गणेशात्मज माधवशर्मणा चक्रपुरी राजधान्यां शाके १७९५ पार्थिव नाम संवत्सरे कार्तिक वद्यशिवरात्र्यां भौमवासरे इदं पुस्तकं लिखितं ।.
२७·३ × १०·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५६	अपू०	आधुनिक	इति श्री महाकवि कालिदास विरचिते नलोदये सत्काव्ये प्रथमोच्छ्वास: ॥ (पृ० १०)
२४ × १० सें० मी०	८ (१–८)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·३ सें० मी०	९ (१-२,२९, ३५-३९,६०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति मृगांकगुप्त सूनो: परिमल परनाम्न: पद्म गुप्तस्य कृतौ नवसाहसांक चरिते महाकाव्ये पंचम: सर्ग: । (पृ० ३८)
२४·६ × ८·५ सें० मी०	५५ (१–५५)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति निष्कांता: सर्वे पंचमोंक: ॥ समाप्तं चेदं नागानंदनाम नाटका ॥
२७·३ × ८·४ सें० मी०	४ (१–४)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री रामविरचितं नायिकावर्णनं संपूर्ण संवत् १९२३ शक: १७८८ वै शु० ६ ॥
३२·५ × १४·८ सें० मी०	१०½ (२–१२)	१३	५१	अपू०	प्राचीन	इति भर्तृहरिणा विरचितं सटीकन्नीति-सतकं संपूर्णम् शुभंभूयात् ॥
२७·२ × ११·७ सें० मी०	५ (१–५)	११	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मम्मट्ट केशव विरचिते चंपू-काव्ये द्वितीय स्तबक: ॥
(सं०सू०३-५९)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६५	२६१	नैषध	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१६६	२४६७	नैषध	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१६७	७४६५	नैषध	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१६८	७१३८	नैषध	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१६९	२१४३	नैषध	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१७०	१६२८	नैषध (सटीक)			दे० का०	दे०
१७१	४६१८	नैषध (सटीक)			दे० का०	दे०
१७२	४४३३	नैषध (नैषधीयप्रकाश)	श्रीहर्ष	नारायण	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ८·३ सें० मी०	४२ (१९–६०)	८	५६	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	६५	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७·९ × ८·२ सें० मी०	५ (१४–१८)	७	४५	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × १०·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
२४·१० × ८·२	९३	८	४९	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × ११ सें० मी०	५२	१०	३१	अपू० (जीर्ण शीर्ण)	प्राचीन	
२९ × ११·२ सें० मी०	३ (७,३०-३१)	९	४१	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × १०·५ सें० मी०	५६	९	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री वेदरकरो पनाम श्री मन्नरसिंह पंडितात्मजनारायण कृते नैषधीय प्रकाशे त्रयोदशः सर्गः ।। (पृ० सं० ३९) × × ×

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	११३८	नैषध (सटीक)			दे० का०	दे०
१७४	८४८	नैषध (पंचमसर्ग सटीक)			दे० का०	दे०
१७५	१८८५	❀ नैषध (पूर्वार्द्ध)	श्रीहर्ष		[illegible] का०	दे०
१७६	२६३८	नैषध (पूर्वार्द्ध)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१७७	६१८९	नैषध (पूर्वार्द्ध)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१७८	२५६	नैषध नैषध (१) प्रकाश टीका (२) नैषदगूढार्थप्रकाशिका	श्रीहर्ष	१ लक्ष्मणभट्ट २ रामकृष्ण शर्मा	दे० का०	दे०
१७९	१३१	नैषध (प्रथमसर्ग)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१८०	५४८	नैषध (षष्टसर्गः) (काशिका टीका)	श्रीहर्ष	लक्ष्मणशर्मा	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × १२.८ सें० मी०	१२६ (१-२७, ७३-१७१)	१३	५१	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × ११.५ सें० मी०	२४ (१-२४)	१४	४८	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × ९.८ सें० मी०	११० (१-४८, ५०-१११)	७	४६	अपू०	प्राचीन सं० १७०६	श्रीहर्षकविराज राजिमुकुटालंकार हरीः मुतं श्रीहरी. सुषुवेजितेन्द्रियवयंमामल्लदेवी च। यां शृंगारामृत शीतगावयमगादेकादशस्मन्महाकाव्योस्मन्निषधेश्वरस्य ...समाप्तोयंनैषध पूर्वार्द्धः ॥ संवत् १७०६ समयमाघशुद्ध ॥१३॥
२७ × ८ सें० मी०	१२	८	४८	अपू०	प्राचीन	
२६.४ × ९.३ सें० मी०	१४१ (१-१४१)	६	४३	पू०	प्राचीन सं० १६००	श्रीहर्षमित्यादि ॥ शृंगारामृतशीत गावयमगादे काश दस्मन्महाकाव्यै चारुणि वैरिसेनि चरिते सज्जोंनिससर्ज्जोल्लल:। १२८॥ अनैषधमैषधोनाम एकादशः सर्गः ॥ संवत् १६ समये चैत्रवदि पंचम्यामिदं पूर्वार्द्धा संपूर्ण ॥शुभमस्तु॥
२६ × ११.५ सें० मी०	६२ २७ (२०-४६) ४५ (१से५७ तक स्फुटपत्र)	६	४२	अपू०	प्राचीन सं० १७४७	इति लक्ष्मणभट्ट कृतौ नैषधप्रकाशे तृतीय सर्गः प्राप्त जो मानुषमा विचुध श्रीरामकृस्न शर्मायं लक्ष्मण रार्ता कृतवा नैषध गूढार्थ काशिकां॥ सं० १७४७ शुभमस्तु
२७.४ × ११.२ सें० मी०	१३ (१-१३)	८	३५	पू०	प्राचीन श० १७६६	श्रीहर्षक विराजराजि मुकुटालंकार हरीः ...॥ शाके १७६६ व्ययनाम संवत्मे कार्तिक शुक्ल दितीयायां सौम्यवासरे यत्तं इत्युपनामक गणेशात्मज माधव शर्मणा लिखितं च त्रपुर्या॥
२६ × ११ सें० मी०	२४ (१-२४)	६	४०	पू०	प्राचीन सं० १७४७	इति श्री लक्ष्मण कृते नैष गूढ़ार्थ प्रकाशे षष्ट सर्गः ॥ लक्ष्मणशर्मकृतवान्नैषध गूढ़.र्थकाशिकाटीका । संवत्स १७४७ फागुण शुदि ४ शनिवासरे ॥ शुभमस्तु॥ श्री रस्तु॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८१	४५४०	नैषध चरित (संस्कृतटीका)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१८२	११२६	नैषध भावद्योतनिका टीका		शेषरामचंद्र	दे० का०	दे०
१८३	४११६	नैषध (सटीक)	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१८४	२५०७	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१८५	५२८	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
१८६	५१३	नैषयीचरितम् (चतुर्थसर्ग सटीक)			मि० का०	दे०
१८७	१३५६	पंचशायक३	कविशेखर ज्योतिरीश		दे० का०	दे०
१८८	६२१६	पंचशायकम्	कविशेखर ज्योतीश्वर		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२८·७ × ११·७ सें० मी०	३२ (२–३३)	६	४४	अपू०	प्राचीन सं०१७४८	समाप्तोयं शुभमस्तु ॥ सवत्सं १७४८ समे चैत्रशुदि नवमिशुक्रवासरे लिखितं हरिप्रशाद मिश्रेण लिखापि वालकृष्ण त्रिपाठिनः रिवा मध्ये ··· शुभमस्तु ॥···
२८ × १२·८ सें० मी०	१६३	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शेषरामचंद्र विरचितायां नैषध भावद्योतनि कायांपंचमः सर्गः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥···
२४·२ × ८·६ सें० मी०	८४ (२-४३,४३-६३,६७-८५)	६	३२	अपू०	प्राचीन	श्री हर्ष कविराज राजिमुकुटालंकार हरीः सुतं श्रीहरीः सुषवे जितेंद्रिय चयं मामल्ल देवी च यं तच्चिंतामणि मंत्र चिंतनफले श्रृगार भंग्यामाहा काव्ये चारुणि नैषधीय चरिते सर्गोयमादिर्गतः (पृ० सं० १३, पुष्पिका)
२५·८ × ८·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	४५	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	४५ (१-२८,३६-५५)	७	३६	अपू०	प्राचीन	
२८·८ × ११ सें० मी०	६	६	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × ६ सें० मी०	४३ (१-३६,४३-४६)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री कविशेषर ज्योतिरिशकृत पंचशायक वामकाव्य समाप्तम् शुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥४॥
१२·८ × १०·३ सें० मी०	४६ (३-४६,४८ पत्र ३७ दो है)	१२	१५	अपू०	प्राचीन	इति कवि शेषर श्री ज्योतीश्वर विरचिते पंचशायके द्वितीय ॥ (पृ० १६)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८९	३३६५	पद्यरचना	लक्ष्मणभट्ट		दे० का०	दे०
१९०	३८८६	पद्यरचना	आंकोलकर लक्ष्मणभट्ट		दे० का०	दे०
१९१	१७८	पांडवचरित	लक्ष्मीदत्त		दे० का०	दे०
१९२	५०५८	पिंगलसूत्र	पिंगल		दे० का०	दे०
१९३	३६७९	प्रबोधचंद्रोदय	कृष्णमिश्र		दे० का०	दे०
१९४	१४४१	प्रबोधचंद्रोदय	कृष्णमिश्र		दे० का०	दे०
१९५	१५६०	प्रबोधचंद्रोदय	कृष्णमिश्र		दे० का०	दे०
१९६	४०	प्रबोधचंद्रोदय (विच्चन्द्रिका टीका)	कृष्णमिश्र	गणेश	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·४ × ९·४ सें० मी०	२७ (१५–४१)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री आंकोलकर लक्ष्मणभट्ट कृतौ पद्यरचनायां तृतीयो व्यापारः (पृ० सं० १७)
२३·२ × ९·६ सें० मी०	३ (४२–४४)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री आंकोलकर लक्ष्मणभट्ट कृतौ पद्यरचनायामेकादशो व्यापारः (पृ० सं० ४३)
२४·५ × १३·८ सें० मी०	१३३ (१से१९७ तकस्फुटपत्र)	१७	१३	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
१७·१ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति पिंगलसूत्रं समाप्तं ।। श्रीमते रामानुजायनमः ।।
२२·६ × ११·५ सें० मी०	४२ (५-४४, ५१-५३)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति प्रबोधचंद्रोदय नाटके चतुर्थोऽकः समाप्तः × × × × (पृ० ३८)
२२·३ × १४·८ सें० मी०	५४ (८,१०, १६-६७)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	समाप्तंचेदं प्रबोध चंद्रोदयनाम नाटकं-समाप्तः ।।६।। शुभंभवतु ।।
२२·३ × ११·८ सें० मी०	१८ (१-१७,१९)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२६ × १० सें० मी० (सं०सू०३-६०)	५६ (३से७५तक स्फुट पत्र)	९	४२	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	१२४६	प्रबोधचंद्रोदय (सटीक)	कृष्णमिश्र	गणेश	दे० का०	दे०
१९८	३३५२	प्रबोधचंद्रोदय (संस्कृतटीका)	कृष्णमिश्र		दे० का०	दे०
१९९	३३१	प्रबोधचंद्रोदयचंद्रिका (पंचमअंक, सटीक)	कविकृष्णमिश्र	गणेश	दे० का०	दे०
२००	४७३८	प्रबोधचंद्रोदयनाटक	कृष्णमिश्र		दे० का०	दे०
२०१	१२९९	प्रशस्तितरंग			दे० का०	दे०
२०२	८४१	प्रशस्तिप्रकाशिका	वालकृष्ण		दे० का०	दे०
२०३	६३०६	प्रश्नोत्तररत्नमाला	शुकदेव		दे० का०	दे०
२०४	२९२१	प्रस्तारश्रृंगार			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

आकार का पत्रों या पृष्ठों	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × १०·८ सें० मी०	७	६	३०	अपू०	प्राचीन सं० १७६५	इति श्री भावाविश्वनाथ दीक्षित सुनु गणेश विरचितायां प्रबोध चंद्रोदयवियां सच्चिच्चंद्रिकायां षष्टोङ्कः ॥६॥ श्री रस्तू ॥ शुभमस्तु सं० १७६५······
२२ × ९·१ सें० मी०	१० (१–१०)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति प्रबोध चंद्रोदय व्याख्याने प्रकाशाख्ये प्रथमोंक: ॥ राम॥ श्रीरामायनमः ॥
२५·४ × ९·७ सें० मी०	१४ (२२-३१, ३८,३६,५८, ५९)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १२·७ सें० मी०	४१ (१–४१)	१३	३७	पू०	प्राचीन	इति निष्क्रांता: सर्वे प्रबोध चंद्रोदयेण मिश्र विरचिते षष्ठोक: समाप्तः ॥ समाप्तमिदं नाटकं ॥
३३ × १६·५ सें० मी०	४ (१–४)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	
३२ × १३·६ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री बालकृष्ण विरचिता प्रशस्तिप्रकाशिका समाप्ता ॥
२७ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १९४२	इति श्री शुकदेव वीरचीतं रत्नमाला समाप्तम् ॥ समत् १९४२ शुभंभूयात् ।
२२·७ × ९·८ सें० मी०	७ (१–७)	८	२८	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०५	५६२२	बालभारत (महाकाव्य)	अमरचंद्र		दे० का०	दे०
२०६	६०२७	बिल्हण पंचाशिका			दे० का०	दे०
२०७	४५६५	बिहारीसप्तशतिका			मि० का०	दे०
२०८	५०६०	ब्रह्मरामायण			दे० का०	दे०
२०९	४१४१	भट्टिकाव्य (रावणवध)	भट्टि		दे० का०	दे०
२१०	२०८६	भट्टिकाव्य (रावणवध)			दे० का०	दे०
२११	३६५३	भट्टिकाव्य (रावणवध)	भट्टि		दे० का०	दे०
२१२	३६२५	भट्टिकाव्य (रावणवध)	भट्टि (भर्तृहरि)		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·५ × १२ सें० मी०	५	१५	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री जिनदत्त सूरि शिष्यामरचंद्र विरचिते बालभारत महाकाव्ये त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥
२६·६ × ११·४ सें० मी०	५ (२–६)	६	३६	अपू०	प्राचीन	इति बिल्हन पंचासिका समाप्त ॥
२३·५ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	
३१·८ × ११·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	४३	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री ब्रह्मरामायणे व्यासनारद संवादे रासक्रीडायां पूर्णकलागुणमनोरथोनाम सप्तदशोध्यायः १७ सम्वत् १८८८ समयनाम आश्विनमासे कृष्णपक्षे षष्ठयां कुजवासरे वुभावन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तकं ॥...
२४·४ × ९·३ सें० मी०	६	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२७ × ८·५ सें० मी०	९०	६	५५	अपू०	प्राचीन	
२४·४ × ९·६ सें० मी०	५३ (१,३,६-५६)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभी वास्तव्यस्य श्रीस्वामिसूनोः भट्ट महाब्राह्मणस्य महावैयाकरणस्य कृती भट्टिकाव्ये रावणवधे तिङंत कांडे लुङविलसित नामनवमः परिच्छेद ॥...
२५·६ × १०·३ सें० मी०	१०६ (१-३२,४३-६४,१२३-१४७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरि कृते महाकाव्ये रावणवधे तिङन्तकांडे लृङविलसिते देवदर्शनोनामंक विशोः सर्ग ॥ (पृ० संख्या १४५) × × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	३६१२	भट्टिकाव्य (सटीक)	भट्टि		दे० का०	दे०
२१४	७३४३	भट्टिकाव्य (जयमगला टीका)	भट्टि		दे० का०	दे०
२१५	५१३८	भामिनीविलास	पंडितराज जगन्नाथ		मि० का०	दे०
२१६	५१०८	भामिनीविलास	पंडितराज जगन्नाथ		मि० का०	दे०
२१७	७७६	भामिनीविलास (सव्याख्या)	पंडितराज जगन्नाथ		दे० का०	दे०
२१८	२८१७	भावशतम्	नागराज		दे० का०	दे०
२१९	६५३५	भृंगाष्टक			दे० का०	दे०
२२०	६५८०	भोजप्रबंध	बल्लालसेन		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ९·१ सें० मी०	८३	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
३३·३ × १५.५ सें० मी०	३५ (१-१०, १४-३६)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति भर्तृकाव्य टीकायां जयमंगलायां प्रकीर्णकांडे सीतापरिणयो नाम द्वितीयः सर्गः (पृ० सं० १८)
२१ × ९·८ सें० मी०	४५ (१-४५)	४८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमज्जगन्नाथ पंडितराज विरचिते भामिनीविलासे चतुर्थोविलासः समाप्तः (पृ० सं० ४४)
१८·३ × १३·८ सें० मी०	१९ (१-१९)	१५	२६	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमत्पंडितराय जगनाथविरचिते-भामिनी विलासे शांतशुद्धोविलासः समाप्तोभामिनी विलासः ४ (पृ० संख्या १७) × × ×
२३·९ × १०·४ सें० मी०	२२ (१-१७, १९-२३)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाण पारावार··· ···भामिनी विलास व्याख्यायां विलास प्रदीपाख्यायां प्रास्ताविकविलास टिप्पणात्मकः प्रथमः प्रकाशः समाप्तः ॥
२४·८ × ९ सें० मी०	१७ (१-१७)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री कविजनचक्रवर्त्तिनागराज विरचितो भावशताख्य ग्रंथः संपूर्णः ।
१३·२ × ७·५ सें० मी०	२ (१-२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इतिभृंगाष्टकमसंपूर्णम् रामचन्द्र ॥
२५ × ११·५ सें० मी०	५४ (१-५४)	११	४२	पू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२१	८६८	भोजप्रबंध			दे० का०	दे०
२२२	६५३७	भ्रमराष्टक (सटीक)			दे० का०	दे०
२२३	३१००	मदनसंजीवन (भाण)			दे० का०	दे०
२२४	३६४४	महानाटक	हनुमान		दे० का०	दे०
२२५	७७६०	महानाटक	हनुमान		दे० का०	दे०
२२६	७८१६	महारासोत्सव (हनुमदगस्त्यसंवाद)			दे० का०	दे०
२२७	३१८३	महावीरचरित (नाटक)	भवभूति		दे० का०	दे०
२२८	५१२१	माघकाव्य (शिशुपालवध)	माघ		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.५ × १२ सें० मी०	६ (२–७)	९	४५	अपू०	प्राचीन	
१८ × ८.३ सें० मी०	३ (१–३)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति भ्रमराष्टकं समाप्तम् ॥
२३.७ × ११.८ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	३१	पू०	प्राचीन	संपूर्णोयं मदन संजीवनोनाम भाणः ॥ श्रीसदास्तु ॥
२६ × ११.४ सें० मी०	५९ (६–६४)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री हमद्विरचिते महानाटके लक्ष्मण शक्तिभेदोनाम त्रयोदशोंकः ॥ (पृ० संख्या ५८) × × ×
१७.३ × १३.४ सें० मी०	१२ (१-४,३७-४०,४९-५२)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री हनुमद्वि रचिते महानाटके हनु॰ ···नाम षष्ठोऽध्यायः × × × ॥
२४.७ × ११.१ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	४०	पू०	प्राचीन	
२२.३ × ९.९ सें० मी०	३५ (११-३६, ३९-४८)	७	३४	अपू०	प्राचीन सं० १६६२	समाप्तं चेदं वीरचरितं नाम नाटकं कृति श्रीकंठापरनाम्नो भट्टभवभूतेः ॥ संवत् १६६२ समये पौष शुदि पंचमीवार मंगल इदं पुस्तकं लिखितं माधवेन काश्यां विश्वेश्वर संनिधौ ॥ शुभमस्तु ॥···
२३.४ × १०.५ सें० मी० (सं०सू० ३-६१)	४ (१–४)	१२	३९	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२९	२१००	माघकाव्य (शिशुपालवध महाकाव्य)	माघकवि		दे० का०	दे०
२३०	१६१५	माघकाव्य (बालबोधिनी टीका)	माघकवि		दे० का०	दे०
२३१	६०३३	माधवानलकथा			दे० का०	दे०
२३२	७२३	मालतीमाधव (प्रकरण)	भवभूति		दे० का०	दे०
२३३	३१५३	मालतीमाधव	भवभूति		दे० का०	दे०
२३४	७५७८	मलतीमाधवा	भवभूति		दे० का०	दे०
२३५	२४२६	मुद्राराक्षस नाटक	विशाखदत्त		दे० का०	दे०
२३६	३२४९	❀ मुद्राराक्षस (मुद्रादीपिका टीका)	विशाखदत्त	ग्रहेश्वर	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × १२·२ सें० मी०	१०२	९	३७	अपू०	प्राचीन सं० १८५६	इति शिशुपालबधे महाकाव्ये विंशतिमः सर्गः समाप्तः ॥२०॥ शुभरस्तु सं० १८५६ समये कार्तिक कृष्ण पंचम्यां रविवासरे श्रीअग्निहोत्री शंकरास्यात्मज श्री चिंतामणिपुपाठार्थं दिनमणि दासेन लिखितमिदं पुस्तकम् ॥
३२ × १२·५ सें० मी०	१	१३	४८	अपू०	प्राचीन	
२५·९ × १०·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १२·१ सें० मी०	७७ (१–७७)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति निःक्रान्ताः सर्वे भवभूति कृतौ मालतीमाधवाख्य प्रकरणेमालती पुनर्लाभो नामदशमोङ्कः ॥ शुभमस्तु ॥
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	१५	७८	पू०	प्राचीन सं० १७३६	इति श्री कवि चूडामणिभवभूति कृतौ मालती माधवाख्य प्रकरणे मालत्यापुनर्लाभो नाम दशमोंकः ॥ समाप्तं चेदं मालती माधवा वाख्यं प्रकरणं संवत् १७३६ शीर्षे मास्यसिते पक्षे त्रयोदश्यां गुरुविदं ......
२४·५ × ८·४ सें० मी०	८२ (१–८२)	६	४७	पू०	प्राचीन सं० १६३७	समाप्तमिदं मालती माधवम् ॥...संवत् १६३७ समए वैशाखवदि ११ रविवासरे पुस्तक लिषापितं नागदेव भट्ट लिषितं वशंत ॥
२७·५ × ११·५ सें० मी०	७१ (२३-९३)	८	३६	अपू०	प्राचीन श० १७८५	इति मुद्राराक्षस नाटकस्य सप्तमोंकः ......शक १७८५
२५ × ८·९ सें० मी०	८१ (१,३-७३, १३०-१३८)	७	४१	अपू०	प्राचीन सं० १७५३	इति महामहोपाध्याय श्रीग्रहेश्वर विरचितायां मुद्रादीपिकायां सप्तमोंङ्कः समाप्तः ॥ संवत् १७५३ पौषशुद्ध २ वुधे पुस्तकं लिखापितं बाला त्रिपाठी ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३७	४५६७	मूर्खशतक			दे० का०	दे०
२३८	५८६८	मूलरामायण	वाल्मीकि		दे० का०	
२३९	७१६०	मूलरामायण	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२४०	४७४८	मूलरामायण	वाल्मीकि		मि० का०	दे०
२४१	३१०२	मूलरामायण	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२४२	३८७२	मूलरामायण (बालकांड, प्रथमोसर्ग)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२४३	४०११	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२४४	४३२४	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·९ × १४·४ सें० मी०	१	१३	३२	पू०	प्राचीन	इति मूर्खशतकं समाप्तिमियाय: ॥
२०·७ × ८ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे आदि काव्ये वाल्मीक ये वाल कांडे प्रथम: ॥
२१·१ × १३·८ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
२२ × ११·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१५	अपू०	आधुनिक	
२०·४ × ७·९ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२२·३ × १०·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१९३६	बालकाडे संक्षेपोनाम प्रथम सर्ग संपूर्ण॥ संवत् १९२६ वर्षे ॥ कार्तिग शुक्ला ६ भौमवासरे ॥ लीखीतार्थ श्रीगंगाजी के मंदिर रामरतनजोसी भानपुर का……
२४·७ × ८·९ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	३०	पू०	प्राचीन	इत्थंभूतं सुचरितपदं मेघदूतं च तान्त्रा कामक्रीडाविरहित जने विप्रयुक्ते विनोद: ॥ मेघत्वस्मिनितिनिपुनता बुद्धि-भावं कवीनां नत्वार्थाणे चरचरणयुगलं कालिदासश्चकार ॥
२३·५ × १०·५ सें० मी०	२० (१–२०)	८	२९	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री कवी कुल चक्रवर्ता श्रीकालि-दास विरचितायां मेघदूत काव्य समाप्ता संपूर्ण १ शुभं मंगलं ददाति संवत् १८८७ मिति आषाढ मासे कृष्णपक्षे शुभ तिथौ ८ ……।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	१७४८	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२४६	४५१२	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२४७	३१५४	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२४८	२९९	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२४९	३०५४	मेघदूत	कालिदास		दे० का०	दे०
२५०	५२५२	मेघदूत (कृष्णचरित्र)	कालिदास		दे० का०	दे०
२५१	५५८६	मेघदूत (पूर्वार्द्ध)	कालिदास		दे० का०	दे०
२५२	८५५	मेघदूत (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ९·८ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८५१	इती श्री कालिदास विरचितं मेदूताभिधानं काव्यं समाप्तं ॥ संवत् १८५१ चैत्रमासे'''लीषतं बालमुकंद ।शुभमस्तु॥
१९·२ × ११·२ सें० मी०	२२ (१–२२)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री चक्रचूडामणिश्री कवि कालिदास कृतौ मेघदूताख्यं काव्यं समाप्तं ॥'''
२६·८ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री महाकाव्ये कालिदास कृतौ मूघदूताभिधानं काव्यं सपूर्णं समाप्त संम्वत् १८४७ श्रावणमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदायां बुधदिने ॥
२४·६ × १०·३ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३८	पू०	प्राचीन सं०१८३९	इति कालिदास कृतौ मेघसंदेशे महाकाव्ये अपरमेघः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८३९ ॥ पौषवदि ॥८॥ भृगुवासरे समाप्तिः ॥
२९·१ × ११ सें० मी०	२३ (१–२३)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१८४८	इति श्री कालिदासकृतौमेघदूताभिधानं काव्यं समाप्त शुभंभूयात् संवत् १८४८ के साके १७१३ आश्विन वदि दशमी गुरूवासरे कः श्री सीतारामजू''' '''
२७ × १४·८ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	२४	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्रीकालिदासविरचिते मेघदूते श्रीकृष्णाचरित्रं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु''' संवत् १९१६ ज्येष्टमासे सितेपक्षे गुरूवारे सुशोभने लिप्पीकृतं दुलोरामेण श्री शंभूप्रसादतः ॥''''''
२७ × ११·२ सें० मी०	२	८	३४	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × १०·५ सें० मी०	१९ (२-८, ११-२२)	१६	५२	अपू०	प्राचीन सं०१४५०	इति श्री कालिदास विरचितं मेघदूताभिधानं काव्यं सम्पूर्णम् यथाग्र सदी १४५० '''''' ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५३	३६०४	मेघाभ्युदय काव्य			दे० का०	दे०
२५४	५१९६	रंभाशुक संवाद			दे० का०	दे०
२५५	४३११	रघुवंश महाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
२५६	१७१२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२५७	१६५३	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२५८	४१६१	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२५९	३४६२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६०	१२०८	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १२·८ सें० मी०	११ (१–११)	१४	२७	पू०	प्राचीन सं० १८९९	इति मेघाभ्युदय काव्यं समाप्तं सं० १८९९ का लिषतं हरदत्त मिश्रा ... ...
२३·४ × १०·७ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति शुक रंभा संवाद समाप्तः ॥
२५·२ × १० सें० मी०	९१ (९–९९)	९	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास-कृतौ स्वर्गारोहनोनाम पंचदशं सर्गः + + + (पृ० संख्या ९७)
२४·८ × ११·७ सें० मी०	६ (२–७)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२५·४ × १०·४ सें० मी०	९ (१२–२०)	९	३७	अपू०	प्राचीन	
२९·२ × ११·५ सें० मी०	१११ (१–१११)	७	३९	पू०	प्राचीन	
३०·२ × १७ सें० मी०	८६ (१–८६)	११	३६	पू०	प्राचीन सं० १९०५	इति श्री रघुवशेमहाकाव्ये कालिदास कृतौ अग्निवर्णसुरतिवर्णनोनामैकोनविंशः सर्गाः ॥१९॥ शुभमस्तु ॥ श्रीशः पायात् ।, संवत् १९०५ शकः ॥१७७०॥ तत्राश्विनशुक्लसप्तम्यां बुधवासरे लिखितं दिल्सुखराम पठनार्थं बालमुकुंद शर्म्मा ... ...
२४ × ११·५ सें० मी०	१ (१)	८	३९	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०३-६२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	१११६	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६३	३६५१	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६४	४१०५	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६५	२५७२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६६	३३९१	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६७	३९१८	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६८	३६८४	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२६९	४५६३	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·३ × ११·६ सें० मी०	१६	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०·४ सें० मी०	२१ (४९-५१, ५६-७३)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कालिदास कृतौ रघुवंश महाकाव्ये इंदुमती विवाहो नाम सप्तमः सर्गः × × × (पृ० ५६)
२६·५ × ९·९ सें० मी०	३३ (२–३४)	८	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कवि श्री कालिदास कृतौ राज्ञी राज्यभिषेको नाम एकोनविंशतिः सर्गः शुभमस्तु ॥ अश्विने मास्यसिते पक्षे चतुर्दश्यां रविवासरे ॥
२६·५ × ११·५ सें० मी०	८ (९९-१०५, १०९)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११ सें० मी०	७ (तृतीयसर्ग)	९	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंश महाकाव्ये कालिदास कृतौ इंद्रपराजयोनाम तृतीय सर्गः ।
२३·९ × १०·१ सें० मी०	१० (३१-३४, ५८-६१, ७७, ७९-८०, ८६)	७	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये श्री कालिदास कृतौ स्वयंवर वर्णोनामषष्टः सर्गः ॥ × × ॥ (पृ० ५८)
२४·३ × ८·७ सें० मी०	१६ (५५-६९, ७७)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ कुशराज्य करोनाम षोडशः सर्ग ......॥
२८·८ × ११·५ सें० मी०	३ (३७–३९)	१२	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कवि कालिदास कृतौ प्रायोपदेशनं नामाष्टमः सर्ग ८ ॥ (पृ०संख्या-३८)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७०	५३५५	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२७१	७११२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२७२	२३४८	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२७३	५६१५	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२७४	५५४८	रघुवंश (सटीक)	कालिदास	हरिदासमिश्र	मि० का०	दे०
२७५	५७३६	रघुवंश	कालिदास		मि० का०	दे०
२७६	७४९२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०
२७७	७८३२	रघुवंश	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·३ × १०·१ सें० मी०	७१	८	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशेमहाकाव्ये कवि श्री कालिदास कृतौ उरज विलापनेन्तरस्तर्गाधिरोहणा नाम अष्टमसर्ग × × × × ॥
२५·७ × ·५ सें० मी०	१३० (१-:,१५-२०,२३-१७६	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालीदास कृतौ अग्निवर्णविन सो नामैकोनविंशतिः ॥ ···
२४ × १३ सें० मी०	५	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
३२ × १५ सें० मी०	१२ (१७,२०, २२-२६) (पत्र २८ दो)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयंवरवर्णोनाम षष्टः सर्गः ॥ (पृ० २४)
२६·७ × १२·५ सें० मी०	११२	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र विष्णुदासोत्मज सर्वविद्या विशारद श्री मिश्र हरिदास विरचितायां रघुकाव्यार्थ दीपिकायां तृतीय सर्गः ॥ (पृ० सं० ६२)
२१·२ × ८·१ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२५·४ × ९·४ सें० मी०	३६ (६-३४,१०९-११४)	९	५०	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १२·२ सें० मी०	६६	५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ रामपुरप्रवेसोनाम त्रयोदश सर्गः १३ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७८	७४८८	रघुवंश (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०
२७९	५५३५	रघुवंश (सटीक)			दे० का०	दे०
२८०	४५२१	रघुवंश (१-३ सर्ग) (रघुकाव्यार्थदीपिका)	कालिदास	हरिदास मिश्र	दे० का०	दे०
२८१	५५६७	रघुवंश (२-५ सर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
२८२	२५५४	रघुवंश (तृतीय सर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
२८३	८८५	रघुवंश (तृतीयसर्ग) (संस्कृतटीका)	कालिदास		दे० का०	दे०
२८४	५०६२	रघुवंश (तृतीय सर्ग) (इंदिरा टीका)	कालिदास		दे० का०	दे०
२८५	५२८५	रघुवंश (३-५ सर्ग तक)	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.५ × १०.२ सें० मी०	११ (५-१०,१०-१४)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × ६.८ सें० मी०	१६ (१-१६)	६	४०	अपू०	प्राचीन	
३२.५ × १५.७ सें० मी०	५२ (२-३४, ३७-५४)	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमिश्रविष्णुदासात्मजसर्वविद्याविशारद श्रीमिश्रहरिदासविरचितायां रघुकाव्यार्थ दीपिकायां तृतीय सर्गः ॥ ... ... इति श्रीरघुवंशे तृतीयसर्गः ३ समाप्तम्॥
२७.५ × ११.८ सें० मी०	२५ (१-२५)	७	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ रघुदिग्विजयोनाम चतुर्थः सर्गः ॥ (पृ० २४)
३१ × १४.५ सें० मी०	१५ (१-१५)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्येकवि कालिदास कृतो रघुराज्याभिषेकोनाम तृतीयः सर्गः समाप्तं शुभंमस्तु ॥
२०.३ × ६.७ सें० मी०	२० (१-१२, १५-२२)	११	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशमहाकाव्ये कालिदास कृतौ सर्गः ३ ॥
२६.४ × १२.७ सें० मी०	१३ (१-१३)	१४	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशेमहाकाव्ये तृतीयः सर्गः समाप्तः ॥
२२ × ८.६ सें० मी०	२२ (२१-३४, पुनः १-८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयंवर प्राप्तोनाम पंचमः सर्गः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८६	४६७३	रघुवंश (पंचमसर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
२८७	५११४	रघुवंश (संजीवनीटीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
२८८	५३६८	रघुवंश (सटीक)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२८९	४२३५	रघुवंश (सटीक)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२९०	५९३४	रघुवंश (सटीकप्रथमसर्ग)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२९१	७५९३	रघुवंश (सटीकषष्ठसर्ग) (संजीवनीटीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
२९२	१२३०	रघुवंश (५-६ सर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
२९३	८३१	रघुवंश (अलंकार रत्नावली टीका)	कालियास	भीमसेन दीक्षित	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १२·३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयंवराभिगमनों पंचमः सर्गः ॥
३३·६ × ११·८ सें० मी०	३ (११,१३,१५)	१०	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंश समाख्यायां संजीविन्यां प्रथमः सर्गः ॥ × ॥
३३·५ × १२·४ सें० मी०	१३ (४९-६१)	८	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंश संजीविन्यां तृतीयोध्यायः ॥ ३···
३३·८ × १२·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	५५	पू०	प्राचीन	श्री श्री इति श्री महोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंश समाख्यायां संजीविन्यां प्रथमः सर्गः ॥१॥
२६·४ × ८·४ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	४३	पू०	प्राचीन	इति पद वाक्य प्रमाण पारावारीण कोलचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंश समाख्यायां संजीविनी समाख्यायां प्रथमः सर्गः समाप्तः ।
२५·७ × ११·२ सें० मी०	७ (१-२, ९-१३)	१४	४९	अपू०	प्राचीन	इति मल्लिनाथ सूरिविरचितायां संजीविसमाख्यायां षष्टः सर्गः ॥······
२३·५ × १०·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्रीवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयं वर्णनोनाम षष्ट सर्गः ॥ श्रीगणेशायनमः··· ॥
२५·७ × ११ सें० मी०	१३५	१२	३७	पू०	प्राचीन	इतिश्रीदीक्षितभीमसेनविरचितायां रघुवंशटीकायामलंकाररत्नावली सख्यायामेकोनविंशतिमः सर्गः ॥ ···
(सं० सू० ३-६३)						

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२९४	३५९७	रघुवंश महाकाव्य (सटीक)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२९५	२७०६	रघुवंश (सटीक)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२९६	४१३२	रघुवंश (संजीवनी टीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
२९७	३५३२	रशुवंश (संजीवनी टीका)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
२९८	१२३१	रघुवंश (संजीवनीटीका)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
२९९	३६५४/२	रघुवंश (संजीवनी टीका) (१–७ सर्ग)	कालिदास	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
३००	३६५४/२	रघुवंश (राघवीटीका नवम सर्ग)	कालिदास	चरित्रवर्द्धन	दे० का०	दे
३०१	३३९३	रघुवंश (सटीक) सर्ग (४,५,७,८,९-१०)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × १२·५ सें० मी०	१४६ (१–१४६)	११	३३	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाण पारावारीण महोपाध्याय कोलमल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंश व्याख्यायां संजीवनी समाख्यायां पचमः सर्गः ॥(पृ० सं०१०१)
३४·२ × १५·५ सें० मी०	११ (१–११)	१७	५५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामहोध्याय कोलाचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंशटीकायां संजीविनी समाख्यायां नवमः सर्ग ॥
३२·८ × १५ सें० मी०	२१ (२–२२)	१६	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री पद वाक्य प्रमाणापारावरीण श्री महोपाध्याय केलि चल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंशटीकायां संजीबनी समाख्यायां द्वितीय सर्गः ॥
२३·८ × ११·६ सें० मी०	१८ (१-३,५-१३, १५-२०)	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मल्लिनाथ सूरि विरचित्तायां संजीविनी समाख्यायां रघुवंश टीकायां षष्टः सर्गः समाप्तिमगमत् ॥
२५ × १०·५ सें० मी०	१७ (१-१७)	१०	४६	पू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्रीपदवाक्य प्रमाणपरवार पारिता श्रीमहोपाध्याय कोलमल्लिनाथसुर विरचितायांरघुवंश व्याख्यायां संजीवनी समाख्यायां । चतुर्थ सर्गः ॥
२८·८ × १२·२ सें० मी०	६३ (१–६३)	११	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री पदपाक्य प्रमाणपारावारीण-रघुवंशव्याख्यायां संजीविनी समाख्यायां-सप्तमः सर्गः ॥
२८·८ × १२·२ सें० मी०	१–८ (६४-१११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री चारित्रवर्द्धन विरचितायांशिशुहितैषिणांराघवीयटीकायां नवमः सर्गःसमाप्ताः ६ शुभमस्तु ॥ मंगलं ददातु ॥
२६·७ × ११·५ सें० मी०	३६	६	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाण पारावारीण श्री महोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथ सूर विरचिकाया रघुवंशदीपिकायं संजीविनिरामाख्यायां दशम सर्गः समाप्तः …

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०२	३५२	रघुवंश (६-१३ सर्ग)	कालिदास	मल्लिनाथ	दे० का०	दे०
३०३	३४६	रघुवंश (अष्टमसर्ग)	कालिदास	दिनकरमिश्र	दे० का०	दे०
३०४	१०२५	रघुवंश (सुगमान्वय-प्रबोधिका टीका)	कालिदास	पं० सुमतिविजय	दे० का०	दे०
३०५	३०३	रघुवंश (प्रथमसर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
३०६	८४३	रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
३०७	२५३०	रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
३०८	५६	रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
३०९	८६७	रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.२ × १०.३ सें० मी०	५६ (१-२५,१-८, ९-१०,१७-३१)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री महोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथसूरि विरचितायां सजीविनी समाख्यायां रघुवंश टीकायां त्रयोदश: सर्ग: १३ ॥
२९.२ × १०.३ सें० मी०	१९ (१-१२,१२-१८)	११	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री रमर्द्धमांगद सूनो. कमलानंदस्य दिनकर मिश्र कृतो रघुवश टीकायां अष्टम: सर्ग: ८॥ श्री रामायनम: श्री कृष्णाय नम:
३३.२ × १७.१ सें० मी०	२५ (१,३-२६)	१७	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशेमहाकाव्ये कालिदास कृतौ पंडित सुमति विजयकृतायां सुगमान्वय प्रबोधिकायां एकोनविंतिसर्ग: १९ ॥
२४.३ × १० सें० मी०	५ (१–५)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × १०.६ सें० मी०	१४८ (१–१४८)	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१६७८	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ अग्निवर्ण क्रीड़ावर्णन ... संवत् १६-७८ श्रीमांगल्य मासे चैत्रवदि त्रयोदशी बुधदिने लिषितंमस्तु शुभं ॥
२५.७ × ११.० सें० मी०	१७५ (१–१७५)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री रघुवंश महाकाव्ये कालिदास कृतो वंधप्रतिबन्धो नामैकोनविंशतितम सर्ग: ॥ १९ शुभंभूयात् मिती पौषबदि ६ शनौ संवत् १८९५ ॥
३२.५ × १६.३ सें मी०	९ (३–११)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	
२६.९ × ११.५ सें० मी०	२३ (१-१४,१८-२१,४३,५०-५३)	११	४६	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१०	१३५	रघुवंश महाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
३११	२४२२	रघुवंश महाकाव्य	कालिदास		दे० का०	दे०
३१२	२४२३	रघुवंश महाकाव्य (चतुर्थसर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
३१३	२२६३	रघुवंश महाकाव्य (२–१८ सर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
३१४	१८७९	रघुवंश महाकाव्य (द्वितीयसर्ग)	कालिदास		दे० का०	दे०
३१५	७४८७	रघुवंशीय षोडशश्लोक			दे० का०	दे०
३१६	१८८	रत्नावली नाटिका	श्रीहर्ष		दे० का०	दे०
३१७	६५६०	रसकल्पद्रुम	चतुर्भुज मिश्र		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·३ × ९·९ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	२८	पू०	प्राचीन सं० १९३०	इति श्री रघुवंशेमहाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयंवराभि गमनो नाम पंचम सर्गः ।। हे पुस्तकमाधव गणेशतेयाणि ।। शाके १७९५ पार्थिवनामसवत्सरे अशाढशुल्क सप्तम्यां सौम्य वासरे लिखित्तं श्री रामानुजयासत संम्वत् १९३० चरखारि जयसिंह राजनगरे ।। समाप्तमस्तु ।।
३२·४ × १९·६ सें० मी०	८ (६–१३)	१३	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्त्री रत्न लाभो नाम सप्तमःसर्गः ।।
३२·९ × १५·५ सें० मी०	११ (१–११)	१६	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ दिग्विजयो नाम चतुर्थ सर्गः ।।
२६·१ × ११·९ सें० मी०	७५ (१० से १११ तक स्फुट पत्र)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
३२·७ × १२·६ सें० मी०	२० (१–२०)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुवंशेमहाकाव्ये कालिदास कृते नंदि नीतः वरप्रदानो नाम द्वितीय सर्गः ।।२।।
२४ × १०·६ सें० मी०	२	६	४२	अपू०	प्राचीन	
३२·२ × ९·७ सें० मी०	४८ (२–२०, २२–५०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०·५ × ११ सें० मी०	३० (१-२,५-१८, २०-३३)	२९	१२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रस कल्पद्रुमे चतुर्भुज मिश्र विरचिते वीभत्स रस वर्णन परिच्छेदः ।। (पृ०-संख्या-३२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	५३१८	रसतरंगिणी	भानुदत्त	तर्कवागीश-भट्टाचार्य-त्रिवेणीदत्त	दे० का०	दे०
३१९	४७८१	रसतरंगिणी	भानुदत्त	वेणीदत्तशर्मा	दे० का०	दे०
३२०	३७८२	रसतरंगिणी	भानुदत्तमिश्र	गंगाराम	दे० का०	दे०
३२१	३५५०	रसतरंगिणी	भानुदत्तमिश्र		दे० का०	दे०
३२२	३४७८	रसतरंगिणी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३२३	३१५६	रसतरंगिणी	भानुदत्त		दे० का०	
३२४	५०५०	रसप्रदीप	प्रभाकर		दे० का०	दे०
३२५	७६६३	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·६ × १०·५ सें० मी०	६७ (१–६७)	६	३०	पू०	प्राचीन सं०१८२६	इति श्री तर्क वागीशभट्टाचार्य त्रिवेणीदत्त कृता रसतरंगिणी व्याख्या समाप्ताः ग्रंथसंख्या १४०० ॥ संवत् १८॥२६ माघ सुदि ८ वार शनी लिपिकृत्य ... ॥
२७·६ × १०·५ सें० मी०	३४	१२	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कविवागीश भट्टाचार्यवेणीदत्त शर्मणाविरचितायां रसतरंगिणी व्याख्या यां रासिक रंजन्यां तृतीय स्तरंगः ॥ × × × (पृ० संख्या ८)
२७·१ × ११·४ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२६ × १० सें० मी०	३४ (१–३४)	८	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री कविविलासनाथ गणनाथतनय मैथिल श्री भानुदत्तमिश्र विरचितायां रसतरंगिण्यामष्टमस्तरंगः ॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥.........
२१·२ × १० सें० मी०	३२	६	२४	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति रसतरंगिणी समाप्ता ॥ संवत् १८३६ वैशाष शुक्ला ॥५॥ गुरुदिने ॥ लिषितं हरनाथेन ॥ शुभंभूयात् ॥...
२५·२ × ११·८ सें० मी०	२७ (१–२७)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं०१८३८	इति श्री भानुदत्त विरचितायां रसतरंगिण्यामष्ठमस्तरंगः ॥ संवत् १८३८ जेष्ठ मासे कृष्णपक्षे सूरवासरे षष्ठ्यायां रसतगिणी गोविददास स्येदं पुस्तकं ।
२२·२ × ६·७ सें० मी०	३४ (२–३५)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सं०१७२०	इति श्रीमद्रिन्दुवृन्दारक वृन्दवन्दनीयपादारविन्दद्वन्द्वभूसुरपुरन्दर जगद्गुरु महामहोपाध्याय भट्टमाधव तनूजनि प्रभाकरोक्तीते रस प्रदीपे व्यजनानिरुपणो नाम तृतीयालोक समाप्तः × संवत् १७२० समये × × ×
२४·७ × १०·६ सें० मी० (सं०सू०-३-६४)	२५ (१–२५)	८	३७	पू०	प्राचीन सं०१७६०	इति श्री भानुदत्त विरचिता रसमंजरी खांकसप्तशशि संयुतवर्षे माघवेशुचिदले वुधयुक्ते ॥...॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२६	१०३	रसमंजरी	भानुदत्त मिश्र		दे० का०	दे०
३२७	६०३५	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३२८	५५८१	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३२९	७१३१	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३०	७१४३	रसमंजरी (नायिकाभेद)	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३१	६५७६	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३२	५३०७	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३३	३४०४	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३×११ सें० मी०	७१	९	११	पू०	प्राचीन सं० १८१५	इति श्री मद्भानुवादत्त मिश्र विरचिते रसमंजरी समाप्तः । सं० १८१५ नामिति कार्तिक वदी १४ रवौ ये लीखितं आचार्य काहान जी सोरठी ये नव, दत्त-राम ने लीखित्वा ॥ शुभमस्तु ॥
२९·३×१५·१ सें० मी०	२	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२७×११·१ सें० मी०	३	६	३५	अपू०	प्राचीन	एषा प्रकाश्यते श्रीमद्भानुनारसमंजरी ॥२॥ (पृ० सं० १)
२४·३×१३ सें० मी०	११ (२-३,५-११, १४-१५)	१५	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभानुदत्तविरचिता रसमंजरी संपूर्णम्वैषाख वदि १३ × × ×
१९ ६×८·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	४३	४२	पू०	प्राचीन सं० १७७९	समाप्तेयं रसमंजरी ॥ संवत् १७७९ वैशाख शुद्ध ८ गुरौ ... ...
२१·७×११ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति श्री कविरत्न भानुदत्त विरचिता रसमंजरी संपूर्णतामगात् शुभम्भूयात् संवत् १८३४ रा कार्तिक शुक्ल ७ चंद्र वासरे लिखीतं × × ×
२२·२×१३·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२३.५×१०·८ सें० मी०	१७ (१-११,१४-१५,१७-२०)	८	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८८१	इयि श्रीमहामहोपाध्यायसन्मिश्र श्रीभानुदत्त विचिता रसमंजरी संपूर्णा । शुभमस्तु ॥ संवत् १८८१ मार्गसीर्ष शुक्ल पूर्णमासी १५ चंववासरे संपूर्ण ॥ मार्ग शुक्ले पूर्णमायां चद्रवासर संजुतां ॥ लिखितं कपिलेनमु निना रसमंजरिकामिर्थं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३४	१२१४	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३५	३५६१	रसमंजरी	भानुदत्त		मि० का०	दे०
३३६	१८८३	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३७	४३१०	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३८	४०२०	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०
३३९	ॐ २११	रसमंजरी	भानुदत्तमिश्र		दे० का०	दे०
३४०	६२२	रसमंजरी	भानुदत्तमिश्र		दे० का०	दे०
३४१	२५६५	रसमंजरी	भानुदत्त		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × १२·१ सें० मी०	२३ (५–२७)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भानुदत्त कवि विरचिता रसमंजरी समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥······
२७·५ × ७ सें० मी०	१५ (७,६-१३, २१,२४,२६, २८)	६	४८	अपू०	प्राचीन	
१६·४ × ७·२ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·६ × १५·२ सें० मी०	१७ (१,३-१३, १५-१६)	१३	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री मद्भानुदत्त मिश्र विरचिते रसमंजरी समाप्त सुभमस्तु मंगलंददात् ॥ संवत् १८८१ वैशाष कृष्ण ॥१२॥ रविवारे ॥ × ×
२३·६ × १० सें० मी०	८ (७–१४)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीमत्समस्त कविवंशतिलक श्री भानुदत्त विरचिता रसमंजरी समाप्ता॥ श्री स्वर्णाविकार्पणमस्तु ॥ श्रीढुंढयेनमः सवीरनसिंहेन श्रीरंगेरसमंजरी ॥ भूतायां लिखिता नंदेनमसः श्री वडेरुणा ॥ १॥············(पृ० सं०-१४)
२१·५ × ११ सें० मी०	३१	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १७७५	इति श्री भानुदत्त मिश्र प्रकाशिता रसमंजरी समाप्ता ॥ श्यामसुंदरजी पठनार्थं संवत् १७७५ वर्षे भाद्र कृष्णअष्टमी शुक्रे लिषतं ।
२४·१ × ११ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं० १८३६	इति श्री भानुदत्तमिश्र विरचितायां रसमंजरी समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८३६ के शाल शाके १७०१ माघवदि १० रविवारे ॥
२५·५ × १०·८ सें० मी०	६ (४-,७-१४)	१३	३५	अपू०	प्राचीन सं० १८३१	इति श्री कवि कुलालंकार चूड़ामणि श्री भानुदत्त विरचिता रसमंजरी संपूर्णता मगात् । संवत् १८३१ विश्वावसु नाम संवत्सरे आश्विन कृष्ण त्रयोदश्या···

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४२	२०६६	रसमंजरी (सटीक)	नागेशभट्ट		दे० का०	दे०
३४३	६०७५	रसमंजरी (सटीक) (व्यंगार्थकौमुदी)	अनंत शर्मा		दे० का०	दे०
३४४	६५०	रसमंजरी (सटीक)	भानुदत्त मिश्र		दे० का०	०
३४५	१०७८	रसमंजरी (सटीक)	भानुदत्त मिश्र	गोपालभट्ट	दे० का०	दे०
३४६	३३७४	रसमीमांसा (सटीक)		गंगाराम	दे० का०	दे०
३४७	३२६१	रसरत्नहार विहार	शिवराम त्रिपाठी		दे० का०	दे०
३४८	२८४१	राक्षसकाव्य (सटीक)	कालिदास (कालि)		दे० का०	दे०
३४९	६४०५	राक्षसकाव्य (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × १२ सें० मी०	३२ (१–३२)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कालोपनामक शिवभट्टसुत नागेश भट्टकृतो रसमंजरी प्रकाशः समाप्तः।
२७·१ × १२·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	४३	अपू०	प्राचीन	व्यंजनामग्रचित्तेन गौतमीतीर वासिना श्री त्र्यंबक तनूजेन पंडितानंत शर्मणा ॥ रसिक श्रुतिभूपास्तिभुवि या रसमंजरी। व्यंग्यार्थकौमुदी तस्या स्तन्यतेतकुतूहलात ॥
३२·४ × ११ सें० मी०	२० (३–२२)	८	४१	अपू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्रीमदभानुदत्त मिश्र विरचिता रसमंजरी समाप्ता ॥ सं० १८७१ केशाल ॥ मार्गमासि सिते पक्षे तृतीया बुधवासरे ॥
२४·६ × १०·५ सें० मी०	७० (१–७०)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति भानुदत्तमिश्र विरचित रसमंजरी समाप्ता ॥···तात श्री हरिवंशदेक चरण गोपालभट्टकृतां रसमंजरीटीका समाप्ता॥
२७·३ × १२·१ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री जड्युपनामक गंगाराम विरचिता छायामिधा रस मीमांसाव्याख्या संपूर्णा ॥
२४·२ × १०·४ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	४८	पू०	प्राचीन	इति शिवराम त्रिपाठी कृते रसरत्नहारविहार समाप्तिमगमत् ॥ शुभं ॥
२३·९ × १४·७ सें० मी०	८ (१–७,९)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री कवि चक्रवर्त्ती कालिदास विरचितस्य राक्षसकाव्य टीका समाप्ता। इति श्री कालिकृतं राक्षसकाव्यं समाप्तं॥
२६·४ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	८	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री राक्षसकाव्य टीका समाप्तम् सुभमस्तु ॥ श्रीराधाकृष्णायनमः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	५४४४	राक्षसकाव्य (सटीक)	कालीदास		दे० का०	दे०
३५१	५४१८	राक्षसकाव्य (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०
३५२	७८५१	राक्षसकाव्य (सटीक)			दे० का०	दे०
३५३	५९४४/१७	राधानुनयविनोद	गोस्वामी श्रीकृष्णदास		दे० का०	दे०
३५४	४७४०	राधामाधवविलास	जयराम		दे० का०	दे०
३५५	५९६४	राधारससुधानिधि	हितहरिवंश गोस्वामी		दे० का०	दे०
३५६	४६२८	राधाविनोद काव्य (सटीक)	रामचन्द्र		दे० का०	दे०
३५७	५५६७	राधाविनोदकाव्य	रामचंद्र		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२६·४ × १०·२ सें० मी०	८ (३–११)	७	२९	अपू०	प्राचीन सं० १९२५	इति श्री मत्कविचक्रवर्ती कालीसस विरचितस्य राक्षस काव्यस्य टीका समाप्ता सम्वत् १९२५ चैत्रमासे शुक्लपक्षे चतुर्थी।
२७·१ × ८·२ सें० मी०	६ (१-२,४,६-७,१०)	६	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्कविचक्रवर्ती कालिदास विरचिता राक्षस काव्य टीका समाप्त।। शुभमस्तु ।।
२९·८ × १० सें० मी०	६ (१–६)	९	५१	पू०	प्राचीन	इति राक्षसकाव्य टीका समाप्तः ।।
१३ × ८·५ सें० मी०	५७ (१–५७)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री राधानुनयविनोदे महाकाव्ये श्री मद्गोस्वामि श्री कृष्णदास विरचिते पंचम सर्गः ।।
२१ × ११·६ सें० मी०	३६ (१-१३,१५-१७,२०-२२,२४,२७-४२)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मज्जयराम कविकृते राधामाधवविलासे चंपूकाव्ये पुण्यशय्यारिरसा नाम द्वितीय उल्लास ।। (पृ० १३)
३२·५ × १२·५ सें० मी०	१११ (१–१११)	११	४८	पू०	प्राचीन सं० १९००	इति श्री वृन्दावनेश्वरीचरणकृपावलंबविजृंभित श्री हित हरिवंश गोस्वमिना विरचितं श्रीराधारस सुधानिधि स्तोत्रं समाप्तं··· ······संवत् १९०० मिति ज्येष्टवदि २······· ।
२७·१ × ११·७ सें० मी०	४ (२,५-७)	१५	४९	अपू०	प्राचीन	इति श्रीराधा विनोदाख्यं काव्यं संपूर्ण।।
२५ × १०·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति रामचंद्रेन रचितं राधाविनोदाख्य काव्य समाप्तं ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५८	५५८५	राधाविनोदकाव्यम्	रामचंद्र		दे० का०	दे०
३५९	५८४९	राधाविनोदकाव्यम् (सटीक)	कविरामचंद्र	भट्टनारायण	दे० का०	दे०
३६०	७११४	राधाविनोदकाव्यम् (सटीक)	रामचंद्र		दे० का०	दे०
३६१	७७१६	राधाविनोदकाव्यम्	रामचंद्र		दे० का०	दे०
३६२	६१७०	राधाविनोदकाव्यम् (सटीक)	रामचंद्र		दे० का०	
३६३	३१३४	रामकीर्तिकुमुदमाला	त्रिविक्रम		दे० का०	दे०
३६४	१०८३	रामकृष्णविलोमकाव्यम्	श्रीदैवज्ञसूर्य		दे० का०	दे०
३६५	५६८६	रामचरित महाकाव्य	अभिनंद		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·१ × ११·२ सें० मी०	११ (१–११)	८	४३	अपू०	प्राचीन	राधाविनोदाख्य काव्यं चिकीर्षनिर्विघ्न प्रारीप्सित समाप्ति कामोरामचंद्र कवि: × × × (पृ० सं० १)
३० × ११·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	४६	पू०	प्राचीन सं० १६०७	शुकदेव समाख्यस्य पंडित श्री शिरामयो: तनयस्यनिदेशेन भट्ट नारायणो बुध: राधा विनोद काव्यस्य व्याख्यान विधिया व्यधात्...माघ कृष्ण द्वितीयायामग्नि चन्द्र रसेन्दुभि: शाके गते विक्रमार्क राज्ञ: काश्यामिदं कृतं ३ इति राधा० टीका संपूर्णा संवत् १६०७।
२४·७ × ९·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इत्यागत्य रामचंद्र विरचितं राधाविनोद काव्यं सटीकं समाप्तमगमत् ॥ शक १६१ सिद्धार्थिनाम संवत्.... ॥
२४ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	१२	५०	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ११	१० (१–१०)	११	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इति श्री राधा विनोदाख्य काव्यस्य टीका समाप्ता ॥ सं० १८७७ ॥
२७·६ × ११·३ सें० मी०	२६ (१–२६)	९	३९	पू०	प्राचीन सं० १९३१	इतिश्री त्रिवेदविश्वंभरात्मसंभव श्रीगुरु धरणीधर चरणाराधन सावधान त्रिविक्रम कृता श्रीरामकीर्ति कुमुदमाला संपूर्णा ॥...संवत् १९३१ भाद्रपद कृष्ण ११ दश्यां इंदुवासरे
३२ × १५ सें० मी०	१८	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री दैवज्ञसूर्य्य विरचितायां रामकृष्णाख्यं काव्यं समाप्तम् शुभमस्तु सर्वजगतां संवत् १९१६ पौषवदि प्रविष्टे ७ भौमवासरे श्री हरिगोविंद पुरमध्ये दासेन लिपीकृतं रामाय नम: ॥
२८·५ × १४ सें० मी०	२९३ (१–२९३)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८७८	इत्यभिनंद कृतौ श्री रामचरिते महाकाव्ये कुंभनिकुंभवध्वोनाम षडत्रिंश सर्ग: शुभमस्तु सर्व जगत: संवत् १८७८ (?) समय फाल्गुणसुदिद्विया ग्रंथस: ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६६	२०८८	रामप्रताप नाटक			दे० का०	दे०
३६७	६०४८	रामरास (महारासोत्सव)			दे० का०	दे०
३६८	७८८४	रामायण (लीलाकांड)			दे० का०	दे०
३६९	३२७३	रामायण (बालकाण्ड प्रथमसर्गः)			मि० का०	दे०
३७०	४४६७	रामायण (सुंदरकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
३७१	२३६३	रामायण महामाला			दे० का०	दे०
३७२	४१०३	रामायणसार	अग्निवेश मुनि		दे० का०	दे०
३७३	३९५	रामायणसार	अग्निवेश मुनि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × ११ सें० मी०	२४ (१००–१२३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १३·८ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	१६	पू०	प्राचीन सं०१९१४	इति श्री हनुमत् संहितयां परम रहस्ये महारासोत्सवे श्री हनुमत् अगस्त्य-संवाद पचमोध्यायः संपूर्णम् पुस्तक लिखी बुंदी मध्ये गोपाल नागरणेनो लखा का महंत भगवानदास जी की पुस्तक स भी ।। जेष्ठ शुक्ल ५ बृहस्पति वारे संवत् १९१४ का पुस्तक सोधीक्ष क्षत्री यादव + + ।।
३४·७ × १३·४ सें० मी०	५६ (१–५६)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१९३२	इति श्री लीलाकांड समाप्तः समत् १९३३ मे ।
१८·७ × ९ सें० मी०	२८ (१–२८)	५	१६	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे बालकांडे प्रथमस्सर्ग: लिखितंहरिभजन ब्राह्मण नारायण दास वैश्ययजमानस्यपठनार्थं मध्येबूलानारेण शुभमस्तु ।।
३०·५ × १५·५ सें० मी०	१२७ (१–१२७)	१६	४८	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे सुंदरकांडे सप्त षष्टितमः सर्गः (पृ० १२६) ।।
१९ × १० सें० मी०	१०	७	२४	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × ११·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री अग्निवेशमुनिविरचितं रामायण सार सम्पूर्ण संवत् १८६८ ।। राम
२३ × ९·५ सें० मी०	२७	७	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री अग्निवेशमुनिविरचितं रामायण सार संपूर्ण ।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।। ···संवत् १८५४ अश्विन शुक्लदतिया २ भृगुदिने लिपतं मंगलेशंनचौवेवः ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७४	६५७२	रामार्याशतक (सटीक)	मुद्गलभट्ट		दे० का०	दे०
३७५	४१७०	रावणवध	भर्तृहरि (भट्टि)		दे० का०	दे०
३७६	७६२१	रुक्मिणी विलास	हरिलालद्विज		दे० का०	दे०
३७७	३६३९	वर्णक्रमलक्षण	जगन्नाथ		दे० का०	दे०
३७८	१८१८	वाग्भूषण	रामचन्द्र	रामचन्द्र	दे० का०	दे०
३७९	१४२	वाग्भूषण	रामचन्द्र	रामचन्द्र	मि० का०	दे०
३८०	७१२६	वाणीभूषण	दामोदर		दे० का०	दे०
३८१	७१८९	वाणीभूषण	दामोदर		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१८·६ × १०·१ सें० मी०	१०६ (१–१०६)	७	२७	पू०	प्राचीन	श्री मलंडित मंडरण कवि कुलालंकार महामुद्गल विरचिता आर्या समाप्तः ॥ ... ...
२६ × १०·७ सें० मी०	१६ (१०१-११७)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरि कृते रावणवधे महाकाव्ये तिङ्न्तकाण्डे लिङ्विलसितोनाम चतुर्दशः सर्गः ॥ (पृ० १०६)
२४ × ६·४ सें० मी०	१९ (१–१९)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री काव्येऽस्मिन्महतति हरिभक्त्या विरचिते लसन्त्या सच्छक्त्या द्विजनि हरिलालस्य हृदये । विलासे रुक्मिण्या कविवर सुखाविस्तृत रसे विदर्भा प्रस्थानम्प्रथमतर सर्गोनिगदितः ॥ × × × (पृ० सं० ५)
१८·३ × ८·४ सें० मी०	२ (१–२)	९	२६	पू०	प्राचीन सं०१६९९ -?	इति श्रीमज्जगन्नाथ विरचितं वर्णक्रमलक्षणं समाप्तं ॥ संवत् १६९९ समये आश्विन शुद्ध ११ तद्दिने काश्यां विश्वेश्वरराजधान्यां गणेशेन लिखितं ॥ शुभमस्तु ॥ ... ...
३२·८ × १२·३ सें० मी०	३ (१-२,२)	१४	६२	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १४·५ सें० मी०	७ (१–७)	१६	४६	अपू०	प्राचीन	
२८·७ × ११·३ सें० मी०	१७ (४–२१)	१०	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीदामोदर विरचिते वाणीभूषणे मात्रावृतं नाम प्रथमाल्लासः × × × × (पृ० ९)
२४·६ × ११·१ सें० मी०	११ (१–११)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर विरचिते वाणीभूषणे मात्रावृत्तं नाम × × × सं० १८४१ शाके– माघेमासि शुक्लपक्षे पंचम्यां शनिवासरान्वितायां × ×

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८२	६१९	वाणीभूषण	दामोदर		दे० का०	दे०
३८३	२५४८	वाणीभूषण	दामोदर		दे० का०	दे०
३८४	३१५१	वासवदत्ता (गद्यकाव्य)	सुबंधु		दे० का०	दे०
३८५	६५५०	वासवदत्ताभिधानाख्यायिका	सुबंधु		दे० का०	दे०
३८६	७५७९	विक्रमोर्वशीयम् नाटकम्	कालिदास		दे० का०	दे०
३८७	४१५६	❀ विदग्धमाधवनाटक	रूपगोस्वामी		दे० का०	दे०
३८८	४२८	विदग्धमुखमंडनम् (१–४परिच्छेद)	धर्मदास		दे० का०	दे०
३८९	५१७८	विदग्धमुखमंडनम्	धर्मदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × ९·४ सें० मी०	४८ (१–३१, ३६–५२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्रीदामोदर विरचितं वाणीभूषणं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ श्री गणेशायनमः ॥
३०·४ × १५·२ सें० मी०	९	१४	४६	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ८·१ सें० मी०	३० (१–३०)	९	५७	पू०	प्राचीन सं० १७७५	श्री सुबंधु विरचिता वासवदत्ता समाप्ता ॥ संवत् १७७५ श्रावण वदि ७ भौमवासरे लिखितो ग्रंथः रीवाँ ग्रामे अवधूतसिंह राज्ये········
२६·५ × १०·५ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकविराज सुबंधु विरचिता वासदत्ताभिधानाख्यायिका समाप्त ॥
२४ × ७ सें० मी०	४६ (१–४६)	८	४२	पू०	प्राचीन सं० १७२७	इति श्रीमत् कालिदास कृतौ विक्रमोर्वशी नाम त्रोटके पंचमोंकः समाप्तः ॥ ···सं० १७२७ ॥
३३·२ × १२·८ सें० मी०	५७ (१–५७)	११	५२	पू०	प्राचीन सं० १६७९	श्रीरूपसनातनपरमवैष्णवविरचितंविदग्धमाधवंनामनाटकं समाप्तं राधाविलास वीतांकंवतुः षष्टिकलाधरे विदग्धमाधवं साधुशीलयं तुविचसणाः १ नंदसिंधुरखांगेंदुसंख्येसंवतसरेगतेविदग्धमाधवं नाम नाटकं गोकुलेकृतं २ श्रीकृष्णायनमः शुभमस्तु ॥
१४·८ × ११·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	१२	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री धर्म-विदग्धमुख मंडने चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः ।
२२ × ९·२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं० १६६६	इति श्रीविदग्धमुखमंडने श्रीधर्मदास विरचिते चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः ॥ संवत् १६६६ कालयुक्तमामसंवत्सरेदक्षिणायने हेमंत ऋतौ पौषेमासि कृष्णपक्षे षष्ठयां सौम्यवासरे पूर्वनिक्षत्रे प्रतियोगे रघुनाथेन लिखितमिदं पुस्तकं स्वार्थपरार्थंच ॥

(सं०सू०३-६६)

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३२२७	विदग्धमुखमंडन (सटीक)	धर्मदास	ताराचंद्र	दे० का०	दे०
३६१	४२६६	विदग्धमुखमंडन (चतुर्थपरिच्छेदतक)	धर्मदास		दे० का०	दे०
३६२	७०५४	विदग्धमुखमंडन	धर्मदास		दे० का०	दे०
३६३	७०७२	विदग्धमुखमंडन	धर्मदास		दे० का०	दे०
३६४	२८८१	विदग्धमुखमंडन (संस्कृत टीका)	धर्मदास	ताराचंद्र	दे० का०	दे०
३६५	५६	विरहीमनोविनोद	विनायकभट्ट		दे० का०	दे०
३६६	७८२१	वीरविलासचंपूप्रबंध	लल्लादीक्षितशर्मा		दे० का०	दे०
३६७	७१४४	वृंदावन काव्यम्	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·१ × ११·३ सें० मी०	६१ (१-३६,३६, ३६-५६)	१२	४८	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति ताराचंद्रकृता विदग्धमुखमंडनटीका विद्वन्मनोहरा समाप्त ॥ संवत् सुरषट गजमहीप्रमिते नवम्यां भौमे सटिप्पणमिदं विलिलेख काश्याम् ॥ तुष्टिप्रयातु गिरिशो गिरिजा- गणेशाभ्यां संयुतो नमसिजन्हु सुताप्रतीरे ···॥
२५·५ × ११ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१७२६	इति श्री धर्म्मदास विरचिते विदग्धमुषमंडने चतुर्थः परिछेदः समाप्तः ॥··· ···'संवत् १७२६ आषाढ़ मासेशु'··· ॥
२५·५ × ११·२ सें० मी०	२ (११–१२)	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति धर्मदास विरचिते विदग्ध मुखमंडने द्वितीयः परिछेदः ॥··· (पृ० संख्या १२)
२५·६ × १०·३ सें० मी०	४६ (१-१४,१८-३०,३२-४७, ५०-५२)	५	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री धर्मदास कृतौ विदग्धमुखमंडने चतुर्थः परिछेदः ॥
२५·८ × १०·८ सें० मी०	३८ (२-११,४०-४१,४३-६८)	१२	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्री धर्मदास कृते विदग्धमुखमण्डने चतुर्थः परिछेदः ॥···इति ताराचन्द्र कृता विदग्धमुखमंडन टीका विद्वन्मनोहरा समाप्तं ॥ श्रीविश्वेश्वरायनमः । श्रीगणेशा० ॥
२२·२ × ६ सें० मी०	६ (१-२,५-८)	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १४·५ सें० मी०	४६ (२-१७,५०-८४,८६)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	× × वीरविलासचंपूप्रबंधे-जनकनंदिनीरघुनंदनांऽके महाराजेंद्र श्रीव्याघ्र देवादिवंश श्रीमहाराज रामसिंह देवादि प्रशंसन पूर्वकऽमवधूतसिंह महाराजपर्यंत वर्णनंनाम द्वितीयः उल्लासः × × × × (पृ० ५०)
२० × ७·८ सें० मी०	५ (१–५)	८	३१	पू०	प्राचीन श०१५६३	इति कवि विरचितं वृंदावन नामकमल्पकाव्यं संपूर्णम् ॥ शाकेग्निषड्वाणसुधांशु १५६३ तुल्ये मार्गोसिते विष्णुतिथौ १२ सिताहे ॥······

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९८	३६०९	वृंदावनकाव्यम्	कालिदास		दे० का०	दे०
३९९	३६१०	*वृंदावनकाव्यम्	कालिदास		दे० का०	दे०
४००	३८०८	वृत्तमुक्तावली			[illegible] का०	दे०
४०१	३२३२	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट		दे० का०	दे०
४०२	३१४९	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट		दे० का०	दे०
४०३	३५४०	वृत्तरत्नाकर	पंडित केदार भट्ट		दे० का०	दे०
४०४	२९४६	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट		दे० का०	दे०
४०५	५२२७	वृत्तरत्नाकर (उद्बोध चंद्रिका संस्कृत टीका)	केदार भट्ट	कीर्तिकर	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·१ × ९ सें० मी०	५ (१–)	४	४५	पू०	प्राचीन सं०१६४२	इति श्री कालिदास विरचितं वृंदावनाख्यं काव्यं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु । संवत् १६० २ समये आश्विनमासि कृ०…… लिखितंत्रिलोकदासेनलिखापितं……॥
२६·३ × ७·६ सें० मी०	८ (१–८)	७	४८	पू०	प्राचीन सं०१६६४	इतिश्री कालिदास विरचितं वृंदावनाख्यकाव्यं समाप्तं ॥ १ ॥ संवत् १६६४ ॥ शुभमस्तु ॥
२४·३ × १९ सें० मी०	३	२४	२०	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	१४	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमंत्केदारपंडित विरचितो वृत्तरत्नाकरः संपूर्णतामगात् ॥ सिद्धेश्वरस्य पुस्तक । स्वहस्तेनलिखितं …॥
२५·६ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्टकेदार विरचिते वृत्तरत्नाकराख्ये छंदसिषष्ठोऽध्यायः ॥
१९·२ × ११·३ सें० मी०	७ (२–८)	१३	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्केदार पंडित निरचितो वृत्तरत्नाकरः संपूर्णतामगात् ॥
२१·९ × ८·८ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
३१·३ × १[illegible]·४ सें० मी०	३९ (१–३१, ३३–४०)	९	५४	अपू०	प्राचीन	इति श्री होरिलात्मज वृद्धापरनामधेय कीर्तिकर विरचितायां वत्त रत्नाकरोद्बोध चंद्रिकायां षष्ठप्रत्ययप्रकाशनोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्र.मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	५३६०	*वृत्तरत्नाकर (उद्बोध-चंद्रिकासंस्कृतटीका)	केदारभट्ट	कीर्तिकर	दे० का०	दे०
४०७	६५७६	वृत्तरत्नाकर ('सेतु' नाम्नीसंस्कृतटीका)	केदारभट्ट	हरिभास्कर	दे० का०	दे०
४०८	३२५२	वृत्तरत्नाकर (सटीक)	केदारभट्ट	भास्करशर्मा	दे० का०	दे०
४०९	४५६५	वृत्तरत्नावली	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४१०	३५१७	वृत्तरत्नावली	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४११	५०७८	वृत्तरत्नावली	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४१२	८३३	वृत्तरत्नावली	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०
४१३	११४६	वृत्तरत्नावली	चिरंजीवभट्टाचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ७·१ सें० मी०	४९ (१–४९)	६	४०	पू०	प्राचीन सं०१६००	इति श्री होरिलात्मज वृद्धापरनाम कीर्तिकर विरचितायां वृत्तरत्नाकरोद्वोधचंद्रिकायां…षष्टोध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ संवत १६०० समये… ॥
२४·७ × ११·५ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्रीमदग्निहोत्रकुलतिलकायमान श्रीमदायाजी भट्टसूनु पराभिधान हरिभास्कर विरचितो वृत्तरत्नाकर सेतुः समाप्तिमगत् ॥… सं० १८८८ फागुण कृश्न पक्षे ८ मुकाम झासी ॥२॥… (उपसंहार) × × × इतिश्रीभट्टकेदारविरंचिते वृत्तरत्नाकराख्ये षष्टोध्यायः समाप्तः ॥… (पृ० ४५)
२६·८ × ९·७ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदग्निहोत्रिकुलनिलकयमान श्रीमदायाजी भट्टसुत भास्कर विरचिते वृत्तरत्नाकरसेतौ द्वितीयोध्यायः ॥ × × × (पृ० सं०१३)
२५ × १२·६ सें० मी०	२	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री चिरंजीव भट्टाचार्य्य विरचितं वृत्त रत्नावली समाप्तः ॥…
२४·६ × १२·९ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १०·७ सें० मी०	३ (११–१३)	९	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री चिरन्जीव भट्टाचार्य विरचितंकृत वृत्तरत्नावली समाप्तः ॥ × ×॥
२१·१ × १०·५ सें० मी०	१६	१०	२५	पू०	प्राचीन सं०१८४९	इति चिरंजीव भट्टाचार्य कृते वृतरत्नावली समापितं संपूर्ण संवत् १८४९ वैशाष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ३…॥
२४ × १०·८ सें० मी०	११ (१-१०,१४)	८	३०	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१४	६६१४	वृत्तवारिधि	वनमाली		दे० का०	दे०
४१५	३६९२	वृत्तिविनोद	शिवगोविंद		दे० का०	दे०
४१६	३८९	वृहद्रामायणम्			दे० का०	दे०
४१७	३५४९	वेणीसंहारनाटकम्	भट्ट नारायण नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
४१८	१८८७	वेतालपंचविंशतिकथा	शिवदास		दे० का०	दे०
४१९	१५७७	वेतालपचीसी			दे० का०	दे०
४२०	५०९५/२	वैराग्यशतकम् (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
४२१	४१८८	बैराग्यशतकम्	भर्तृहरि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ९·२ सें० मी०	३० (२–३१)	११	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्कविकदंबकारविंद वृंदविकाश नारविंद वंचुश्री मल्लिवेदखगनात्मजवनमालिविरचि वृत्त वारिधौ × ॥
२३·१ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	९	२९	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इतिश्रीमद्रामचंद्र चरणारविंदमजिममकरंदमधुपेनशिवगोविंदपंडितेन विरचितं वृत्तविनोदं समाप्तम् शुभमस्तु अधिकाश्विनकृष्ण ३ भौमवारे सं० १९१७ ···॥
३३ × ११ सें० मी०	१७ (२ से ५३ तकस्फुटपत्र)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ८·८ सें० मी०	७५ (१–७५)	९	३७	पू०	प्राचीन सं० १८१२	श्रीमृगराजलक्ष्मनारायणभट्टविरचितं वेणीसंहारं नाम नाटकंसमाप्तं ॥ अंगखेतनुभूमिमितेब्दे चैत्रमाशितिपक्षदशम्याम् ॥ शंकरेणननुनाटकमेतद्रामचंद्र पठनार्थमलेखि ॥ संवत् १८१२ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ९ नवमी बुद्धवासरे लखितं गमोठचात् वेदित्रिपाठिधनेश्वर पुरुषोत्तम श्रीकाशीविश्वेश्वर संनिधौ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥
२६·७ × १३·२ सें० मी०	५८ (१–५८)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्री शिवदास विरचितायां वेतालपंचविंशति कायां पंचविंशति कथानकं संपूर्ण शुभः···संवत् १८६३ तत्रवर्षे···॥
१९·९ × १०·३ सें० मी०	५ (२–४, ६, ९)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
३२·५ × १४·८ सें० मी०	२५ (१–२५)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	अथ वैराग्य शतकं ॥ (प्रारंभ) × × ×
२३·२ × १०·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३९	अपू० (खंडित)	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री भर्तृहरशतकंवैराग्यं समाप्तं शुभमस्तु ॥ संवत् १८६७ शाके १७३२ मार्गशीर्षमासि० कृष्णपक्षे ६ भौमवासरे कहु···स्तक लिषितं श्रीत्रिपाठीमनसारामस्य आत्मज माधवरामेन शुभस्थाने रीवा न······॥
(सं०सू०३-६६)						

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२२	२८६५	वैराग्यशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
४२३	६५७	व्यंग्यार्थकौमुदी	अनन्त पंडित		दे० का०	दे०
४२४	५२१०	शंकरचेतोविलासचम्पू (प्रथम उल्लास)	शंकर दीक्षित		मि० का०	दे०
४२५	४१७५	शार्ङ्गधरपद्धति	शार्ङ्गधर		मि० का०	दे०
४२६	५०७	शिशुपालवध	माघ कवि		दे० का०	दे०
४२७	४८८	शिशुपालवध	माघ कवि		दे० का०	दे०
४२८	४००९	शिशुपालवध	माघ कवि		दे० का०	दे०
४२९	४०८७	शिशुपालबध	माघ कवि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·६ X ·१२·२ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरि विरचितं वैराग्य शतकं सपूर्णंम् । मूलसंख्या २३६। टीका ५२१ (ग्रंथनाम के लिए हाशिये पर 'भ० वै० शब्द लिखित है।)
३१ X १४ सें० मी०	३०	१२	४४	अपू०	प्राचीन	
२५·८ X ११ सें० मी०	२१ (१-२१)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री समस्त सामंत मुकुट कोटिकुरुविंद संदोहांदोलित पादारविंद महाराज चेतसिंह प्रोत्साहित साहित्य पारावार पारीण श्रीमद्दीक्षित बालकृष्ण सूनु शंकरविरचिते शंकर चेतोविलास चम्पू प्रबंधेलक्ष्मी नारायणांके गौतमवंश शंसनपूर्वक महाराज बलिवंड ··· ।
२७·४ X १०·४ सें० मी०	७ (१-४, ६-८)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	
३०·८ X १५ सें० मी०	८३ (१–८३)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२७ X १२·१ सें० मी०	७३ (४०-११२)	११	३९	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १७६६	संवत् १७६६ वर्षेकार्तिकस्यासि द्वितीयायं रविदिने माघकाव्य लिखितं चन्द्रमणिनास्वार्था···श्री जनकात्मजापतयेनमः। श्री राधायैनमः ॥
२०·४ X ८·६ सें० मी०	२०७	७	२६	अपू०	प्राचीन सं० १७२१	इतिश्रि श्रि शिशुपालवधे महाकाव्ये विंशतिमः सर्ग ॥ समाप्तमिति ॥ शुभमस्तु ॥··· संवत् १७२१ समय वैशाष कृष्णपक्ष त्रयोदश्यां लिखितमिदं पुस्तकं स्वयंपाठार्थं परोपकार्थंच ॥ गंगानिकटे लिष्यते श्री हनुमते नमः·····
२७·५ X ११·३ सें० मी०	८९ (२से१२९ तकस्फुटपत्र)	६	३९	अपू०	प्राचीन	इति दत्तकसूनोर्माघकवेः कृतौ शिशुपाल वधे महाकाव्ये माघ द्वितीयः सर्गः ॥ (पृ० २२)

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३४०५	शिशुपालवध	माघकवि		दे० का०	दे०
४३१	७६२१	शिशुपालवध (द्वितीयसर्ग)	माघकवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
४३२	५१०४	शिशुपालवध (प्रथमसर्ग)	माघकवि		मि० का०	दे०
४३३	२५६८	शिशुपालमहाकाव्य	माघकवि		दे० का०	दे०
४३४	२४२१	शिशुपालवध (संस्कृतटीका)	माघकवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
४३५	२३७१	शिशुपालवध (सटीक)	माघकवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
४३६	७०९८	शिशुपालवध (सटीक) (प्रथमसर्ग)	माघकवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०
४३७	५५७३	शिशुपालवध (सटीक) (द्वितीयसर्ग)	माघकवि	मल्लिनाथसूरि	दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११·३ सें० मी०	७५ (१-२३,२३-६६,६·-६४)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री माघकृतौ शिशुपालवधे महाप्रदोषवर्णनन्नाम नवमः सर्गः ॥ ९
२८·६ × ११ सें० मी०	३४ (१-३४)	७	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाण पारावार पारीण श्री महामहोपाध्याय कोलचल मल्लीनाथ सूरि विरचिते माघ व्याख्याने सर्वंकषाख्य द्वितीय सर्गः : २ ॥
२४·६ × १०·८ सें० मी०	२२ (१-२२)	११	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री शिशुपालवधे महाकाव्ये माघकृतौ स्वर्गान्नारदाभिगमनं प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥
२७ × ८·५ सें० मी०	६	५	३७	अपू०	प्राचीन	इति शिशुपालवधे महाकाव्ये श्री शब्दालंकृत सर्गान्तेनारदागमनोनाम प्रथमः सर्गः ॥
३४·८ × १३·३ सें० मी०	२१	११	५४	अपू०	प्राचीन	···मल्लिनाथ सूरि विरचिते माघ व्याख्याने सर्वंकषाख्याने अष्टमः सर्गः समाप्तः ॥ ग्रंथनाम के लिये हाशिये-पर 'मा० स० शब्द लिखित है।)
२४·६ × १०·७ सें० मी०	४१ (१-४१)	११	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिशुपालवधे महाकाव्ये मंत्रवर्णनंनाम द्वितीयः सर्गः ॥······॥
१९·५ × ११·७ सें० मी०	३२ (१-३२)	९	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्यप्रमाणपारावारीण श्रीमहोपाध्याय कोलच मल्लिनाथ सूरि विरचिते माघकाव्य व्याख्यानं सर्वंकषाख्ये प्रथमः सर्गः समाप्तः शुभमस्तु ॥ इति श्री ॥
३२·३ × १२ सें० मी०	२१ (१-२१)	१०	६५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदवाक्य प्रमाणपारावारीण श्रीमहोमहोपाध्याय कोलचल मल्लिनाथ सूरि विरचितायां माघ व्याख्यायां सव व्याख्याने द्वितीयः सर्गः ॥ समाप्तः २ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३८	३६११	शिशुपालवध (सटीक)	माघकवि	वल्लभदेव	दे० का०	दे०
४३९	३६५२	शिशुपालवध (सटीक)	माघकवि	वल्लभदेव	दे० का०	दे०
४४०	३१३२	शिशुपालवध (१-३सर्ग)	माघकवि		दे० का०	दे०
४४१	५४२६/४	शुकरंभासंवाद			दे० का०	दे०
४४२	६९८१	शुकलीला शतक (कर्णामृत)	लीलाशुक		दे० का०	दे०
४४३	२५०९	शृंगार चंद्रिका			दे० का०	दे०
४४४	७१३२	शृंगारतरंगिणी	पीतांबरदत्त		दे० का०	दे०
४४५	५८१०	शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·८ × ८·५ सें० मी०	६६	१३	४०	अपू०	प्राचीन	इति—माघस्य कृतौ शिशुपालवधौ सामविंशतिमः सर्गः ॥ श्रीरघुनाथायनमः ॥
२६·५ × ८·२ सें० मी०	६७	११	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभदेव विरचितायां शिशुपालवधटीकायां चतुर्थः सर्गः ॥ (पृ० सं० २४)
२७·२ × ११·८ सें० मी०	२६ (१-९,१-९, १-८)	७	३४	पू०	प्राचीन सं० १९३१	इति श्री शिशुपाल वधे महाकाव्येश्र्यंके माघकृतौ द्वारका वर्णनं नाम तृतीयः सर्गः समाप्तः अधिकाषाढकृष्ण सप्तमीं दुवासरे संवत् १९३१ शाके १७९६ व्यय नाम संवत्सरे सर्गः समाप्तः ॥
१७·३ × ८·६ सें० मी०	४	८	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री शुकरंभा संवादे द्वितीयः सर्गः ॥
२४·६ × ११·१ सें० मी०	५ (९-१२,१४)	८	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री लीलाशुक विरचितं कर्णामृत तृतीय शतकं संपूर्णं ॥
२५ × ९·२ सें० मी०	६ (१,३-७)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२६·३ × ९·५ सें० मी०	६० (२-१४, १६-६२)	८	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रृंगारतरंङ्गिण्यां श्रीपिताम्बरचितायांद्वादशस्तरङ्गः × (पृ० ४६)
२५ × १०·५ सें० मी०	३ (१-३)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति रुद्रभद्रकृत श्रृंगारतिलकं समाप्तं शुभं भूयात् ॥ राम ॥······

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४६	३४०३	शृंगारतिलक	कालिदास		दे० का०	दे०
४४७	३०६३	शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट		दे० का०	दे०
४४८	३५४७	शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट		दे० का०	दे०
४४९	१४४०	शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट		दे० का०	दे०
४५०	२४०४	शृंगारतिलक			दे० का०	दे०
४५१	७८०	शृंगारतिलक	कालिदास		दे० का०	दे०
४५२	४५६२	शृंगारतिलक	कालिदास		दे० का०	दे०
४५३	४६६२	शृंगारतिलक	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × १२·६ सें० मी०	३ (१–३)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति श्री कालिदासकृतं शृंगाररतिलकं संपूर्णं शुभमस्तु मंगलंददातु संवत् १६०।१२
३०·४ × १२·५ सें० मी०	८ (२–९)	१६	५६	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रभट्ट विरचिते काव्यरसालंकारे शृंगार तिलकाभिधाने तृतीयः परिछेदः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥
२३·३ × ८·५ सें० मी०	२४ (२-१६, १८-२६)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति शृंगारतिलके भट्टरुद्र विरचितायां तृतीयः परिछेदः ॥३॥ समाप्तोयं ग्रंथः॥ ....
२६·४ × १३·५ सें० मी०	४	२०	५८	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × १०·८ सें० मी०	३ (१–३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
१७·८ × ८·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१८३१	इति श्री कालिदास कृतौ शृंगार तिलक दंपत्योरवादानु कथनं संपूर्णं १ सं० १८३१ पौ० शु० ४ श० इदं पुस्तकं लिपिकृतं मिश्र गोविंद सहाय पठनार्थं नंदीगण शुभं भूयात् ॥❀॥
२८ × ११·६ सें० मी०	१	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महाकवि कालिदास कृत्तः शृंगार तिलकः समाप्तः ।
२३·५ × ११·५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३२	पू०	प्राचीन सं०१८४६	इति श्री कवि कालिदास विरचितं शृंगार तिलकं समाप्तं ॥ शुभभूयाल्लेखक पाठकयोः × × संवत् १८४६ माघवदि ६ × × × ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५४	५७६५	शृंगारतिलक	कालिदास		दे० का०	दे०
४५५	५०४५	शृंगारतिलक (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०
४५६	३४८०	शृंगारतिलक (सटीक)	कालिदास		दे० का०	दे०
४५७	२५८८	शृंगाररहस्यरत्नमंजरी	रामसखेंद्रनिधि		दे० का०	दे०
४५८	२२१५	शृंगारशतक (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
४५९	७१४५	शृंगारशतक	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
४६०	५०६५/३	शृंगारशतक (सटीक)	भर्तृहरि		दे० का०	दे०
४६१	२८७९	शृंगारामृतलहरी	सामराज दीक्षित		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	११	४८	पू०	प्राचीन सं०१९२०	इति कालिदास कृती श्रृंगारतिलक संपूर्णम् शुभमस्तु ॥ श्री संवत् १९२० कुआर मासे कृष्णपक्षे १० × × ॥
३२·९ × १३·७ सें० मी०	५ (१–५)	९	४३	अपू०	प्राचीन	
२६·४ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४७	पू०	प्राचीन सं०१९२२	इति श्री कालिदास कृती श्रृङ्गारतिलकं सम्पूर्णम् ॥
२५ × १५ सें० मी०	८	१६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्मध्वाचार्य्य कुलाब्धि चंद्रस्य श्री सीतारामोपासकाचार्य वर्य्यस्य श्री मद्रामसखेंद्रनिध्याचार्य्यस्यकेन चिच्छिष्येण विरचिता श्री सीतारामचंद्र श्रृंगार रहस्य रत्न मंजरी सपूर्णम् ॥ इदं पुस्तकं लिपितं रघुवंश वल्लभशरण पौषमासे सिते पक्षे षष्टी ६ तिथौ सनिवासरेकः संवत् १९२२ के अस्थित.··· ···
२८·५ × ११·१ सें० मी०	१६ (१२–२७)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भर्तृहरकाव्यशतकस्य श्रृंगाराभिधान्यस्य द्वितीयशतकस्य टीकेयं विधधे ॥
२२·१ × ९·३ सें० मी०	११ (१–११)	१२	४०	पू०	प्राचीन	इति भृर्तृहरिणा विरचिनं शृगार शत संपूर्ण शुभमस्तु ॥
३२·५ × १४·८ सें० मी०	३२ (१२–१५)	१५	५१	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति श्रीभर्तृहेणाश्रृंगारशतक सहै टीका सपूर्ण । संवत् १८९२ आषाडें सितेपक्षे तृतीयायां चंद्रवासरे महताव द्विजेनेदं लिखतं पुस्तकं शुभं शुभमस्तु ॥
२४·५ × ११·२ सें० मी०	४५ (१–४५)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८३५	इति श्री मत्कविकुल तिलक नरहर विंदु कुलोत्तंस श्री सामराज दीक्षित विरचिता श्रृंगारामृत लहरी समाप्तिमगात्॥ ··· ···संवतु १८३५ शाके १७०० पौष शुक्लैकादश्यां भौमवासरे लिखिता नरनरपुर मध्ये लेखक सुखलाल जौ(लौ)हरीया ॥ शुभं ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३२६३	श्यामलादंडक	कालिदास		दे० का०	दे०
४६३	७२०८	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४६४	३१३०	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४६५	३२२०	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४६६	२५५३	श्रुतबोध (सटीक)	कालिदास	माणिक्यमल्ल मनोहर	दे० का०	दे०
४६७	३५४५	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४६८	७६४	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४६९	५१४७	श्रुतबोध	कालिदास		मि० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १२.३ सें० मी०	३ (१–३)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री कालिदास कृतं श्यामला दण्डकम् समाप्तम् शुभम् ।।
१६ × १०.५ सें० मी०	७ (१-५, ८-६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रुतबोध सम्पूर्णः ।।
२७.४ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	प्राचीन श०१७६५ ६५	इति श्री कालिदास कृतौ श्रुतबोध समाप्त ।। ···शाके १७६५ पार्थिवनाम संवत्सरे सौम्यवासरे ···शुभंभवतु ।।
२३ × १० सें० मी०	५ (१–५)	७	४१	पू०	प्राचीन सं०१७१:	इति श्री कविकालिदास कृतौ श्रुतबोध समाप्तः संवत् १७१३ समये अश्विन बदि ५ लिखितमिदं दीक्षि ।
३३.८ × १५.३ सें० मी०	६ (१–६)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री कालिदास कृत श्रुतबोध मूल-व्याख्या: समाप्त: शुभम् भूयात् हरयेनमः माणिक्य मल्लकारिता मनोहर कृता श्रुतबोध टीका संपूर्णम् ।।१।।
२१.६ × ७.३ सें० मी०	७ (१, १–६)	५	३१	पू०	प्राचीन श०१६७८	इति कालिदास विरचिते श्रुतबोधः समाप्तः ।। शाके १६७६ मेषसंक्रान्तिदिन गते १ रविवासरे लिखितमिद पुस्तकं ।।
२२ × ११.८ सें मी०	४ (१–४)	११	२६	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री कवि कालिदास विरचिते श्रुत वाध समाप्तम् सं० १८३६ चैत्रकृष्णे सप्तम्यां वुधवासरे शुभं ।
२४.५ × १०.५ सें० मी०	२ (१–२)	७	३५	अपू०	प्राचीन सं०१६२८	इति श्री कालिदास विरचिते श्रुतिवोधा-ख्यच्छंदोवृत काव्य समाप्तं ।। शुभमस्तु श्री सवत् १६२८ ।। मार्गशीष मासे कृष्णपक्षे ६ षष्ठी रविवासरे ।। रघुविर [illegible] ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७०	६४०७	श्रुतबोध			दे० का०	दे०
४७१	१८३३	श्रुतबोध			दे० का०	दे०
४७२	२१२५	श्रुतबोध (सटीक)	कालिदास	मनोहर	दे० का०	दे०
४७३	१६२४	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४७४	७७४२	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४७५	७४२१	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४७६	७५६५	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०
४७७	१७७८	श्रुतबोध	कालिदास		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री कालिदास कृतौ श्रुतबोध समाप्तः ।। श्री रामोविजयतेतराम् ।। एवंविशत्यक्षरम् ।। सम्वत् १८८४ के समए नाम आश्विनिमासे × × × ।।
२५·२ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति माणिक्य मल्लकारिता मनोहर कृता श्रुतबोध टीका संपूर्णतामगत् ।।
३३.४ × १३·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	३३	पू०	प्राचीन सं० १९४५	इति श्री कविकालिदास कृत श्रुतबोधः समप्तः सम्वम् १९।।४५।। लिपिकृतंजनारायण रामेण शुभम्भूयात् ।।
२४·१ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	१२	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री कालिदास विरचितः श्रुतबोध ग्रन्थः समाप्तः ।। शुभम्भूयात् ।।
२०·३ × ७·७ सें० मी०	७ (१–७)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्रुतवोध समाप्तः ।।......
२५·५ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री कवि कालिदाश कृत श्रुतवोध नामकश्छंदोग्रंथः समाप्तः लिपि...।।
२०·५ × ११ सें० मी०	६ (२–१०)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री कालिदासेन कृतोऽयं श्रुतवोध ग्रंथस्समाप्तः ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७८	२९६४	श्लोकयोजनोपाय	रघराम		दे० का०	दे०
४७९	२९४३	श्लोकयोजनोपाय प्रकाश: टीका	रघुराम	माधवभट्ट	दे० का०	दे०
४८०	२५६०	षोडशशृंगारवर्णन			दे० का०	दे०
४८१	३५४८	संक्षिप्तसारबोधिनी (काव्यप्रकाशटीका)	मम्मट	वत्सशर्मा	दे० का०	दे०
४८२	२१३४	संक्षेपनृत्यप्रकरण	भारती		दे० का०	दे०
४८३	१८३४	सच्चरितकल्पतरु	वेदांतवागीश भट्टाचार्य		दे० का०	
४८४	५३५४	सप्तशतकविवरण	कुलनाथ		दे० का०	दे०
४८५	४२५३	सप्तश्लोकीरामायण	वाल्मीकि		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·७ × ९·६ सें० मी०	१	७	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुराम कृतः श्लोकयोजनोपाय समाप्तः ।।
२३·२ × ९·८ सें० मी०	४ (१–४)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१७१३	इति श्री कुलार्क कार मत्माधव भट्ट विरचित श्लोकयोजनोपाय प्रकाशः समाप्तः ।। संवत् १७१३···।।
२५·५ × ९·८ सें० मी०	१	६	३३	पू०	प्राचीन	इति षोडश श्रृंगार वर्णनं संपूरणम् शुभं भवतु ।।
२३·६ × ९·१ सें० मी०	११८ (१–११८)	११	४७	अपू०	प्राचीन	इति सारबोधिन्यां सप्तम उल्लासः समाप्तः × × × ।। (पृ० संख्या ११८)।
२२ × १०·५ सें० मी०	११ (२–१२)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८९७	इति श्री भारतीये संक्षेपनृत्य प्रकरणं शुभमस्तु संवत् १८९७ मिति फाल्गुण शुदि १४ वार सनि··· ···
२५·२ × ९·३ सें० मी०	२२ (२-६, ९-११, १४-२२, २५-२८)	८	४१	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ८·९ सें० मी०	६० (१–६०)	१७	४९	पू०	प्राचीन सं०१८१	इति कुलनाथ विरचिते सप्तशतक विवरणे सप्तम शतक विवरणं समाप्तं ।। ७।। वेदेंदुवसुभूवर्षे शुक्लाष्टम्यांमिषे गुरौ ।। ७···
१६·३ × १२ सें० मी०	८ (२–९)	६	१०	अपू०	प्राचीन सं०१९०	इति श्री वाल्मीक विरचितं सप्त श्लोकात्मकं रामायनं संपूर्नं ।। संवत् १९०३ ।।

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४८६५	सभानिर्णय (लाहरा काव्य ?)			दे० का०	दे०
४८७	३१४४	सरस्वतीकंठाभरण चित्रकारिका	लक्ष्मीनाथभट्ट		दे० का०	दे०
४८८	६१३८	साहित्यदर्पण	कविराज विश्वनाथ		दे० का०	दे०
४८९	५६५६	सुदर्शनशतक			दे० का०	दे०
४९०	४९२५	सुदर्शनशतक (सटीक)			दे० का०	दे०
४९१	७४१८	सुभाषित संग्रह (उपवनविनोदपरिच्छेद)	शार्ङ्गधर		मि० का०	दे०
४९२	७०५५/४	सुभाषितसंग्रह			दे० का०	दे०
४९३	७१७२	सूक्तिमुक्तावली (अन्योक्ति परिच्छेद)	जल्हण		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·६ × ११·७ सें० मी०	१ (१–७)	६	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री लाहराकाव्ये सभानिर्न्नयः समाप्तः ।। × × शम्वत् १८८६
२६·४ × ९·७ सें० मी०	२० (१–२०)	१२	६३	पू०	प्राचीन	इति श्री लक्ष्मीनाथ भट्टविरचिता सरस्वतीकंठा भरणालंकारेडकरचित्र प्रकाशिका संपूर्ण । श्रीरस्तू ।। श्री नृसिहः सत्यं ।।
२७·७ × १०·६ सें० मी०	१३० (५-६,११-१३८)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	इत्यालंकारेकवक्रवर्त्तिधान प्रस्थान परमाचार्य्र शेषाविलानी भुजंग साहित्यार्णवफर्णधार महापाल श्री विश्वनाथ कविराज कृते साहित्यदर्पणे दशम परिछेदः समाप्तः श्चायं साहित्य दर्प्पण इति ।।
३३·८ × १५·६ सें० मी०	४२	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं० ११५७	इति श्री सुदर्शन शतक समूल व्याख्यानं संपूर्ण ।।……संवत १८५७ वदि चैत्र १४ ।।
२७·४ × १२ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं० १६३५	इति श्री सुदर्शन शत्तके मूल सव्याख्याने पुरुष वर्णनं समाप्तम् ।। शुभंभूयात् वाणराम ग्रह चंद्रवत्सरे पौषमाससित भौमवारे ।।
२१·४ × ८·२ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२३	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति सुभाषितशार्ङ्गधरे उपवनविनोद परिच्छेदः समाप्ता ।।…संवत् १६२६ फाल्गुण शुक्ल पक्षे १२ ।। लिखितं रामचंद्र वेताल ।।……
१३·५ × १३ सें० मी०	३ (५–७)	१५	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·६ × ७·५ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति सूक्तिमुक्तावल्यां अन्योक्ति परिछेदो द्वितीयः ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४६४	५६४१	सूर्यशतकम् (सटीक)	मयूरभट्ट	रंगदेव	दे० का०	दे०
४६५	२५६०	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४६६	१२६०	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४६७	३५४६	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४६८	४८४७	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४६६	२६५६	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५००	२०५०/२	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	१
५०१	५५१५	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३·२ × १०·७ सें० मी०	५१ (१-५१)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री रंग देव विरचिता सूर्यशतक व्याख्या समाप्ता ॥···
२६ × ६ सें० मी०	६ (१-११)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १२·३ सें० मी०	१६	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × ९·७ सें० मी०	१३ (१-२,४-१४)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं० १७२६	इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री मछंकराचार्य विरचितं सौंदर्यलहरीस्तोत्र सपूर्णं ॥ शुभंभवतु ॥ संवत् १७२६ समयेभादव सुदि १२ × × × ॥
२५·१ × ११ सें० मी०	१६ (१-१६)	९	२३	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितंसौन्दर्य-लहरी स्तोत्रं संपूर्णम् शम्वत्१८८२शाके १७४७ समयनामज्येष्टमासेशुक्लपक्षे प्रतीपदायां × × × ॥
१६·४ × ११·५ सें० मी०	५ (१२-१६)	१६	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८५३	इति श्री मत्संकराचार्य विरचितं सौंदर्य लहरी स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तंम् संवत् १८५३ शाके १७१७··· ॥
१२ × १२ सें० मी०	२२	१२	२३	पू०	प्राचीन	इतिश्रीशंकराचार्यविराचितं सौंदर्यलहरी संपूर्णं ॥
१९·७ × ७·२ सें० मी०	१ (१-७)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०२	६३१२/७	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५०३	७३५३	सौन्दर्यलहरी (सटीक)	शंकराचार्य	कैवल्याश्रम	दे० का०	दे०
५०४	७५६७	सौन्दर्यलहरी (सटीक)	शंकराचार्य	रंगदास	दे० का०	दे०
५०५	४६७८	सौन्दर्यलहरी (सटीक)			दे० का०	दे०
५०६	५०२८	सौन्दर्यलहरी (सटीक)	शंकराचार्य	रंगदास	दे० का०	दे०
५०७	७११६	स्वप्नवासवदत्ता (नाटक)	भास		दे० का०	दे०
५०८	१४१६	हनुमच्चरित	ब्रह्माजित		दे० का०	दे०
५०९	५४३७	हनुमत्संहिता			दे० का०	दे०

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·८ × १४·२ सें० मी०	६ (३३–३७, ३७–४०)	१५	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिता सौंदर्य लहरी संपूर्ण ॥···
३४·२ × १३·१ सें० मी०	३० (२-३०,३२)	११	६५	अपू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्री गोविंदाश्रम पादपूज्यशिष्य श्रीकैवल्याश्रम विरचिता सौंदर्यलहरी टीका सौभाग्यवर्धिनीनाम्नीसम्पूर्णम् श्री ललितादेव्यैनमोनमः ॥ शुभम्भूयात ॥ श्रीसम्वत् १९१८ मार्गशीर्षे मासि सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे लि० सीताराम भट्टेन × ×
२३·५ × ११·२ सें० मी०	४५ (१–४५)	१५	५४	अपू०	प्राचीन	···श्री रंगदास इति चाल्पधियापि टीकां श्री सुन्दरी च कविराज वचः सुधाभिः । ······(पृ०–सं०–४५)
२०·५ × ७·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४६	पू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री सौंदर्य लहरी टीका समाप्ता संवत् १८७६ आश्वीनवद्य ६ चंद्रवासरे तद्दिने इदं पुस्तकं पिंगेइत्यूपनामक लक्ष्मी नारायणस्कत काशिनाथेन लिखितं···॥
२६·५ × ९·६ सें० मी०	११३ (१–११३)	८	४०	पू०	प्राचीन सं०१७५६	इतिश्रीसौंदर्यलहरीस्तोत्रस्य शंकरभगवत् कृतीभट्टश्रीकविराज दृष्टचा श्रीरंगदास-विरचितं संक्षेपतोरहस्यविवरणं समाप्त-मिति ॥ मंगलं संवत् १७५६ वर्षं कार्तिकमासे शुक्लपक्षे १० दशम्यायां रविवासरे ग्रंथलिख्यते समाप्तः ॥
२२ × ९·८ सें० मी०	२८ (८–३५)	६	४२	अपू०	प्राचीन	इति वासवदत्ता समाप्ता ॥
३१ × १२ सें० मी०	२३	१४	६२	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	
२१·६ × ६·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१९१५	इति श्री मधद्धनुमत्संहितायां परम रहस्ये महाराशोत्सवे श्री हनुमदगस्त्य संवादे पंचमो ध्याय समाप्तं ··· ··· संवत १९१५ के सात······ ॥

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१०	५६०८	हनुमत्संहिता			मि० का०	दे०
५११	७३५८	हनुमन्नाटक			दे० का०	दे०
५१२	५६५	हनुमन्नाटक			दे० का०	दे०
५१३	२०४६	हनुमन्नाटक		मोहनदासमिश्र	दे० का०	दे०
५१४	३८७	हनुमन्नाटक (दीपिका)		मोहनदासमिश्र	दे० का०	दे०
५१५	७०७८	हनुमन्नाटक (सटीक)	दामोदरमिश्र	मोहनदासमिश्र	दे० का०	दे०
५१६	७८४६	हरिविलास (प्रथमसर्ग)	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
५१७	१६८०	हृदारामवैष्णवकाव्य	वृजलाल		दे० का०	दे०
*	*			*		

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद् हनुमत्संहितायां परमरहस्ये महारासोत्सवदे श्री हनुमदगस्त्यस द्वितीयोऽध्यायः × × ॥
३३·५ × १२·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२२·९ × १०·९ सें० मी०	४५ (१-२,७-३२, ३४,३६,३८-४६,४९,५१-५२,५५-५७)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री हनुमद्विरचिते महामाटके संपूर्ण शुभमस्तु ॥ श्री गुरुचरण कलेभ्योनमः संवत् १८७० शाके १७३४ पौषवदि ८ भौमे कह पुस्तकं लिखितं ···जैसिह देवराज्ये ॥ रीवाँन गरे शुभंभूयात् ॥ श्री सीतारामाभ्योनमः ॥
३२·५ × १५ सें० मी०	६२ (१-५३, ५३-६१)	१४	४७	अपू०	प्राचीन	
३१·९ × १२ सें० मी०	५ (४२–४६)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
३३·७ × १५·२ सें० मी०	६७	१५	६६	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री मिश्र दामोदर विरचितायां हनुमन्नाटके चतुर्दशोंकः ॥
२३·७ × १०·५ सें० मी०	२ (१,३)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	× × काव्य लोलिंबराज कविना कविनायकेन ॥३१॥ इति श्रीमत्सूर्य पंडित कुलालंकार श्री हरिहर विलासे महाकाव्ये कृष्णबालक्रीडावर्णनं नाम प्रथमः स्सर्गः ॥१॥
१३ × ८·५ सें० मी०	७० (१–७०)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हृदारामे वैष्णवकाव्ये वृजलाल कृतौ गद्यहृयः षष्टः सर्गः ॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥

* * *

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In PublicDomain. Digitized by S3 Foundation USA